B.A. (3 Year Programme)

(History)

HIST-103

HISTORY OF INDIA 600-1526 A.D. (भारत का इतिहास 600–1526 ई.)

BA-FIRST YEAR

(Semester – II)

Directorate of Distance Education

Guru Jambheshwar University of Science & Technology

HISAR-125001

CONTENTS

B.A History PART-I, SEMESTER-II

HIST 103: HISTORY OF INDIA 600-1526 A.D. (भारत का इतिहास 600–1526 ई.)

Sr. No.	Title Name	Author and Updated	Page No.
	UNIT ¼bdkbZ½ -I		
1.	गुप्तोत्तर काल (Post-Gupta Period)	Sh. Mohan Singh Baloda	1-38
2.	त्रिपातीय संघर्ष एवं चीन साम्राज्य (Tri-Parties Struggle and The Chola)	Sh. Mohan Singh Baloda	39-71
	UNIT ¼bdkbZ½ -II		
3.	भारत पर तुर्कों का आक्रमण (Turkas Invasion of India)	Sh. Mohan Singh Baloda	72-100
4.	दिल्ली सल्तनत का उदय एवं विस्तार (Rise and Expansion of Delhi Sultanate)	Sh. Mohan Singh Baloda	101-139
	UNIT ¼bdkbZ½ -III		
5.	बहमनी एवं विजयनगर साम्राज्य (Bahmani and Vijayanagar Kingdoms)	Sh. Mohan Singh Baloda	140-180
6.	दिल्ली सल्तनत (Delhi Sultanate 1200-1526 A.D.)	Sh. Mohan Singh Baloda	181-206
7.	भक्ति एवं सूफी आन्दोलन (Bhakti and Sufi Movements)	Sh. Mohan Singh Baloda	207-242
	UNIT ¼bdkbZ½ -IV Maps (India)		
8.	हर्ष का साम्राज्य (Harsha's Empire)	Sh. Mohan Singh Baloda	243-279
9.	अलाउद्दीन खिलजी एवं मुहम्मद तुगलक के साम्राज्य का विस्तार (Extent of Al-au-ddin Khiljis and Muhammad Tuglaq's Empire)	Sh. Mohan Singh Baloda	270-301

10.	विजयनगर साम्राज्य का विस्तार (Extent of Vijayanagar Empire)	Sh. Mohan Singh Baloda	302-330
11.	दिल्ली सल्तनत के शहरी केन्द्र (Urban centres of Delhi Sultanate)	Sh. Mohan Singh Baloda	331-356

B.A. HISTORY PART-1, SEMESTER-II	
COURSE CODE :HIST 103	**AUTHOR : MOHAN SINGH BALODA**
LESSON NO. 01	
x|rkUkj dky **(POST GUPTA PERIOD)**	

v/;k; l jpuk (Lesson Structure)

1.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objective)

1.2 परिचय (Introduction)

1.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

1.3.1 गुप्तोत्तर काल (Post Gupta Period)

1.3.2 गुप्तोत्तरकालीन वंश (Post Gupta dynasty)

1.3.3 पुष्पभूति वंश (The Pushyabhuti)

1.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of Text)

1.4.1 चालुक्य वंश (The Chalukyas)

1.4.2 गुप्तोत्तरकालीन राजनीतिक व्यवस्था (Post Gupta period Polity)

1.4.3 गुप्तोत्तरकालीन आर्थिक व्यवस्था (Post Gupta Period Economy)

1.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

1.6 सारांश / सक्षिप्तिका (Summary)

1.7 संकेत–सूचक (Key-words)

1.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT)

1.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

1.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

1-1 vf/kxe mnns'; **(Learning Objectives)**

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी योग्य होंगे :–

- गुप्तोत्तरकालीन नवीन राजवंशों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- शिक्षार्थी गुप्त वंश के पतन के बाद उभरे नवीन राजवंश को भारत के मानचित्र पर अंकित करने में समर्थ हो सकेंगे।
- गुप्तोत्तरकालीन प्रशासनिक व्यवस्था पर चर्चा करते हुए शिक्षार्थी इस व्यवस्था की तुलना पूर्व से चली आ रही व्यवस्था के साथ कर सकेंगे।
- विद्यार्थी गुप्तोत्तरकालीन आर्थिक व्यवस्था का विस्तार से वर्णन कर सकेंगे।
- गुप्तोत्तरकालीन सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक अवस्थाओं का वर्णन कर सकेंगे।

1-2 ifjp; **(Introduction) :-**

प्राचीन भारत के इतिहास में जब लगभग 550 ई. में शक्तिशाली गुप्त साम्राजय का अस्तित्व पूर्ण रूप से समाप्त हो गया तब भारतीय राजनीति में पुनः विकेंद्रीकरण की प्रवृत्तियां तीव्र गति से बढ़ी। एक मजबूत शासक के अभाव में अनेक स्थानीय सामंतों एवं शासकों ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा करके नवीन राजवंश व राज्य बनाने की ओर अग्रसर होने लगे। अतः गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद अनेक छोटे–छोटे राज्यों का उदय एक महत्त्वपूर्ण घटना है। गुप्तोत्तरकालीन भारत की राजनीतिक स्थिति

जिसके फलस्वरूप महत्त्वपूर्ण सामाजिक आर्थिक व सांस्कृतिक परिवर्तन देखने को मिलते हैं का अध्ययन निम्नलिखित बिंदुओं के रूप में समझा जा सकता है –

1. दक्षिण भारत में 550 ई. के मध्य चालुक्यों एवं पल्लवों का उदय महत्त्वपूर्ण है। बाद में लगभग 850 ई. में पल्लवों के अवशेष पर संगम युग के चोल से परे नवीन चोल सत्ता का पुनरूत्थान हुआ। गुप्तोत्तरकाल में यह नवीन चौल वंश अपने स्थानीय स्व–शासन को उत्तम रूप देने व सुचारू रूप से चलाने के लिए प्रसिद्ध रही है।

2. गुप्त काल के बाद अरबों का सिन्ध पर आक्रमण व उसके भारतीय इतिहास पर पड़ने वाले प्रभाव भी महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक पहलू है।

3. गुप्तोत्तरकालीन इतिहास में वर्धन वंश के महान शासक हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद जिन महान शक्तियों का उदय हुआ उनमें अधिकांश राजपूत राजवंशों के अंतर्गत आते हैं। इस कारण गुप्त काल के बाद 7 वीं से 12 वीं, शताब्दी के उत्तर भारत के इतिहास को 'राजपूत काल' के नाम से जाना जाता है।

4. गुप्त काल के बाद विशेषकर हर्ष की मृत्यु के उपरांत कन्नौज पर अधिकार को लेकर प्रतिहार, पाव एवं राष्ट्रकूट राजवंशों के बीच त्रिपक्षीय संघर्ष का अध्ययन इतिहास का दिलचस्प पहलू है।

5. गुप्तोत्तरकालीन भारतीय इतिहास के अध्ययन में 9वीं शताब्दी के बाद उत्तरी एवं दक्षिणी भारत के कुछ क्षेत्रीय राज्यों का उभरना व साम्राज्य–विस्तार एक महत्त्वपूर्ण घटना है।

1-3 v/;k; dk eq[; fcUnq **(Main body of Text)**

1-3-1 xqIrksÙkj dky **(Post Gupta Period)**

प्राचीन भारत में गुप्तोत्तर काल एवं मुस्लिम सत्ता के स्थापना से पहले का समय जो लगभग 550 या 600 से 1200 ई. तक माना जाता है में हमें महत्त्वपूर्ण सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। इससे पहले प्राचीन भारत में सातवाहनों ने जो भूमि–दान देने की प्रक्रिया को आरंभ किया था जिसके फलस्वरूप सामंतीय व्यवस्था का एक नया रूप सामने आया। ऐतिहासिक साक्ष्यों से पता चलता है कि गुप्तोत्तर काल में भूमि–दान और इसके कारण उत्पन्न सामंतीय व्यवस्था का बड़े पैमाने पर

फैलाव हुआ। गुप्त वंश के पतन के बाद अनेक सामंतों एवं शासकों ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। विस्तृत सामंतीय व्यवस्था के कारण इस काल में बहुत बड़ा सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन हम पाते हैं। सामंतीय व्यवस्था के अंतर्गत भूमि के असमान बंटवारे एवं सैनिक शक्तियों ने अपने प्रभाव के द्वारा अनेक सामंतीय पदों को निर्मित किया जिसके फलस्वरूप परंपरागत सामाजिक वर्ण–व्यवस्था बड़े पैमाने पर टूटने लगे। उस समय के ग्रंथों से यह पता चलता है कि ये सामंतीय पद केवल क्षत्रियों तक सीमित न रहकर अन्य वर्गों में भी व्याप्त होने लगा। भूमि के दान और विभाजन के फलस्वरूप गुप्त काल का कायस्थ वर्ग एक नवीन शिक्षित वर्ग के रूप में और अधिक सक्रिय हो गया। इस काल में परंपरागत वर्ण व्यवस्था का टूटना व उनका जातियों व उपजातियों में विभाजन विस्मयकारी रूप में हो रहा था। शुद्र कृषक के रूप में दिखाई देते हैं तो दूसरी ओर वैश्यों के स्तर में शुद्र स्तर तक की गिरावट पायी जाती है। इस प्रकार गुप्तोत्तरकालीन इस परिवर्तन ने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी को प्रभावित किया। वर्ण–व्यवस्था के समस्त भेदों का इसने विखंडन कर दिया। आजीविका चलाने के लिए किसी भी वर्ण के लोग अपने निर्दिष्ट व्यवसाय से अलग कार्य या व्यवसाय को अपना सकते थे। ब्राह्मण भी व्यापारी के रूप में शस्त्र चलाने वाले के रूप में मिलते हैं तो शूद्र भी खेती करते हुए पाये जाते हैं। यद्यपि गुप्तोत्तरकाल में कई व्यापारियों को सामंत की पदवी दी गई थी लेकिन फिर भी परंपरागत सामाजिक व्यवस्था में वैश्यों को महत्त्वपूर्ण स्थान नहीं मिला। वैश्यों को शूद्रों के बराबर स्थान की बात ऐतिहासिक विवरण बताते हैं।

गुप्तोत्तरकालीन स्मृतियों तथा निबंधों के विवरण से पता चलता है कि शूद्रों के लिए सेवा के अतिरिक्त कृषि पशुपालन, वाणिज्य तथा शिल्प आदि व्यवसायों में कार्य करने के अवसर उपलब्ध थे। इससे यह पता चलता है कि उनकी आर्थिक स्थिति में निश्चित रूप से सुधार हुआ। लेकिन आर्थिक स्थिति में पर्याप्त तरक्की होने पर भी उनकी सामाजिक स्थिति में पहले वाली स्थिति से बदलाव के संकेत नहीं मिलते हैं। इतना तो स्पष्ट है कि इस युग में भले ही शूद्र बड़े भू–स्वामी के रूप में नहीं थे किंतु वे स्वतंत्र रूप से खेती करते थे और अनेक प्रकार के कर चुकाते थे। कृषक एवं अन्य छोटे लोगों की गतिविधियों पर सामंतो द्वारा प्रतिबंध लगाना उनका दमन करना तथा बिचौलियों द्वारा उनका शोषण सामान्य बात थी। परंपरा से चले आ रहे चार वर्णों– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र में समाज विभाजित

था। धार्मिक ग्रंथों एवं विदेशी यात्रियों ह्वेनसांग, अकमसूदी, अलबसनी आदि के विवरण से पता चलता है कि समाज में ब्राह्मणों का स्थान सर्वोच्च था। स्मृतियां बताती हैं कि एक जाति के रूप में कायस्थों की उत्पत्ति एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक विशेषता थी। गुप्तोत्तरकालीन समाज में अस्पृश्यों की संख्या में वृद्धि होने के संकेत मिले हैं। इससे पता चलता है कि इस काल में अस्पृश्यता की भाव अपने शिखर पर थी। पूर्व काल की अपेक्षा इस काल में स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आयी। यद्यपि उच्च वर्ग में स्त्रियों की शिक्षा दी जाती थी। विदुषियों का उल्लेख मिलता है। फिर भी समाज में व्याप्त सती एवं जोहर प्रथा, पुत्री बाल हत्या, बहुपति विवाह, देवदासी एवं वेश्यावृत्ति जैसी कुप्रथा ने नि'संदेह स्त्रियों की स्थितियों को कमजोर किया। अन्तर्जातीय विवाह, विधवा विवाह पर प्रतिबंध था। स्त्री विवाह की उम्र 8 से 10 वर्ष बताई गई है। गुप्त काल के बाद के भारत अर्थात् पूर्व मध्यकालीन भारत में दासों कीं संख्या में वृद्धि हुई। विज्ञानखर ने अपनी रचना मिताक्षरा में नारद द्वारा बताये गये 15 प्रकार के दासों का वर्णन किया है।

गुप्तोत्तरकालीन भारत की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि ही थी। ग्रामीण स्तर पर लोग अपनी जरूरतों को अपने उत्पादन द्वारा पूरा कर लेते थे। इस कारण व्यापार–वाणिज्य की स्थिति उतनी अच्छी नहीं थी। फिर भी गुप्तोत्तरकालीन कई राजवंशों के राज्य में व्यापार–वाणिज्य की अच्छी स्थिति देखने को मिलती है। पश्चिमी व पूर्वी तट परी स्थित बंदरगाहों से विदेशी व्यापार का भी विवरण प्राप्त होता है। व्यवसाय करने वालों के संगठन का वर्णन भी मिलता है। चूँकि गुप्तोत्तरकाल में सामंतीय व्यवस्था के अंतर्गत कर्मचारियों का वेतन भूमि के रूप में होता था इस कारण सिक्कों के प्रचलन में कमी दिखाई देती है।

यद्यपि इस काल मे ंपूर्व से चले आ रहे विष्णु, शिव महत्त्वपूर्ण देवता बने रहे तथा इसके साथ ही अन्य देवी–देवताओं जैसे– सूर्य, ब्रह्मा, इन्द्र अग्नि, भगवती, दुर्गा, लक्ष्मी की उपासना भी की जाती थी। इस समय वैष्णव समर्थक अलवारों व शैव समर्थक नयनारों ने वैष्णव व शैवमत के प्रचार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। दक्षिण भारत में शंकराचार्य, कुमादिल भट्ट, रामानुजाचार्य एवं माध्वाचार्य आदि ने अपने दर्शन व ज्ञान से हिन्दू धर्म व दर्शन को एक नई दिशा प्रदान की। इस समय वैदिक

यज्ञों, कर्मकाण्डों, संस्कारों आदि के महत्त्व कम ही रह गये थे। वैष्णव काल के अंतर्गत अवतारों में वराह, कृष्ण एवं राम की लोकप्रियता अधिक थी। गुप्तो□त्तरकालीन शासकों में प्रतिहार, परमार, पाल चंदेल, चेदि, कलचुरी, सेन आदि शिव के उपासक थे। इस काल में शैवधर्म का लिंगायत संप्रदाय प्रकाश में आया। बासव एवं उसके भतीजे चन्नावासव जो लिंगायत संप्रदाय के थे, वीर शैवमत के प्रवर्तक थे। ये कलचुरी शासक के दरबार में रहते थे। लिंगायत का प्रभाव आज भी दक्षिण भारत में व्याप्त है। इस प्रकार हम देखते हैं कि गुप्तोत्तरकाल में शैव धर्म अनेक मतों में बंटा हुआ था। इनमें लंकुलीश द्वारा प्रवर्तित पाशुपत मत सबसे अधिक प्राचीन था। शैवों का अतिमार्गी रूप – कापालिक व कालमुख भी इस मौजूद थे। जनजातियों व आदिवासियों में प्राचीन काल से चली आ रही शक्ति–पूजा का प्रचलन विशेष रूप से था। वे शक्ति के दोनों रूपों–सौम्य व उग्र की उपासना करते थे। यद्यपि इस काल में बौद्ध धर्म को महान् शासक हर्ष का सरंक्षण प्राप्त होने के कारण इसका वैभव बना हुआ था। परंतु बाद के दिनों में जादू–टोना, तंत्र–मंत्र के प्रभाव में आने से बौद्ध धर्म पतन की ओर अग्रसर हो गया। मंत्रयान, वज्रयान, सहजयान व कालचक्रयान के रूप में बौद्ध धर्म के बदले हुये रूप को देखते है।

वैश्य वर्ग में जैन धर्म अधिक लोकप्रिय था। राजस्थान, गुजरात तथा मालवा व दक्षिण भारत में कर्नाटक में जैन धर्म का फैलाव इन दिनों हुआ। हमें आज भी इन क्षेत्रों में जैन धर्म का अच्छा–खासा प्रभाव देखने को मिलता है।

गुप्तोत्तर काल में भाषा तथा साहित्य के विकास के अंतर्गत संस्कृत भाषा के अतिरिक्त क्षेत्रीय स्तर की भाषाओं के विकास भी हमें देखने को मिलते हैं। दक्षिण भारत में सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से मंदिर शिक्षा के केंद्र के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे।

यद्यपि गुप्तोत्तरकालीन कला में पूर्व से चली आ रही विशेषताओं का दर्शन होता है फिर भी कलाकारों ने मौलिकता का परिचय दिया। इन कलाओं में प्रादेशिक भावना मुखर रूप से देखने को मिलते है। भारतीय स्थापत्य कला की मुख्य कृतियां इस समय के बने मंदिरों से प्राप्त होती है। इस समय भारत में मंदिर निर्माण की तीन शैलियां – नागर शैली, बेसर शैली व द्रविड़ शैली प्रसिद्ध थी। गुप्तोत्तर काल में मूर्तियों का निर्माण पत्थर, काष्ठ व अनेक प्रकार की धातुओं से होती थी। गुप्तकालीन मूर्तियों की भांति

पवित्रता, कोमलता व सहजता का दर्शन इन मूर्तियों में हम नहीं पाते हइैं। अंग–प्रत्यंग की सजीवता को इस काल में दिखाने का अधिक प्रयत्न किया गया था। गुप्तोत्तर काल में चित्रकला के नाम पर मंदिरों की दीवारों पर पशु–पक्षी, वृक्ष, लता–पुष्प आदि के चित्र उकेरे हुए मिलते हैं। दक्षिण भारत में चोल, पांड्य व पल्लव काल में वास्तुकला की एक–से–बढ़कर एक शैलियों का दर्शन हमें होता है। आज भी दक्षिण भारत के विशाल मंदिर इसके प्रमाण हैं।

1.3.2 गुप्तोत्तरकालीन वंश (Post Gupta dynasty) :- शक्तिशाली गुप्त साम्राज्य लगभग छठी शताब्दी के मध्य तक पूर्ण रूप से विखंडित हो गया था। इसके बाद सामंतवादी प्रवृत्ति के साथ विकेंद्रीकरण एवं क्षेत्रीयता की भावना ने इस युग में अनेक स्थानीय सामंतों एवं शासकों को अपनी स्वतंत्र सत्ता की स्थापना करने का अवसर प्रदान किया। इसके फलस्वरूप उत्तर व दक्षिण समस्त भारत में नए वंशों का उदय हुआ। उत्तर भारत के राजवंशों में आधुनिक हरियाणा के थानेश्वर का पुष्पभूति वंश सर्वाधिक प्रसिद्ध हुआ। गुप्तोत्तरकालीन या पूर्व मध्यकालीन इतिहास में यह वंश वर्धन वंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस वंश का संस्थापक पुष्यभूति था। नरवर्धन, आदित्यवर्धन तथा प्रभाकरवर्धन जैसे महत्वपूर्ण शासकों ने इस वंश पर राज किया। प्रभाकरवर्धन का पुत्र हर्षवर्धन इस वंश का सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक हुआ। हर्षवर्धन ने अपने साम्राज्य का विस्तार करते हुए अपनी राजधानी को थानेश्वर से कन्नौज में स्थापित किया। हर्ष के शासनकाल तथा समाज की जानकारी इसके दरबारी कवि बाणभट्ट द्वारा रचित हर्षचरित व चीनी यात्री ह्वेनसांग के विवरण से प्राप्त होती है। गुप्तोत्तरकाल में हर्ष के बाद कन्नौज राजनीतिक शक्तियों का प्रमुख केंद्र बन गया और इस पर अधिकार को लेकर तीन बड़ी शक्तियों – पाल, प्रतिहार व राष्ट्रकूट के बीच संघर्ष आरंभ हो गया। यह संघर्ष इतिहास में त्रिपक्षीय संघर्ष के नाम से प्रसिद्ध है जो लगभग 200 वर्षों तक चला। इस संघर्ष का पहल करने वाला प्रतिहार वश का शासक हुआ और अंतिम रूप से कन्नौज पर अधिकार भी इसी वंश के शासक का हुआ। 750 ई. में पाल वंश की स्थापना बौद्ध धर्म का अनुयायी गोपाल ने किया था। गोपाल ने ओदंतपुरी में एक मठ का निर्माण करवाया था। पाल वंश का विस्तार बंगाल व बिहार के एक सीमित क्षेत्र में था। इस वंश का प्रसिद्ध शासक धर्मपाल ने बौद्ध शिक्षा केंद्र विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की जो आज के बिहार के भागलपुर में स्थित था। इस वंश का शासक देवपाल हुआ जिसने अपनी राजधानी बिहार के मुंगेर में

स्थापित की थी। पाल वंश के अलावा इस काल में सेन वंश की स्थापना बंगाल में राढ़ में थी। इस वंश के शासकों में विजयसेन, बल्लालसेन व लक्ष्मण सेन हुये। 'गीत गोविंद के रचनाकार प्रसिद्ध कवि जयदेव लक्ष्मण सेन के दरबार की ही शोभा बढ़ाते थे।

गुप्तोत्तरकाल या पूर्व मध्यकालीन भारतीय इतिहास के अंतर्गत उत्तर भारत में हर्ष की मृत्यु के पश्चात् जिन नवीन राजवंशों का उदय हुआ उनमें अधिकांश राजपूत राजवंश थे। इसलिए 7वीं से 12वीं शताब्दी के उत्तर भारत के इतिहास को राजपूत काल के नाम से जाना जाता है। चंदवरदाई रचित 'पृथ्वीराज रासो' से पता चलता है कि इस काल के राजपूत वंशों में गुर्जर प्रतिहार या प्रतिहार चालुक्य, चौहान, परमार, गहड़वाल, चंदेल आदि प्रमुख थे। गुर्जर प्रतिहार वंश की उत्पत्ति गुजरात व दक्षिण–पश्चिम राजस्थान में हुई थी। यह राज्य उत्तर भारत के व्यापक क्षेत्र गंगा यमुना दोआब, पश्चिमी राजस्थान, हरियाणा तथा पंजाब के क्षेत्रों तक फैल गया। प्रतिहार वंश का संस्थापक हरिश्चंद्र था, परंतु प्रथम वास्तविक महत्त्वपूर्ण शासक नागभट्ट प्रथम था। शक्तिशाली शासक वत्सराज को प्रतिहार साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। इस वंश का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शासक विष्णुभक्त मिहिरभोज हुआ। उसने अपनी राजधानी कन्नौज बनाई थी। इसके बाद महेंद्रपाल प्रथम व महिपाल प्रथम इस वंश के प्रतापी एवं कुशल शासक हुये। बाद के शासक कमजोर होते गये। अतः गहड़वालों ने कन्नौज पर अधिकार कर गुर्जर प्रतिहार वंश का अंत कर दिया। कन्नौज में गहड़वाल वंश की स्थापना चंद्रदेव ने की। गोविंदचंद्र गहड़वाल वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था परंतु इस वंश का अंतिम शक्तिशाली शासक जयचंद था। 1194 ई. में चंदावर के युद्ध में मुहम्मद गौरी ने जयचंद को पराजित करके उसकी हत्या कर दी थी। गुप्तोत्तरकाल में 7वीं शताब्दी में वासुदेव के द्वारा सांभर एवं अजमेर के निकट चौहान राज्य की स्थापना की। इस वंश का प्रसिद्ध शासक विग्रहराज चतुर्थ अथवा वीसलदेव हुआ जो विजेता होने के साथ–साथ यशस्वी कवि और लेखक भी था। उसने हरिकेल नामक एक संस्कृत नाटक की रचना की। इस वंश का सर्वाधिक प्रतापी राजा पृथ्वीराज चौहान था। राय पिथौरा के नाम से प्रसिद्ध पृथ्वीराज चौहान ने अजमेर से दिल्ली तक अपने राज्य का विस्तार किया। तराइन के प्रथम युद्ध 1191 ई. में पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद गौरी को पराजित किया परंतु तराइन के द्वितीय युद्ध 1192 ई. में मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज चौहान को पराजित कर बंदी बना लिया और अंत में उसकी

हत्या कर दी। पृथ्वीराज चौहान के प्रसिद्ध दरबारी कवि चंदबरदाई ने 'पृथ्वीराज रासो' की रचना की। इनके ही एक और दरबारी कवि जयानक ने पृथ्वीराज विजय नामक संस्कृत काव्य रचना की। अंततः मुहम्मद गौरी का गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली तथा अजमेर पर आक्रमण करके चौहानों की सत्ता को समाप्त कर दिया।

आज के उत्तरप्रदेश के बुंदेलखं डमें 9वीं शताब्दी में जेजाकमुक्ति के चंदेलवंश की स्थापना नन्नुक ने की थी। उसकी राजधानी खुजराहो थी। इस वंश के प्रसिद्ध शासक यशोवर्मन ने खजुराहों के प्रसिद्ध विष्णु मंदिर का निर्माण करवाया। चंदेल वंश का अंतिम शक्तिशाली शासक परमदिदेव अथवा परमल था। 1182 ई. में पृथ्वीराज ने उसे पराजित कर महोब पर तथा 1203 ई. में कुतुबद्दीन ऐबक ने कालिंजर पर अधिकार कर लिया। अंततः 1305 ई. में चंदेल राज्य दिल्ली में मिल गया। 9वीं शताब्दी के प्रारंभ में उपेंद्र अथवा कृष्णराज द्वारा मालव के परमार वंश की स्थापना की गयी। इस वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक विद्या व कला का संरक्षक कविराज राजा भोज हुये। कविराज भोज ने अपनी राजधानी धारा नगरी में स्थापित की।

गुजरात (अन्हिलवाड़) का चालुक्य अथा सोलंकी वंश का संस्थापक मूलराज प्रथम था। इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक भीम प्रथम हुआ जिसके एक सांमंत विमलशाह ने माउंट आबू पर प्रसिद्ध दिलवाड़ा के जैन मंदिर का निर्माण करवाया।

8वीं शताब्दी के प्रारंभ में राष्ट्रकूट वंश की स्थापना दंतिदुर्ग ने की। उसने महाराष्ट्र में मान्यरवेत या माल्यखंड को अपनी राजधानी बनाई। इस वंश का प्रसिद्ध शासक कृष्ण प्रथम हुआ जिसने ऐलोरा में सुप्रसिद्ध कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण करवाया। इसके बाद ध्रुव, गोविंद तृतीय, अमोघवर्ष, कृष्ण द्वितीय, इन्द्र तृतीय, कृष्ण तृतीय प्रसिद्ध शासक हुये। अंततः कल्याणी के चालुक्य वंश ने इस वंश को समाप्त कर चालुक्य वंश की नींव डाली।

गुप्तोत्तरकालीन कश्मीर के हिंदू राज्य के संबंध में जानकारी कल्हण की राजतरंगिणी से प्राप्त होती है। इससे प्राप्त विवरण के अनुसार कश्मीर पर तीन वंशों 7 कार्कोट वंश, उतपल वंश, लोहार वंश ने राज किया। सातवीं शताब्दी में दुर्लभवर्धन ने कश्मीर में कार्कोट वंश की स्थापना की थी। इस वंश का

सर्वाधिक शक्तिशाली शासक लनितादिव्य मुक्तापीड था। उसने कश्मीर में मार्तण्ड मंदिर का निर्माण करवाया था। कार्कोट वंश के अंतिम शासक जयापीड की मृत्यु के बाद 810 ई. में अंवतिवर्मन ने उत्पला वंश की स्थापना की थी। इस वंश की महत्त्वपूर्ण शासिका रानी दिद्दा हुई जिसकी मृत्यु के बाद संग्रामराज ने लोहार वंश की नींव डाली। इस वंश का प्रसिद्ध शासक विद्वान, कवि हर्ष हुआ जिसके आश्रित कवि हर्ष थे जिसने अपनी रचना राजतंरगिणी में कश्मीर के इतिहास का वर्णन किया। लोहार वंश का अंतिम शासक जयसिंह था। इसके बाद कश्मीर 1339 ई. में तुर्कों के कब्जे में आ गया।

गुप्तोत्तरकाल में इन राजवंशों के अलावा बंगाल के प्रसिद्ध गौड़ वंश हुआ। इस वंश का सबसे प्रतापी राजा शशांक था जो ब्राह्मण धर्म के शैव संप्रदाय का अनुयायी था और बौद्ध धर्म का कट्टर शत्रु था। ऐतिहासिक मान्यता के अनुसार शशांक ने बोधिवृक्ष को कटवाकर उसकी जड़ों में आग लगवा दी।

गुजरात के वल्लभी में भट्टारक ने मैत्रक वंश की स्थापना की थी। इस वंश के शासक गुप्तों के सामंत थे। इन्होंने अपनी राजधानी वल्लभी को बनाया। इस वंश का प्रसिद्ध शासक शिलादित्य ने साम्राज्य को मालवा (मध्यप्रदेश) व राज्यस्थान तक फैला दिया। गुप्तोत्तरकाल में वल्लभी बौद्ध धर्म एवं शिक्षा का प्रसिद्ध केंद्र था।

कलचुरि वंश जो संमवतः चंद्रवंशी क्षत्रिय थे की स्थापना कोकल्ल प्रथम ने की थी। उसने त्रिपुरी को अपनी राजधानी बनाया था। इस वंश के प्रतापी राजा गांगेय देव हुआ जिसने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की थी।

आधुनिक ओडीशा राज्य में इस काल में अंनतवर्मा चोडगंग ने पूर्वी गंग वंश की स्थापना की थी। पूर्वी गंग वंश के शासक धर्म एवं कला के महान संरक्षक थे। इस वंश के शासकों ने ही पुरी के प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर व विश्वविख्यात कोणार्क के सूर्य मंदिर का निर्माण करवाये। दक्षिण भारत के कल्याणी के चालुक्य के सामंत रहे प्रोल द्वितीय ने काकलीय वंश की नींव डाली। यह राज्य गोदावरी और कृष्णा नदियों के बीच स्थित था। इस वंश के प्रथम शासक रूद्र प्रथम ने वारंगल को काकलीय राज्य की राजधानी बनाया। गुप्तोत्तरकाल में कला एवं स्थापत्य की उन्नति के लिए विख्यात होयसल वंश की स्थापना चालुक्य राज्य को जीतकर विष्णुवर्धन ने की थी। उसने द्वारसमुद्र (आधुनिक हलेबिड) को अपनी

राजधानी बनाया। विष्णुवर्धन के काल में ही बना होयसलेश्वर का प्राचीन मंदिर सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इस वंश का अंतिम शासक वीर बल्लाल तृतीय था।

कन्नौज के भौखरि वंश जिनमें हरिवर्मा, ईशानवर्मा, सर्ववर्मा, गृहवर्मन जैसे शासक हुये। वर्धन वंश के प्रमुख शासक प्रभाकरवर्धन ने अपनी पुत्री राज्यश्री का विवाह कन्नौज के मोखरि वंश के शासक गृहवर्मन के साथ की थी। गुप्तोत्तरकाल में दक्षिण भारत में चालुक्य वंश की कई शाखायें प्रसिद्ध रहीं। इनमें वातापि या बादामी का चालुक्य जिसका प्रसिद्ध शासक पुलकेशिन द्वितीय हुआ जिसने नर्मदा नदी के तट पर हर्षवर्धन को पराजित किया था।

चालुक्यों की एक शाखा कल्याणी के चालुक्य थे जिसका संस्थापक तैलप द्वितीय था। इस वंश का सर्वाधिक महान एवं प्रतापी राजा विक्रमादित्य VI था। विक्रमांकदेवचरित का रचनाकार कश्मीरी कवि विल्हण उसके दरबार की शोभा बढ़ाते थे। विक्रमादित्य VI के काल में ही हिन्दू विधि की पुस्तक 'मिताक्षरा' की रचना विज्ञानेश्वर ने की थी। विक्रमादित्य VI ने ही 1076 ई. में चालुक्य विक्रम संवत् चलाया।

चालुक्य की एक ओर शाखा वेंगी के चालुक्य की स्थापना विष्णुवर्धन के द्वारा की गयी थी। चालुक्य के इस शाखा की राजधानी वेंगी थी। इस कारण इसे वेंगी के चालुक्य के नाम से जानते हैं। इस वंश में कई शासक हुए बाद में चोलों ने इसे अपने राज्य में मिला लिया।

1-3-3 i";Hkfr o'k **(Pushyabhuti)**

गुप्त वंश के पतन के बाद उत्तर भारत के राजवंशों में सर्वाधिक शक्तिशाली व महत्त्वपूर्ण थानेश्वर का पुष्यभूति वंश हुआ। इतिहास में यह वंश वर्धन वंश के नाम से प्रसिद्ध है। इस वंश का संस्थापक पुष्यभूति को माना जाता है। इस वंश के प्रसिद्ध शासकों में नरवर्धन, आदित्यवर्धन, प्रभाकरवर्धन व हर्षवर्धन का नाम आता है। हर्षवर्धन इस वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक हुआ। हर्षवर्धन ने अपनी विजयों के द्वारा इस साम्राज्य का विस्तार किया। उसने अपनी राजधानी थानेश्वर से आगे बढ़ाकर उत्तर भारत के राजनीति का प्रमुख केंद्र कन्नौज में स्थापित की थी। अपने भाई राज्यवर्धन की मृत्यु के बाद 606 ई. में हर्षवर्धन थानेश्वर की गद्दी पर बैठा। उसका कार्यकाल 606–647 ई. तक रहा। इसके काल में आ

चीनी यात्री ह्वेनसांग ने हर्षवर्धन को शिलादितय के नाम से संबांधित किया है। चीनी यात्री ह्वेनसांग व हर्ष के दरबारी कवि बाणभट्ट द्वारा रचित हर्षचरित से हर्षवर्धन के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। इतिहास में ह्वेनसांग 'यात्रियों का राजकुमार' तथा 'वर्तमान शाक्यमुनि' के नाम से प्रसिद्ध है।

वर्धन वंश के इस विजेता व कुशल प्रबंधक शासक ने अपने सुंदर नीतियों के द्वारा उत्तर भारत के विशाल भू–भाग को अपने साम्राज्य के अंतर्गत संगठित किया। हर्षवर्धन के परममाहेश्वर, परमभट्टारक, महाराजाधिराज आदि उपाधियों से पता चलता है कि उसका साम्राज्य सामंती संगठन पर आधारित था।

हर्षवर्धन ने बंगाल के गौड़ शासक शशांक को पराजित कर कन्नौज पर अधिकार कर लिया। ह्वेनसांग के विवरण से पता चलता है कि हर्ष ने उत्तरी भारत के पाँच राज्यों – पंजाब, कन्नौज, बंगाल के गौड़, मिथिला व उड़ीसा को अपने अधीन किया। पश्चिम में गुजरात में वल्लभी के शासक ध्रुवसेन द्वितीय से अपनी पुत्री का विवाह कर शत्रुता को समाप्त किया व मैत्री संबंध स्थापित किये।

ऐहोल प्रशस्ति से पता चलता है कि हर्ष एवं पुलकेशिन द्वितीय के बीच नर्मदा नदी के तट पर युद्ध हुआ जिसमें हर्ष की पराजय हुई। पुलकेशिन द्वितीय वालापि या बादामी के चालुक्य वंश का प्रतापी शासक था। हर्ष ने उत्तर भारत में अपने कश्मीर अभियान के बाद दक्षिण अभियान को प्रारंभ किया। दक्षिण अभियान के अंतर्गत हर्ष के नर्मदा नदी के दक्षिण में कुंतल, चोल और काँची को अपने अधीन कर लिया। इस प्रकार ऐतिहासिक साक्ष्यों से पता चलता है कि हर्ष के साम्राज्य के प्रायः सम्पूर्ण उत्तर भारत सम्मिलित था। यह उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तथा विंध्य पर्वत तक पूर्व में ब्रह्मपुत्र से पश्चिम में सौराष्ट्र एवं काठियावाड़ तक विस्तृत था। 647 ई. में हर्ष की मृत्यु के बाद पुनः उत्तर भारत में अराजक स्थिति उत्पन्न हो गई।

हर्षवर्धन के प्रशासनिक, सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक संदर्भों की जानकारी बाणभट्ट द्वारा रचित हर्षचरित व चीनी यात्री ह्वेनसांग के विवरण से प्राप्त होती है।

प्रशासनिक सुविधा के दृष्टिकोण से राज्य को ग्राम, विषय, भुक्ति व राष्ट्र में बांटा गया था। प्रांत को भुक्ति कहते थे जबकि जिले को विषय के द्वारा सूचित किया जाता था। शासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी। हर्ष की सेना में पैदल, घुड़सवार, रथ और हाथी की टुकड़ियाँ शामिल थीं। इसीलिए ह्वेनसांग

हर्ष की सेना को चतुरंगिणी नाम से पुकारता था। राजा को राज–काज में सहायता देने के लिये एक मंत्रिपरिषद की व्यवस्था थी। मंत्री को सचिव या अमात्य कहा जाता था। भंडि हर्षवर्धन का प्रधान सचिव था। हर्ष के काल में अंवती निदेश सचिव था जिसे महासंधिविग्रहक के नाम से संबोधित किया जाता था। सिंहनाद उसका प्रधान सेनापति था। अश्वारोही सेना का सर्वोच्च अधिकारी कुंतला था तथा गज सेना का प्रधान स्कंदगुप्त था।

न्याय करने का अधिकार अंतिम रूप से सम्राट या राजा का होता था। ह्वेनसांग का विवरण यह बताता है कि राज्य में कानून व्यवस्था अच्छी नहीं थी। राज्य में अपराध के लिए कठोर दंड का प्रावधान था।

इस काल में राज्य की आय का स्त्रोत मुख्य रूप से भूमि से ही होती थी। उपज का छठा भाग (1/6 भाग) राजस्व के रूप में वसूल किया जाता था। कर वसूलने वाले अधिकारी भौगिक तथा जमीन का हिसाब रखने वाला पदाधिकारी पुस्तपाल था। इस वंश के प्रांरभिक शासक ब्राह्मण धर्म में विश्वास रखने वाले शिव व सूर्य के अनन्य उपासक थे। प्रारंभ में हर्ष भी अपने पूर्वजों की भांति शिव व सूर्य की उपासना में विश्वास व्यक्त करता रहा। परंतु ह्वेनसांग के संपर्क में आकर हर्ष ने बौद्ध धर्म की महायान शाखा को सरंक्षण प्रदान किया और पूर्णतः बौद्ध बन गया। गुप्तोत्तरकालीन भारत में हर्ष के समय में नालंदा विश्वविद्यालय बौद्ध धर्म की शिक्षा विशेषकर महायान बौद्ध धर्म की शिक्षा का मुख्य केंद्र बन गया था जहां दक्षिण एशिया के भिन्न–भिन्न देशों से शिक्षार्थी अध्ययन को आते थे। यद्यपि हर्ष ने अपनी आस्था बौद्ध धर्म की महायान शाखा के प्रति व्यक्त किया था तथापि वह अन्य धर्मों के सहिष्णुता का भव दिखाते हुए फलने–फूलने का अवसर प्रदान किया। हर्ष ने कन्नौज तथा प्रयाग में दो विशाल धार्मिक सभाओं का आयोजन किया था।

हर्षवर्धन ने अपने काल में शिक्षा व साहित्य की उन्नति के लिए विद्वानों को सरंक्षण प्रदान किया तथा शिक्षण–संस्थानों को अनुदान दिये। हर्षवर्धन का प्रमुख दरबारी कवि बाणभट्ट था। बाणभट्ट की प्रमुख रचनाएं हैं – हर्षचरित व कादंबरी।

इसी के काल में मयूर नामक प्रसिद्ध विद्वान ने सूर्यशतक नामक ग्रंथ लिखे। हर्षवर्धन के समय में ही कालीदास व भास के समान विद्वता रखने वाले विद्वान – जयसेन हुए थे।

हर्षवर्धन स्वयं विद्याप्रेमी थे व लेखन में रूचि रखनेवाला था। उसने स्वयं तीन नाटकों – प्रियदर्शिका, रत्नावली, नागानंद की रचना की थी।

ह्वेनसांग के विवरण से पता चलता है कि हर्षकालीन समाज चार वर्णों – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र के रूप में विभाजित था। इसके अतिरिक्त अन्य जातियों एवं उपजातियों का अस्तित्व था। समाज के सबसे प्रतिष्ठित वर्ग में ब्राह्मणों की गिनती होती थी। हर्ष के काल में वैश्य एवं शूद्र सत्ता के केंद्र में थे। अंतर्जातीय विवाह की मौजूदगी समाज में थी। इस काल में सती प्रथा जैसी कुप्रथा का भी प्रचलन था। हर्ष के काल में अछूत मानी जानी वाली जातियां नगरों एवं गावों से बाहर निवास करती थी।

जीविका का मुख्य आधार कृषि थी। कृषि के अतिरिक्त आजीविका के लिए व्यापार, वाणिज्य, व्यवसाय व उद्योग–धंधे भी मौजूद थे। व्यवसायियों की अलग–अलग श्रेणियां थी। इस काल में थानेश्वर, उज्जयिनी तथा कन्नौज व्यापार के प्रमुख केंद्र थे। आंतरिक व बाह्य दोनों प्रकार के व्यापार होते थे। बाह्य व्यापार जलमार्ग से होता था। पूर्वी भारत में ताम्रलिखित तथा पश्चिमी भारत में भड़ौच प्रमुख बंदरगाह थे।

इस प्रकार ऐतिहासिक विवरणों से प्राप्त जानकारी के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि हर्षवर्धन एक महान् विजेता कुशल प्रशासक, सहिष्णु व विद्वान शासक था। उसने अपने शासनकाल में शिक्षा तथा साहित्य की उन्नति के लिए समृद्ध वातावरण का निर्माण किया तथा सभी धर्मों के प्रति सहनशीलता का भाव अपनाया था।

1-4 v/;k; d: vkx: dk e|[; Hkkx **(Further Main Body of Text)**

1-4-1 pkyD; o'k **(The Chalukys)**

गुप्तोत्तरकाल में दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य में छठी शताब्दी के मध्य से लेकर आठवीं शताब्दी के मध्य तक चालुक्य वंश की जिस शाखा ने राज किया उसका जन्मस्थल वातापी (आधुनिक बादामी) होने के कारण इतिहास में इसे वातापी बादामी के चालुक्य के नाम से जाना जाता है। इस चालुक्य वंश की नींव जयसिंह और उसके पुत्र रणराग ने रखी। परंतु वास्तव में इस वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक पुलकेशिन प्रथम हुआ। उसने हिरण्यगर्भ, अश्वमेघ, अग्निष्टोम, बाजपेय आदि कई यज्ञों के आयोजन

किये तथा महाराजा, सत्याश्रय, श्री पृथ्वीवल्लभ आदि उपाधियां धारण की। इस कारण पुलकेशिन प्रथम को वातापी/बादामी के चालुक्य राजवंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। पुलकेशिन प्रथम के बाद उसका पुत्र कीर्तिवर्मन प्रथम लगभग 566–67 ई. में ग□द्दी पर बैठा। इसने कई लड़ाइयों में विजय प्राप्त करके साम्राज्य का विस्तार किया। कीर्तिवर्मन की मृत्यु के समय उसका पुत्र अल्पवयस्क था इसलिए कीर्तिवर्मन प्रथम का भाई भंगलेश और उसके बाद पुलकेशिन द्वितीय शासक बना। पुलकेशिन द्वितीय (609–642 ई.) चालुक्य वंश के शासकों में सर्वाधिक प्रतापी शासक हुआ। वातापी के चालुक्यों के बारे में हमें पर्याप्त व प्रामाणिक जानकारी पुलकेशिन द्वितीय के ही ऐहोल अभिलेख से प्राप्त होती है। एक प्रशस्ति के रूप में ऐहोल अभिलेख की रचना पुलकेशिन द्वितीय के दरबारी कवि रविकीर्ति ने की थी। इसी अभिलेख से पता चलता है कि नर्मदा नदी के तट पर पुलकेशिन द्वितीय का हर्ष से युद्ध हुआ था। इस युद्ध में पुलकेशिन द्वितीय ने हर्ष को पराजित किया। इस युद्ध में विजयी होने के बाद हर्ष ने परमेश्वर की उपाधि धारण की। उसने अपने सैन्य अभियान के अंतर्गत कदम्बों की राजधानी बनवासी पर आक्रमण कर उस पर विजय प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त पुलकेशिन द्वितीय ने गंग राज्य, कोंकण राज्य, लाट राज्य, मालवा राज्य एवं गुर्जर राज्य पर विजय प्राप्त की। पुलकेशिन द्वितीय वातापी के चालुक्य शासकों में सर्वाधिक पराक्रमी एवं महान था। उसने दक्षिणापथेश्वर की उपाधि धारण की थी। इसके अलावा अपने पूर्वजों से चली आ रही उपाधि श्री पृथ्वी वल्लभ, सत्याश्रय, भट्टारक तथा महाराजाधिराज की उपाधि भी उसने धारण की थी।

अभिलेखों से प्रापत साक्ष्य के आधार पर यह पता चलता है कि पल्लव वंश के शासक नरसिंहवर्मन प्रथम ने पुलकेशिन द्वितीय को परास्त कर उसकी राजधानी बादामी पर अधिकार कर लिया। इस विजय के बाद ही नरसिंह वर्मन ने 'वातापिकोंड' की उपाधि धारण की। पुलकेशिन द्वितीय के मृत्यु के बाद के शासक कमजोर साबित हुए और वे अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित साम्राज्य को कायम रखने में समर्थ न हो सके। अंततः दंतिदुर्ग ने इस वंश को समाप्त करके राष्ट्रकूट वंश की नींव डाली।

दक्षिण भारत में चालुक्यों की मुख्य शाखा के रूप में बादामी के चालुक्य वंश ही प्रमुख रहा किंतु चालुक्यों की कुछ छोटी शाखायें भी थीं। जिनमें कल्याणी के चालुक्य वंश की स्थापना अंतिम राष्ट्रकूट

नरेश कर्क को परास्त करके तैल अथवा तैलय द्वितीय ने की थी। इसे पश्चिमी चालुक्य के नाम से भी जाना जाता है। इस वंश का सर्वाधिक महान एवं प्रतापी शासक विक्रमादित्य VI था। विक्रमांकदेवरचित के रचनाकार प्रसिद्ध कवि विल्हण विक्रमादित्य VI के दरबार की शोभा बढ़ाते थे। हिन्दू विधि की पुस्तक 'मिताक्षरा' के रचनाकार विज्ञानेश्वर भी विक्रमादित्य VI के काल में ही हुए। कल्याणी के चालुक्य के इस महान शासक ने 1076 ई. में चालुक्य विक्रम संवत् की स्थापना की।

दक्षिण भारत में चालुक्य की एक ओर शाखा वेंगी के चालुक्य की स्थापना विष्णुवर्धन ने की थी। इसने कृष्णा एवं गोदावरी डेल्टा क्षेत्र में स्थित वेंगी को अपनी राजधानी बनाया था इसलिए इसे वेंगी के चालुक्य के नाम से जानते हैं। इतिहास में वेंगी के चालुक्य का कोई विशेष स्थान नहीं है। बाद में चालुक्य की इस शाखा को दक्षिण भारत का शक्तिशाली वंश चोल साम्राज्य में मिला लिया गया।

दसवीं सदी के अंत में मूलराज प्रथम ने गुजरात में जिस चालुक्य वंश की स्थापना की उसे गुजरात का चालुक्य अथवा सोलंकी वंश के नाम से जानते हैं। उसने गुजरात स्थित अन्हिनवाड़ को अपनी राजधानी बनाया। इसलिए इसे अन्हिलवाड़ का चालुक्य के नाम से भी जानते हैं। मूलराज प्रथम ने 942 से 995 ई. तक शासन किया। यह राज्य पश्चिमी भारत के एक महान शक्तिशाली राज्य के रूप में प्रसिद्ध है। इस राज्य की सीमा के अंदर गुजरात, सौराष्ट्र, मालवा, आबू, नदौला व कोकण क्षेत्र स्थित थे। मूलराज के बाद चामुंडराज, दुर्लभराज अन्हिलवाड़ के शासक रहे किंतु दुर्लभराज के भतीजे भीम प्रथम इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था। भीम प्रथम ने 1022 से 1064 ई. तक राज किया। भीम प्रथम के शासनकाल में ही 1025–26 ई. में महमूद गजनवी ने सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण किया और लूट–पाट की। इस सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण भीम प्रथम के द्वारा ही करवाया गया था। भीम प्रथम के सामंत विमल शाह ने ही माउंटआबू में दिलवाड़ा का प्रसिद्ध जैन मंदिर बनवाया था। भीम प्रथम के बाद उसका पुत्र कर्ण ने शासन किया। कर्ण के पुत्र एवं उत्तराधिकारी जयसिंह ने सिद्धराज की उपाधि धारण कर शासन किया। जयसिंह सिद्धराज सौलंकी वंश का सर्वाधिक योग्य एवं प्रतापी शासक था। उसने अपने पराक्रम के द्वारा राज्य की सीमा का विस्तार किया। प्रसिद्ध जैनाचार्य हेमचन्द सिद्धराज के दरबार की शोभा बढ़ाते थे।

जयसिंह सिद्धराज के बाद कुमारपाल इस वंश का शासक हुआ। परंतु इस वंश का प्रसिद्ध शासक मूलराज द्वितीय ने 1178 ई. में आबू पर्वत के समीप मुहम्मद गौरी को परास्त किया था।

अंततः 1187 ई. में मुहम्मद गौरी का गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक ने गुजरात पर आक्रमण करके अन्हिलवाड़ पर अधिकार कर लिया।

1-4-2 x|IrkÙkjdky jktuhfrd 0;oLFkk **(Post Gupta period Polity)**

गुप्त वंश के बाद उत्तर भारत में राजनीतिक स्थिरता प्रदान करने वाला एकमात्र शासक हर्षवर्धन ही हुआ। जिसने उस समय के महत्त्वपूर्ण राजनीतिक केन्द्र कन्नौज पर अधिकार करके उसे अपनी राजधानी बनायी। हर्ष ने अपनी विजयों व कुशल प्रबंधन के द्वारा अपने साम्राज्य का विस्तार किया व सुव्यवस्थित राजनीति प्रणाली कायम की। दक्षिण भारत में 550 से 750 ई. के बीच गुप्तोत्तर काल में राजनीतिक रूप से दो महत्त्वपूर्ण वंश कांची के पल्लव वंश एवं बादामी/वातापी के चालुक्य वंश शासन में थे। इन वंश के शासकों ने सुव्यवस्थित शासन प्रणाली, कुश व सैन्य प्रबंधन द्वारा सैनिक अभियान चलाकर व केवल साम्राज्य का विस्तार किया बल्कि राज्य में व्यवस्था भी कायम किया। इस कारण इनके राज्य में शिक्षा, कला, संस्कृति व आर्थिक उन्नति देखने को मिलती है। पल्लव वंश वाले सातवाहनों के सामंत थे। जिन्होंने बाद में स्वतंत्र पल्लव राज्य की स्थापना सिंहविष्णु इस वंश का संस्थापक था। इसने कांचीपुरम को अपनी राजधानी बनायी। इस वंश में अनेक प्रसिद्ध शासक – महेंद्रवर्मन प्रथम, नरसिंहवर्मन प्रथम, महेंद्रवर्मन द्वितीय, परमेश्वरवर्मन प्रथम, नरसिंहवर्मन द्वितीय, परमेश्वरवर्मन द्वितीय, नंदिवर्मन द्वितीय हुए। पल्लव शासक नरसिंहवर्मन प्रथम के समय में चीनी यात्री ह्वेनसांग कांचीपुरम की यात्रा की थी। उसने पल्लव शासन की प्रशंसा करते हुए लिखा कि कांची के लोग उत्साही, सत्यवादी और विद्याप्रेमी थे। नरसिंहवर्मन प्रथम ने वातापी के शासक पुलकेशिन द्वितीय को पराजित करके वातापीकोण्ड की उपाधि धारण की।

पल्लव वंशी प्रसिद्ध शासक नरसिंहवर्मन द्वितीय ने सुव्यवस्थित शासन प्रणाली के कारण ही राज्य में मंदिर का निर्माण हुआ विद्वानों को संरक्षण प्राप्त हुआ। इस वंश के शासकों ने ब्राह्मणों को विद्वानों को व मंदिरों को शिक्षा व कला संस्कृति को बढ़ावा देने के लिये अनुदान देने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

पल्लव वंश के बाद इनके सामंत रहे चोलों ने जब पल्लवों के अवशेष पर विशाल चोल साम्राज्य की स्थापना की तो इस वंश के शासकों ने गुप्तोत्तरकालीन दक्षिण भारत में सुव्यवस्थित शासन प्रणाली देने वाले राज्य के रूप में प्रसिद्ध हुआ। चोलों का इतिहास मुख्यतः अभिलेखों से जाना जाता है। विजयालय ने चोल साम्राज्य की स्थापना की और तंजौर पर अधिकार करके उसे अपनी राजधानी के रूप में स्थाापित किया। ऐतिहासिक प्रशस्ति को लिखवाने वाले के रूप में प्रसिद्ध शासक राजराज प्रथम का पुत्र राजेंद्र प्रथम दक्षिण से उत्तर तक अभियान चलाकर पाल शासक महिपाल को विजित किया तथा इस अवसर पर उसके गंगैकोण्ड चोल पुरम् नामक नई राजधानी की स्थापना की और गंगैकोंडचोल की उपाधि धारण की।

पल्लव वंशी प्रसिद्ध शासक नरसिंहवर्मन द्वितीय के सुव्यवस्थित शासन प्रणाली के कारण ही राज्य में मंदिर का निर्माण हुआ। विद्वानों को सरंक्षण प्राप्त हुआ। इस वंश के शासकों ने ब्राह्मणों को विद्वानों को व मंदिरों को शिक्षा व कला संस्कृति को बढ़ावा देने के लिये अनुदान देने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

पल्लव वंश के बाद इनके सामंत रहे चोलों ने जब पल्लवों के अवशेष पर विशाल चोल साम्राज्य की स्थापना की तो इस वंश के शासकों ने गुप्तोत्तरकालीन दक्षिण भारत में सुव्यवस्थित शासन प्रणाली देने वाले राज्य के रूप में प्रसिद्ध हुआ। चोलों का इतिहास मुख्यतः अभिलेखों से जाना जाता है। विजयालय ने चोल साम्राज्य की स्थापना की और तंजौर पर अधिकार करके उसे अपनी राजधानी के रूप में स्थापित किया। ऐतिहासिक प्रशस्ति को लिखवाने वाले के रूप में प्रसिद्ध शासक राजराज प्रथम का पुत्र राजेंद्र प्रथम दक्षिण से उत्तर तक अभियान चलाकर पाल शासक महिपाल को विजित किया तथा इस अवसर पर उसके गंगैकोण्ड चोलपुरम् नामक नई राजधानी की स्थापना की और गंगैकोंडचोल की उपाधि धारण की। चोल साम्राजय 200 से भी अधिक वर्षों तक दक्षिण भारत में कायम रहा। इतिहास में चोलकालीन शासन व्यवस्था गुप्तोत्तरकाल मे ंएक विशिष्ट शासन व्यवस्था के निर्माण के लिए प्रसिद्ध था, जिसमें मजबूत केंद्रीय नियंत्रण के साथ ही विकेंद्रीकरण की नीति पर आधारित स्थानीय स्वायत्तता थी। मजबूत ग्राम पंचायत व्यवस्था इतिहास में चोलों की बहुत प्रसिद्ध थी जो ग्रामीण कल्याण में स्वतंत्र रूप से महत्त्वपूर्ण निर्णय लेती थी।

इन्होंने शासन की सुविधा के दृष्टिकोण से सम्पूर्ण साम्राज्य को प्रांत से गाँव तक विभाजित किया था। विपरीत परिस्थितियों में राज्य की ओर से जनता को करों में छूट दी जाती थी। राज्य प्रशासन की ओर से शिक्षा केंद्रों को अनुदान दिये जाते थे। मंदिर शिक्षा केंद्र के रूप में कार्य करते थे। चोलों के समय में स्थानीय स्वशासन अपने सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा, यद्यपि यह व्यवस्था पल्लव, पांड्य के समय से ही चला आ रहा था।

चोल काल में गाँवों के कल्याण के सभा व समिति विशिष्ट तरीके से कार्य करती थी। इस प्रकार गुप्तोत्तरकाल में दक्षिण भारत में चोलकालीन शासन व्यवस्था सुव्यवस्थित रूप से कार्य करती थी।

गुप्तोत्तरकाल में अरबों का भारत के सिंध पर 712 ई. के आक्रमण का मूल्यांकन करते समय यद्यपि इसे एक घटना मानकर ही छोड़ देते हैं और ऐसा कहा जाता है कि इसका कोई स्थायी प्रभाव सिंध व भारत के अन्य भागों पर नहीं पड़ा। परंतु जब इसके दीर्घकालीन परिणामों र चिंतन करते हैं तो हम पाते हैं कि अरबों ने भारतीय जनजीवन को काफी प्रभावित किया और स्वयं भी प्रभावित हुए।

हर्ष की मृत्यु के बाद 7वीं से 12वीं शताब्दी के बीच जिन महान शक्तियों का उदय हुआ उनमें अधिकांश राजपूत थे। इस कारण 7वीं से 12वीं शताब्दी के बीच के काल को राजपूत काल के नाम से जाना जाता है। यद्यपि राजपूतों की उत्पत्ति के विषय में एकरूपता का अभाव है। फिर भी चंदबरदाई की पृथ्वीराज रासों में वर्णित अग्निकुंड से उत्पन्न राजपूतों में – गुर्जर प्रतिहार, चालुक्य, चौहान, परमार, गहड़वाल आदि प्रमुख थे।

गुप्तोत्तरकाल में हर्ष की मृत्यु के बाद कन्नौज राजनीति का प्रमुख केन्द्र बनकर उभरा। इस पर अधिकार को लेकर उस काल की प्रमुख शक्तियों के बीच संघर्ष आरंभ हो गया। इसको लेकर तीन पक्षों – प्रतिहार, पाल व राष्ट्रकूट शासक के बीच इतिहास प्रसिद्ध संघर्ष आरंभ हुआ जिसे त्रिपक्षीय संघर्ष के नाम से जानते हैं। इस त्रिपक्षीय संघर्ष की पहल करने वाला प्रतिहार वंश का शासक ही हुआ और अंतिम रूप से कन्नौज पर शासन करने वाला भी प्रतिहार वंश का शासक ही हुआ। यह त्रिपक्षीय संघर्ष इन तीनों वंशों के आने वाले शासकों के बीच 200 वर्षों तक जारी रहा।

इस प्रकार गुप्तोत्तरकालीन भारत की राजनीतिक स्थिति के महत्त्वपूर्ण पहलू थे –

दक्षिण भारत में चालुक्यों व पल्लवों का राजनीतिक परिदृश्य, अरबों का सिंध पर आक्रमण एवं उसके भारतीय जन–जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव जिसने यहाँ की राजनीतिक स्थिति को भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर प्रभावित किया।

इसके अलावा 7वीं से 12वीं शताब्दी के बीच राजपूतों की उत्पत्ति गुप्तोत्तरकालीन राजनीतिक स्थिति का बहुत महत्त्वपूर्ण पहलू है। प्रतिहार, पाल व राष्ट्रकूट के बीच 200 से भी अधिक वर्षों तक चलने वाले त्रिपक्षीय संघर्ष का राजनीतिक स्थिति पर विशेष प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। अंततः 9वीं शताब्दी के बाद उत्तरी एवं दक्षिणी भारत के कुछ क्षेत्रीय राज्यों का गुप्तोत्तरकालीन राजनीति पर प्रभाव देखने को मिलता है।

1-4-3 x|IrkÙkjdky vkfFkd 0;oLFkk **(Post Gupta period Economy)**

गुप्तोत्तरकालीन भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि की प्रधानता थी। उस काल में नीतिवाक्यामृत में धान्य संग्रह को अनेक प्रकार के संग्रहों में सबसे ऊपर बताया गया है। अनेक प्रकार के अनाजो की सूची जो उस काल में उगाये जाते हैं इनका वर्णन अभिधानरत्नमाला में किया गया है। इस समय उत्कृष्ट किस्म के चावल के लिए मगध और कलिंग प्रसिद्ध थे। जबकि कश्मीर में फलों के अतिरिक्त अदरक, मसालों व ईख की खेती की जाती थी। भूमि को उत्पादकता के आधार पर चिन्हित किया गया था। बोयी गयी भूमि को 'वहीत कहते थे जबकि जिस भूमि में खेती न की गयी हो उसे अकृष्ट नाम से जानते थे। वे भूमि जिनमें बीज नहीं उग सकते थे उन्हें बंजय या इरिण भूमि के नाम से जानते थे। सिंचाई के साधन के रूप में झील, नहर, तालाब व रहट का प्रयोग किया जाता है। संस्कृत के ग्रंथों में रहट के लिए आरघट्ट शब्द का प्रयोग किया गया है। राहिल्य एवं कीरत नाम के जलाशय का निर्माण चन्देल राजाओं द्वारा जबकि मुंज व भोज नामक जलाशय परमार राजाओं द्वारा निर्मित कराये गये थे। इस काल की स्मृति ग्रंथों में आजीविका चलाने के लिए कृषि करने की अनुमति सभी वर्णों में दी गयी है। यद्यपि ह्वेनसांग आदि विदेशी लेखकों के विवरण से पता चलता है कि खेती करना शूद्रों का ही व्यवसाय था।

इतिहास में इस प्रकार का मत प्रचलति है कि गुप्तोत्तरकाल में ग्रामीण स्तर पर जरूरी चीजों को लेकर लोग आत्मनिर्भर हो गये थे इस कारण व्यापार की स्थिति अच्छी नहीं थी। अतिरिक्त उत्पादन का हिस्सा सामंत व जमींदार ले लेते थे इस कारण व्यापार के लिए अतिरिक्त उत्पादन का प्रोत्साहन नहीं था। किंतु ऐतिहासिक साक्ष्यों से पता चलता है कि देश के विभिन्न राज्यों में व्यापार होता रहता था। इसके अलावा स्थल और जल दोनों मार्गों से विदेशी व्यापार भी होते थे। इस समय बंगाल मलमल, सुपाड़ी तथा सन के लिए, कलिंग अच्छे धान की किस्म के लिए, मालवा गन्ना, अफीम एवं नील के लिए, द्वारा शंख तथा सीपी के लिए, गुजरात सूती कपड़े, नील एवं चमड़े द्वारा निर्मित वस्तुओं के लिए एवं दक्षिण भारत मोती कीमती पत्थर, चंदन, लवंग, काली मिर्च, इलायची आदि के लिए प्रसिद्ध था। गुप्तोत्तरकाल में देवल, खंभात, थाना, सोपारा पश्चिमी तट पर स्थित महत्वपूर्ण बंदरगाह थे। जबकि पूर्वी तट पर स्थित बंदरगाह थे – ताम्रलिप्ति, सप्तग्राम, पुरी, कलिंग आदि। मनुस्मृति के टीकाकार मेधातिथि, कुवलयमाला तथा कथासरित्सागर में उपलब्ध विवरणों के आधार पर पता चलता है कि व्यापारी क्रय–विक्रय हेतु एक नगर से दूसरे नगर को जाते थे। उत्तरापथ से घोड़े खरीदे जाने का विवरण कुवलयमाला से प्राप्त होता है। देश के विभिन्न भागों से आने वाले घोड़ों के क्रय–विक्रय करने वालों की गोष्ठी का वर्णन पेहोवा अभिलेख से प्राप्त होता है।

इस समय व्यापार अनेक मार्गों से होता था। अलबरूनी ने अपने वर्णन में उल्लिखित 15 मार्गों में प्रमुख थे – कन्नौज से प्रयोग के रास्ते ताम्रलिप्ति, ताम्रलिप्ति से कलिंग के रास्ते कांची तक। कन्नौज समस्त व्यापारिक मार्गों के केन्द्र में था जहाँ से विभिन्न दिशाओं के लिए रास्ते जैसे – कन्नौज से पानीपत, कन्नौज से कामरूप, कन्नौज से राजौरी एवं राजौरी के रास्ते बचना तक जाते थे।

इस काल में एक मजबूत केंद्रीय शक्ति के अभाव के कारण व्यापारी अपने आपको असुरक्षित महसूस करते थे। चोर डाकुओं का खतरा बना रहता था। इसके साथ ही छोटे–छोटे क्षेत्रीय राजा शासन कर रहे थे इसलिए एक राज्य से दूसरे राज्य में माल ले जाने पर भारी चुंगी अदा करनी पड़ती थी। गुप्तोत्तरकाल में व्यापार में कमी इन सब कारणों से थी। इस समय स्थल मार्ग की अपेक्षा नदी मार्ग से

होने वाला व्यापार अधिक सुरक्षित समझा जाता था। नदी मार्ग से व्यापार करने पर तरशुल्क देना पड़ता था और इस शुल्क को वसूल करने वाले को तारिक कहा जाता था।

गुप्तोत्तरकाल में विदेशी व्यापार पश्चिमी तथा पूर्वी देशों में स्थल एवं जल दोनों मार्गों से होता था। तिब्बत के रास्ते भारत का चीन से स्थल मार्ग द्वारा व्यापारिक संबंध होता था। अफगानिस्तान इस समय एक बड़े व्यापारिक केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध था। अरबों के आक्रमण के कारण भारत का पश्चिमी एशिया के साथ होने वाला व्यापार इस समय प्रभावित हुआ। अरब, तिब्बत व चीन में मध्य एशिया पर प्रभुत्व के लिए संघर्ष चल रहा था। 9वीं – 10वीं शताब्दी तक चीनियों का प्रभुत्व समुद्री व्यापार में बढ़ रहा था। इनकी जहाजें बड़ी होती थी। चीनियों द्वारा 11वीं शताब्दी में कुतुबनुमा के आविष्कार के कारण इन्हें समुद्री व्यापार में बड़ी सुविधा होने लगी। इस प्रकार पश्चिम एशिया से अवनति को प्राप्त भारत का व्यापार 10 वीं शताब्दी के बाद पश्चिमी देशों से बढ़ा। भारत के व्यापारी बसरा, सिराज व अदन तक जाते थे। फारस की खाड़ी में स्थित किश एवं होर्मुज स्थान को भारतीय निर्यात की वस्तुओं का बड़ा केन्द्र माना जाता था। दक्षिण भारत से निर्यात की गई वस्तुओं के बदले चीने से बड़ी मात्रा में सोना और चांदी भारत आता था। इस समय भारत विदेशों को चंदन की लकड़ी, भोजपत्र, हाथी दांत, जानवर की खाल, चंवर, रेशम, केशर, ऊनी कपड़े, इत्र आदि का निर्यात करता था। मध्य एशिया एवं पश्चिमी देशों से अच्छी किस्म के घोड़े का आयात करते थे। बसरा से अच्छी किस्म की शराब मंगाते थे। चीनांशुक नाम से रेशम चीन से आयात करते थे जबकि दक्षिण–पूर्वी एशिया के कीमती रत्न, कम्बोडिया से अगरू की लकड़ी आदि आयात करते थे। इस समय का सबसे महत्वपूर्ण उद्योग सूती वस्त्र उद्योग था। ह्वेनसांग ने कौशेय तथा क्षौम से निर्मित अनेक प्रकार के रेशमी एवं सूती वस्त्रों का उल्लेख किया है। पौधों के रेशे से निर्मित कपड़ा 'दुकूल' कहलाता था। बाणभट्ट की रचना हर्षचरित में लालांतुज, अंशुक एवं चीनांशुक जैसे अनेक प्रकार के वस्त्रों का उल्लेख मिलता है। अल इदरीसी ने मुल्तान को वस्त्र उद्योग का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र के रूप में बतलाया है। भड़ौच में निर्मित वस्त्र वरोज के नाम से प्रसिद्ध था जबकि खंबात के बने वस्त्र को खंबायात के नाम से पुकारते थे। विदेशों में भेजे जाने वाले वस्त्र को 'वुकरम कहते थे। ह्वेनसांग के विवरण से पता चलता है कि कश्मीर सफेद लिनन नाम के वस्त्र के लिए प्रसिद्ध था जबकि मध्य देश में बनने वाली चुनरी प्रसिद्ध थी। इस प्रकार समस्त उद्योगों में

सूती वस्त्र उद्योग शिखर पर था। इसके अलावा धातु निर्माण, हाथी दांत की कारीगरी, मिट्टी एवं चमड़े के समान के निर्माण का उद्योग भी प्रचलन में था। पूर्व काल से ही व्यापार को ठीक ढ़ंग से क्रियान्वित करने के लिए श्रेणी संगठन की व्यवस्था इस काल में भी मौजूद थी। समान व्यवसाय वाले लोगों के संगठन को श्रेणी तथा इसके मुखिया को महत्तक या माहर कहा जाता था। जातकों में प्राप्त विवरण के अनुसार श्रेणी के मुखिया जेदूक या फिर प्रमुख कहे जाते थे। वणिक लोगों की श्रेणी के मुखिया को श्रेष्ठि कहा जाता था। श्रेणियों द्वारा जमा की गयी स्थायी पूँजी को अक्षयनीवी कहा जाता था।

गुप्तोत्तरकाल में कुषाण एवं गुप्त काल की तुलना में सिक्के बहुत कम मिले है। जो सिक्के प्राप्त हुए हैं उनके वजन बहुत कम हैं तथा इनमें मौलिकता तथा कलात्मकता का अभाव है। इससे यह पता चलता है कि इस काल में सिक्कों का प्रयोग कम हो गया था। विस्तृत रूप से प्रचलित सामंतीय व्यवस्था में कर्मचारियों का वेतन भुगतान मुद्रा में न कर भूमि के रूप में करने के कारण सिक्कों के प्रचलन में कमी आयी। अरब यात्रियों के विवरण से भी पता चलता है कि इस काल में आंतरिक व बाह्य व्यापार दोनों में वस्तु–विनिमय प्रणाली प्रचलन में थी। फाह्यान भी अपने विवरण में बताता है कि दैनिक लेन–देन एवं साधारण व्यापार में इस समय कौड़ियों का प्रयोग होता था। प्रतिहारों के अभिलेख में – इन कौड़ियों को कापर्दक कहा गया है।

1-5 Áxfr leh{kk **(Check your Progress)**

भाग (क) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। (Fill in the blanks)

(i) मंत्रयान, वज्रयान एवं साहजयान .... धर्म की शाखा थी।

(ii) 12 वीं शताब्दी के लिंगायत सम्प्रदाय का संबंध .... धर्म से था।

(iii) आलवार व नयनार .... और .... मत से संबंधित थे।

(iv) .... के समय में स्थानीय स्वायत्त शासन अपनी पराकाष्ठा पर था।

(v) भीम प्रथम .... वंश का सर्वाधिक प्रतापी शासक था।

(vi) ह्वेनसांग ने हर्ष को .... नाम से संबोधित किया है।

(vii) पुष्यभूमि वंश का संस्थापक .... था।

(viii) हर्ष ने .... तथा .... में दो विशाल धार्मिक सभाओं का आयोजन किया था।

(ix) ओंदतपुरी में एक मठ का निर्माण .... ने करवाया था।

(x) पाल वंश का दूसरा संस्थापक .... को माना जाता है।

भाग (ख) सत्य–असत्य कथन पर आधारित प्रश्न :–

(True-False Statements bases questions)

(i) शशांक सेन वंश का सबसे प्रतापी राजा था। ( )

(ii) विश्वविख्यात कोणार्क के सूर्य मंदिर का निर्माण काकतीय वंश के शासकों के द्वारा करवाया गया। ( )

(iii) जेजाकमुक्ति (बुंदेलखंड) में 9वीं शताब्दी में चंदेल वंश की स्थापना नन्नुक ने की थी। ( )

(iv) विद्या एवं कला के सरंक्षक मालवा के परमार वंश के शासक राजा भोज की उपाधि 'कविराज थी। ( )

(v) भारत के पश्चिमी तट पर ताम्रलिप्ति गुप्तोत्तरकाल में प्रमुख बंदरगाह था। ( )

(vi) गुप्तोत्तरकाल में वह भूमि जिसमें अनाज बोते थे उन्हें अकृष्ट कहा जाता था। ( )

(vii) पाल वंश भारत के दक्षिण भाग में स्थित थे। ( )

(viii) पूर्व मध्यकाल में इतिहास प्रसिद्ध त्रि–पक्षीय संघर्ष पाल, प्रतिहार व राष्ट्रकूटों के बीच लड़ा गया। ( )

(ix) सिंचाई के लिए रहट के प्रयोग का प्रथम उल्लेख गाथासप्तशती में मिलता है। ( )

(x) ह्वेनसांग हर्षवर्धन के काल में भारत आया था। ( )

1-6 lkjk'k@ lf{kflrdk **(Summary)**

- गुजरात के वल्लभी में मैत्रक वंश का शासन था।
- मैत्रक वंश का संस्थापक भट्टारक था।

- गुप्तोत्तरकाल के नवोदित राज्यों में सबसे लंबे तक राज करने वाला वंश मैत्रक वंश ही हुआ।
- कन्नौज के मौखरि वंश का संस्थापक हरिवर्मा था।
- कन्नौज के मौखरि वंश के शासकों ने हूणों को पराजित कर पूर्वी भारत को उनेक आक्रमण से बचाया।
- गुप्त वंश के पतन के बाद परवर्ती गुप्त वंश के शासकों ने राज किया।
- परवर्ती गुप्त वंश के शासकों में महासेन गुप्त, देवगुप्त, आदित्य सेन आदि प्रसिद्ध हुए।
- परवर्ती गुप्त वंश के शासकों की मौखरियों से राजनीति प्रतिद्वंद्विता रही।
- गौड़ वंश के शासक बंगाल में केंद्रित थे।
- गौड़ वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक शशांक हुआ।
- शशांक ब्राह्मण धर्म के शैव संप्रदाय का अनुयायी था।
- शशांक बौद्ध धर्म का कट्टर शत्रु था।
- शशांक ने बोधिवृक्ष को कटवाकर उसकी जड़ों में आग लगवा दी।
- हरियाणा के थानेश्वर में पुष्यभूति वंश की स्थापना पुष्यभूमि ने किया था।
- पुष्यभूमि वंश के नरवर्धन, आदित्यवर्धन तथा प्रभाकरवर्धन जैसे शासक हुये।
- कालांतर में पुष्यभूमि वंश वर्धन वंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
- प्रभाकरवर्धन के दो पुत्र राज्यवर्धन एवं हर्षवर्धन तथा पुत्री राज्यश्री थी।
- राज्यश्री का विवाह कन्नौज के मौखरि वंश के शासक गृहवर्मन के साथ हुआ था।
- गौड़ शासन शशांक द्वारा राज्यवर्धन की हत्या कर देने के बाद हर्षवर्धन वर्धन वंश का शासक हुआ।

- हर्षवर्धन वर्धन वंश का सबसे प्रतापी शासक हुआ।
- हर्षवर्धन ने कन्नौज को जीतकर इसे अपनी राजधानी बनायी।
- हर्षवर्धन ने 606 ई. से 647 ई. तक राज किया।
- हर्षवर्धन के काल में चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आया था।
- ह्वेनसांग ने अपना ग्रंथ 'सी–यू–की' के नाम से लिखा था।
- 'सी–यू–की' का अर्थ है – पश्चिमी देशों का विवरण
- ह्वेनसांग को 'यात्रियों का राजकुमार', 'नीति का पंडित' व आधुनिक शाक्य मुनि के नाम से भी जाना जाता है।
- ह्वेनसांग हर्ष को शिलादित्य के नाम से संबोधित किया है।
- थानेश्वर का प्रथम शक्तिशाली राजा जिसने परमभट्टारक की उपाधि धारण किया प्रभाकरवर्धन था।
- हर्षवर्धन ने कई उपाधियाँ – परमभट्टारक, महाराजाधिराज सकलोत्तरापथेश्वर, चक्रवर्ती, सार्वभौम, परमेश्वर, परममाहेश्वर आदि।
- हर्षवर्धन ने अपनी पुत्री का विवाह वल्लभी के शासक ध्रुवसेन द्वितीय से अपनी पुत्री का विवाह करके मैत्री संबंध स्थापित किया।
- हर्ष एवं पुलकेशिन द्वितीय के बीच नर्मदा नदी के तट पर युद्ध हुआ, जिसमें हर्ष की पराजय हुई।
- हर्ष एवं पुलकेशिन द्वितीय के बीच के युद्ध का वर्णन ऐहोल प्रशस्ति में मिलता है।
- पुलकेशिन द्वितीय चालुक्य वंश का प्रतापी शासक था।

- हर्षवर्धन ने नागानन्द, प्रियदर्शिका तथा रत्नावली नाटकों की रचना की थी।
- मयूर, दिवाकर, जयसेन, बाणभट्ट, धर्मपाल हर्षकालीन प्रसिद्ध विद्वान थे।
- बाणभट्ट हर्षवर्धन के प्रमुख दरबारी कवि थे।
- बाणभट्ट की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं – हर्षचरित व कांदबरी
- हर्षवर्धन के दरबारी कवि मयूर ने 'सूर्यशतक' नामक ग्रंथ की रचना की।
- 643 ई. में उड़ीसा के गंजाम का अभियान हर्ष का अंतिम अभियान था।
- हर्षवर्धन के काल में नालंदा विश्वविद्यालय बौद्ध धर्म की महायान शाखा का महान शिक्षा केन्द्र था।
- नालंदा विश्वविद्यालय में चीन, कोरिया, तिब्बत, लंका, मंगोलिया व दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों के 10000 विद्यार्थी पढ़ते थे।
- हर्षवर्धन ने नालंदा विश्वविद्यालय को 100–200 गांवों का अनुदान दे रखे थे।
- हर्षवर्धन के काल में नालंदा विश्वविद्यालय का कुलपति योगशास्त्र का विशेषज्ञ शीलभद्र था।
- नालंदा विश्वविद्यालय में हस्तलिखित ग्रंथों का एक नौ मंजिला धर्मगज नामक पुस्तकालय था जो तीन बड़े भवन रत्नसागर, रत्नोदधि एवं रत्नरंजक नाम से विभाजित था।

हर्ष का साम्राज्य सामंती संगठन पर आधारित था।

- प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से साम्राज्य को भुक्ति, विषय व ग्राम में बांट दिए गये थे।
- प्रांत को भुक्ति कहते थे।
- जिले को विषय के नाम से जानते थे।
- शासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी।

- ग्राम शासन का प्रधान ग्रामक्षपटलिक कहलाता था।
- हर्षकालीन प्रशासन को निम्न रेखाचित्र द्वारा दर्शाया जा सकता है –

केन्द्र –

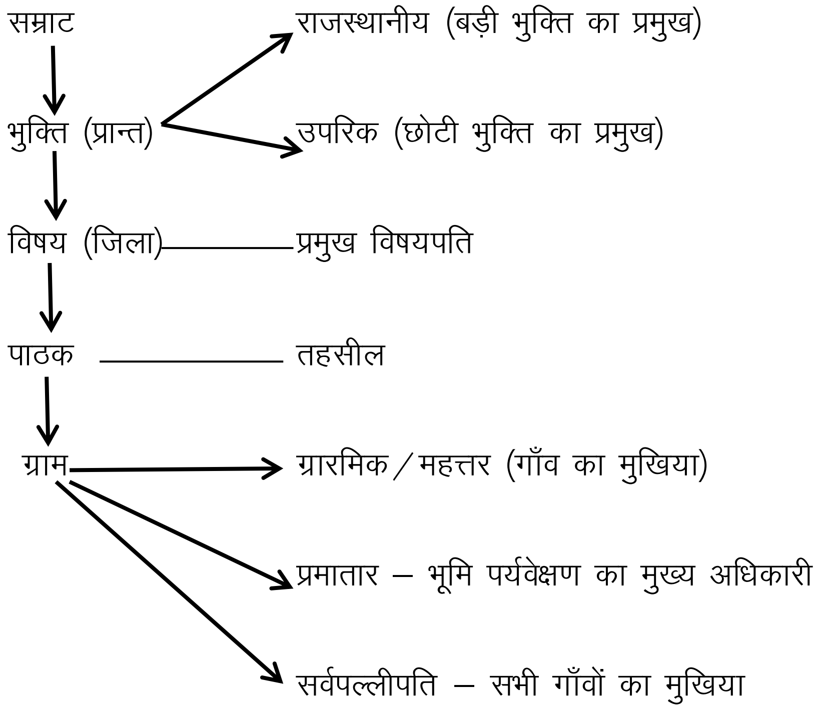

- हर्षचरित में प्रांतीय शासक को लोकपाल कहा गया है।
- हर्षकालीन ताम्रपत्रों में भाग, हिरण्य, बलि आदि करों का वर्णन मिलता है।
- हर्ष का टीला थानेश्वर में स्थित था।
- सोनीपत (हरियाणा) से हर्ष की ताम्रमुद्रा मिली है।
- फर्रूखाबाद से हर्ष का स्वर्ण सिक्का प्राप्त हुआ है।
- हर्ष अपने पूर्वजों की भांति प्रारंभ में ब्राह्मण धर्म के शिव व सूर्य की उपासना में विश्वास करता था।

- चीनी यात्री ह्वेनसांग से मिलने के बाद हर्षवर्धन ने बौद्ध धर्म की महायान शाखा को अपनाया तथा अपने राज्य में इसे विशेष संरक्षण दिया।
- हर्षवर्धन अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णु था।
- हर्ष ने कन्नौज तथा प्रयाग में दो विशाल धार्मिक सभाओं का आयोजन किया था।
- प्रत्येक पांच वर्ष पर प्रयाग में जिसे दान–क्षेत्र कहा जाता है। एक महामोक्ष परिषद् का आयोजन होता था।
- हर्षचरित में सिंचाई के साधन के रूप में तुलायंत्र का उल्लेख मिलता है।
- हर्षवर्धन के काल में आय का मुख्य जरिया भूमि कर थी जो उपज का छठा भाग के रूप में वसूला जाता था।
- कर वसूलने वाले को भोगिक कहते थे।
- जमीन का हिसाब रखने वाला पदाधिकारी पुस्तपाल कहलाता था।
- हर्ष के बाद उत्तर भारत के राजनीति का प्रमुख केंद्र कन्नौज को लेकर तीन बड़ी शक्तियों पाल, प्रतिहार एवं राष्ट्रकूट के बीच संघर्ष आरंभ हो गया जिसे इतिहास में त्रिपक्षीय संघर्ष के नाम से जाना जाता है।
- त्रिपक्षीय संघर्ष में इन तीनों वंशों के आगे आने वाले शासक 200 वर्षों तक आपस में लड़ते रहे।
- त्रिपक्षीय संघर्ष की पहल प्रतिहार शासक ने किया व अंतिम रूप से कन्नौज पर अधिकार भी प्रतिहार शासकों का ही हुआ।
- पाल वंश वाले आज के बंगाल व बिहार में केंद्रित थे।
- पाल वंश का संस्थापक गोपाल (750–770 ई.) था।
- बौद्ध धर्म के अनुयायी गोपाल ने ओदंतपुरी में एक मठ का निर्माण करवाया।

- पाल वंश का प्रसिद्ध शासक धर्मपाल ने विश्वप्रसिद्ध बौद्ध शिक्षा केंद्र विक्रमशिला विश्वविद्यालय (भागलपुर, बिहार) में स्थापित की थी।
- पाल वंश के शासक देवपाल (810–850 ई.) ने बिहार स्थित मुंगेर को अपनी राजधानी बनाया।
- अरब यात्री सुलेमान देवपाल के समय में ही भारत आया था।
- बंगाल में सेन वंश की स्थापना सामंतसेन ने 'राढ़' नामक स्थान पर की थी।
- सेन वंश का प्रथम महान शासक विजयसेन (1095–1158 ई.) था।
- गीत–गोविंद के रचनाकार जयदेव सेन वंश के शासक लक्ष्मणसेन के दरबार की शोभा बढ़ाते थे।
- कश्मीर के इतिहास के संबंध में जानकारी कल्हण की राजतरंगिणी से प्राप्त होता है।
- कश्मीर में सातवीं शताब्दी ई. से लेकर 12वीं शताब्दी के अंत तक तीन वंशों – कार्कोट वंश, उत्पल वंश व लोहार वंश वालों ने राज किया।
- कार्कोट वंश का सबसे शक्तिशाली शासक ललितादिव्य मुक्तापीड ने कश्मीर में मार्तण्ड मंदिर का निर्माण करवाया था।
- कार्कोट वंश के बाद कश्मीर में अवंतिवर्मन (855–883 ई.) ने उत्पल वंश की स्थापना की थी।
- 980 ई. में उत्पल वंश की रानी दिद्या एक महत्त्वाकांक्षिणी शशिका हुई।
- उत्पल वंश के बाद संग्रामराज (1003–1028 ई.) ने लोहार वंश की स्थापना की।
- राजतरंगिणी के लेखक कल्हन लोहार वंश के शासक हर्ष के दरबार का शोभा बढ़ाते थे।
- गुप्तोत्तरकाल में 7वीं से 12वीं शताब्दी के काल को राजपूत काल के नाम से जाना जाता है।

- चंदबरदाई रचित पृथ्वीराज रासो में वर्णित अग्निकुंड सिद्धांत के अनुसार इस काल के राजपूत वंशों में गुर्जर प्रतिहार, चालुक्य, चौहान, परमार, गहड़वाल आदि प्रमुख थे।
- गुर्जर प्रतिहार वंश का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शासक मिहिरभोज प्रथम (836–885 ई.) था।
- मिहिरभोज ने आदिवराह एवं प्रभास जैसी उपाधि धारण की तथा कन्नौज को अपनी राजधानी बनाई थी।
- प्रतिहार वंश का कुशल एवं प्रतापी शासक महिपाल प्रथम (912–944 ई.) बगदाद निवासी अल–मसूदी गुजरात आया था।
- कन्नौज में गहड़वाल वंश की स्थापना चंद्रदेव ने की थी।
- गहड़वाल वंश का अंतिम शक्तिशाली शासक जयचंद था, जिसे 1194 ई. में चंदावार के युद्ध में मुहम्मद गोरी ने पराजित करके मार डाला।
- 7वीं शताब्दी में सांभर एवं अजमेर के निकट 'वासुदेव' द्वारा शाकमरी के चौहान वंश की स्थापना की गयी थी।
- चौहान वंश के प्रसिद्ध शासक विग्रहराज चतुर्थ अथवा वीसलदेव (1153–1163 ई.) ने हरिकेल नामक एक संस्कृत नाटक की रचना की।
- शाकंमरी के चौहान वंश में सबसे प्रसिद्ध शासक पृथ्वीराज चौहान हुये जिन्हें 'रायपिथौरा' भी कहा जाता है।
- तराइन के प्रथम युद्ध 1191 ई. में पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद गौरी को पराजित किया था।
- 1192 ई. में मुहम्मद गौरी तथा पृथ्वीराज चौहान के बीच तराइन का द्वितीय युद्ध हुआ जिसमें पृथ्वीराज पराजित हुआ और उसे बंदी बनाकर कुछ समय बाद उसकी हत्या कर दी गई।
- जेजाकमुक्ति (बुंदेलखंड) में 9वीं शताब्दी में नन्नुक ने चंदेल वंश की स्थापना की थी।

- नन्नुक की राजधानी खुजराहो थी।
- चंदेल वंश के यशोवर्मन ने खुजराहो के प्रसिद्ध विष्णु मंदिर (चतुर्भुज मंदिर) का निर्माण करवाया।
- विद्या एवं कला का संरक्षक कविराज भोज मालवा के परमार वंश का शासक था।
- कविगज भोज ने अपनी राजधानी धारानगरी में स्थापित की थी।
- कविराज भोज द्वारा लिखित ग्रंथों में चिकित्सा शास्त्र पर आयुर्वेदसर्वस्व तथा स्थापत्य शास्त्र पर समरांगण सूत्रधार विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।
- सरस्वतीकंठाभरण, सिद्धांतसंग्रह, योसूत्रवृत्ति, विद्याविनोद, नाममालिका कविराज भोज के अन्य प्रसिद्ध ग्रंथ हैं।
- कविराज भोज ने धारानगरी के निकट ही अपने नाम पर भोजपुर नगर बसाया तथा एक बड़े भोजसर नामक तालाब को निर्मित करवाया।
- गुप्तोत्तरकाल में वातापी या बादामी के चालुक्य वंश की स्थापना जय सिंह ने की थी।
- पुलकेशिन द्वितीय इस वंश का सर्वाधिक प्रतापी शासक हुआ।
- पुलकेशिन द्वितीय ने दरबारी कवि रविकीर्ति द्वारा रचित ऐहोल प्रशस्ति से इसके बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।
- कल्याणी के चालुक्य वंश का संस्थापक कीर्तिवर्मन था।
- वंगी के चालुक्य वंश का संस्थापक विष्णुवर्धन था।
- गुजरात (अन्हिलवाड़) का चालुक्य अथवा सोलंकी वंश का संस्थापक मूलराज प्रथम था।
- इस वंश के प्रसिद्ध शासक भीम प्रथम के काल में ही 1025 ई. में महमूद गजनवी का आक्रमण हुआ।

- राजस्थान के माउंट आबू पर दिलवाड़ा के जैन मंदिर का निर्माण भीम प्रथम के सेनानायक विमल शाह ने ही करवाया।
- चंद्रवंशी क्षत्रिय वंश कलचुरि (चेदि) वंश की स्थापना कोकल्ल प्रथम ने की थी। उसने त्रिपुरी को अपनी राजधानी बनाया था।
- आज के भारत के ओडिशा में पूर्वी गंग वंश का सर्वाधिक प्रतापी राजा अनंतवर्मा चोडगंग था जिसने 976–1048 ई. तक शासन किया।
- अनंतवर्मा चोडगंग ने ही पुरी के प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर का निर्माण करवाया।
- विश्वविख्यात कोणार्क के सूर्यमंदिर का निर्माण पूर्वी गंग वंश के शासकों द्वारा ही करवाया गया।
- वारंगल के काकतीय वंश का संस्थापक प्रोल द्वितीय था। इस वंश का प्रसिद्ध शासक रूद्र प्रथम था जिसने वारंग को काकतीय राज्य की राजधानी बनाया था।
- गुप्तोत्तरकाल में मंदिर निर्माण की तीन शैलियां प्रसिद्ध थीं।
- इनके नाम हैं – नागर शैली, द्रविड़ शैली, बेसर शैली
- उत्तर भारत में हिमालय से विंध्य प्रदेश के भू–भाग में मंदिर निर्माण की नागर शैली प्रचलित थी।
- नागर शैली के प्रसिद्ध मंदिर – लिंगराज मंदिर (भुवनेश्वर), सूर्य मंदिर (कोणार्क), जगन्नाथ मंदिर (पुरी), कंदरिया महादेव मंदिर (खुजराहो), सूर्यमंदिर (भोढेरा, गुजरात), दिलवाड़ा जैन मंदिर (माउंट आबू) आदि हैं।
- दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य में कृष्णा तथा कन्याकुमारी अंतरीप के बीच मंदिर निर्माण की जिस शैली का विकास हुआ उसे द्रविड़ शैली के नाम से जानते हैं।

- पल्लव, चालुक्य, चोल एवं पांड्य शासकों के शासनकाल में मुख्यतः द्रविड़ शैली के मंदिरों का निर्माण हुआ।
- महाबलीपुरम और कांची के मंदिर, वातापी तथा ऐहोल के मंदिर, तंजौर का राजराजेश्वर मंदिर या बृहदेश्वर मंदिर द्रविड़ शैली के मंदिर के प्रमुख उदाहरण हैं।
- मंदिर निर्माण के जिस शैली में नागर और द्रविड़ शैली के मिश्रण का प्रयोग किया गया उसे बेसर शैली के नाम से जाना जाता है।
- बेसर शैली का विस्तार विंध्य और कृष्णा के बीच में फैला है।
- होयसल, राष्ट्रकूट काल के ऐहोल मंदिर, कैलाश मंदिर (एलोरा) आदि बेसर शैली से निर्मित मंदिर के उदाहरण हैं।

1-7 ladsr&'kCn (Key-words)

- गुप्तोत्तरकाल = गुप्त काल के बाद का समय
- सामंतीय व्यवस्था = राजा या मुख्य राज्य–व्यवस्था के अधीन की शासन–प्रणाली
- अस्पृश्यता = बड़े–छोटे की मानसिकता के कारण संपर्क रखने या स्पर्श करने की मनाही से संबंधित मनोदशा।
- सहिष्णु = सहने की भावना रखने वाला/उदार प्रकृति वाला
- वातापीकोण्ड = वातापी का विजेता
- वणिक = बनिया

1-8 Lo&ewY;kadu dh fy, ijh{kk (Self Assessment Test SAT)

भाग (क) (Part-A) बहुविकल्पी प्रश्न (Multiple Choice Questions MCQS)

(i) गुर्जर प्रतिहार शासकों में से किसकी उपाधि 'आदि वराह' थी।

(a) वत्सराज (b) नागभट्ट II (c) मिहिर भोज (d) नागभट्ट I

(ii) गुप्तोत्तरकाल काल का महत्त्वपूर्ण सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन निम्न से किसे माना जाता है ?

(a) सामंतीय व्यवस्था एवं भूमिदान प्रणाली

(b) समाज का ब्राह्मणों का वर्चस्व एवं व्यापार में वृद्धि

(c) दासों का कृषि कार्य में प्रवेश

(d) शूद्रों को व्यापार करने का अधिकार

(iii) गुप्तकाल के पतन के बाद 550 से 750 ई. के मध्य दक्षिण भारत किन दो राजवंशों के पारस्परिक संघर्ष का क्रीड़ास्थल बना रहा ?

(a) चोल एवं चालुक्य (b) राष्ट्रकूट एवं चोल

(c) चालुक्य एवं पल्लव (d) पल्लव एवं चोल

(iv) किस पल्लववंशी शासक ने पुलकेशिन II को परास्त कर अपनी इस विजयोपलब्धि पर वातापिकोण्ड की उपाधि धारण किया ?

(a) महेन्द्रवर्मन I (b) नरसिंहवर्मन I

(c) कीर्तिवर्मन I (d) विजयादित्य

(v) किस चालुक्यवंशी शासक ने अपना राजदूत फारस के शाह खुसरो के दरबार में भेजा ?

(a) विष्णुवर्धन (b) पुलकेशिन II

(c) विजयादित्य (d) पुलकेशिन I

(vi) राष्ट्रकूटों ने अपनी राजधानी कहां पर स्थापित की ?

(a) मालवा (b) भाल्य खेट (c) कलिंग (d) प्रतिष्ठान

(vii) गुजरात के चालुक्य वंश के किस शासक ने 1178 ई. में आबू पर्वत के समीप मुहम्मद गोरी को परास्त किया।

(a) अजय पाल (b) मूलराज II (c) भीम द्वितीय (d) अर्णो राज

(viii) पूर्व मध्यकालीन भारतीय इतिहास में 750 से 1200 तक का समय मुख्यतः माना जाता है –

(a) संक्रमण काल (b) राजपूत काल

(c) भारत पर तुर्की आक्रमण का काल (d) उपर्युक्त सभी

(ix) सूची I में दिये वंशों की सूची II में दिये गये उनके संस्थापकों में सुमेलित कीजिए –

सूची I	सूची II
(अ) गहड़वाल वंश	(1) वासुदेव
(ब) परमार वंश	(2) मूलराज प्रथम
(स) सेन वंश	(3) कोकल्ल
(द) कलचुरी वंश	(4) सामंत सेन
(ध) सोलंकी वंश	(5) उपेन्द
(न) चौहान वंश	(6) चन्द्रदेव

	अ	ब	स	द	ध	न
(a)	6	5	4	3	2	1
(b)	1	2	3	4	5	6
(c)	5	6	4	3	2	1
(d)	4	5	6	3	2	1

(x) चन्देल शासकों ने बुंदेलखंड में अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर महोबा को अपनी राजधानी बनाया। चन्देल राज्य को जेजाकमुक्ति क्यों कहा जाता है ?

(a) चंदेल शासक विजय शक्ति के नाम के कारण

(b) चंदेल शासक जयशक्ति के नाम के कारण

(c) जेजाकमुक्ति द्वारा चंदेलवंश की स्थापना करने का कारण

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

भाग (ख) (Part-B) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त नोट लिखिए। (Write Short notes on the following):-

(i) सी–यू–की (ii) वातापिकोंड (iii) ऐहोल अभिलेख (iv) कविराज भोज

(v) ताम्रलिप्ति (vi) त्रिपक्षीय संघर्ष (vii) कन्नौज (viii) वातापी के चालुक्य

(ix) राजपूत काल (x) गुप्तोत्तरकाल में अस्पृश्यता

भाग (ग) (Part-C) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

(i) गुप्तोत्तरकालीन राजनीतिक व्यवस्था की मुख्य विशेषताओं का विवरण दीजिए।

(Describe the main features of the Post Gupta period polity.)

(ii) गुप्तोत्तरकालीन आर्थिक व्यवस्था का विस्तार से वर्णन कीजिए।

(Discuss Post Gupta period Economy in details.)

(iii) गुप्तोत्तरकालीन वंशों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

(Explain in details about Post Gupta period dynastic.)

(iv) गुप्तोत्तरकाल में चालुक्य वंश के महत्त्व का वर्णन करें।

(Describe the importance of the Chalukys in Post Gupta period.)

1-9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answers to Check your progress)

1.5 भाग (क) :– (i) बौद्ध धर्म (ii) शैव (iii) वैष्णव व शैव (iv) चोलों (v) गुजरात के चालुक्य/सोलंकी (vi) शिलादित्य (vii) पुष्यभूति (viii) प्रयाग तथा कन्नौज (ix) गोपाल (x) महिपाल प्रथम

1.5 भाग (ख) का उत्तरः–(i) असत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) सत्य (v) असत्य (vi) असत्य (vii) असत्य (viii) सत्य (ix) सत्य (x) सत्य

1.8 (क) उत्तरः– (i) c (ii) a (iii) c (iv) b (v) b (vi) b (vii) b (viii) b (ix) a (x) b

1-10gk;d lnHk xzFk (References)

1. प्राचीन भारत का इतिहास – झा एवं श्रीमाली हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

2. प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास (प्रारंभ से 1526 ई.0 तक)

   अविनाश चन्द्र अरोड़ा

   प्रदीप पब्लिकेशन्स प्रताप रोड़, जालंधर – 144008

3. भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन (द्वितीय संस्करण) दृष्टि पब्लिकेशन्स डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली–110009

4. सामान्य अध्ययन स्पेक्ट्रम पब्लिकेशन – दिल्ली

5. यूनीक सामान्य अध्ययन, प्रयाग पुस्तक भवन 20–ए, युनिवर्सिटी रोड़ इलाहाबाद–211002

B.A. HISTORY PART-1, SEMESTER-II	
COURSE CODE :HIST 103	**AUTHOR : MOHAN SINGH BALODA**
LESSON NO. 02	
f=i{kh; l?k"k o pky lkekT;	
(TRIPARTIES STRUGGLE AND CHOLA EMPIRE)	

v/;k; ljpuk (Lesson Structure)

2.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objective)

2.2 परिचय (Introduction)

2.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

2.3.1 त्रिपक्षीय संघर्ष की पृष्ठभूमि (Background of Triparties Struggle)

2.3.2 त्रिपक्षीय संघर्ष के कारण का प्रभाव/परिणाम (Cause and Effect of Tri-parties Struggle)

2.3.3 भारतीय सामंतवाद (Indian Form of Feudalism)

2.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of Text)

2.4.1 चोल साम्राज्य का विस्तार (Explain of Chola Empire)

2.4.2 चोल साम्राज्य का प्रशासन (Administration of Chola-Empire)

2.4.3 चोलकालीन समाज (Chola Society)

2.4.4 सामाजिक, संस्कृति व साहित्यिक विकास (600–1206 ई.) (Social, Cultural &Literary development from 600-1206 A.D.)

2.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

2.6 सारांश/सक्षिप्तिका (Summary)

2.7 संकेत–सूचक (Key-words)

2.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT)

2.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

2.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

2-1 vf/kxe mnn' ; **(Learning Objectives)**

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी योग्य होंगे :–

- त्रिपक्षीय संघर्ष की पृष्ठभूमि को समझने में।
- विद्यार्थी त्रिपक्षीय संघर्ष के कारणों व प्रभावों की समीक्षा कर सकेंगे।
- भारतीय सामंतवाद के स्वरूप तथा उसके कारण होने वाले परिवर्तनों का विद्यार्थी विस्तार से वर्णन कर सकेंगे।
- दक्षिण भारत में पल्लव वंश के अवशेष पर स्थापित शक्तिशाली चोल साम्राज्य के विस्तार, उसके प्रशासन व समाज का शिक्षार्थी विस्तृत विवरण प्रस्तुत कर सकेंगे।
- 600–1200 ई. के भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक विकास पर अध्येता चर्चा कर सकेंगे।

2-2 ifjp ; **(Introduction)**

गुप्त वंश के पतन के बाद एक केंद्रीय शक्ति के अभाव में भारतीय प्रायद्वीप के राजनीतिक इतिहास में विकेंद्रीकरण व क्षेत्रीयता की भावना प्रबल हो गई। इस दौरान कुछ विशाल शक्तियां भी सामने आई जैसे वर्धन वंश जिसका शक्तिशाली शासक हर्षवर्धन हुआ लेकिन इनमें से किसी को भी अखिल भारतीय का दर्जा नहीं दिया जा सकता। गुप्तोत्तरकाल में हर्ष की मृत्यु के बाद उत्तर भारत में सामंतों ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा करके अपने साम्राज्य की स्थापना करने लगे। इससे नवीन राजवंशों का उदय हुआ। इनमें उत्तर भारत में राजपूतों की उत्पत्ति महत्त्वपूर्ण है। इसलिए 7वीं से 12वीं सदी के इतिहास को राजपूत काल के नाम से जाना गया। दूसरी ओर दक्षिण भारत में 550 से 750 ई. के बीच चालुक्यों

व पल्लवों का इतिहास महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। पल्लव वंश वाले सातवाहनों के सामंत थे। बाद में पल्लव वंश के अवशेष पर ही शक्तिशाली चोल वंश का पुनरूत्थान विजयालय ने किया। दक्षिण भारत में 9वीं से 11वीं शताब्दी तक चोल राजवंश अपने साम्राज्य विस्तर, कुशल शासन प्रबंधन व सामाजिक–सांस्कृतिक विकास के लिए प्रसिद्ध रहे है।

उत्तर भारत में हर्ष की मृत्यु के बाद कन्नौज शासन व राजनीति का महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गया था। इस कन्नौज पर अधिकार को लेकर अरबों ने भारत पर आक्रमण के बाद उभरे तीन महत्त्वपूर्ण शक्तियों – गुर्जर प्रतिहार, राष्ट्रकूट एवं पाल आपस में लंबे समय तक लड़ते रहे। वस्तुतः आठवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में शुरू होने वाला यह त्रिपक्षीय संघर्ष लगभग 200 वर्षों तक चलता रहा है। ये तीनों शक्तियां हर्ष की मृत्यु के बाद उत्तरी भारत में किसी केंद्रीय शक्ति के अभाव का लाभ उठाकर गंगा–यमुना दोआब के महत्त्वपूर्ण उपजाऊ क्षेत्र कन्नौज पर अपना स्वामित्व स्थापित करना चाहते थे।

2-3 v/;k; d e[; fcUnq (Main body of Text)

2-3-1 f=i{kh; l?k"k dh i"BHkfe (Background of Triparties Struggle)

हर्ष की मृत्यु के बाद उत्तरी भारत में एक मजबूत केंद्रीय शक्ति के अभाव के कारण जो शून्यता उत्पन्न हो गई थी। उसे भरने और हर्ष की राजधानी कन्नौज पर अधिकार को लेकर आठवीं सदी में तीन शक्तिशाली राज्यों – गुजरात व दक्षिण पश्चिम राजस्थान के गुर्जर प्रतिहार, बंगाल के पाल तथा दक्षिण भारत के राष्ट्रकूटों के बीच संघर्ष आरंभ हुआ। पूर्व मध्यकालीन भारत के इतिहास में इन तीनों शक्तियों के आपसी संघर्ष को त्रिपक्षीय संघर्ष के नाम से जाना जाता है। यह संघर्ष इन तीनों वंशों के शासकों के बीच 200 वर्षों तक चलता रहा। इस संघर्ष का भारत के राजनैतिक इतिहास में तात्कालिक ही नहीं बल्कि दूरगाामी व दीर्घकालिक प्रभाव देखने को मिलते हैं। मौर्य व गुप्तकाल में जो प्रसिद्धि पाटलिपुत्र की थी वह अब समृद्ध व राजनीतिक केन्द्र कन्नौज को प्राप्त था। अतः प्रत्येक शक्ति कन्नौज पर अधिकार करने और उस पर अपनी प्रभुता स्थापित करके उत्तर भारत में अपनी दबदबा कायम करने को लेकर उत्सुक था। इस प्रकार कन्नौज पर प्रभुत्ता की स्थापना ही संघर्ष का केंद्र बिन्दु था। इस काल में उभरती हुई इन तीनों शक्तियों का साम्राज्यवादी दृष्टिकोण इनकी आपसी वैमनस्यता ने त्रिपक्षीय संघर्ष

की पृष्ठभूमि के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इस संघर्ष में भाग लेने वाले तीनों वंशों के प्रमुख शासक निम्न थे –

गुर्जर प्रतिहार	राष्ट्रकूट	पाल
वत्सराज (783–795 ई.)	ध्रुव (783–795 ई.)	धर्मपाल (783–795 ई.)
नागभट्ट द्वितीय (795–833 ई.)	गोविंद तृतीय (795–814 ई.)	देवपाल (815–855 ई.)
रामभद्र (833–836 ई.)	अमोघवर्ष प्रथम (814–880 ई.)	नारायण पाल (860–915 ई.)
मिहिरभोज (836–889 ई.)	कृष्ण द्वितीय (880–914 ई.)	
महेंद्रपाल (890–910 ई.)		

इस संघर्ष में ये तीनों शक्तियां कभी भी एक साथ संघर्ष करते हुये नहीं देखी गयी। कभी राष्ट्रकूटों व प्रतिहारों में लड़ाई छिड़ी तो कभी पालवंश व प्रतिहारों में। इस प्रकार ये तीनों कन्नौज पर अधिकार को लेकर आपस में उलझे रहे।

त्रिपक्षीय संघर्ष के आरंभ में प्रतिहार शासक वत्सराज ने बंगाल पर आक्रमण करके धर्मपाल को पराजित कर दिया। परंतु जब वत्सराज विजयी होकर लौट रहे थे तो राष्ट्रकूट शासक ध्रुव ने उसे बुरी तरह पराजित कर दिया। और वत्सराज को राजपूताना की ओर भागने पर विवश कर दिया। राष्ट्रकूट शासक का यह विजय तब अस्थायी सिद्ध हुई जब उसे शीघ्र अपने राज्य दक्षिण लौटना पड़ा। उसके लौटते ही उत्तरी भारत में राष्ट्रकूट का प्रभाव लगभग समाप्त हो गया। इस प्रकार त्रिपक्षीय संघर्ष के प्रथम चरण में राष्ट्रकूटों को आंशिक सफलता मिली।

राष्ट्रकूट शासक ध्रुव की मृत्यु के बाद गोविंद तृतीय उसका उत्तराधिकारी बना। ध्रुव के आक्रमण से एक तरफ जहां प्रतिहारों को काफी हानि हुई तो दूसरी ओर इससे पाल शासक धर्मपाल को कन्नौज पर आक्रमण करने का अवसर मिल गया। उसने इस अवसर का फायदा उठाकर कन्नौजपर आक्रमण कर दिया। धर्मपाल ने इस आक्रमण के द्वारा वत्सराज समर्पित इन्द्रायुध को हटाकर अपने समर्थक चक्राचुध को कन्नौज का शासक बना दिया। अपनी इस सफलता को सुनिश्चित करने के लिए धर्मपाल ने कन्नौज में एक दरबार का आयोजन किया और उसमें उपस्थित शासकों को चक्रायुध को कन्नौज का

शासक मानने के लिए मजबूर किया। इस प्रकार त्रिपक्षीय संघर्ष के दूसरे चरण में उत्तरी भारत पर अप्रत्यक्ष रूप से धर्मपाल का प्रभाव स्थापित हो गया।

प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय जो वत्सराज का उत्तराधिकारी था ने कन्नौज पर धर्मपाल के प्रभुत्व स्थापना को एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया। उसने धर्मपाल पर आक्रमण करके उसे पराजित कर दिया और धर्मपाल के समर्थक चक्रायुध को गद्दी से उताकर अपने समर्थक इन्द्रायुध को पुनः कन्नौज का शासक बना दिया। इस प्रकार एक बार फिर प्रतिहारों ने उत्तरी भारत पर अपनी धाक जमाने में सफल रहे। परंतु राष्ट्रकूट शासक गोविंद तृतीय ने बुंदेलखंड में नागभट्ट द्वितीय को पराजित करके उसकी इस उपलब्धि को स्थायी रूप लेने नहीं दिया। गोविंद तृतीय के सामने धर्मपाल तथा चक्रायुध ने बिना लड़े ही आत्म सम्पर्ण कर दिया। इस प्रकार संघर्ष के तीसरे चरण में एक बार फिर राष्ट्रकूट वंश के शासकों ने अल्पकालिक रूप से कन्नौज पर अपनी प्रभुता स्थापित कर ली।

त्रिपक्षीय संघर्ष के चौथे चरण में राष्ट्रकूट शासक गोविंद तृतीय के दक्षिण वापस लौटने केबाद पालों व प्रतिहारों के मध्य कन्नौज को लेकर फिर से संघर्ष छिड़ गया। परंतु इस दौर में इन दोनों के बीच कोई युद्ध नहीं हुआ तथा कन्नौज पर नागभट्ट द्वितीय का अधिकार हो गया।

पाँचवे चरण में प्रतिहार वंश का अयोग्य शासक रामभद्र नागभट्ट द्वितीय के उत्तराधिकारी के रूप में गद्दी पर बैठा। रामभद्र के अयोग्यता का फायदा उठाकर धर्मपाल के उत्तराधिकारी पालवंशीय शासक देवपाल ने रामभद्र को पराजित करके उत्तर भारत में पाल वंश के प्रभुत्व को पुनः स्थापित कर दिया। देवपाल ने अपने 40 वर्षों के शासनकाल में अपने वंश की गरिमा को ऊँचाई पर पहुँचा दिया। फिर राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष अल्पवयस्क होने के कारण वह उत्तर भारत से दूर रहा। इस कारण पालवपंशीय शासक देवपाल का उत्तर भारत पर प्रभुत्व और भी अधिक सुरक्षित हो गया। किंतु देवपाल के बाद के शासक विग्रहपाल व नारायणपाल के अयोग्य होने के कारण बंगाल की आंतरिक स्थिति दयनीय हो गई। उधर राष्ट्रकूट शासक कृष्ण द्वितीय के राज्य में भी विद्रोह होने लगे और सामंत अपने स्वतंत्र राज्य की घोषणा करने लगे। जबकि ऐसे समय गुर्जर प्रतिहार वंश शक्तिशाली शासक मिहिरभोज के नेतृत्व में उत्कर्ष की तरफ बढ़ रहा था। इस कारण मिहिरभोज ने दोनों राजवंशों की

कमियों का फायदा उठाकर बिहार व बंगाल पर अधिकार कर लिया। राष्ट्रकूट वंश के शासक कृष्ण द्वितीय से भी मिहिरभोज का दो बार संघर्ष हुआ। जिसमें पहली बार वह विजयी हुआ किंतु दूसरी बार उसे पराजित होना पड़ा। इसके बावजूद मिहिरभोज उत्तर भारत में एक विशाल साम्राज्य स्थापित करने में सफल रहा। इस प्रकार गंगा–घाटी एवं कन्नौज पर अधिकार को लेकर संघर्षरत तीनों शक्तियों – पालों प्रतिहारों व राष्ट्रकूटों के त्रिपक्षीय संघर्ष में प्रतिहारों को सफलता मिली। यद्यपि त्रिपक्षीय संघर्ष के अंतिम व छठे चरण में राष्ट्रकूट शासक इन्द्र तृतीय ने 915–18 ई. के मध्य एक बार पुनः आक्रमण करके प्रतिहार शासक महीपाल को पराजित कर दिया था, परंतु पूर्व की भांति उसके कन्नौज से दक्षिण लौटने के बाद पुनः अंतिम रूप से कन्नौज पर प्रतिहारों का अधिकार कायम हो गया।

2-3-2 f=i{kh; l?k"kZ d: dkj.k o iHkko@ifj.kke **(Causes and Effect of Tri-parties Struggle)**

त्रिपक्षीय संघर्ष का सबसे महत्त्वपूर्ण कारण उत्तर भारत में राजनीतिक दृष्टि से केंद्र–बिन्दु के रूप में उभरे कन्नौज पर प्रभुत्व स्थापित करना था। वर्धन वंश के शक्तिशाली शासक हर्षवर्धन ने अपने समय में कन्नौज को जीतकर इसे अपनी राजधानी बनाया। इस प्रकार हर्षवर्धन के काल से ही कन्नौज जिसे महोदयनगर के नाम से भी जानते थे। उत्तर भारत में राजनीति का प्रतिष्ठा का प्रतीक बन चुका था। अतः उस समय के तीनों शक्तिशाली राजवंशों – प्रतिहार, पाल व राष्ट्रकूट ने अपनी राजनीतिक प्रभुसत्ता की स्थापना को लेकर इस कन्नौज पर अधिकार करने के लिए लड़ने लगे। प्रभुत्व स्थापना का यह संघर्ष इन तीनों शक्तियों के आगे आने वाले शासकों के बीच 200 वर्षों तक चलता रहा।

राजनीतिक केन्द्र–बिन्दु के साथ ही आर्थिक व सामूहिक महत्त्व के दृष्टिकोण से भी कन्नौज का उस काल में व्यापक स्थान था। जिस प्रकार पूर्वकाल में मगध राजनीतिक केंद्र–बिंदु के साथ–साथ व्यापारिक मार्ग को भी नियंत्रित करता था। वही स्थिति इस काल में कन्नौज ने प्राप्त कर ली थी। यही कारण है कि कन्नौज पर नियंत्रण को लेकर पाल, प्रतिहार व राष्ट्रकूट अत्यधिक उत्सुक थे। वे कोई भी मौका इसके लिए अपने हाथ से जाने नहीं देना चाहते थे। अलबरूनी एवं उतबी के विवरण से भी पता चलता है कि कन्नौज या काव्यकुब्ज नगर की समृद्धि शिखर पर था। इन दोनों के विवरण यह बताते हैं

कि यह नगर अत्यंत विस्तृत एवं भव्य था। इस कारण भी ये तीनों शक्तियां कन्नौज को लेकर लगातार लड़ते रहे जो इतिहास में त्रिपक्षीय संघर्ष के नाम से प्रसिद्ध हुआ। राष्ट्रकूट दक्षिण भारत की पहली शक्ति थे जिन्होंने उत्तर–भारत की राजनीति में हस्तक्षेप किया।

पूर्व की भांति उस काल में भी राज्य के आय का मुख्य स्रोत भू–राजस्व ही था। कृषि में प्राप्त अनाजों पर कर लगाते थे। गंगा–यमुना दोआब क्षेत्र में स्थित कन्नौज अत्यधिक उपजाऊ क्षेत्र था। इस कारण ये तीनों शक्तियां इस पर अपने नियंत्रण की स्थापना के लिए लड़ते रहे।

इसका एक कारण यह भी था कि पाल एवं प्रतिहार उत्तर भारत में गंगा–घाटी के क्षेत्र बनारस से बिहार तक अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहते थे। दूसरी ओर यशोवर्मन की मृत्यु के बाद कन्नौज पर जिस आयुध वंश ने अपना शासन स्थापित किया उसके शासक दुर्बल थे। इनमें वज्रायुध इन्द्रायुध व चक्रायुध आदि निर्बल शासकों के नाम मिलते हैं। इनकी दुर्बलता ने भी त्रिपक्षीय संघर्ष को बल प्रदान किया।

तीन महान शक्तियों – प्रतिहार, पाल व राष्ट्रकूट के बीच इस त्रिपक्षीय संघर्ष के भारतीय राजनीति व जन–जीवन प्रत्येक क्षेत्रों पर दूरगामी प्रभाव पड़े। यद्यपि इस त्रिपक्षीय संघर्ष में अंततः प्रतिहार वंश वालों की जीत हुई और वे कन्नौज पर अपने प्रभुत्व की स्थापना में सफल रहे तथापि इस लम्बे संघर्ष के कारण दसवीं सदी के प्रारंभ में तीनों का पतन आरंभ हो गया। इनके कमजोर होने से पतन की ओर जाने से सामंतों को अपने स्वतंत्र राज्य की घोषणा करने व स्थापना करने का अवसर मिल गया। इस प्रकार त्रिपक्षीय संघर्ष के बाद इन तीनों शक्तियों को अपने सामंतों की स्वतंत्र प्रवृत्ति का सामना करना पड.ा। अतः इस संघर्ष के बाद अनेक सामंती राज्यों जैसे परमार, चंदेल, चालुक्य, चौहान, चोल, कामरूप, उत्कल आदि उभर कर सामने आये। इन्होंने अपने–अपने अलग राज्य स्थापित किये। इसका राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक प्रभाव तात्कालिक के साथ–साथ दूरगामी प्रभाव भी देखने को मिलते है। इन सामंती राज्यों के बीच साम्राज्य विस्तार व अपने राज्य की रक्षा को लेकर संघर्ष स्वाभाविक था। ये सभी राज्य वैमनस्यता की भावना से भरकर एक दूसरे को कमजोर करने लगे। ऐसे में इनमें से किसी के पास बाहरी शक्तियों के आक्रमण से देश को बचाने की न तो शक्ति थी और न

ही एकजुटता। केन्द्रीय शक्ति की अनुपस्थिति तथा स्थानीय शक्तियों में एकता व आपसी सहयोग के अभाव में मुसलमानों के लिए भारत पर आक्रमण करने का अवसर प्रदान कर दिया। आगे के इतिहास में हम देखते हैं कि मुसलमानों ने आक्रमण किया और विजय भी प्राप्त किया और अंततः भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना में सफल रहे।

2-3-3 Hkkjrh; lkeUrokn **(Indian form of Feudalism)**

सामंतवाद का अंग्रेजी शब्द Feudalism (फ्यूडलिज्म) लैटिन शब्द फ्यूडम से निकला है। फ्यूडम का अंग्रेजी अनुवाद Fief (फीफ) होता है। एक केंद्रीय या मजबूत शासन के अंतर्गत प्रशासनिक व सैन्य सुविधाओं के बदले वंशानुगत रूप से भूमिधारियों के रूप में इसका अर्थ लिया जाता है। अतः सामंतवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत भू–राजस्व की उगाही एवं सेना के पालन समेत समस्त प्रशासनिक अधिकार वंशुानगत भूमिधारियों के एक निकाय में समाहित होता था। वह इन समस्त कार्यों को एक केंद्रीय शक्ति के अधीन रहते हुए करता था। इसका एक खतरा यह था कि जब–जब केंद्रीय शक्ति कमजोर पड़ती थी तो ये सामंती शक्तियों अपने स्वतंत्र राज्य की घोषणा कर लेती थी और इस प्रकार सामंत एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना कर लेता था। भारतीय सामंतवाद का स्वरूप यूरोपीय सामंतवाद से इस अर्थ में भिन्न था कि भारतीय सामंतवाद में कृषिदासता एवं मेनर व्यवस्था का अभाव दिखता है। इस कारण भारतीय सामंतवाद को अर्द्ध सामंती के रूप में व्यक्त किया जाता है।

प्राचीन भारत के इतिहास में राजकीय भूमि अनुदान का साक्ष्य कई स्थानों पर मिलता है। इसका प्रथम साक्ष्य ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण में मिलता है। महाभारत ग्रंथ में भी पृथ्वी दान को श्रेष्ठ बतलाते हुये राजा को ब्राह्मणों को भू–अनुदान देने के लिए प्रेरित किया गया है। परंतु वास्तव में भूमिदान का प्रथम पुरालेखीय प्रमाण मौर्योत्तरकालीन शक्तिशाली शासक वंश सातवाहन वंश के नानाघाट अभिलेख से प्राप्त होता है। इसी सातवाहन वंश के प्रसिद्ध शासक गौतमीपुत्र शातकर्णी के राज्यारोहण के 18वें वर्ष का नासिक गुहालेख में भूमिदान के साथ शुल्क मुक्ति व अन्य विशेषाधिकारियों की चर्चा की गयी है। यह प्रथम अभिलेख है जिसमें इस प्रकार की चर्चा की गयी है। इससे स्पष्ट होता है कि सातवाहन काल में ही जब भूमि अनुदान देते थे तो भूमि अनुदान प्राप्त करने वालों को केंद्रीय शक्ति के अधीन विशेष

सुविधायें व अधिकार प्रदान किये जाते थे। सातवाहन वंश के बाद वाकाटक वंश के अभिलेखीय प्रमाण से भी शासकों द्वारा दिये गये भूमिदान, विशेष सुविधायें व अधिकारों का पता चलता है। प्रसिद्ध वाकाटक शासक प्रवरसेन द्वितीय की चमक प्रशस्ति से दानग्राही को भूमि के साथ प्रशासन एवं न्याय का अधिकार देने का प्रमाण प्राप्त होता है। इस प्रकार मौर्योत्तरकालीन सातवाहन काल में भूमिदान के दास जिस सामंतवाद की एक झलक प्राप्त होती है कालांतर के शासक वंशों में इस प्रवृत्ति को तेजी से उभरते और बढ़ते हुए देखते है। इन्हीं सामंतवादी प्रवृत्तियों का गहराई से अध्ययन करते हुये प्रसिद्ध इतिहासकार रामशरण शर्मा ने अपनी पुस्तक भारतीय सामंतवाद में बतलाया है कि भारतीय सामंतवाद उस सामंती समाज को संदर्भित करता है जिसने कुषाणों व गुपतकाल से लेकर 16वीं शताब्दी में मुगल राजवंश तक भारत की सामाजिक संरचना को बनाने में प्रबल भूमिका निभाई थी। गुप्त व कुषाणों ने भारतीय सामंतवाद को प्रारंभ करने व इसकी रीति–नीति की स्थापना में एक प्रमुख भूमिका निभाई और सामंतवाद के कारण मजबूत साम्राज्य को पतनोन्मुख होने के उदाहरण प्रस्तुत किये है। स्वयं गुप्त वंश वाले कुषाणों के सामंत थे। जैसे ही एक केंद्रीय शासक के रूप में कुषाण वंश वाले कमजोर हुये उनके सामंत ने इस अवसर का लाभ उठाते हुये एक स्वतंत्र राज्य की घोषणा कर दी और मजबूत कुषाण वंश के स्थान पर एक नया वंश गुप्त वंश आरम्भ हो गया।

गुप्त वंश के पतन के बाद आगे चलकर भारत के इतिहास में सामंती व्यवस्था की ऐसी प्रवृत्ति का प्रकटीकरण हुआ जो विभिन्न रूपों में विकेंद्रीकरण व क्षेत्रीयता की भावना के साथ एक सहस्त्राब्दी तक हावी रही। इसने राजनीति समेत जन–जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया। गुप्तोत्तरकाल में इस नवीन प्रवृत्ति ने कई नये राजवंशों को जन्म दिया। इनमें कुछ विशाल शक्तियां भी सामने आईं लेकिन किसी भी दृष्टि से उन्हें अखिल भारतीय नहीं कहा जा सकता। इतना ही नहीं बल्कि वास्तविकता यह है कि गुप्तोत्तर काल में अपेक्षाकृत–बड़े राज्य परस्पर संघर्ष करते रहे जिससे सामंतवादी प्रवृत्ति को और अधिक बल मिला। गुप्तोत्तरकाल में हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद कन्नौज को लेकर संघर्षरत तीन शक्तियों – पाल, प्रतिहार व राष्ट्रकूट इसी कारण पतन की ओर अग्रसर हो गये और इसके फलस्वरूप अनेक सामंतों ने नवीन राज्यों की स्थापना करने में सफल हुये। ये सामंती राज्य थे – परमार, चंदेल, चालुक्य, चौहान, चोल, कामरूप, उत्कल आदि। इन सामंतवादी शासकों ने गुप्तोत्तरकाल के बाद भारत के उत्तर

व दक्षिण दोनों भागों में स्वतंत्र राज्य की स्थापना करके राजनीति समेत समाज व अर्थव्यवस्था के हर क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किये।

मध्ययुगीन यूरोपीय मूल की एक संकल्पना के अनुरूप भारतीय सामंतवाद की व्याख्या की जाती है। जिसके अनुसार जमींदारों ने सैन्य सेवा के बदले राजा से वेतन के रूप में भूमि प्राप्त करते थे। जागीदार बदले में रईसों के किरायेदार होते थे जबकि किसान अपने स्वामी की भूमि पर रहने और उन्हें श्रम व उपज का एक हिस्सा देने के लिए बाध्य थे। भारत में सामंतवाद की सर्वाधिक शुरूआत कुषानों के अपनी नीति के अनुरूप शासन करने से मानी जाती है। भारतीय सामंतवाद शब्द का प्रयोग तालुकदार, जमींदार, जागीरदार, घाटवाल, मुलरैयत आदि के रूप में किया जाता है। स्वतंत्रता के बाद सामंतवादी प्रवृत्ति को प्रकट करने वाले मनकारी, देखमुख, चौधरी व सामंत जैसी प्रणालियों को समाप्त कर दिया गया। इतिहासकार डी.डी. कौशांबी व रामशरण शर्मा ने किसानों के अध्ययन को भी भारतीय इतिहास में शामिल किया। इतिहासकार रामशरण शर्मा ने सामंतवाद का गहन अध्ययन कर भारतीय सामंतवाद नामक पुस्तक में इसका विस्तृत वर्णन किया है। इसके अलावा उन्होंने 'भारतीय सामंतवाद कितना सामंती' नामक लेख भी लिखा। रामशरण शर्मा ने भारतीय सामंतवाद की निम्नलिखित विशेषताएँ बतलायी हैं –

- भूमि अनुदान के साथ खेती करने वाले किसान का भी हस्तांतरण।
- बेगार प्रथा जैसी कुप्रथा का फैलाव।
- चूँकि वेतन के रूप में भूमि प्रदान किये जाते थे। इसलिए मुद्रा का अभाव भी सामंतवाद की प्रमुख विशेषता रही।
- सामंतवाद की बढ़ती प्रवृत्ति ने अतिरिक्त उत्पादन को हतोत्साहित किया जिससे व्यापार का ह्रास भी हुआ।
- राजतंत्र व्यवस्था व दण्ड प्रशासन के अधिकार भू–अनुदान का उपभोग करने वाले सामंतों को प्राप्त होना एक प्रमुख विशेषता है।
- अधिकारियों को वेतन के बदले अलग–अलग क्षेत्रों के राजस्व सौंप दिये जाते थे।

- किसान, शिल्पियों व व्यापारियों को सामंतों के अधीन कर दिया गया। उन्हें इच्छानुसार बसने व व्यापार करने पर रोक लगा दी गयी थी।

इस कारण ग्राम आधारित आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था को बल मिला तथा व्यापार–वाणिज्य का ह्रास देखने को मिलता है।

2-4 v/;k; d: vkx: dk e|[; Hkkx **(Further Main body of the Text)**

2-4-1 pksy lkezkT; dk foLrkj **(Expansion of Chola Empire)**

संगमकालीन साहित्य से उस समय के चोल शासक करिकाल के संबंध में व्यापक जानकारी प्राप्त होती है। इससे पता चलता है कि चोलों का प्रारंभिक इतिहास संगम युग से प्रारंभ होता है। संगम युग में चोल वंश का संस्थापक करिकाल ने उरैपुर को अपनी राजधानी बनाया था। करिकाल ने अपने समकालीन चेर और पांड्य राजाओं को परास्त किया तथा कावेरी नदी घाटी में अपनी स्थिति सुदृढ़ की। करिकाल ने अपने राज्य में ब्राह्मण धर्म को राजनकीय संरक्षण प्रदान किया तथा उद्योग–धंधों व कृषि की उन्नति के लिए व्यवस्थाएँ बनायी। उसने पुहार को चोलों की समुद्रे तटीय राजधानी के रूप में स्थापित किया जो एक प्रसिद्ध बंदरगाह भी था। इस प्रकार करिकाल ने एक मजबूत चोल शक्ति स्थापित की परंतु बाद के शासक कमजोर पड़ने लगे इस कारण संगमकालीन चोल शासकों ने तीसरी चौथीं शताब्दी तक ही शासन कर सके। करिकाल के बाद लगभग 9वीं शताब्दी तक चोलों का इतिहास अंधकारपूर्ण रहा। लगभग 850 ई. में पल्लवों के सांमत रहे चोलों में से विजयालय ने पल्लवों के अवशेष पर चोल शक्ति का पुनरूत्थान किया। इसलिए विजयालय को चोल साम्राज्य का द्वितीय संस्थापक के रूप में इतिहास में जाना जाता है। विजयालय ने पाण्ड्य शासकों से तंजौर को छीन कर उरैपुर के स्थान पर इसे अपने राज्य की राजधानी बनाया। तंजौर विजय की खुशी में विजयालय ने नरकेसरी की उपाधि धारण की। पल्लवों के सामंत रहे चोलों का इतिहास मुख्यतः अभिलेखों से जाना जाता है, जो कि संस्कृत, तमिल, तेलगु व कन्नड़ भाषा में लिखे गए हैं। चोल राज्य पेन्नार व कावेरी नदियों के बीच पूर्वी समुद्र तट पर अवस्थित था। इसमें कोरोमंडल तट तथा दक्कन के कुछ भाग जैसे उरैपरु, तंजावुर/तंजौर आदि क्षेत्र शामिल थे।

चोल वंश के संस्थापक विजयालय (850–75 ई.) के बाद उसका पुत्र आदित्य प्रथम 875 ई. में गदद्दी पर बैठा। आदित्य प्रथम ने अपने पराक्रम के द्वारा पल्लवों के अतिश्रिक्त पाण्ड्यों एवं कलिंग राज्य के गंगों को भी पराजित किया। पल्लव विजय के उपलक्ष्य में आदित्य प्रथम ने 'कोदण्डराम' की उपाधि धारण की। आदित्य प्रथम (875–907 ई.) की मृत्यु के बाद उसका पुत्र परांतक प्रथम चोल शासक बना। परांतक प्रथम ने पांड्य शासक राजसिंह द्वितीय तथा सिंहल राजा की संयुक्त सेना को बेल्लूर युद्ध में पराजित कर दिया और मदुरा पर चोल के प्रभुत्व को स्थापित किया। इस विजय के उपलक्ष्य में उसने मदुरैकोंड की उपाधि धारण की। परांतक प्रथम को अपने शासनकाल के अंत में राष्ट्रकूट वंश के शाशक कृष्ण तृतीय से तक्कोल्लम के युद्ध में पराजित होना पड़ा। इससे चोल राज्य की प्रतिष्ठा को गहरा आघात पहुँचा। परांतक प्रथम (907–953 ई.) के बाद लगभग 30 वर्षों तक का समय चोल राज्य दुर्बलता व अव्यवस्था के कारण अवनति की स्थिति में रहा। इस दौरान गुंडरादित्य, परांतक द्वितीय व सुंदर चोल तथा उत्तम चोल आदि शासकों ने राज किया। इसमें अधिक शासक दुर्बल साबित हुये। किन्तु परांतक द्वितीय (956–73 ई.) जिसे सुंदर चोल के नाम से जाना जाता है सबसे योग्य था। उसने अपने पराक्रम के द्वारा उस समय के पाण्ड्य शासक वीर पाण्ड्य को चेवर के मैदान में पराजित किया था।

परांतक द्वितीय के बाद उसका पुत्र चोल शक्ति को पुनः शिखर पर पहुँचाने वाला शासक के रूप में राजराज प्रथम के नाम से गद्दी पर बैठा। राजराज प्रथम (985–1014 ई.) के 30 वर्ष का शासनकाल चोल साम्राज्य के सर्वाधिक गौरवशाली वर्ष थे। राजराज प्रथम ने अपने सामरिक अभियान के अंतर्गत सर्वप्रथम चोल विरोधी त्रिसंगठन पांड्य, चेर तथा सिंहल अर्थात् श्रीलंका इन तीनों को पराजित किया।

राजराज पप्रथम ने श्रीलंका के शासक महेंद्र पंचम पर आक्रमण कर उसकी राजधानी अनुराधापुरम को बुरी तरह नष्ट कर दिया। उसने लंका के उत्तरी क्षेत्र को जीतकर वहाँ मामुण्डी चोलमण्डलम की स्थापना की और इस उपलक्ष्य में मामुण्डीचोल देव की उपाधि धारण की। राजराज प्रथम ने श्रीलंका में अपने विजित क्षेत्र मामुण्डी चोलमण्डलम की राजधानी पोलोन्नसवा को बनाया। उसने अपनी शक्तिशाली

नौ–सेना की सहायता से मालदीप पर विजय प्राप्त की। राजराज ने अपने साम्राज्य के विस्तार को मजबूत करने के लिए एक दूतमण्डल चीन भी भेजा था।

यह प्रथम चोल शासक था जिसने भूमि की पैमाइश कराई और पैमाइश के आधार पर कर निर्धारित किया। इससे राज्य की आय में वृद्धि हुई और साम्राज्य विस्तार के अभियान में सैनिक ताकत बढ़ाने में सहायता मिली। शैव मतानुयायी राजराज ने तंजौर में बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण कराया जिसे राजराजेश्वर या राजराज मंदिर के नाम से भी जानते हैं। राजराज प्रथम ने अपने शासन के दौरान चोल अभिलेखों का प्रारंभ ऐतिहासिक प्रशस्ति के साथ करवाने की प्रथा की शुरूआत की। उसने अपने राज्य में शैव धर्म के अतिरिक्त बौद्ध धर्म व अन्य धर्मों को भी आगे बढ़ने का अवसर दिया। उसके सहिष्णुता की नीति से राज्य में सुव्यवस्था कायम करने में सहायता मिली जिससे साम्राज्य विस्तार को भी बल मिला।

राजराज प्रथम के बाद उसका पुत्र राजेंद्र प्रथम (1014–44 ई.) चोल वंश का शासक बना। राजेंद्र प्रथम एक तरफ महान विद्या प्रेमी था तो दूसरी ओर वह अपने पिता के समान ही साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का था। महान विद्या प्रेमी होने के कारण इतिहास में राजेंद्र प्रथम को 'पंडित चोल' की उपाधि प्राप्त की।

उसने अपने विजय अभियान के प्रारंभ में पश्चिमी चालुक्यों, पाण्डयों एवं केरलों को पराजित किया। इसके बाद लगभग 1017 ई. में सिंहल (लंका) के विरूद्ध अभियान करके वहां के शासक महेंद्र पंचम को हराकर सम्पूर्ण सिंह व राज्य को चोल शासन के अधीन कर लिया।

1022 ई. में राजेंद्र प्रथम ने अपने साम्राज्य विस्तार की नीति को आगे बढ़ाते हुए बंगाल का अभियान किया। इस अभियान में उसने पाल शासक मेहीपाल को पराजित हकया। इस अवसर पर उसने गंगैकोंडचोलपुरम् की उपाधि धारण की। राजेंद्र प्रथम के दक्षिण–पूर्व एशियाई सैन्य अभियान में मलय प्रायद्वीप, जावा, सुमात्रा तथा अन्य द्वीप सम्मिलित थे। उसने अपने पिता से एक कदम आगे बढ़ते हुये दो बार अपना दूतमंडल भी चीन भेजा था। राजेंद्र प्रथम के बाद गद्दी पर बैठने वाला चोल शासक राजाधिराज प्रथम की चालुक्य वंशीय शासक सोमेश्वर से लड़ते हुए मृत्यु हो गई और राजेंद्र द्वितीय ने रणक्षेत्र में ही अपना राज्याभिषेक किया। राजेंद्र द्वितीय ने कोप्पम के युद्ध (1052–54 ई.) में सोमेश्वर

द्वितीय को बुरी तरह से पराजित किया। इस हार से लज्जित होकर सोमेश्वर ने तुंगभद्रा नदी में आत्महत्या कर ली। इसके बाद वीर राजेंद्र (1064–70 ई.) चोल वंश का शासक बना।

वीर राजेंद्र की मृत्यु के बाद अधिराजेंद्र मूल चोल वंश का अंतिम शासक बना था। जनता ने इसके प्रति विद्रोह करके इसे गद्दी से हटा दिया और जन–विद्रोह के आक्रोश में ही इसकी मृत्यु हो गई।

अधिराजेंद्र के बाद कुलोत्तुंग प्रथम (1070–1120 ई.) चोल चालुक्य वंश के रूप में शासन किया। इसके समय में वेंगी व मैसूर स्वतंत्र हो गये व इसका साम्राज्य तमिल प्रदेश एवं कुछ तेलुगू क्षेत्र तक ही सीमित रह गया था। कुलोतुंग प्रथम के बाद सिमटे हुए साम्राजय के रूप में विक्रम चोल व कुलोत्तुंग द्वितीय कुछ व्यवस्थित शासन कर पाये। किंतु कुलोत्तुंग द्वितीय के बाद के चोल चालुक्य वंशीय शासक नाम मात्र के ही शासक रहे। अंततः राजेंद्र तृतीय चोल–चालुक्य वंश का अंतिम शासक हुआ। इसके साथ चोल वंश समाप्त हो गया।

2-4-2 pky lkekT; dk i'kklu **(Administration of Chola-Empire)**

चोलकालीन शासन व्यवस्था राजतंत्रात्मक थी। सर्वाधिक महत्वपूर्ण पद राजा का पद वंशानुगत व्यवस्था पर आधारित था। चोलकालीन शासन की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि इसमें प्रबल केंद्रीय नियंत्रण के साथ ही बहुत अधिक मात्रा में स्थानीय स्वायत्तता भी थी। समस्त शासन का केंद्र बिंदु सम्राट होता था। चोल सम्राट की प्रतिमा मंदिरों में स्थापित की जाती थी और उसकी पूजा की जाती थी।

राजा की सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद की व्यवस्था थी। मंत्रिपरिषद में उच्च श्रेणी के अधिकारी को पेसन्दरम तथा निम्न श्रेणी के अधिकारी को शेरून्दरन कहा जाता था। इस समय अधिकारियों के वेतन का भुगतान नकद रूप में न करके भूमि के रूप में किया जाता था।

प्रशासनिक सुविधा के दृष्टिकोण से सम्पूर्ण चोल साम्राजय को 6 प्रांतों में बांटा गया था। प्रांतों को मण्डलम् कहा जाता था। मण्डम् के शासन की जिम्मेदारी प्रायः राजकुमारों को सौंपी जाती थी। चोलकालीन प्रशासनिक इकाइयों को निम्न रेखाचित्र द्वारा प्रस्तुत कर सकते हैं –

साम्राज्य →मंडलम् (प्रांत) → कोट्रम/वलनाडु (कमिश्नरी) →नाडु (जिला) → कुर्रम (गाँव)

इस प्रकार स्पष्ट है कि सर्वप्रथम साम्राज्य को प्रांतों में बांटा गया था जिन्हें मंडलम् कहते थे। आगे मंडलम अर्थात् प्रांत को कमिश्नरी में विभाजित किया गया था, जिन्हें कोट्टम या वलनाडु के नाम से जानते थे। कमिश्नरी जिला में बंटे थे जिन्हें नाडु से संबोधित किया जाता था। जिला को गाँवों में बांटा गया था जिन्हें कुर्रम कहते थे। मण्डलम् से लेकर ग्राम स्तर के प्रशासन के लिए स्थानीय सभाओं का सहयोग लिया जाता था। नाडु की स्थानीय सभा को नाटूर एवं नगर की स्थानीय सभा को नगरतार कहा जाता था।

चोलकालीन शासन प्रणाली की सर्वप्रमुख विशेषता थी – स्थानीय स्वायत्त शासन। ग्राम स्तर पर स्थानीय स्व–शासन प्रणाली मुख्यतः दो प्रकार की संस्थाओं – उर व सभा/महासभा के माध्यम से कार्य करती थीं। उर जनसामान्य की संस्था थी। इसका मुख्य कार्य होता था सार्वजनिक कल्याण के लिए तालाबों व बगीचों के निर्माण हेतु गाँव की भूमि का अधिग्रहण करना। इसकी बैठक में सभी ग्रामवासी भाग लेते थे। उर अपने प्रतिनिधियों को नकद वेतन देती थी। सभा/महासभा/ग्राम सभा मुख्यतः अग्रहारों व ब्राह्मण बस्तियों की संस्था होती थी। इसके सदस्यों को पेरूमक्कल कहा जाता था। सभा अपनी समितियों के माध्यम से कार्य करती थी, जिसे वारियम कहा जाता था। वारियम की सदस्यता के लिए मानदंड निर्धारित किये गये थे। सभा की बैठक गाँव में मंदिर के वृक्ष के नीचे एवं तालाब के किनारे होती थी। इसके अलावा व्यापारियों की सभा भी होती थी जिन्हें नगरम् कहा जाता था। नगरों में व्यापारियों के विभिन्न संगठन होते थे। महासभा को ग्रामवासियों से कर वसूलने व बेगार लेने का भी अधिकार केंद्र द्वारा प्रदान किये गये थे। महासभा की आय व व्यय का निरीक्षण केंद्र सरकार के अधिकारी करते थे। सभा या महासभा वर्ष में एक बार केन्द्रीय सरकार को कर देती थी। प्रायः उर व सभा ग्रामीण स्तर पर स्वतंत्र रूप से कार्य करती थी, किंतु असमान्य स्थितियों में केंद्र ग्रामसभा के स्वायत्त शासन में हस्तक्षेप करती थी।

चोल काल में राज्य की आय का मुख्य जरिया भूराजस्व था। भूराजस्व निर्धारण से पहले भूमि का सर्वेक्षण, वर्गीकरण व नाप–जोख की प्रक्रिया अपनायी जाती थी। भूमि की उर्वरता एवं वार्षिक फसल

चक्र को ध्यान में रखते हुए भूराजस्व का निर्धारण किया जाता था। संभवतः चोल काल में भूमि कर उपज का एक तिहाई हिस्सा (1/3 भाग) निर्धारित था, जिसे अन्न व नकद दोनों रूपों में वसूला जाता था। चोलकालीन अभिलेखों से पता चलता है कि इस काल में भूमि कर के अलावा अन्य कई प्रकार के करों – वृक्ष कर, गृह कर, व्यवसाय कर, द्वार कर आदि की व्यवस्था थी जिनसे राज्य को आय की प्राप्ति होती थी। विवाह समारोह पर भी कर लगता था।

चोलों की साम्राज्यवादी प्रवृत्ति, आर्थिक महत्वकांक्षा व भू–सामरिक स्थिति के अनुरूप एक मजबूत सैन्य संगठन का होना स्वाभाविक था। चोलों की स्थायी सेना में पैदल, अश्वारोही, गजारोही धनुर्धारी आदि शामिल होते थे। रथ सैना का उल्लेख नहीं मिलता है। इनके सैन्य संगठन में शक्तिशाली नौ–सेना सबसे महत्त्वपूर्ण थी। शक्तिशाली चोल शासक राजराज प्रथम व राजेंद्र प्रथम के समय में नौसेना चरमोत्कर्ष पर थी। बंगाल की खाड़ी में चोलों की नौसेना की मौजूदगी के कारण ही ऐसा कहा जाता था कि बंगाल की खाड़ी चोलों की झील बन गई। चोल सेना छावनियों में रहती थी जिसे 'कडगम' कहा जाता था। राजा के अंगरक्षक व विश्वसनीय सैनिकों को 'वल्लैकार' कहा जाता था, जो राजा के आदेश पर तुरंत अपने प्राण तक त्याग सकते थे। चोल काल में सेना की टुकड़ी का नेतृत्व करने वाले को नायक तथा सेनाध्यक्ष को महादण्डनायक कहा जाता था। सैनिकों को उनके शोर्य प्रदर्शन के लिए जो भूमि दी जाती थी उन्हें 'रक्त कोड्गय' कहा जाता था।

2-4-3 pkydkyhu lekt **(Chola Society)**

वर्ण–व्यवस्था के मौजूदगी के बावजूद चोलकालीन समाज ब्रह्मण और गैर–ब्राह्मणों में बँटा था। इस काल में क्षत्रिय व वैश्य वर्ग का अस्तित्व पूर्व काल की भांति देखने को नहीं मिलता है। चोलकालीन समाज में जाति व्यवस्था के अंतर्गत ब्राह्मण एवं वल्लाल का स्थान सर्वोच्च था। शूद्र वर्ग के बड़े भूस्वामी वल्लाल होते थे। राज्य की ओर से ब्राह्मणों को दी गयी कर मुक्त भूमि को चतुर्वेदि मंगलम कहते थे। इस काल के समाज में व्यावसायिक आधार पर वर्ग विभाजन का उल्लेख मिलता है। व्यावसायिक आधार पर दो वर्ग – 'वलंगई' व 'इंडगई' का अस्तित्व मिलता है। कृषि उत्पादन से जुड़े विशेषाधिकार युक्त वर्ग जिनका समाज में आदरणीय स्थान था 'वलंगई' कहलाते थे। जबकि मजदूरों व

शिल्पकारों को 'इडंगई' वर्ग के अंतर्गत रखा गया था। यद्यपि दास प्रथा समाज में आंशिक रूप से मौजूद था तथापि बड़े पैमाने पर दास प्रथा प्रचलन में नहीं था। चोल काल में स्त्रियों की स्थिति पूर्वकाल की अपेक्षा अच्छी थी। उच्च कुल की स्त्रियाँ शिक्षा–संपन्न व प्रशासन से संबद्ध थीं, किन्तु सती प्रथा एवं देवदासी प्रथा जैसी कुरीतियों के मौजूद होने के प्रमाण भी इस काल में मिलते हैं। पर्दा प्रथा के मौजूद होने का कोई प्रमाण नहीं मिलता है। समाज में शैव व वैष्णव दोनों मतों को मानने वाले मौजूद थे। शैव संत–नायनार व वैष्णव संत–आलवार ने इनके प्रचार–प्रसार महत्त्वपूर्ण भमिका निभाई। अधिकतर चोल शासक शैव धर्म के कट्टर अनुयायी थे। महत्त्वपूर्ण चोल शासक राजराज प्रथम के काल में तो शैव धर्म अपने चरम पर पहुँच गया था। इसके बावजूद चोलकालीन समाज में वैष्णव मत के प्रसिद्ध आचार्य रामानुजाचार्य थे, जिन्होंने विशिष्टाद्वैत मत का प्रतिपादन किया। चोलकालीन समाज में शिक्षा, कला व संस्कृति के विकास में मंदिरों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मंदिरों को शासकों से अनुदान प्राप्त होते थे जिनसे इनका खर्च चलता था।

2-4-4 lkekftd] lkaLd`frd o lkfgfR;d fodkl ¼600&1206 b-½ **(Social, Cultural and Literacy development from 600 to 1206 A.D.)**

प्राचीन भारत के इतिहास में 600 से 1206 ई. को गुप्तोत्तर काल या पूर्व मध्यकालीन इतिहास के नाम से जानते हैं। इस काल को प्राक् मुस्लिमयुगीन के नाम से भी संबोधित किया जा सकता है, क्योंकि वास्तव में मुहम्मद गौरी का गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक ने ही भारत में दिल्ली सल्तनत के नाम से मुस्लिम सत्ता की स्थापना की। कुतुबुद्दीन के वंश के नाम को गुलाम वंश के नाम से जानते हैं। अतः 1206 ई. से ही दिल्ली सल्तनत काल से भारत में मध्यकालीन भारत के इतिहास के नाम से जानते हैं। इसके पहले का इतिहास 550 या 600 ई. से 1206 ई0 तक के इतिहास को पूर्व मध्यकालीन या गुप्तोत्तर काल के नाम से जाना जाता है।

सामंतवाद का विकास, वर्ण–व्यवस्था की कठोरता, नवीन वर्णों का उदय, वैश्य वर्ण का पतन, शूद्र वर्ण का उत्थान तथा जातियों एवं उपजातियों की संख्या में वृद्धि गुप्तोत्तर काल में सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख कारक थे। यद्यपि परंपरागत रूप से चले आ रहे चार वर्णों – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र में

विभाजित था तथापि इनके अतिरिक्त इस काल में जातियों एवं उपजातियों में बेतहाशा वृद्धि हुई। समाज में ब्राह्मणों का सर्वोच्च स्थान था। इसके प्रमाण न केवल धार्मिक ग्रंथों से होती है, बल्कि विदेशी यात्रियों ह्वेनसांग, अलमसूदी, अलबरूनी आदि के विवरण से भी मिलते हैं। वस्तुतः इस काल में व्याप्त सामंतवादी प्रवृत्ति के कारण उत्पन्न आर्थिक परिस्थितियों ने सामाजिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया। इस काल में हिन्दू समाज की रूढ़िवादिता में बेतहाशा वृद्धि देखने को मिलता है। अन्तर्जातीय विवाह पर कठोर प्रतिबंध लगा दिये गये थे। एक तरफ विधवा विवाह या पुनर्विवाह को वर्जित कर दिया गया तो दूसरी ओर स्मृतियों में स्त्री विवाह की उम्र 8 से 10 वर्ष बताई गई जिससे बाल विवाह को प्रोत्साहन मिला। समाज में व्याप्त सती एवं जौहर प्रथा, पुत्री बाल हत्या, बहुपति विवाह, देवदासी एवं वेश्यावृत्ति जैसी कुप्रथा ने निश्चित रूप से इस काल में स्त्रियों की स्थिति को कमजोर किया। यद्यपि इस काल में इंद्र लेखा, मोरिक, पद्यश्री, मदालसा एवं सुभद्रा जैसी उच्चकोटि के शिक्षित व चरित्र वाली स्त्रियों का उल्लेख मिलता है लेकिन यह स्थित समाज के उच्च वर्ग तक ही सीमित थी।

गुप्तोत्तरकालीन या पूर्व मध्यकालीन अर्थात् 600 से 1200 ई. के भारतीय समाज में दासों की संख्या में वृद्धि देखने को मिलता है। 'भिताक्षरा' में नारद द्वारा वर्णित 15 प्रकार के दासों का वर्णन किया गया है।

इस काल में अस्पृश्य जातियों की संख्या में वृद्धि हुई जो समाज की निम्नतर स्थिति का सूचक है। इस काल में अस्पृश्यों के अंतर्गत चाण्डालों के अतिरिक्त स्मृति में कुछ अन्य जातियों जैसे रजक (धोबी), चर्मकार, नट, वरूड़, कैवर्त, धीवर, भेद, भिल्ल, कोली, पुष्कर एवं वराट जाति का उल्लेख मिलता है।

इस काल में गणक एवं लेखक के रूप में भूमि एवं राजस्व से संबंधित दस्तावेजों को सुरक्षित रखनेवाले जाति के रूप में कायस्थों की उत्पत्ति एक महत्वपूर्ण सामाजिक घटना मानी जाती है। सर्वप्रथम कायस्थों का उल्लेख याज्ञवत्क्य स्मृति में मिलता है जबकि जाति के रूप में कायस्थों का उल्लेख सर्वप्रथम ओशनम् स्मृति में मिलता है।

600–1200 ई. के भारतीय समाज में कर्म या व्यवसाय आधारित वर्ण–व्यवस्था के बंधन टूट गये थे। आजिविका के लिए ब्राह्मण भी कृषि कार्य करते हुए देखे जाते है जो शूद्र भी व्यापार–वाणिज्य, शिल्प

आदि कार्य करते हुए मिल जाते हैं। इस काल के धार्मिक ग्रंथ, अभिलेख व विदेशी यात्रियों के विवरण से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र सभी अपने–अपने क्षेत्र से अलग कार्य करते हुए पाये गये हैं।

स्मृतिकार पाराशर ने ब्राह्मण के लिए कृषि को सामान्य व्यवसाय बतलाया है। चीनी यात्री ह्वेनसांग के विवरण के अनुसार टक्क देश के ब्राह्मण अपनी खेती खुद ही करते थे। प्रतिहारों के समय के पेहोवा अभिलेख में घोड़ों के व्यापारी के रूप में ब्राह्मण का उल्लेख मिलता है। मेधालिपि में दी गई व्यवस्था के अनुसार राजा शब्द गैर क्षत्रिय के लिए भी प्रयोग किया जा सकता था। इस काल में राजपूतों की उत्पत्ति भी सामाजिक संरचना में महत्वपूर्ण बदलाव लाया।

इस प्रकार 600 से 1206 ई. के भारतीय समाज में वर्ण–व्यवस्था के बंधन टूट गये फिर भी समाज में ब्राह्मणों का स्थान श्रेष्ठ था। विशेंषाधिकार ब्राह्मणों को किसी भी अपराध के लिए मृत्युदण्ड देना वर्जित था। अपराध की स्थिति में ब्राह्मण को देश निकाला के रूप में दण्डित किया जाता था। इस काल में रूढिवद्ध समाज ने कलिवर्ज्य सिद्धांत प्रस्तुत कर सामुद्रिक यात्रा एवं विदेश यात्रा को प्रतिबंधित कर दिया था। इसके विरोध करने का भी उल्लेख मिलता है। इस प्रकार 600 से 1200 ई. के समाज में पूर्व कालों की अपेक्षा निम्नतर स्थिति का ही दर्शन मिलता है।

सांस्कृतिक विकास की यात्रा में गु्प्तोत्तरकालीन प्रचलित सभी धर्मों में थोड़ा बहुत बदलाव देखने को मिलता है। व्यापक सामंतवादी प्रवृत्ति के कारण धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से गुप्तोत्तरकाल में क्षेत्रीयता की भावना का आविर्भाव एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है। आंध्र, आसाम, बंगाल, गुजरात, राजस्थान, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, उड़ीसा, तमिलनाडु आदि सभी स्थानों पर क्षेत्रीय सांस्कृतिक इकाइयों का विकास हो रहा था।

इस युग में ब्राह्मण व बौद्ध धर्म दोनों में बदलाव देखने को मिलता है। नवीन तांत्रिक व कापालिक जैसे रहस्यमयी सम्प्रदायों के उदय के कारण बौद्ध धर्म का बिल्कुल बदला हुआ रूप इस काल में मिलता है। लगभग सभी धर्मों के नए रूप समाज के सामने आए और जैन धर्म भी इससे अछूता न रह सका। वैष्णव और शैव मत की तरह बौद्ध और जैन धर्मों में भी ईश्वरवादी प्रवृत्तियों का दर्शन होता है।

हिन्दू धर्म के अंतर्गत अवतरारवाद एवं भक्ति मार्ग का व्यापक प्रचलन इस समय उत्तरी व दक्षिणी दोनों भागों में था। हिन्दू अपने उपासना में वैष्णव व शैव मतों के अतिरिक्त सूर्य, ब्रह्मा, इन्द्र, अग्नि, गणेश, भगवती, दुर्गा, लक्ष्मी, काली आदि की उपासना करते थे। शक्ति के दोनों रूपों– सौम्य व उग्र की उपासना करने वाले शाक्त समाज में मौजूद थे। दक्षिण भारत में तमिल प्रदेश में आलवार व नायनार संतों ने वैष्णव व शैव मतों के प्रचार–प्रसार के द्वारा भक्ति आंदोलन की शुरूआत की थी। इसके अलावा दक्षिण भारत में शंकराचार्य, कुमारिल भट्ट, रामानुजाचार्य एवं माध्वाचार्य जैसे महान विद्वानों ने हिन्दू धर्म को बौद्धिक व दार्शनिक चिंतन के द्वारा नवीन दिशा प्रदान की। विष्णु के अवतारों में वराह, कृष्ण व राम की लोकप्रियता अधिक थी। आदिवराह की मूतियां बादामी की गुहाओं, महाबलिपुरम, गुजरात, राजस्थान, बंगाल, उड़ीसा एवं उत्तर प्रदेश से मिली हैं। प्रतिहार शासक मिहिर भोज ने आदि वराह की उपाधि धारण की थी। गुप्तोत्तरकालीन शासकों में प्रतिहार, परमार, चंदेल, चेदि, कलचुरी, सेन आदि के काल में शैव मत का बोलबाला था।

इस काल में शैक धर्म अनेक मतों में बंटा हुआ था। इनमें सबसे अधिक प्राचीन पाशुपत मत था, जिसके प्रवर्तक लकुलीश थे। शैव का अतिमार्गी रूप – कापालिक व कालमुख भी इस समय के समाज में मौजूद था। दक्षिण भारत में 12वीं शताब्दी में शैव धर्म का लिंगायत सम्प्रदाय का खूब प्रचलन था। बासव व उसके भतीजे चन्नाबासव जो लिंगायत संप्रदाय के थे, वीर शैवमत के प्रवर्तक के रूप में माने जाते हैं। शक्ति पूजा का सर्वाधिक प्रचलन जनजातीय व आदिवासी समाजों में देखने को मिलता है। मध्यप्रदेश व उड़ीसा के जनजातियों व आदिवासी क्षेत्रों में आज भी इसके प्रमाण मौजूद हैं। दसवीं शताब्दी में विशेषकर पश्चिमी भारत मे गणपति पूजा बहुत प्रचलित हो गई और गणपत्य संप्रदाय प्रकाश में आई जिनमें गणपति को सर्वश्रेष्ठ मानकर पूजते थे। इस संप्रदाय के लोग गणेश को शिव व पार्वती से भी श्रेष्ठ मानते थे। इस समय भारत में सूर्य पूजा का प्रसिद्ध केंद्र मुल्तान था। हर्ष द्वारा प्रयाग में, बल्लभी नरेश द्वारा गुजरात में, कार्कोट वंशीय शासक द्वारा कश्मीर में, गंग वंशीय शासक द्वारा उड़ीसा में भव्य सूर्य मंदिर बनाने व उसकी उपासना का प्रमाण आज भी मौजूद है।

कश्मीर, पंजाब, नेपाल, कामरूप, बंगाल, उड़ीसा, मध्य एवं दक्षिण भारत में 7वीं शताब्दी के लगभग तांत्रिक संप्रदाय का व्यापक प्रचार–प्रसार हुआ। इस संप्रदाय के अंतर्गत तंत्र, मंत्र एवं यंत्र का विशेष महत्व था। जाति एवं वर्ण के बंधनों से मुक्त इस संप्रदाय में ध्यान योग तथा चर्चा की व्यवस्था थी।

600–1206 ई. के गुप्तोत्तरकालीन भारतीय समाज में बौद्ध धर्म का अत्यंत बदला हुआ रूप तांत्रिक प्रभाव के कारण देखने को मिलता है। इस काल में तांत्रिक प्रभाव के कारण बौद्ध धर्म के मंत्रयान, वज्रयान, सहजयान, कालचक्रयान आदि रूप अस्तित्व में आ गये। इस समय बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा के अंतर्गत अवलोकितेश्वर एवं तारा की पूजा अर्चना की जाती थी। इस समय बौद्ध संघ की स्त्रियों के प्रवेश से बौद्ध भिक्षु चरित्र व नैतिक दृष्टि से भ्रष्ट हो गये।

इस कारण बौद्ध धर्म पतन की ओर अग्रसर हो गया। एकमात्र बंगाल के पाल शासकों ने ही बौद्ध धर्म को सरंक्षण एवं प्रोत्साहन दिया। बौद्ध धर्म के विपरीत जैन धर्म को गुप्तोत्तर काल में अधिक प्रोत्साहन मिला। दक्षिण भारत में चालुक्य एवं राष्ट्रकूट वंश के शासकों के सरंक्षण में जैन धर्म की काफी उन्नति हुई। गुप्तोत्तरकालीन भारतीय स्थापत्य कला के मुख्य नमूने इस काल के मंदिर हैं। इस काल में मंदिर निर्माण की तीन शैलियां – नागर, बेसर व द्रविड़ प्रचलित थी। उत्तरी भारत में हिमालय से लेकर विंध्य तक नागर शैली का फैलाव था जबकि नागर व द्रविड़ शैली के मिश्रण से बनी बेसर शैल विंध्य से कृष्णा नदी क्षेत्र तक फैली थी। कृष्णा नदी के दक्षिण में कन्याकुमारी अंतरीय तक द्रविड़ शैली का विस्तार था।

उड़ीसा में लिंगराज मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर व मध्य प्रदेश में खुजराहों के मंदिर नागर शैली में निर्मित प्रसिद्ध मंदिर हैं। जबकि नागर एवं द्रविड़ शैली के मिश्रित रूप बेसर शैली के अंतर्गत बने मुख्य मंदिर महाराष्ट्र में मिलते हैं। द्रविड शैली के मंदिर दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य में मिलते हैं।

इस काल में दक्षिण भारत में पल्लव कलाकारों ने वास्तुकला को धीरे–धीरे काष्ठ कला व कंदराकला के प्रभाव से मुक्त करना प्रारंभ किया। पल्लवकालीन वास्तुकला की मुख्य शैलियाँ जो प्रमुख पल्लव शासकों के नाम पर हैं – महेंद्र वर्मन शैली, मामल्ल शैली, राजसिंह शैली एवं नंदिवर्मन शैली का खूब प्रचलन

था। महेंद्र वर्मन शैली के मंदिरों को मंडप कहा गया है। सप्त पगोड़ा के नाम से प्रसिद्ध मामल्य शैली के रथ मंदिर आज भी उत्कृष्ट नमूना के लिए विश्व–विख्यात है।

चोलकालीन शासक राजराज द्वारा निर्मित तंजौर का वृहदीश्वर मंदिर द्रविड़ शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है। द्रविड़ शैली का चरमोत्कर्ष चोलों के काल में हुआ। पांड्यों के मंदिरों की मुख्य विशेषता इनके मंदिरों का विशाल प्रवेश द्वारा था जिसे गोपुरम् के नाम से जानते थे। साहित्यिक विकास के अंतर्गत इस काल में संस्कृत भाषा के अलावा क्षेत्रीय स्तर की भाषायें भी विकसित हुई। संस्कृत के प्रयोगों में जटिलता एवं कृत्रिमता आती जा रही थी। इस काल में अपभ्रंश आद्य'– हिंदी, आद्य–बंगाली,? आद्य–राजस्थानी, आद्य–गुजराती, आद्य–मराठी के रूप में विकसित हो रहे थे। इस काल में क्षेत्रीय राजनीतिक शक्तियों के व्यापक प्रसार के कारण क्षेत्रीय भाषाओं की प्रबलता भी संस्कृत के साथ साहित्य में देखने को मिलते हैं। इस समय राजाओं के दरबार में रहकर रचना करने वाले कवियों व लेखकों के अतिरिक्त भोज, यशपाल, कुलशेखर, रविवर्मन, सोमेश्वर, विग्रह राज, बल्लालसेन एवं श्रीहर्ष जैसे राजा भी अपनी कुछ महत्वपूर्ण कृतियों के कारण प्रसिद्ध हुए।

10वीं शताब्दी के लगभग ही गद्य–पद्य मिश्रित चंपू नाम की नवीन शैली का प्रचलन हुआ। इस समय के कुछ महत्त्वपूर्ण चंपू शैली के रचित ग्रंथ त्रिविक्रम भट्ट का नलचंपू व दमयंतीकथा तथा मदालसा चंपू आदि हैं। ललित काव्य के अंतर्गत सर्वोत्कृष्ट कृति 'गीतगोविन्द' है। राधा–कृष्ण के प्रणय से संबंधित इस ग्रंथ की रचना बंगाल के सेन वंश के शासक लक्ष्मण सेन के दरबारी कवि जयदेव ने की।

काव्यशास्त्र के क्षेत्र में उद्भट्ट द्वारा रचित 'काव्यालंकार संग्रह', वामन का 'काव्यालंकारसूत्र', आनन्दवर्धन का 'ध्वन्यालोक', राजशेखर की 'काव्यमीमांसा', मम्मर का 'काव्य प्रकाश', भोज का 'सरस्वती–कंठा–भरण' आदि महत्त्वपूर्ण कृतियां हैं।

चिकित्साशास्त्र के क्षेत्र में धन्वंतरि की 'निघंटु', नागार्जुन की 'रस रत्नाकर' आदि महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं। इसके अलावा गणित व ज्योतिष पर लिखे गये कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथ – गणितसार, आर्यसिद्धांत, सिद्धांतशिरोमणि आदि हैं। सारंगदेव का संगीतरत्नाकार, सोमेश्वर का मानसोल्लास आदि संगीत पर लिखे गये महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं।

2-5 Áxfr leh{kk (Check your Progress):

भाग (क) खाली स्थान की पूर्ति पर आधारित प्रश्न (Fill in the blanks based questions)

(i) गुप्तोत्तर काल में ललित काव्य के अंतर्गत सर्वोत्कृष्ट कृति गीतगोविंद .... की रचना है।

(ii) खुजराहों के मंदिर .... शैली में बने हैं।

(iii) कालचक्रयान .... धर्म का बदला हुआ रूप है।

(iv) कायस्थ का एक जाति के रूप में उल्लेख सर्वप्रथम .... काल में मिलता है।

(v) कोणार्क के सूर्य मंदिर (ब्लैक पैगोडा) का निर्माण गंग वश के शासक .... ने करवाया था।

(vi) .... के समय में स्थानीय स्वायत्त शासन शिखर पर पहुँचा।

(vii) .... चोल शासक ने पंडित चोल की उपाधि धारण की।

(viii) चोल .... के सामंत थे।

(ix) सातवाहन वंश के .... अभिलेख से भूमिदान का प्रथम पुरालेखीय प्रमाण प्राप्त होता है।

(x) त्रिपक्षीय संघर्ष के फलस्वरूप कन्नौज पर अंतिम रूप से .... का अधिकार हो गया।

भाग (ख) सत्य–असत्य कथन पर आधारित प्रश्न (True-False Statements bases questions)

(i) शैव धर्म का सर्वाधिक प्राचीन मत पाशुपत मत था। ( )

(ii) गुप्तोत्तर काल में जाति के रूप में कायस्थों का उल्लेख सर्वप्रथम मनुस्मृति में मिलता है।( )

(iii) स्मृतियों में स्त्री विवाह की उम्र 8 से 10 वर्ष बताई गई है। ( )

(iv) 'भारतीय सामंतवाद पुस्तक' रामशरण शर्मा के द्वारा लिखा गया। ( )

(v) भारत के इतिहास में राजपूत काल सामंतवाद का चरमोत्कर्ष था। ( )

(vi) पल्लव काल में निर्मित महाबलीपुरम् का सप्त रथ मंदिर को सप्त पैगोडा कहा जाता है। ( )

(vii) 9वीं शताब्दी में चोल वंश का संस्थापक परांतक था। ( )

(viii) तमिल रामायण रामावतारम के लेखक कम्बन चोल शासक कुलोत्तुंग तृतीय के दरबार में रहते थे। (   )

(ix) तंजौर का वृहदेश्वर मंदिर या राजराजेश्वर मंदिर द्रविड़ शैली का सबसे ऊँचा विमान शैली का मंदिर है। (   )

(x) चोलों के स्वर्ण सिक्के को दीनार कहते थे। (   )

2-6 lkjka'k@ laf{kfIrdk (Summary)

- चोल पल्लवों के सामंत थे।
- चोल राज्य पेन्नार व कावेरी नदियों के बीच पूर्वी समुद्र तट पर अवस्थित था।
- चोल साम्राज्य का संस्थापक विजयालंय था।
- विजयालय को चोल साम्राजय का द्वितीय संस्थापक माना जाता है।
- संगमकालीन चोल का पराक्रमी शासक करिकाल था।
- संगमकालीन चोलों की राजधानी उरैयुर थी।
- पल्लवों के अवशेष पर विजयालय द्वारा 9वीं शताब्दी स्थापित चोल साम्राज्य की राजधानी तंजौर थी।
- विजयालय ने नरकेसरी की उपाधि धारण की।
- चोल शासक परांतक प्रथम ने पांड्य वंश की राजधानी मदुरा को विजित किया था इसलिए उसने 'मदुरैकांड' की उपाधि धारण की।
- चोल अभिलेखों को ऐतिहासिक प्रशस्ति के साथ आरंभ करवाने की प्रथा की शुरूआत इस वंश के प्रसिद्ध शासक राजराज प्रथम ने किया।

- राजराज प्रथम ने श्रीलंका पर विजय की खुशी में श्री लंका में मामुण्डी चोलमण्डलम् नगर की स्थापना की और मामुण्डीचोल देव की उपाधि धारण की।
- राजराज प्रथम शैव धर्म का अनुयायी था।
- राजराज प्रथम ने तंजौर में द्रविड़ शैली में बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया जिसे राजराजेश्वर मंदिर भी कहते हैं।
- विद्वान चोल शासक राजेंद्र प्रथम ने 'पंडित चोल' की उपाधि धारण की।
- चोल काल में शिक्षा के लिये दिये गए भमि अनुदानों को 'भोगम्' कहा जाता था।
- चोलकालीन चतुर्भुज नटराज (शिव) की प्रतिमा विश्व की श्रेष्ठतम प्रतिमा–रचनाओं में एक है जो कांस्य निर्मित है।
- राजेंद्र तृतीय चोल वंश का अंतिम शासक था।
- प्रथम चोल शासक जिसने भूमि की पैमाइश कराई और इसके आधार पर कर निर्धारित किया राजराज प्रथम था।
- चोल शासक राजराज ने गंगैकोंड चोल की उपाधि धारण की।
- चोल सेना की छावनी को 'कंडगम' कहते थे।
- चीन से व्यापारिक संबंध स्थापित करने के लिए 72 प्रतिनिधियों का शिष्टमंडल चीन भेजनेवाला चोल शासक कुलोत्तुंग प्रथम था।
- ग्रामीण प्रशासन के अंतर्गत 'उर' सामान्य लोगों की संस्था थी।
- उर की बैठक में सभी ग्रामवासी भाग लेते थे।
- सभा या महासभा मूलतः अग्रहारों व ब्राह्मण बस्तियों की संस्था थी।

- अन्न का मान एक कलम (तीन मन) था।
- 'वेलि' भूमि माप की इकाई थी।
- सोने के सिक्के को 'काशु' कहा जाता था।
- चोल काल में बड़े भू–स्वामी को 'वेल्लाल' कहते थे।
- चोल काल में प्रायः मंदिरों के साथ संबद्ध विद्यालय को 'घटिका' कहते थे।
- वह भूमि जिससे मिलने वाला राज्स्व अलग से ग्राम जलाशय के रख–रखाव के लिये निर्धारित कर दिया जाता था उसे 'एरिपत्ति' कहते थे।
- श्रीलंका (सीलोन) या सिंहल राज्य पर विजय प्राप्त करनेवाला चोल शासक था – राजेंद्र प्रथम।
- दक्षिण भारत का चोल राजवंश अपनी नौ सेना शक्ति के लिए प्रसिद्ध था।
- दक्षिण भारत का प्रसिद्ध तक्कोल्लम युद्ध चोल व होयसल के मध्य लड़े गये।
- नटराज की प्रसिद्ध कांस्य मुर्ति चोल कला का प्रसिद्ध उदाहरण है।
- चोल शासक राजेंद्र I ने सर्वप्रथम दक्षिण–पूर्व एशिया के विरूद्ध नौ–सैनिक अभियान चलाया था।
- कंबन की रामायण को तमिल साहित्य का गौरव ग्रंथ माना जाता है।
- तमिल कवि कंबन चोल शासक कुलोत्तुंग तृतीय के दरबार में रहते थे।
- तंजौर के बृहदोश्वर मंदिर के विमान को 'भारतीय वास्तुकला का निकर्ष' माना जाता है।
- चोलकाल में ग्राम–सभाओं का विभाजन उर, सभा तथा नगरम् में हुआ था।
- सभा की बैठटक गांव के मंदिर में, वृक्ष के नीचे व जलाशय के किनारे होती थी।
- त्रिपक्षीय संघर्ष की वास्तविक पहल गुर्जर प्रतिहार वंश के वत्सराज ने की थी।

- दक्षिण से उत्तर भारत की राजनीति में हस्तक्षेप करने वाली दक्षिण की पहली शक्ति राष्ट्रकूट थी।
- 9वीं शताब्दी में भारत आये अरब यात्री सुलेमान ने गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य को 'रूहमा' कह कर संबोधित किया।
- बगदाद यात्री मलमसूदी ने गुर्जर प्रतिहार वंश को अल–गुजर एवं इस वंश के शासकों को 'बौरा' कहकर पुकारा।
- दक्षिण भारत में मंदिरों के विशाल प्रवेश द्वार को 'गोपुरम' कहते हैं।
- मंदिर निर्माण की विमान शैली चोल काल में बहुत प्रसिद्ध थी। यद्यपि विमाल शैली का प्रयोग पल्लव काल से ही चला आ रहा था।
- पांड्य शासकों ने भी मंदिर निर्माण में विमान शैली का प्रयोग किया।
- चोल काल में ब्राह्मणों को दी गयी कर मुक्त भूमि को 'चतुर्वेदि मंगलम्' कहते थे।
- चोल शासक परांतक द्वितीय को सुंदरचोल के नाम से भी जाना जाता था।
- आदि गुरू शंकराचार्य पर बौद्ध शून्यवाद का प्रभाव के कारण कुछ विद्वान इन्हें 'प्रच्छन्न बौद्ध' की संज्ञा देते हैं।
- शंकराचार्य ने सन्यासी समुदाय में सुधार के लिए भारत के चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना की।
- शंकराचार्य द्वारा स्थापित मठ –

मठ/पीठ	प्रदेश
ज्योतिष्पीठ, बद्रीनाथ	उत्तराखंड
गोवर्धनपीठ, पुरी	ओडीसा

शारदापीठ, द्वारिका	गुजरात
श्रृंगोरीपीठ, मैसूर	कर्नाटक

- शंकराचार्य का जन्म दक्षिण भारत के केरल स्थित कलादी ग्राम में 788 ई. में हुआ था।
- शंकराचार्य को अद्वैतवाद का प्रवर्तक माना जाता है।
- शंकराचार्य ने उपनिषदों, भगवद्गीता एवं ब्रह्मसूत्र पर भाष्य लिखे हैं।
- 600—1206 ई. अर्थात् गुप्तोत्तरकालीन भारत में दैनिक लेन—देन में कौड़ियों का प्रयोग होता था।
- कौड़ियों को प्रतिहारों ने अपने अभिलेख को 'कापर्दक' कहा है।
- राजतरंगिणी का लेखक कल्हण, हर्ष का आश्रित कवि था।

2-7 ldr&lpd **(Key-words)**

अध्ययनोपरांत – अध्ययन के बाद

पुनरूत्थान – फिर से उत्थान अर्थात् तरक्की

पृष्ठभूमि – स्थिति, दशा

त्रिपक्षीय – तीन पक्ष

तात्कालिक – वर्तमान

दूरगामी – भविष्य

ब्राह्मण ग्रंथ – वेदों की गद्य रूप में सरल व्याख्या पर आधारित ग्रंथ जिसका संबंध कर्मकांड से है।

संकल्पना – विचार, संपतयय (concept)

बेगार – बिना मजदूरी के या कम—से—कम मजदूरी देकर जबरदस्ती काम करवाना।

संगम – तमिल कवियों की गोष्ठी या समिति

संगमकालीन साहित्य – संगम काल में तमिल भाषा में रचे गये साहित्य

गंगैकोंडचोल – गंगा क्षेत्र का विजेता चोल

मदुरैकोण्ड – मदुरा का विजेता

कलिवर्ज्य – पीछे से चली आ रही मान्यताओं को कलिकाल में वर्जित करना अर्थात् नहीं मानना

निकष – अद्‌भुत, श्रेष्ठ

2-8 Lo&eY;kdu d fy, ijh{kk **(Self Assessment Test SAT)**

भाग (क) (Part-A) बहुविकल्पी प्रश्न (Multiple Choice Questions MCQS)

(i) गुप्तोत्तरकाल (600–1200 ई.) का महत्त्वपूर्ण सामाजिक आर्थिक परिवर्तन --------------- को माना जाता है।

(a) सामंतीय व्यवस्था एवं भूमिदान प्रणाली

(b) समाज में ब्राह्मणों का वर्चस्व एवं व्यापार में वृद्धि

(c) दासों का कृषि कार्य में प्रवेश

(d) शुद्रों का व्यापार करने का अधिकार

(ii) गुप्तकाल के पतन के बाद 550 से 750 ई. के मध्य दक्षिण भारत किन दो राजवंशों पारस्परिक संघर्ष का क्रीड़ास्थल बना रहा ?

(a) चोल एवं चालुक्य (b) राष्ट्रकूट एवं चोल

(c) चालुक्य एवं पल्लव (d) पल्लव एवं चोल

(iii) त्रिपक्षीय संघर्ष में गुर्जर–प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय को किस राष्ट्रकूट शासक ने पराजित किया ?

(a) ध्रुव (b) इन्द्र तृतीय

(c) गोविंद तृतीय (d) कृष्ण तृतीय

(iv) प्रतिहारों को गुर्जर–प्रतिहार क्यों कहा गया ?

(a) क्योंकि वे गुर्जर जाति के थे।

(b) क्योंकि गुर्जर एवं प्रतिहार नामक दो वंशों ने मिलकर गुर्जर–प्रतिहार वंश की स्थापना की।

(c) क्योंकि इनकी उत्पत्ति गुजरात अथवा दक्षिण–पश्चिम राजस्थान में हुई।

(d) इनमें से कोई नहीं।

(v) निम्नलिखित में से किसने राष्ट्रकूट वंश की नींव डाली ?

(a) अमोघवर्ष (b) दंतिदुर्ग

(c) ध्रुव (d) कृष्ण I

(vi) निम्नलिखित में से कौन सा चोल प्रशासन की मुख्य विशेषता थी ?

(a) साम्राज्य का प्रांतों में विभाजन

(b) ग्राम प्रशासन की स्वायत्तता

(c) राज्य के मंत्रियों को समस्त अधिकार

(d) कर–संग्रह प्रणाली से छूट

(vii) चोल शासकों में से किसने राजकीय अभिलेखों के आरंभ में ऐतिहासिक प्राक्कथन (भूमिका) देने की प्रथा चलाई ?

(a) राजेंद्र I (b) परांतक

(c) राजराज I (d) कुलोतुंग

(viii) मदुरैकोण्ड उपाधि थी –

(a) आदित्य I (b) परांतक I

(c) परांतक II (d) राजेंद्र I

(ix) किस लेखक ने सर्वप्रथम सामंत शब्द का प्रयोग अधीनस्थ शासक के अर्थ में किया ?

(a) बाणभट्ट (b) अश्वघोष

(c) मनु (d) नारद

(x) 72 व्यापारी, चीन में किसके कार्यकाल में भेजे गए थे ?

(a) कुलोत्तुंग (b) राजेंद्र I

(c) राजराज I (d) राजाधिराज

Hkkx ¼[k½ **(Part-B)** y?kq mÙkjh; iz'u **(Short Answer Type Questions)**

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें (Write down short notes on the followings) :-

(i) त्रिपक्षीय संघर्ष (Triparties Struggle)

(ii) भारतीय सामंतवाद (Indian form of Feudalism)

(iii) चोलकालीन समाज (Chola Society)

(iv) चोलकालीन साहित्य व कला (Literature and Art during Chola period)

(v) गुप्तोत्तरकालीन समाज (Postgupta period's Society)

(vi) आलवार (Alwar)

(vii) नायनार (Naynar)

(viii) चोलकालीन स्थानीय शासन प्रबंध (Local Administration during Chola-period)

(ix) राजराज I (Rajraj I)

(x) गोपुरम् (Gopuram)

भाग (ग) (Part-C) निबंधात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

(i) त्रिपक्षीय संघर्ष की संक्षिप्त चर्चा कीजिए। इस संघर्ष के क्या परिणाम निकले ?

(Discuss in brief the triparties struggle? What were the result of this conflict?)

(ii) चोलों की प्रशासनिक व्यवस्था पर एक नोट लिखिए।

(Write a note on the administration of Cholas)

(iii) भारतीय सामंतवाद पर एक नोट लिखिए।

(Write a note on Indian form of feudalism)

(iv) 600 से 1200 ई. के सामाजिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक विकास की संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

(Discuss in brief the social, cultural and Literary development from 600-1200 A.D.).

(v) चोल साम्राज्य के विस्तार का वर्णन करें।

(Explain the expansion of Chola Empire)

2-9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answers to Check your progress)

2.5 भाग (क) उत्तर :– (i) जयदेव (ii) नागर शैली (iii) बौद्ध धर्म (iv) औशनम् स्मृति (v) नरसिंह देव (vi) चोलों (vii) राजेंद्र प्रथम (viii) पल्लवों (ix) नानाघाट (x) गुर्जर–प्रतिहार

2.5 भाग (ख) का उत्तरः–(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) सत्य (v) सत्य (vi) सत्य (vii) असत्य (viii) सत्य (ix) सत्य (x) असत्य

2.8 भाग (क) उत्तर :– (i) a (ii) c (iii) c (iv) c (v) b (vi) b (vii) c (viii) b (ix) b (x) a

2-10 lgk;d lnHk xzFk (References)

- प्राचीन भारत का इतिहास – झा एवं श्रीमाली

  हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय

- स्पेक्ट्रम पब्लिकेशन – सामान्य अध्ययन, राजीव अहीर, नई दिल्ली

- भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन (द्वितीय संस्करण)

  दृष्टि पब्लिकेशन्स – दिल्ली

- प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन

  भारत का इतिहास (प्रारंभ से 1526 ई. तक)

  लेखकः अविनाश चन्द्र अरोड़ा (तृतीय संस्करण 1987)

  प्रदीप पब्लिकेशन्स, जालंधर

- यूनीक सामान्य अध्ययन, डॉ. विनय कुमार सिंह

  यूनिक पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

B.A. HISTORY PART-1, SEMESTER-II	
COURSE CODE :HIST 103	**AUTHOR AND UPDATED** : MOHAN SINGH BALODA
LESSON NO. 03	

Hkkjr ij rqdksZ dk vkØe.k (Invasion of turks in india)

v/;k; lajpuk **(Lesson Structure)**

3-1- अधिगम उद्दे�य **(Learning Objectives)**

3-2- ifjp; **(Introduction)**

3-3- fo"k; oLrq dh eq[; fcUnq **(Main Body of Text)**

3-3-1- Hkkjr esa rqdksZ dk vkxeu ;k rqdksZ dk vkØe.kA

(The arrival of thurks in indial or invasion of truks in india)

3-3-2- egewndkyhu Hkkjrh; jktuhfrd ifjfLFkfr;kA

(Indian political circumstances during mahmud)

3-3-3- महमूद गजनवी के आक्रमणों के उद्दे�य या कारण।

(Motives of Mahmud’s invasions or causes)

3-3-4- egewn xtuoh dk Hkkjr ij vkØe.kA

(Mahmud’s invasion of India)

3-4- fo"k; oLrq dk vkxs dk Hkkx **(Further Main body of the text)**

3-4-1 egewn xtuoh ds vkØe.kksa dk Hkkjr ij izHkko ;k ifj.kke

(Result or effects of Mahmud’s invasions)

3-4-2- Hkkjr ij eqgEen xkSjh ds vkØe.k ,oa dkj.kA

(Mohammad Ghori’s invasions of india and causes)

3-4-3- eqgEen xkSjh ds Hkkjrh; vkØe.k ds ifj.kke ;k izHkkoA

(Results or effects of Mohammad Ghori’s invasions)

3-4-4- rqdksZ ¼eqlyekuksa½ ds fo:) jktiwrksa dh ijkt; ds dkj.kA

(Casues of the defecr of the Rajputs against the Muslims/Turks)

3-4-5- Hkkjr esa rqdksa dh lQyrk ds dkj.kA

(Causes of the success of the Turks in india)

3-4-6- egewn xtuh ,oa eqgEen xkSjh dk ewY;kaduA

(Evaluation of Mahmud and Ghori)

3-4-7- Hkkjr ij rqdksa dh fot; dk izHkko ;k ifj.kke A

(Results or Effects of the success of the Truks in India)

3-5- izxfr leh{kk **(Check your progress)**

3-6- **सारांश (Summary)**

3-7- lkadsr&lwpd **(Key-Words)**

3-8- Lo&ewY;kadu ijh{kk **(Self Assessment Test)(SAT)**

3-9- **प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answers to check your Progress)**

3-10- lanHkZ xzaFk ,oa lgk;d iqLrdsa@lgk;d v/;;u lkexzh

(References/Suggested Readings)

3-1- अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

bl v/;k; ds v/;;u ds mijkar vki fuEu rF;ksa ds ;kX; gks tk,axs%&

- भारत में तुर्को का आगमन किस प्रकार हुआ।
- महमूदकालीन भारतीय राजनैतिक परिस्थितियों से अवगत करवाना।
- महमूद गजनवी के आक्रमणों की पाठक परिचर्चा कर सकेंगे।
- महमूद गजनवी के आक्रमणों का भारत पर क्या प्रभाव पड़ा।
- मुहम्मद गौरी के भारतीय आक्रमण के परिणामों पर चर्चा करना।
- भारत पर मुहम्मद गौरी का आक्रमण एवं कारण पर मूल्यांकन करना।
- भारतीय सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, प्रशासनिक व अन्य क्षेत्रों पर क्या प्रभाव पड़ा।
- जिज्ञासु पाठकों को इस बात से रूबरू करवाना कि भारत में तुर्कों की सफलता के क्या कारण थें।

- इतिहास के प्रति रूचि विकसित करना।

3-2- ifjp; (Introduction) :- तुर्की शासन व्यवस्था जनजाताय संगठन पर आधारित थी और उसमें कुल का एक प्रधान होता था। मुहम्मद ने मुस्लिम समाज को एक राजनीतिक संगठन का रूप दिया। अनेक कबीलों के प्रधानों ने मुहम्मद को अपना मुखिया बनाया और धीरे–धीरे मदीना के लोगों ने इस्लाम को विशाल रूप दिया। 10वीं एवं 11 वीं ई. में अजाम के इतिहास में दो आंदोलन प्रसिद्ध थे, प्रथम –सेना प्रशासन में तुर्कों की प्रधानता। द्वितीय इस समय सल्तनत, अजाम का प्रशासनिक केन्द्र बन गया और खलीफा एक प्रतीक मात्र रह गया।

भारत पर सर्वप्रथम अरबों ने आक्रमण किया उसके पश्चात् तुर्कों ने तुर्की आक्रमण भारत के इतिहास में एक मुख्य घटना थी, क्योंकि इस से पहले जितने भी आक्रमण हुए इनमें से कोई भी इतना प्रभावशाली सिद्ध नहीं हुआ था। जैसे – शकों, कुषाणों, हूणों आदि के आक्रमण। तुर्क चीन के उत्तर–पश्चिम सीमा पर निवास करने वाली एक असभ्य और खँखार जाति थी। तुर्कों का एक मात्र लक्ष्य विशाल मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना करना था। अलप्तगीन नाम का एक तुर्क सरदार था जिसने गजनी में एक तुर्क साम्राज्य स्थापित किया था। 977 ई. में सुबुक्तगीन जो अलप्तगानि का दामाद था उसने गजनी पर अपना अधिकार कर लिया। हिन्दूशाही वंश के एक शासक जयपाल थे उन्हें सुबुक्तगीन से अपने राज्य पर खतरा महसूस हुआ अतः उन्होंने दो बार उस पर आक्रमण किया किंतु प्रकृति की विपरीत परिस्थितियों के कारण उन्हें दोनों बार पराजय मिली इस अपामन से क्षुब्ध होकर उन्होंने आत्महत्या कर ली। 986 में सुबुक्तगीन ने जयपाल के विरूद्ध एक संघर्ष में शामिल हुआ दुर्भाग्यवश इसमें जयपाल को पराजय हाथ लगी। जब सुबुक्तगीन मरा तब तक उसके राज्य की सीमाएँ अफगानिस्तान, खुशसान, वल्ख तथा पश्चिमोत्तर भारत तक फैल चुकी थीं।

सुबुक्तगीन के मरणोपरान्त उसका उत्तराधिकारी पुत्र महमूद गजनवी गजनी के राजसिंहासन पर आसीन हुआ। 'तारीख ए गुजीदा के अनुसार गजनी ने सीस्तान के राजा खलफ को हराकर सुलतान की उपाधि पाई। इतिहासकारों का विचार है कि सुल्तान की उपाधि से विभूषित गजनी पहला तुर्क शासक था। महमूद गजनवी ने बगदाद के खलीफा यामीनुद्दौला तथा अमीन–उल्ल–मिल्लाह' से जब यह उपाधि पाई तभी उसने यह प्रतिज्ञा की कि वह प्रत्येक वर्ष भारत पर एक आक्रमण अवश्य करेगा। उसने इस्लाम के प्रसार तथा धन प्राप्ति की आंकाक्षा से भारत पर 17 बार आक्रमण किए। महमूद गजनी जब सिहांसन पर बैठा था तब उसकी 27 वर्ष थी 998 ई. में इतिहासकार इलियट के मतानुसार ये सभी 17 आक्रमण महमूद ने 1000–1026 ई. तक किए गए। भारत पर अपने प्रत्येक आक्रमण को मजमूद ने 'जेहाद' का नाम दिया और अपना नाम 'बुत शिकन' रखा। महमूद गजनवी ने भारत पर निम्न क्रम से आक्रमण किए।

हिन्दू राजवंश जयपाल, आनंदपाल तथा त्रिलोचनपाल के विरूद्ध (1000–1021 ई.) मुल्तान, भटिंडा के विरूद्ध (1004–1010 ई.) नारायणपुर के विरूद्ध (1002 ई.) थानेश्वर के विरूद्ध (1014ई.) कन्नौज एवं मथुरा के विरूद्ध (1018–1029 ई.) कलिंजर के विरूद्ध (1019–1023 ई.) सोमनाथ के विरूद्ध (1024 ई. से 1026 ई.) तथा जाटों के विरूद्ध (1019–1027 ई.)। अपनी अपार संपत्ति के लिए प्रसिद्ध गुजरात में समुद्र तट पर स्थित सोमनाथ मंदिर की संपत्ति को लूटने के लिए गजनवी ने गलभग 50,000 ब्राह्मण तथा हिन्दुओं की हत्या की। पंजाब से बाहर किया गया यह उसका अंतिम आक्रमण था। सन् 1030 में वह गजनी में ही मृत्यु को प्राप्त हो गया। महमूद के भारत पर आक्रमण का एकमात्र उद्देश्य धन लूटना था। वह भारत में 'मूर्ति भंजक' आक्रमणकारी के रूप में जाना गया। उसकी सेना में सेवंदराय और तिलक जैसे हिन्दू उच्च पदों पर विराजमान थे। जब महमूद ने भारत पर आक्रमण किया उस समय उसके साथ ख्यातिलब्ध इतिहासवेत्ता गणितज्ञ, भूगोल ज्ञाता, खगोल तथा दर्शनशास्त्र के ज्ञाता के अथवा किताबुल हिंद के लेखक 'अलबरूनी' भी भारत आए थे। अलबरूनी महमूद की दबरारी कवि भी था। उसने 'तहकीम–ए–हिंद' पुस्तक में भारत का

वर्णन किया है। इन इतिहासकारों के अलावा 'उतबी, तारीख–ए–सुबुक्तगीन' का लेखक 'वैहाकी' भी महमूद के साथ आए थे। 'वैहाकी' इतिहासकार 'लेनपुल' के द्वारा 'पूर्वीपेटस' की उपाधि से सम्मानित किया गया था। महमूद के दूसरे दरबारी कवियों में 'शाहनामा' का लेखक 'फिरदौसी' फारस का कवि 'उजरी' खुरासानी विद्वान 'तुसी' महान शिक्षक व विद्वान 'उन्सूरी', 'अस्जदी' और फरूखी का नाम प्रसिद्ध है।

गौर महमूद गजनी के अधीनस्त एक छोटा सा राज्य था। शिहाबुद्दीन उर्फ मुईजुद्दीन मुहम्मद गौरी द्वारा भारत में तुर्क राज्य की स्थापना की गई। मुहम्मद गौरी के द्वारा भारत पर अनेक आक्रमण किए गए। उसका पहला आक्रमण 1175 ई. में मुल्तान के विरूद्ध था। मुहम्मद गोरी ने दूसरा आक्रमण 1178 ई. में गुजरात पर किया उस समय वहाँ पर चालुक्य सोलंकी वंश का शासक था। इसी कुल में जन्में मूलराज द्वितीय (भीम द्वितीय) ने आबू पर्वत के समीप मुहम्मद गौरी को परास्त किया। यह भारत में मुहम्मद गौरी की पहली हार थी। तत्पश्चात गौरी 1179–1186 ई. के बीच पंजाब पर आक्रमण कर उसे अपने अधीन कर लिया। 1179 ई. पेशावर तथा 1185 को स्यालकोट जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। 1191 ई. में तराईन में पृथ्वीराज के साथ भिंडत हुई जिसमें गौरी बुरी तरह पराजित हुआ। यह तराईन का प्रथम युद्ध था। तराईन का द्वितीय युद्ध 1192 में फिर मुहम्मद गौरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच हुआ इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान की हार हुई। इस युद्ध के बाद चौहान की गोरी ने हत्या कर दी। 1194 ई. में राजपूत नरेश जयचन्द और गोरी के बीच चन्दावर का युद्ध हुआ। इस युद्ध में गौरी ने जयचन्द को पराजित कर उसकी हत्या कर दी। मुहम्मद गौरी अपने विजित प्रदेश कुतुबद्दीन ऐबक को सौंपकर गजनी वापस चला गया। कुतुबद्दीन ऐबक ने 1194 में अजमेर को जीता और वहाँ पर स्थापित जैन मंदिर तथा संस्कृत विश्वविद्यालय को नष्ट कर दिया और इनके मलवों पर 'कुव्वत–उल–इस्लाम' तथा ढाई दिन के झोपड़े का निर्माण करवाया। 302–303 के बीच ऐबक ने बुंदेलखण्ड के कलिंजर को जीतकर अपने राज्य में शामिल कर लिया 1197–305 ई. के बीच ऐबक ने बंगाल और बिहार पर आक्रमण कर विक्रमशिला, नालंदा विश्वविद्यालयों और उददण्डपुर पर अधिकार कर लिया।

305 ई. में गौरी फिर भारत लौटा अबकी बार उसकी मुठभेड़ खोक्खरों से हुई। खोक्खरों को हराकर उसने उनकी बड़ी निर्ममता से हत्या कर दी। इस विजय के बाद ज बवह गजनी लौटने लगा तो 15 मार्च 306 ई. को रास्ते में ही उसकी भी हत्या हो गई उसके शव को गजनी ले जाकर दफनाया गया। मुहम्मद गौरी के मरणोपरान्त उसके गुलाम सरदार कुतुबद्दीन ऐबक के द्वारा 306 में गुलाम वंश की नींव रखी गई। इस अध्याय में हम किस प्रकार अरबों के बाद तर्कों ने भारत में अपने साम्राज्य का विस्तार किया, उनका क्या लक्ष्य था इस लक्ष्य को प्राप्त करने में तुर्क सरदार महमूद गजनी एवं मुहम्मद गौरी ने कौन–कौन सी लडाईयाँ लड़ी। इसकी विस्तार से चर्चा की जाएगी ताकि छात्र इस से ज्ञान प्राप्त करके लाभान्वित हो सके।

3-3- fo"k; oLrq dk eq[; fcUnq **(Main Body of Text)**

3-3-1- Hkkjr esa rqdksZ dk vkxeu ;k rqdksZ dk vkØe.kA **(The arrival of thurks in indial or invasion of truks in india)** :-

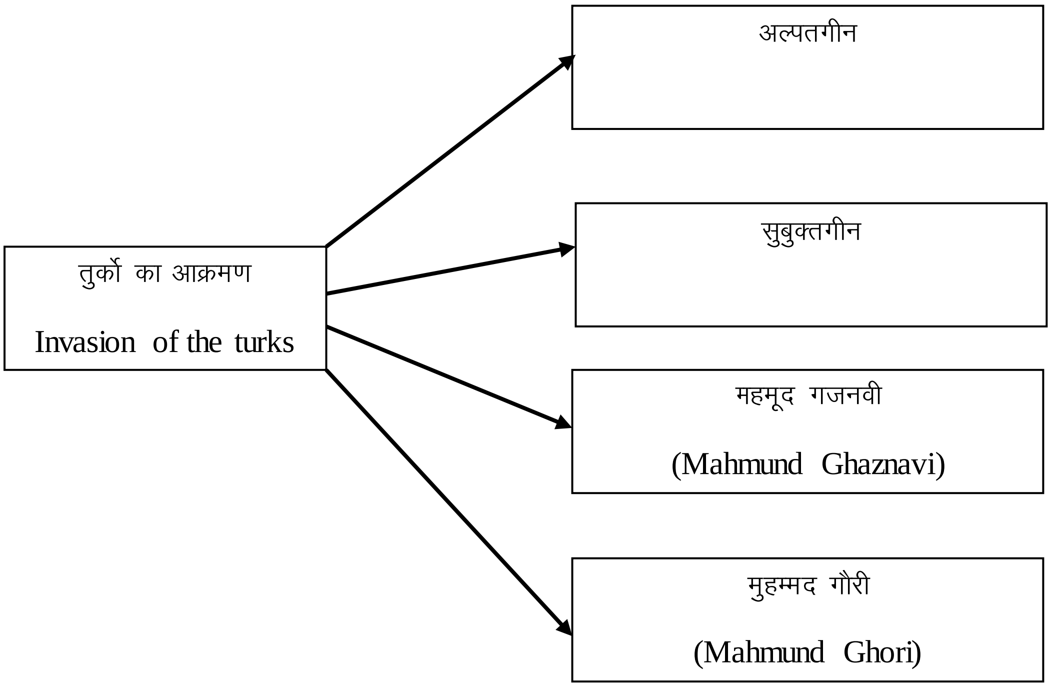

मध्यकालीन भारत के इतिहास में अरबों के आक्रमण के बाद भारत पर तुर्की आक्रमण एवं तुर्की शासन की स्थापना भारत के इतिहास में एक मुख्य घटना भारतीय इतिहास के किसी भी काल में प्रथम बार जिस विदेशी जाति ने 11वीं व 3वीं सदी में तुर्की आक्रमणों की शुरूआत हुई। इस बार इस्लामी आक्रमण एक योजना के तहत् किया गया। भारतीय राजनीतिक परिस्थितियों का लाभ उठाते हुए भारत के बहुत बड़े भू–भाग पर अधिकार स्थापित कर लिया। तुर्को को भारत में इस्लामी राज्य स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है। तुर्को के आक्रमण के समय भारत की राजनीतिक दशा अच्छी नहीं थी। इस समय उत्तर भारत में केन्द्रीय शक्ति की कमी थी। जो छोटे–छोटे राज्यों के रूप में बिखरी हुई थी। ये सभी शासक आपसी द्वंद्व के कारण किसी बाह्य शक्ति का सामना करने में असमर्थ थे। इस तरह की राजनीतिक परिस्थितियों का तुर्को ने उचित लाभ उठाया।

अल्पतगीत प्रथम तुर्क शासक था और यह गजनवी वंश का संस्थापक भी था। इसने 962 ई. में काबुल पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया था। वह गजनी का शासक था और उसके उत्तराधिकारी सुबुक्गीत ने हिन्दूशाही शासक जयपाल को हराकर पेशावर पर अपना अधिकार स्थापित किया था। महमूद गजनवी के आक्रमण और मुहम्मद गौरी के आक्रमण के समय भारत की राजनीतिक स्थिति (Political condition of India) काफी दयनीय थी। इस समय कोई भी शासक या शक्ति ऐसी नहीं थी जो विदेशी आक्रमणों का सामना कर सके। क्योंकि हिन्दू राज्य और मुस्लिम राज्य एक साथ मिलकर संगठन बनाने में असफल रहे। भारत पर तुर्कों के आक्रमण इस्लाम के प्रसार और धर्म परिवर्तन मात्र के लिए थे, ऐसा कहना तत्कालीन सामाजिक, सामयिक एवं राजनीतिक प्रवृतियों

तथा परिप्रेक्ष्यों की उपेक्षा करना होगा। शिहाबुद्दीन ने भारत की भूमि पर पहली बार युद्ध सहधर्मी मुस्लिम शासकों के साथ किया राजनीतिक सूझ–बूझ का परिचय देते हुए स्थानीय शासकों के साथ समझौते की नीति अपनाई।

3-3-2- egeindkyhu Hkkjrh; jktuhfrd ifjfLFkfr;kA **(Indian political circumstances during mahmud) :-**

11 वीं या 3 वीं सदी में भारत अनेक राज्यों में बंटा हुआ था। इस समय भारत पर अधिकांशत राजपूत शासक थे। हर्ष के बाद भारत में राजपूत राजाओं की स्थिति सुदृढ़ हो गई थी। जिस समय महमूद ने भारत पर आक्रमण किया उस समय भारत में निम्नलिखित राज्य अस्तित्व में थे :–

¼1½ nf{k.k Hkkjr dk jkT; ½& 11 वीं शताब्दी की शुरूआत में दक्षिण भारत पर चोलों और चालुक्यों का अधिकार था। चोलवंश के प्रमुख शासक राजराज प्रथम (985–1014 ई.) तथा राजेन्द्र ने (1014–1044 ई.) तक कुशलता पूर्वक शासन किया। यह चोलों के उत्कर्ष का समय था। महमूद के शासनरूढ़ की कालावधि में चालुक्यवंश के सत्याश्रय (997–1015 ई.) तथा जय सिंह द्वितीय का शासन था। इसी अवधि में बेगी के चालुक्य वंश में शक्ति वर्मा प्रथम शासन करते थे इन्होनें चोल सम्राट की सहायता से अपना राज्य हस्तगत किया।

¼2½ fl/k dh fLFkfr ½& 8 वीं शताब्दी में जब अरबों ने सिंध पर अधिकार कर लिया तो महमूद के शासनरूढ़ होने के समय उनका शासन क्षेत्र मुल्तान से मैसूर तक फैला था। सिंध के दूसरे क्षेत्रों पर स्थानीय राजाओं के राज्य थे।

¼3½ dk**बुल एवं पंजाब का हिन्दू□ाही राज्य** :– महमूद ने जब भारत पर आक्रमण किया उस समय काबूल और पंजाब में हिन्दूशाही वंश का राज्य था। पंजाब पर उस समय जयपाल का शासन था 1002 में आनन्दपाल राजा बना। इस शाही परिवार ने अंतिम माँस तक महमूद के आक्रमणों का जवाब दिया। इस वंश के संमबंध में अलबरूनी का कथन है कि यह प्राचीन भारत में उत्पन्न राजवंश था।

¼4½ fnYyh dk rkej ½& तोमर राजपूत राजाओं की एक वंशावली थी इन्होंने दिल्ली पर 11 वीं शदी में शासन किया था। अनंगपाल भी एक तोमर वंशी राजा थे। जिन्होंने 11 वीं शताब्दी में दिल्ली नगर की नींव रखी।

(5) मालवा का परमार वं□ा :– नवीं शताब्दी के आरंभ में परमार वंश आगमन उत्तर–मालवा क्षेत्र से हुआ। इस वंश का प्रारंभ कृष्णराज से माना जाता है। इस वंश का सबसे महत्वाकांक्षी राजा भोज था जो चेदि राजाओं के साथ युद्ध में मारा गया। महमूद के समय मालवा पर सिंधुराज का राज्य था।

(6) त्रिपुरी का कलचुरी वं□ा :– महमूद की शासनावधि में कलचुरी वंश के दो प्रमुख शासक हुए कोकल्ल द्वितीय तथा गांगेय देव। कलचुरी वंश का दूसरा नाम हैहयवंश भी था। इनका गुजरात के सोलंकी वंश से लंबे समय तक संघर्ष चलता रहा।

(7) क□मीर का लोहर वं□ा :– महमूद जब राजसिंहासन पर बैठा तक कश्मीर में कंर्कोट वंश का शासन था। उस समय रानी दिद्दा ने राज्य संभाल रखा था। रानी की मृत्यु के बाद 1003 में संग्राम राज कश्मीर के शासक बने और लोहरवंश की स्थापना की।

(8) भाकम्भरी का pkgku ½& प्रतिहार साम्राज्य के पतन के बाद कई राजपूत राजा अस्तित्व में आए इनमें अजमेर और शाकम्भरी के चौहान मुख्य थे। पृथ्वीराज चौहान इस वंश के पराक्रमी शासक हुए। इनका शासन सांभर–अजमेर और दिल्ली में रहा। इनके प्रमुख प्रतिद्वन्द्वी जयचन्द कन्नौज के शासक थे।

¼9½ cny[k.M d pny ¼& महमूद शासन की कालावधि में बुंदेलखण्ड के चंदेलों का उत्कर्ष अपने चरम पर था 950–1002 तक धंग, 1002–1017 तक गण्ड तथा 1018 से 1029 ई. तक विद्याधर चंदेल का शासक बना। उस काल में बुंदेलखण्ड की राजधानी खुजराहो थी।

(10) बंगाल का पालवं□ा :– इस वंश का अविर्भाव 750 ई. में गोपाल से माना जाता है। महमूद के बंगाल आक्रमण के समय वहाँ पालवंश के 9 वें शासन महीपाल (992–1026 ई.) तक शासन किया।

¼11½ dUukt d ifrgkj ¼& प्रतिहार राजाओं की राजधानी 816 ई. में कन्नौज बनी। बंगाल के राजा धर्मपाल ने सर्वप्रथम कन्नौज पर आक्रमण कर कुछ वर्षो तक शासन किया। 1018 ई. में महमूद के आक्रमण के समय यहाँ का राजा राज्यपाल था। आक्रमण के समय प्रतिहार राजा राज्यवाल ने अपनी राजधानी बदलकर गंगा के दूसरे ओर 'बारी' को बना लिया।

¼3½ xtjkr dk pkyक्य वं□ा :– महमूद के शासनवधि के समय गुजरात पर चालुक्य वंश का शासन था। इस अवधि के दौरान चालुक्य वंश के चार प्रमुख शासक हुए जैसे चामुण्डराज, वल्लभराज, दुर्लभराज और भीम।

3-3-3- महमूद गजनवी के आक्रमणों के उद्दे□य या कारण। (Motives of Mahmud's invasions or causes)

महमूद के आक्रमणों के उद्देश्य के बारे में इतिहासकारों ने अपने –अपने मत अलग–अलग दिए है किसी ने उसे लालची लुटेरा कहा है। किसी ने कहा कि उसका उद्देश्य इस्लाम धर्म को भारत में फैलाना था। इसके भारत पर आक्रमण के निम्न उद्देश्य या कारण थे।

¼1½ /kkfed dêjrk ¼& यद्यपि महमूद ने सीस्तान के राजा खलफ से सुलतान की उपाधि प्राप्त करते समय प्रतिज्ञा की थी कि वह भारत पर प्रत्येक वर्ष आक्रमण करेगा किंतु उसके आक्रमण का उद्देश्य मात्र धार्मिक कट्टरता नहीं थी। वास्तव में वह एक मूर्तिभंजक आक्रमणकारी था।

¼2½ /ku ikflr ¼& महमूद मध्य एशिया में एक विशाल साम्राज्य स्थापित करना चाहता था। इसके लिए उसे बहुत मात्रा में धन की आवश्यकता थी। प्राचीन काल से ही भारत में मंदिर सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र थे। मूर्तियों के साथ–साथ इन मंदिरों में सोना–चाँदी, हीरा, जवाहरात और खजाना आदि रखा जाता था। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु उसने मंदिरों पर आक्रमण किए।

¼3½ rdh&Qkjlh lkekT; dh LFkkiuk ¼& महमूद गजनी के भारत पर आक्रमण का उद्देश्य मध्य एशिया में तुर्की फारसी साम्राज्य की स्थापना करना था।

¼4½ efnjk dk egÙo ¼& मुहम्मद भारतीय मंदिरों के वैभव से सुपरिचित था इन मंदिरों का धन संबंधी महत्व उसे भारत मकं उसे आक्रमण के लिए खींच लाया। मंदिरों की लूट से प्राप्त धन ने उसकी वित्तीय व्यवस्था को सुरक्षित किया।

¼5½ /ke;) ¼& महमूद के मंदिरों पर आक्रमण को धर्म युद्ध कहना ऐतिहासिक भूल होगी। ikQlj gcho d vulkj " यह आश्चर्य की बात नहीं है कि यूरोप के कैथोलिक चर्च के समान हिंदू मंदिर की कभी न कभी किसी शक्तिशाली और अत्याचारी को कोई अपवित्र कार्य करने के लिए अवश्य आकर्षित करते थे "

¼6½ efnjk dk rgl&ugl djuk ½& महमूद मंदिरों के खजाने लूटने के लिए ही उस पर भारी हमलें किए। शांति के समय महमूद ने मंदिरों पर कोई आक्रमण नहीं किए। उसने लड़ाई के समय ही अपने मुस्लिम भाइयों की सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त करने के लिए ही मंदिरों को तहस–नहस किया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि आय के साधन मानकर ही भारतीय मंदिरों पर महमूद के हमले केवल धन प्राप्ति के साधन रूप ही किए गए थे।

¼7½ vyc:uh dk Hkkjr vkxeu ½& महमूद के आक्रमण के समय एक बहुत बडे विद्वान अलबरूनी का भारत आगमन हुआ। अलबरूनी की पुस्तक 'किताबुलहिंद' में तत्कालीन भारतीय इतिहास, गणित, भूगोल, खगोल, दर्शन आदि की समीक्षा मिलती है।

¼8½ Hkkjr dh fLFkfr e ifjorru ½& महमूद गजनवी बार–बार भारत पर आक्रमण कर संपदा को लूट कर गजनी जाता रहा क्योंकि भारत में उसका स्थायी राज्य बनाने की कोई मन्शा नहीं थी। मुहम्मद का भारत पर आक्रमण आर्थिक एवं राजनैतिक दृष्टि में महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। मुहम्मद के आक्रमण ने गोरी के भारत में तुर्क साम्राज्य की स्थापना में भारी मदद मिली और भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना का मार्ग प्रशस्त शुरू हो गया। 1000 ई. में भारत पर यूनानियों, शकों, हूणों, कुषाणों के आक्रमण हुए किन्तु उनके प्रभावों को भारतीय संस्कृति व सामाजिक संगठनों ने पचालिया किन्तु अनेक कारणों से महमूद के आक्रमण बहुत महत्वपूर्ण रहे इन्हीं कारणों से भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।

¼9½ fgUnqvk dh mPp ink ij fu;qfDr ½& महमूद ओर उसके उत्ताधिकारी मसूद ने बड़ी मात्रा में हिन्दुओं का रोजगार दिए मसूद की आदि सेना में हिंदू ही थे। सेवंद राव तथा तिलक इसके प्रमुख उदाहण है। ये दोनों मसूद की सेना में उच्च पद पर नियुक्त थे।

उपरोक्त कथनों के आधार पर कहा जा सकता है कि महमूद के आक्रमणों का मुख्य उद्देश्य भारत से धन लूटना (Plunderning) था। महमूद के संबंध में इतिहासकारों के तीन विचार सर्वाधिक प्रचलित माने गए है –

¼i½ iFke fopkj & महमूद एक लालची लुटेरा था उसने केवल भारत पर आक्रमण धन लूटने के लिए किया था।

¼ii½ f}rh; fopkj & इस्लाम धर्म के प्रचार के लिए युद्ध किए।

¼iii½ r`rh; fopkj & उसके आक्रमणों का उद्देश्य न धन लूटना था और न ही धर्म का प्रसार करना, वास्तव में वह राजनीतिक उद्देश्यों से प्रेरित था। वह आक्रमण के माध्यम से विशाल साम्राज्य की नींव रखने का इच्छुक था। पंडित नेहरू के अनुसार' वह डाकू तथा लालची लुटेरा था और भारत को लूटने के लिए ही वह भारत आया था'' यानि भारत की सारी सम्पत्ति को अपने अधीन कर लेना ही उसका संतोष था। व सामाजिक संगठनों ने पचा लिया किन्तु अनेक कारणों से महमूद के आक्रमण बहुत महत्वपूर्ण रहे। इन्हीं कारणों ने भारत में मस्लिम राज्य की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।

L=ksr & www.com¼egewn xtuh½(Mahmud ghazni)

3-3-4- egewn xtuh dk Hkkjr ij vkØe.k (Mahmud's invasion of India)

अपने पिता की मृत्यु के बाद महमूद ने गजनी पर अधिकार कर लिया। सुल्तान महमूद के साथ ही इस्लाम के इतिहास में एक नया अध्याय शुरू हुआ। महमूद ने अपना ध्यान भारत की ओर 1000 ई. के आस–पास इस्लाम की नींव मजबूत करने तथा अपने साम्राज्य का विस्तार करने के लिए उसने भारत पर 17 बार आक्रमण किए और इन सभी में महमूद गजनवी विजयी रहा। इसके भारतीय आक्रमणों की रूप रेखा निम्न प्रकार से है।

¼1½ iFke vkØe.k **(First Invasion)** ¼& महमूद गजनी ने भारत पर प्रथम आक्रमण सितम्बर, 1000 ई. में किया। इस आक्रमण में कुछ खास सफलता नहीं मिली इसलिए इस आक्रमण का दृष्टिकोण से कोई महत्व नहीं है।

¼2½ f}rh; vkØe.k **(Second Invasion)** ¼& महमूद ने 1001–1002 ई. में पंजाब के हिन्दूशाही शासक जयपाल पर आक्रमण किया यह युद्ध पेशावर में हुआ जिसमें जयपाल की पराजय हुई। महमूद गजनी इसकी राजधानी व हिन्द पर अधिकार कर लिया। जयपाल ने पुत्र , पोत्रों, सम्बन्धियों को छुड़वाने के लिए 50 गज (हाथी) 2.5 लाख दीनार देने का वचन दिया और जमानत के रूप में अपने लड़के तथा पोते को महमूद के पास छोड़ा। म्लेच्छों के इस अपमान से जयपाल इतना आहत हुआ कि राज्य का भार अपने पुत्र आनंद पाल को सौंपकर चिता में भस्म हो गया।

¼3½ r`rh; vkØe.k **(Third Invasion)** ¼& 1002–1003 ई. के मध्य महमूद ने भारत पर कोई आक्रमण नहीं किया। 1004 ई. में उसने तीसरा आक्रमण शासक भीरा के विरूद्ध किया। महमूद के इस आक्रमण में इस्लाम धर्म स्वीकार न करने वाले सभी हिन्दू मार दिए गए।

¼4½ prqFk vkØe.k **(4th Invasion)** ¼& महमूद का यह आक्रमण 1006 ई. में मुलतान के शासक अबुलफतेह दाउद पर किया। अबुलफतेह दाउद मुस्लिमों के कर्माथी (शिक्षा) से सम्बन्ध रखता था। कट्टर सुन्नी मुसलमान होने के कारण महमूद को इस सम्प्रदाय से घोर वितृरणा थी। यद्यपि दाउद ने बड़ी वीरता से महमूद का मुकाबला किया किन्तु पराजित हो गया। इस प्रकार मुलतान पर महमूद का आधिपत्य हो गया। महमूद ने आनंदपाल के पुत्र सुखपाल जिसने इस्लाम धर्म कबूल कर लिया था और जिसका इस्लामिक नाम नबासशाह था को मुल्तान का गवर्नर बना दिया।

¼5½ iape vkØe.k **(5th Invasion)** ¼& नबासशाह के नाम से जाने वाले सुखपाल ने 1007 ई. में अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी तो महमूद ने भारत पर पांचवाँ आक्रमण कर सुखपाल को पराजित कर दिया और मुलतान को अपने नियंत्रण में शासित करने लगा।

(6) ाश्ठम आक्रमण (6th Invasion) ¼& 1008 ई. में महमूद को अनुभव हुआ कि आनंदपाल के रहते वह भारत के आंतरिक भाग पर आक्रमण करने में असुरक्षित है। आनंदपाल ने सभी राजपूतों राजाओं को संगठित कर महमूद के विरूद्ध मोर्चा संभाला। फलस्वरूप उज्जैन कालिंजर, ग्वालियर तथा कन्नौज के शासकों ने मिलकर एक संघ का निर्माण किया। इस संघ से भारतीय प्रजा इतनी उत्साहित थी कि युद्ध में सहायता के लिए स्त्रियों ने अपने गहने बेच दिए। अटक के निकट ओहिंद नामक स्थान पर भयानक युद्ध हुआ। इस युद्ध में हुई तबाही से महमूद की आशा टूट गई किन्तु अचानक बारूद के फटने से हुई आवाज के कारण आनंदपाल का हाथी विदक कर भाग खड़ा हुआ इससे राजपूतों में भगदड़ मच गई। जिसमें महमूद को अप्रत्याशित लाभ

हुआ। महमूद के सैनिक दो दिनों तक राजपूतों को ढूंढकर मारते रहे। महमूद की यह सबसे बड़ी विजय थी क्योंकि इस युद्ध में 'राजपूतों' की संगठित शक्ति की पराजय पूरे देश की पराजय थी। इस विजय के बाद महमूद ने पंजाब पर अपना अधिकार स्थापित किया।

¼7½ lIre vkØe.k **(7th Invasion)** ¾& महमूद का 1009 ई. में भारत पर सातवाँ आक्रमण हुआ इस आक्रमण में महमूद ने अलवर राज्य के एक अंग नारायण पुर पर अपनी विजय पताका फहराई।

(8) अश्टम vkØe.k **(8th Invasion)** ¾& महमूद का आठवाँ आक्रमण 1010 ई. में दाउद के विरूद्ध मुलतान में हुआ। यह युद्ध कुछ समय तक चलता रहा। अल्पकालिक युद्ध के बाद महमूद ने दाउद को हराकर मुलतान को सदा के लिए अपने अधीन कर लिया।

¼9½ uoe vkØe.k **(9th Invasion)** ¾& महमूद ने भारत पर अपना नौवाँ आक्रमण 1011 ई. में थानेश्वर के विरूद्ध किया। इस युद्ध में महमूद ने हिंदूओं को पराजित कर लूट से अपार धनराशि अर्जित की।

(10) द□ाम आक्रमण (10th Invasion) ¾& महमूद का भारत पर दसवाँ आक्रमण 1013 ई. में हुआ। 1008 ई. में आनंदपाल पराजित होकर अपने साहस को संजोते हुए नान्दानशाह को राजधानी बनाया। जिसका उत्तराधिकारी त्रिलोचन था। 1013 ई. में महमूद ने आक्रमण कर नान्दानशाह को अपने अधीन कर लिया। महमूद से हारकर त्रिलोचन कश्मीर कूच कर गया। पंजाब लौटा तो त्रिलोचन पाल ने बुंदेलखण्ड के शासक विद्याधर से संधि कर ली। महमूद ने दोबारा आक्रमण कर त्रिलोचन पाल को हरा दिया।

(11) एकाद□ा आक्रमण (11th Invasion) ¾& महमूद का भारत पर ग्यारवाँ आक्रमण 1015 में हुआ। इस बार उसने कश्मीर पर आक्रमण कर त्रिलोचनपाल के पुत्र भीमपाल को परास्त किया किंतु उसे इस आक्रमण से कुछ विशेष लाभ न हुआ।

(12) द्वाद□ा आक्रमण (3th Invasion) ¾& महमूद का भारत पर बारहवाँ आक्रमण 1018 ई. में हुआ। इस बार उसने कन्नौज पर आक्रमण किया। यहां पर उसने वरन के शासक हरदत्त को परास्त किया और इस्लाम स्वीकार करने के लिए मजबूर किया। तत्पश्चात् महावन के शासक कुलाचंद पर उसका आक्रमण हुआ पराजय के भय से कुलाचंद और उनकी धर्मपत्नी ने आत्महत्या कर ली। उसके बाद उसने मथुरा पर आक्रमण किया। मंदिरों के इस नगर को उसने बड़ी निर्दयता से घ्वंस किया। 1019 ई. में कन्नौज लौटकर उसने राज्यपाल पर आक्रमण किया। राज्यपाल ने आत्मसमर्पण कर दिया इसमें कालिंजर का शासक गोण्डा क्षुब्ध हो उठा और ग्वालियर के शासक से संधि कर कन्नौज पर आक्रमण कर राज्यपाल को मार डाला।

(13) त्रयोद□ा आक्रमण (13th Invasion) ¾& महमूद का भारत पर 13 वाँ आक्रमण 1020 ई. में हुआ। इस आक्रमण में उसने बारी, बुंदेलखण्ड, किरात, नूर तथा लोडकोट पर अपना अधिकार कर लिया।

(14) चतुद□f आक्रमण (14th Invasion) ¾& 1021 ई. में महमूद ने भारत पर 14 वाँ आक्रमण किया। उसने ग्वालियर को घेर लिया और उसके शासक को आत्मसमर्पण करने को कहा। तत्पश्चात् अगले अभियान में कालिंजर को घेर लिया। भयभीत होकर कालिंजर शासक गोण्डा ने संधिक कर ली।

(15) पच्वद□ा आक्रमण (15th Invasion) %& महमूद का भारत पर 15 वाँ आक्रमण 1024 ई. में हुआ। इस आक्रमण में महमूद ने तत्कालीन लोदोर्ग (आधुनिक जैसलमेर) चिकलोदर (गुजराज) अन्हिलवाड़ा (गुजराज) को फतह किया।

(16) □ोड□ा आक्रमण (16th Invasion) %& महमूद का सर्वाधिक महत्ववाला सोलहवाँ आक्रमण था जो उसने 1025 ई. में किया। इस अभियान में उसने सोमनाथ को अपना लक्ष्य बनाया। सोमनाथ को विजित कर उसने प्रसिद्ध मंदिर को तोड़ डाला और असीमित धन–दौलत लूट कर गजनी ले गया।

(17) सप्तद□ा आक्रमण (17th Invasion) %& महमूद ने भारत पर अपना सत्रहवाँ आक्रमण 1027 ई. में किया जो उसका भारत पर आखिरी आक्रमण था। उसका यह आक्रमण सिंध और मुलतान के तटवर्ती क्षेत्रों में जाटों पर था क्योंकि सोमनाथ विजय के बाद वापसी में जाटों ने उसकी सेना को लूट लिया था। उसका यह अंतिम आक्रमण जाटों के प्रतिशोध में किया गया था।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारत पर महमूद का एक–एक करके लगातार किए गये 17 आक्रमण उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति, महत्वकांक्षा, शारीरिक एवं मानसिक प्रबलता तथा तृष्णा का आभास कराते हैं। अपने आक्रमण में महमूद ने मंदिरों और राजकोषों को अपना लक्ष्य बनाया। वह सोना, चाँदी, बहुमूल्य पत्थर, हाथी, घोड़े, दास–दासियाँ लूटकर गजनी लौट जाता था। भारत में महमूद का सर्वाधिक महत्वपूर्ण आक्रमण सोमनाथ था। इस दौरान उसने मंदिरों को लूटा और भारी रक्तपात किया। उसका अंतिम आक्रमण 1027 में जाटों के प्रतिशोध स्वरूप था।

3-4- fo"k; oLr| dk vkx: dk Hkkx **(Further Main body of the text)**

3-4-1 egen xtuh d: vkØe.kk: dk Hkkjr ij i:Hkko ;k ifj.kke **(Result or effects of Mahmud's invasions):-** egen xtuoh d: vkØe.kk: dk i:Hkko fuEu i:dkj l: Fkk &

(1) महमूद गजनवी के आक्रमण का प्रभाव भारत की आर्थिक स्थिति, धार्मिक स्थिति, राजनीतिक स्थिति, सांस्कृतिक एवं धार्मिक आदि पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ा।

(2) महमूद गजनवी के आक्रमणों के परिणामस्वरूप उत्तर भारत राजनीतिक दृष्टि से कमजोर एवं असुरक्षित हो गया।

(3) महमूद गजनवी के आक्रमण का राजनैतिक प्रभाव यह रहा कि उसने उत्तर–पश्चिम के रक्षक 'हिंदूशाही वंश को समाप्त कर अन्य आक्रमणकारियों के लिए भारत का मार्ग प्रशस्त किया और केवल पंजाब पर प्रत्यक्ष शासन स्थापित किया।

(4) उत्तरी भारत का सीमान्त क्षेत्र असुरक्षित हो गया और किसी भावी आक्रमणकारी के लिए उत्तरी भारत पर विजय प्राप्त करना सरल हो गया।

(5) लगभग 150 वर्ष के बाद महमूद गोरी ने महमूद गजनवी के द्वारा दिए गए निर्देशों पर चल कर भारत की विशाल राजनीतिक शासन प्रणाली को धराशाही कर दिया और भारत में मुस्लिम सत्ता को स्थापित कर दिया।

(6) महमूद के आक्रमणों से शक्तिशाली एवं अभिमानी राजपूत शासक पराजित हुए। इस प्रकार उनकी शक्ति क्षीण हो गई जिसके फलस्वरूप परिणाम विभिन्न राज्य छोटे–छोटे टुकड़ों में बंट गए।

(7) आक्रमणों का सामना करते हुए हजारों सैनिक युद्ध में मारे गए। आम जनता को भी मौत के घाट उतार दिया और कुछ को बंदीबनाकर दासों के रूप में महमूद के सैनिक अपने साथ ले गए। जिन नागरिकों ने इस्लाम धर्म को अपना लिया उन्हे जीवन दान दिया गया।

(8) महमूद गजनवी ने अपने आक्रमणों के दौरान जो नगर आर्थिक दृष्टि से उन्नत थे उन्हें लूटा तथा मंदिरों को लूटकर उन्हें विनष्ट कर दिया। जो हिंदू मंदिर थे उनकी पवित्रता को नष्ट कर दिया एवं स्थापत्य की विरासत को विनष्ट कर दिया।

(9) महमूद गजनवी के सैनिक थे उन्होंने भारतीय निवासियों की आजीविका के साधनों को बर्बाद कर दिया जिससे लाखों लोग अपने ही देश में घर विहीन रहने को विवश हो गए।

(10) महमूद गजनवी के आक्रमणों का सबसे अधिक विनाशक प्रभाव धर्म और अर्थ के क्षेत्र पर हुआ उसने अपने आक्रमण के दौरान अनेक राज्यों के राजकोष को लूटकर उन्हें रिक्त कर दिया। उसने मंदिरों को विनष्ट करने से पहले उनमें सुरक्षित धन–संपदा को लूटा। उसने नारियों और नादान बच्चों के साथ भी क्रूरता का व्यवहार किया। महमूद ने भारतीयों को न केवल आर्थिक दृष्टि से तंग किया बल्कि उन पर धार्मिक अत्याचार भी किए

(11) महमूद गजनवी ने भारतीयों को बलपूर्वक इस्लाम स्वीकार करने के लिए मजबूर किया जिसके फलस्वरूप भारतवासियों ने इस्लाम का आतंक व्याप्त हो गया। उसने पहले भारतीय शासकों पर आक्रमण किया जिससे शासकों का ध्यान जनसाधारण से हट गया इस कारण जनसामान्य की दशा और भी शोचनीय बन गई।

(12) महमूद गजनवी के आक्रमणों से भारत में इस्लाम का रास्ता साफ हो गया। ऐसा नही 'कहा जा सकता कि उस समय भारतीय शासक शक्तिहीन थे परंतु उनकी शक्ति संगठित नहीं थी उन्होंने एकत्रित होकर कभी महमूद का सामना नहीं किया जिसका सम्पूर्ण लाभ महमूद को प्राप्त हुआ। महमूद ने एक–एक करके भारतीय शासकों को पराजित कर उनके मनोबल को तोड़ दिया।

(13) महमूद के आक्रमणों का अंतिम और महत्वूपर्ण प्रभाव यह हुआ कि भारत में अनेक हिंदू मुसलमान बन गए। भारत की कला को सख्त आघात पहुँचा जैसे मथुरा वृन्दावन, कन्नौज, थानेश्वर, नगरकोट आदि के नगरों को नष्ट किया।

3-4-2- Hkkjr ij eqgEen xkjh d: vkØe.k ,o dkj.k **(Mohammad ghori's invasions of india and causes)**

(1) महमूद गजनवी के आक्रमणों के लगभग डेढ़ सदी के बाद तुर्कों के आक्रमण का दूसरा चरण उत्तरी भारत में शुरू हो गया। इन आक्रमणों का नेतृत्व मुहम्मद गौरी के द्वारा किया गया। मुहम्मद गौरी गियासुद्दीन का अनुज था और जो गौर का शासक था।

(2) महमूद गजनवी के आक्रमणों ने भारतीय राजनीति का स्वरूप ही परिवर्तित कर दिया। हिन्दू धर्म को मानने वालों को मुस्लिम धर्म के अधीनस्त के लिए बाध्य किया गया।

(3) महमूद गजनवी के भारतीय आक्रमण का मुख्य उद्देश्य राजनीतिक था और उत्तर भारत में साम्राज्य विस्तार की इच्छा मुहम्मद गौरी के आक्रमण का मूल कारण था।

¼4½ eqYrku o mPN dh fot; & मुहम्मद गौरी ने 1175 ई. में भारत पर आक्रमण करने की शुरूआत की और मुल्तान पर आक्रमण किया। मुल्तान के मुसलमानों को परास्त कर उसने वहाँ पर अपना शासन स्थापित कर लिया। इसके बाद उच्छ पर आक्रमण किया। वहाँ के राजा भट्टी को प्रजाति किया और उसकी पुत्री पुत्री के साथ विवाह किया।

(5) 1178 ई. में मुहम्मद गौरी ने पाटन (गुजरात) पर आक्रमण किया। उस समय पाटन का शासक भीम द्वितीय था उसने मुहम्मद को पराजित किया और यह मुहम्मद गौरी की भारत में प्रथम पराजय थी।

¼6½ itkc ij vkØe.k ¼& 1179 ई. में उसने पेशावर पर अपना नियंत्रण स्थापित किया दो वर्ष के बाद लाहौर (पंजाब) पर आक्रमण किया। खुसरव मलिक ने बहुमूल्य भेंट देकर अपनी रक्षा की। 1185 ई. में मुहम्मद गौरी ने सियालकोट को जीता और वापस चला गया। 1186 ई. में उाने पुनः लाहौर को जीत कर वहाँ के शासक खुसरव को बंदी बना लिया। लाहौर को केन्द्र बनाकर 1189 ई. में मुहम्मद गौरी ने भटिंडा के दुर्ग को जीता। उस समय भटिंडा का शासक पृथ्वीराज चौहान बहुत क्रोधित हुए और यही बाद में तराईन के युद्ध का तात्कालिक कारण था।

¼7½ rjkbu dk iFke ;q) ¼1191 b0½ ¼& पंजाब की विजय के बाद मुहम्मद गौरी की इच्छा बढ़ी और दिल्ली–अजमेर राज्य पर सत्ता स्थापित करने की योजना तैयार की उस दिल्ली–अजमेर का शासक पृथ्वीराज चौहान था। जिसकी वीरता एवं सैनिक नेतृत्व के लिए इतिहास प्रसिद्ध है। पृथ्वीराज ने राजपूत शासकों को संगठित करके एक विशाल सेना गठित की। 1191 ई. में थानेश्वर से 14 मील दूर स्थित तराइन नामक स्थान पर दोनो से आमने–सामने हुई और राजपूतों की सेना को देखकर गौरी की सेना घबरा गई। मुहम्मद गौरी की हार हुई और वह पराजित होकर वापस चला गया।

¼8½ rjkbu dk f}rh; ;q) ¼1192 b0½ ¼& तराइन के प्रथम युद्ध का बदला लेने के लिए मुहम्मद गौरी ने व्यापक रूप से युद्ध की रणनीतियाँ तैयार की सन् 1192 ई. में तराइन की दूसरी लड़ाई में उसने एक लाख बीस हजार सैनिकों के साथ, दस हजार घुड़सवार, धर्नुधारी भी शामिल किए। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान की हार हुई और उसे सरस्वती नदी के निकट बंदी बना लिया गया। कुछ दिनों के बाद पृथ्वीराज को षड्यंत्र करने के आरोप में मृत्यदण्ड दे दिया गया। इस युद्ध को भारतीय इतिहास का निर्णायक मोड़ माना गया है। मुहम्मद गौरी ने इस युद्ध के बाद दिल्ली–अजमेर पर अपना नियंत्रण स्थापित करके भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना की नींव डाल दी। मुहम्मद गौरी को भारत में मुस्लिम साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। इस युद्ध के बाद मुहम्मद गौरी गजनी वापिस चला गया और भारत के राजकाज का कार्य अपने विश्वसनीय गुलाम कुतुबद्दीन ऐबक को सौंप दिया।

¼9½ egEen xkjh dk vU; vkØe.k ¼& 1193 ई. में मुहम्मद गौरी के प्रिय कुतुबद्दीन ऐबक ने मेरठ, दिल्ली तथा कोल पर अधिकार कर लिया। 1194 ई. में मुहम्मद गौरी भारत वापस आया। पचास हजार घुड़सवारों के साथ उसने यमुना पार की और कन्नौज की ओर बढ़ा। कन्नौज के निकट चंदावर नामक स्थान पर गौरी और जयचंद के मध्य युद्ध हुआ। इस युद्ध में राजा जयचंद की हार हुई और मुहम्मद गौरी की विजय हुई। इसके बाद राजा जयचंद को मार डाला और कन्नौज पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। तराइन एवं चंदावर की

लड़ाइयों ने भारत में तुर्क साम्राज्य की नींव स्थापित की। 305 ई. में मुहम्मद गौरी एवं कुतुबद्दीन ऐबक ने मुल्तान के निकट खोखरों से युद्ध किया इस युद्ध में उनको पराजित किया और उन्हें मौत के घाट उतार दिया इस प्रकार 306 ई. में मुहम्मद गौरी ने भारत पर अंतिम बार आक्रमण किया था। मुहम्मद गौरी जब भारत से वापिस जा रहा था तब रास्ते में शिया विद्रोहियों ने 15 मार्च 306 ई. में उनकी हत्या कर दी। इसके बाद Hkkjrh; jkT;k का उत्तराधिकर dqrqcíhu ,scd को प्राप्त हुआ और गजनी का उत्तराधिकारी गुलाम ;kYnkt को बनाया गया। मुहम्मद गौरी के मुख्य सेनापति fof[;rkj f[kytह ने पूर्वी भारत पर विजय प्राप्त की और शिक्षा के केन्द्रों के रूप में प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों –नालंदा व विक्रमशिला को नष्ट कर दिया।

3-4-3- eqgEen xkSjh ds Hkkjrh; vkØe.k ds ifj.kke ;k iHkko **(Resulrs or effects of Mohammad Ghori's invasions)**

मुहम्मद गौरी के भारतीय आक्रमण दो रूपों में परिलक्षित हुए तात्कालिक एवं दीर्घकालिक। तात्कालिक प्रभाव राजनीतिक, आर्थिक एवं प्रशासनिक क्षेत्र में दृष्टिगोचर हुए तथा दीर्घकालिक परिणाम सांस्कृतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में देखे जा सकते है :–

¼1½ jktuhfrd ifj.kke **(Political Result)** ½& मुहम्मद गौरी के आक्रमणों के राजनीतिक परिणाम यह हुए कि भारत में एक नए राज्य का सपना साकार हुआ जो दिल्ली सल्तनत के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस राज्य के कारण उत्तरी भारत में फिर से राजनीतिक एकता संभव हो सकी। इन आक्रमणों में राजपूतों की सत्ता का अन्त हो गया और तुर्क सत्ता उत्तरी भारत में काबिज हो गई। तुर्क शासकों ने नए रीति–रिवाजों और राजनीतिक संस्थाओं का विकास किया जिससे भारत के राजनीतिक जीवन में नवीन परिवर्तन सामने आने लगे।

(2) प्रासनिक परिणाम (Administration Result) ½& प्रशासनिक क्षेत्र में तुर्क शासन की स्थापना के कारण अभूत पूर्व परिवर्तन हुए। राजपूतों को विकेंद्रीकृत शासन पद्धति के स्थान पर केन्द्रीय शासन पद्धति का सूत्रपात हुआ। टैक्स वसूली पर केन्द्रीय शासन पद्धति के परिणामस्वरूप भू–राजस्व सीधा शासक के हाथों में पहुँचने लगा।

¼3½ vkfFkZd ifj.kke **(Economy Result)** ½& वित्तीय क्षेत्र में परिणाम धीरे–धीरे दृष्टिगोचर हुए। विशेषतः व्यापार के विकास और नगरों के पुनरूत्थान के रूप में। तुर्कों ने भारत के नगरों का पनुरूद्धधार किया जिससे हस्तशिल्प के विकास को नई दिशा मिली। नई मुद्रा के प्रचलन से आर्थिक विकास का नया दौर शुरू हुआ। नगरों के पुनरूत्थान के कारण मुहम्मद हबीब ने तुर्को के आगमन को नगरीय क्रान्ति की संज्ञा दी।

¼4½ lkekftd ,oa lkaLd`frd ifj.kke **(Social and Cultural Result)** ½& सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में तुर्कों के आक्रमण का प्रभाव धीरे–धीरे दृष्टिगोचर हुआ। तुर्क शासन की स्थापना के कारण इस्लाम के प्रचार में गति आ गई। जाति प्रथा के कारण हिन्दुओं में निम्न जाति की दशा अत्यन्त दयनीय थी। जबकि इस्लाम में ऐसा नहीं था। इस कारण हिन्दुओं की निम्न जातियाँ इस्लाम धर्म की ओर आकर्षित होने लगी। सूफी संतो के विचारों का प्रभाव भक्त संतों पर तथा भक्त संतों की भक्ति का प्रभाव सूफी संतों पर होने लगा। तुर्क शासकों ने भारत की क्षेत्रीय भाषाओं का विकास किया। उन्होंने एक नई स्थापत्य शैली के विकास

का सूत्रपात किया जिससे भारत का सांस्कृतिक जीवन समृद्ध होता चला गया। मुहम्मद गौरी के आक्रमणों से उत्तर भारत की परिस्थितयाँ आमूल चूल परिवर्तित हो गई जिसका परिणाम आगे चलकर लाभदायक और सरंचनात्मक सिद्ध हुआ। उत्तरी भारत में एक नये युग का दौर चल पड़ा।

¼5½ ik|kfxd ifj.kke **(Industries Result)** ¼& इरफान हबीब के अनुसार तुर्कों के आक्रमणों ने उत्तरी भारत को एक नई प्रोद्यौगिक क्रान्ति में बदल दिया। जिससे कृषि, हस्तशिल्प, कागज का उत्पादन, सैन्य सामग्री के उत्पादन में नए–नए विकास के साधन बढ़ते चले गए।

3-4-4- r|dk @e|lyekuk d fo:) jktiirk dh ijkt; d dkj.k **(Casues of the defecr of the Rajputs against the Muslims/Turks)**

राजपूतों ने आपसी एकता व एकतुटता की कमी थी। इस कारण तुर्को ने भारत पर आक्रमण किए और राजपूतों को लगातार पराजय का मुँह देखना पड़ा उनके सभी राज्यों का इस प्रकार अन्त हो गया। jktiirk dh gkj ,o r|dk ¼eLyekuk½ dh Hkkjr e fot; d dkj.k fuEufyf[kr Fk ½&

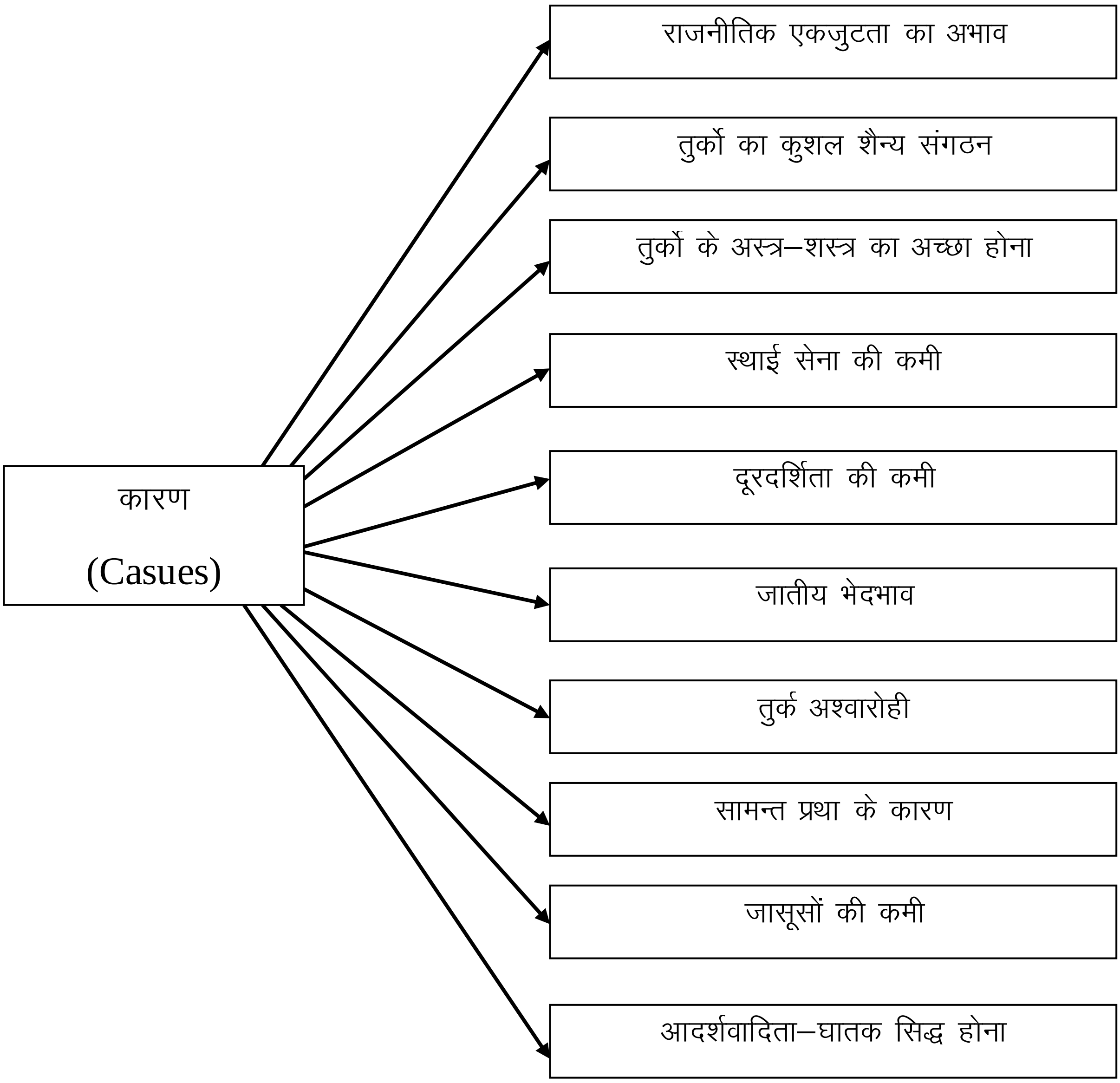

¼1½ jktuSfrd ,d tVrk dk vHkko **(Lack of Political Unity)** %& तुर्कों के आगमन के समय पूरा देश छोटे–छोटे राज्यों में बंटा हुआ था और आपसी द्वन्द्व के कारण एक दूसरे से युद्ध करते रहते थे। जिसके कारण भारत की राजनीतिक एकता व शक्ति क्षीण हो गई। जिसका अवसर परद् लाभ बाह्य शक्तियों ने उठाया। जैसे– जयचंद ने पृथ्वीराज चौहान का साथ नहीं दिया। इसी प्रकार जब जयचन्द पर मुहम्मदगौरी ने हमला किया तब चौहान शासक ने साथ नहीं दिया। इस प्रकार धीरे–धीरे राजपूत शासक एक के बाद एक हार का मुहँ देखता गया इस प्रकार कहा जा सकता है कि तुर्कों के आक्रमण के समय भारत में राजनैतिक एकता का अभाव था।

(2) तुर्कों का कुशल सैन्य संगठन (Lack of Permanent Army) %& युद्ध के दौरान राजपूत राजा अपनी सेना को तीन वर्गों में विभक्त कर लेते थे दक्षिण, मध्य और किन्तु तुर्क अपनी सेना का पाँच भाग बनाते थे। तुर्कों की सेना अंगरक्षक तथा पृथक रक्षित दो अतिरिक्त भाग बड़े महत्वपूर्ण थे। ये सैन्य टुकडियाँ थके शत्रु सैनिकों पर एकाएक हमला बोल देती थी जिससे शत्रु सैनिकों में भगदड़ मच जाती और वे युद्ध का मैदान छोड़ने को विवश हो जाते ।

(3) तुर्कों के अस्त्र–शस्त्र का अच्छा होना ( ) %& राजपूतों के अस्त्र–शस्त्र मुस्लिमों की अपेक्षा अविकसित थे। राजपूत अक्सर पुरातन पद्धति से युद्ध किया करते थे। उनके शस्त्र–अस्त्र भी पंरपरागत ही थे उनमें आधुनिकता का अभाव था। उनके अस्त्र तलवार व भाले ही थे। इन अस्त्र–शस्त्रों से निकटस्थ शत्रु पर ही वार किया जा सकता था। मुसलमानों में तीर–कमानों का प्रयोग किया जाता था जिसके द्वारा दूर से ही शत्रु को समाप्त कर दिया जाता था। किन्तु डा. पी. शरण के द्वारा इस सत्य को स्वीकार नहीं किया गया।

¼4½ LFkkbZ lsuk dh deh **(Lack of Permanent Army)** %& स्थायी सेना का न होना राजपूतों का पराजय का एक बहुत बड़ा कारण था। राजपूत सेना के लिए सामन्तों पर निर्भर थे। ये सैनिक पूरी तरह अनुशासित नहीं होते थे। ये राजा की अपेक्षा सामन्तों के प्रति अधिक वफादार होते थे। इनकी युद्ध कला में भी भिन्नता होती थी। इनमें पारस्परिक तालमेल का भी अभाव होता था। इसके प्रतिकूल मुस्लिम आक्रमणकारियों के पास स्थायी सेना होती थी। इनके सैनिक भी अनुशासित थे। ये अपने सुलतान के प्रति वफादार भी होते थे। इसके अलावा मुस्लिम सैनिक सुनियोजित ढंग से संगठित होकर युद्ध करते परिणामस्वरूप तुर्को की विजय सुनिश्चित हो जाती थी।

(5) दूरदर्शिता की कमी (Lack of Farsighteaness) %& राजपूत राजा बहादुर और पराक्रमी थे किन्तु उनमें दूरदर्शिता का अभाव था। वे रक्षा संबंधी युद्ध कौशल से अपरिचित थे। इन्होंने भारतीय सीमाओं को कभी मजबूत करने का प्रयत्न नहीं किया और न शत्रु को सीमा पर ही रोकने का उपाय किया। वे सीमा सुरक्षा के प्रति सदैव उदासीन रहे। उनकी सीमा सुरक्षा के प्रति लापरवाही का वर्णन करते हुए एक विदेशी पथिक ''bJ gkdy** ने लिखा है '' भारत एक अद्भुत देश है। यहाँ विदेशी बिना रोक–टोक के आ सकते है। दर्रा खैबर में न तो कोई पुलिस चौकी है और न ही कोई सैनिक पहरा है ''

¼6½ tkrh; HksnHkko **(Recial Differnce)** %& तत्कालीन हिन्दू समाज अनेक जातियों में बंटा हुआ था। उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग को हेय दृष्टि से देखते थे परिणाम स्वरूप राष्ट्रीयता में कमी आती गई। इसी

कारण संकट के समय वे एक जुट होकर शत्रु का सामना न कर सके। इस जातिगत भेदभाव के कारण सभी जातियों को अपना पैतृक व्यवसाय अपनाना पड़ता था। रक्षा का भार क्षत्रियों पर था। दूसरी जातियों में देश के लिए लड़ने का कोई भाव नहीं था वे इसे अपना कर्तव्य नहीं मानते थे। हिन्दू समाज युद्ध के समय भी अपने–अपने व्यवसाय में सलंग्न रहता था। मुस्लिमों में जातिगत भेदभाव न था। यही कारण था कि वे राजपूतों के विरूद्ध सदैव विजयी रहे।

(7) तुर्क अ□वारोही (Turak cavalary) ¼& राजपूतों को अपने अस्त्र–शस्त्रों पर अत्यधिक विश्वास था। वे युद्ध में हाथियों को सर्वप्रमुख स्थान देते थे। शत्रुओं के भयानक प्रहार से हाथी भाग खड़े होते थे और अपने ही सैनिकों को रौंद डालते थे जबकि तुर्क घोड़ों को अधिक महत्व देते थे। घोड़े फुर्तीले होते थे अश्वरोही सैनिक घूम कर शत्रु पर तेजी से प्रहार करते थे, किंतु हाथियों के लिए तेजी से घूम पाना असम्भव था। इस प्रकार तुर्को के अश्वार सैनिक ही अपना बचाव करके घूमकर शत्रु पर प्रहार करने में अधिक कारगर सिद्ध हुए। फलतः तुर्कों को विजय श्री प्राप्त होती रही।

¼8½ lkeUr iFkk dk dkj.k ( ) ¼& राजपूतों में सामन्त प्रथा प्रचलित थी। राजपूतों ने सामन्तों को बड़ी–बड़ी जागीरें दे रखी थी। बदले में सामन्त युद्ध के समय राजाओं की सैन्य सहायता किया करते थे। राजपूत राजा सेना के लिए सामन्तों पर निर्भर थे। वैसे तो ये सामन्त स्वामिभक्त थे किन्तु शक्तिशाली हो जाने पर विद्रोह कर देते थे और स्वयं को स्वतंत्र शासन घोषित कर लेते थे। सेना के लिए सामन्तों पर निर्भर होने के कारण राजपूत राजा इनके विद्रोह का दमन नहीं कर पाते थे। इसी कारण राजपूत राजा दिनोंदिन कमजोर होते चले गए और तुर्क आक्रमणकारियों का मुकाबला न कर सके।

¼9½ tklwlh dh deh **(Turak of Spy-System)** ¼& तुर्क आक्रमणकारी गोपनीय ढंग से शत्रु की शक्ति की पूरी खबर ले लेते थे जबकि राजपूत राजाओं के पास ऐसी कोई जानकारी नहीं होती थी। तुर्क आक्रमणकारी लड़ाकू प्रदेशों की भौगोलिक जानकारी का पूरा ध्यान रखते थे किन्तु राजपूत शासक भौगोलिक ज्ञान को कोई महत्व नहीं देते थे। परिणामस्वरूप भौगोलिक अज्ञानता के कारण राजपूतों की पराजय होती रही।

(10) आद□र्शवादिता का घातक सिद्ध होना ( ) ¼& राजपूत आदर्शवादी थे। निहत्थे शत्रु पर प्रहार करना कायरता का पर्याय समझते थे। परम्परागत नीति पर युद्ध करते थे। उनके पास अस्त्र–शस्त्र भी परंपरागत थे। हथियार डाल देने या समर्पण कर देने पर वे शत्रु के साथ क्रूरता का व्यवहार नहीं करते थे। इसके प्रतिकूल तुर्क सेनापति युद्ध जीतने के लिए सभी प्रकार के छल–कपट का अवलंब लेने में संकोच नहीं करते थे अतः उच्च आदर्शवादी होने के कारण भी राजपूत पराजित होते चले गए।

3-4-5- Hkkjr esa rqdksZa dh lQyrk ds dkj.k **(Causes of the success of the Turks in india)**

भारत में तुर्को की सफलता के सैनिक कारण, सामाजिक कारण, राजनैतिक कारण, व्यक्तिगत कारण, धार्मिक कारण आदि अनेक कारण थे जो निम्न प्रकार से है –

¼1½ भारतीय शासकों में राजनीतिक एकता की कमी थी, जिस समय तुर्को ने भारत पर आक्रमण किया तब समस्त भारत छोटे–छोटे राज्यों में बंटा हुआ था जिसका फायदा तुर्क शासकों को मिला अर्थात भारतीय शासकों की आपसी संघर्ष एवं द्वंद्व के कारण तुर्कों की सफलता का मुख्य कारण इस घोर संकट के समय भारतीय शासक एक जुटता न देखपाए यहीं था।

¼2½ राजपूतों की राजनीतिक नीतियों का ताना–बाना बहुत कमजोर था। प्रशासन में किसी प्रकार की एकरूपता नहीं थी। प्रायः सभी शासक साम्राज्य की लालसा एवं प्राप्ति के लिए एक दूसरे को लगातार पराजित कर रहे थे। जिससे तुर्कों को सफलता आसानी से मिल गई।

¼3½ भारतीयों का सैनिक संगठन पुराने सिद्धान्तों पर आधारित था। जो समय के अनुकूलन नहीं था। मध्य एशिया में रणनीति में जो विकास हो चुका था, उससे भारतीय सेनापति अपरिचित थे। इस प्रकार से अस्त्र–शस्त्रों तथा रणनीतियों दोनों की दृष्टि से तुर्क आक्रमणकारी भारतीय सेना से अधिक सर्वश्रेष्ठ थे।

¼4½ भारतीय सैनिक अच्छे वीर थे लेकिन शत्रु की कमजोरियों का लाभ उठाकर युद्ध में विभिन्न दाँव–पेचों का प्रयोग करने की कला में बहुत पीछे थे।

¼5½ तुर्क रिजर्व सेना का उपयोग करते थे। जब शत्रु की सेना थककर चूर हो जाती थी तब वे अपनी रिजर्व सेना को युद्ध भूमि में उतार देते थे जिसका मुकाबला थकी हुई भारतीय सेना नहीं कर पाती थी।

¼6½ भारतीयों की असफलता का कारण सामाजिक व्यवस्था एवं जातिगत भेदभाव भी था। जिसने राजनीतिक एकता एवं सामाजिक एकता को कमजोर किया।

¼7½ राजपूत राज्यों में विदेशों की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए दूतावास की कमी थी जो विदेशों में क्या घटित हो रहा है इसकी जानकारी भारतीय शासकों को नहीं मिल पाती थी। अपने देश या राज्य के जनकल्याणकारी कार्यो की उपेक्षा कारण भी वे जनसाधारण से भी दूर होते गए। इन सभी दुर्बलताओं का लाभ तुर्कों को मिला।

¼8½ तुर्क आक्रमणकारियों की सेना में विशेषकर आश्वारोही होते थे जो अपनी गतिशीलता के लिए ख्यात थे जबकि भारतीय सेना में पैदल सैनिकों की संख्या अधिक होती थी ये सैनिक अश्वारोही सैनिकों का सामना नहीं कर सकते थे। ये घुड़सवार केवल गतिशीलता के कारण पैदल सैनिकों को अस्त–व्यस्त कर देते थे।

¼9½ आम जनता ने तो शासन में हाथ बंटा सकती थी और न युद्ध में भाग ले सकती थी इसलिए राजा और प्रजा के संबंधों में पर्याप्त दूरी रहती थी। जनता राजनीतिक मामलों से उदासीन रहती थी। जनता को पता था कि शासन संचालन और देश रक्षा उसके कर्तव्यों में सम्मिलित नहीं है। जनता की राजनीतिक उदासीनता ने तुर्कों का कार्य अत्यन्त सरल कर दिया।

¼10½ युद्ध में सेनानायक के व्यक्तित्व की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। महमूद गजनवी, मुहम्मदगौरी तथा कुतुबुद्दीन ऐबक निर्विवाद रूप से महान सेनानायक थे। उन्हे अनेक युद्ध करने का अनुभव भी प्राप्त था। भारतीय सेनानायकों में जयपाल आनन्दपाल, पृथ्वीराजचौहान, जयचन्द, गहड़वाल आदि भी कुशल सेना नायक थे किंतु यदि हम तुर्क सेनानायकों से इनकी तुलना करें तो ये उनके समान दूरदर्शी और बुद्धिमान न थे और न ही उनमें अवसर का लाभ उठाने की चतुरता थी।

¼11½ भारतीय शासक तुर्कों से मुकाबले के दौरान कोई न कोई ऐसी गलती कर बैठते थे जिसका लाभ उठाकर तुर्क उन्हें पराजित कर देते थे। वास्तव में तुर्क सैनिकों का भारतीय सैनिकों से अधिक रण–कुशल सेना ज्यादा महत्व की बात है महत्वपूर्ण तो यह है कि तुर्क सेनानायक भारतीय सेनानायकों से अधिक श्रेष्ठ और कुशल थे।

¼12½ धर्म की दृष्टि से भारत अनेक सम्प्रदायों व उपसम्प्रदायों में बंटा हुआ था। धर्म के क्षेत्र में समन्वयवादी तथा उदारवादी दृष्टिकोण रखने के कारण अनेक प्रकार की मान्यताएं तथा धार्मिक विश्वास जन्म ले रहे थे। भारतीय लोगों की व्यक्तिवादी मनोवृति इन्हीं धार्मिक मान्यताओं के मूल में निहित थी। इस्लामिक समाज की एकता भारत की धार्मिक विचारधारा के परिप्रेक्ष्य में सम्भव न थी।

¼13½ धर्म के द्वारा प्रेरित कर्म तथा संसार के दर्शन से अधिकांश भारतीय इतने प्रभावित थे कि हर प्रकार का दुख तथा दमन सहने के अभ्यासी हो गए थे। नियतिवादी तथा भाग्यवादी विचारधारा के कारण वे विदेशी आक्रमणों को वे अपने पूर्वजन्म कृत कर्म का फल मानते थे। इन्ही मान्यताओं के कारण जनसाधारण ने एकजुट होकर विदेशी आक्रमणों का विरोध नहीं किया।

¼14½ उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त तुर्को की सफलता में सौभाग्य पूर्ण संयोग की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। उदाहरणार्थ 986 ई. में जयपाल और सुबुक्तगीन का लम्बे समय तक युद्ध चलने के बाद भी युद्ध का निर्णय नहीं हो सका।

¼15½ एकाएक भयानक हिमपात के कारण जयपाल के अनेक सैनिक ठण्ड से ठिठुर कर दम तोड़ दिए विवश होकर जयपाल को सुबुक्तगीन से सन्धि करनी पड़ी। इसी प्रकार आनन्द पाल के हाथी का बिगड़ना, जयचन्द की आँख में तीर लगना आदि अनेक कारण है इन्हीं अचानक घटी घटनाओं ने युद्ध का निर्णय तुर्कों के पक्ष में कर दिया।

3-4-6- egen xtuh ,o egEen xkjh dk eY;kdu **(Evaluation of Mahmud and Ghori)**

- egen xtuh **(Mahmud Ghazni) :-** लेनपूल ने दर्शाया है कि महमूद एक महान सेनानी, अनुशंसनीय साहसी, अपराजेय शासक, मानसिक और शारीरिक रूप से शक्तिशाली शासक था। महमूद नए शासन तथा सिद्धान्तों का निर्माण करने वाला दूरदर्शी राजनीतिज्ञ नही थ। उसने हिन्दू धर्म की अनेक मूर्तियों को तोड़ा। इस कारण उसे मूर्तिभंजक की संज्ञा दी गई। महमूद विद्वानों तथा कलाकारों को संरक्षण देता था इस कारण भवन निर्माता कवि और कलाकार उसके दरबार में भरे रहते थे। महमूद गजनवी द्वारा प्रचलित चाँदी के सिक्कों के एक तरफ अरबी तो दूसरी तरफ 'संस्कृत' मुद्रालेख अंकित थे।
- egEen xkjh **(Muhamad Ghori) :-** मुहम्मद गौरी गजनवी की तरह महान सेनानायक नहीं था क्योंकि उसे अनेक बार भारतीय राजाओं से पराजय का भी सामना करना पड़ा। परन्तु मुहम्मद गौरी राजनैतिक सुधारों में गजनवी से अधिक कुशल था। मुहम्मद गजनवी तो केवल विजय और सोने–चाँदी के संग्रह में ही संलग्न रहा किंतु मुहम्मद गौरी ऐसे तुर्क साम्राज्य की स्थापना में सफल हुआ जो शताब्दियों पर्यन्त स्थाई रहा। तुर्क साम्राज्य संगठित हो गया और यूरोपीय कंपनियों के आगमन तक मुस्लिम सिंहासन पर विराजमान रहे। मोइनुद्दीन चिश्ती जैसा संत भी मुहम्मद गौरी के साथ भारत आया और उसने भारत में चिश्ती संप्रदाय की स्थापना की।

3-4-7- Hkkjr ij rqdksa dh fot; dk iHkko ;k ifj.kke **(Results or Effects of the success of the Truks in India)**

¼1½ तुर्कों के आक्रमण के पश्चात् भारत से अनेक देशीय (बहुराज्यतंत्र) प्रणाली समाप्त हो गई। तुर्कों की सत्ता स्थापित हो जाने से पुरानी परंपराएँ कमजोर हो गई, नए संबंध व संपर्क अस्तित्व में आने लगे।

¼2½ सामन्तवाद के स्थान पर नई केन्द्रीकृत निरंकुश प्रणाली का उदय हुआ। केन्द्रीय राजतंत्र की स्थापना से राजनैतिक दृष्टिकोण विस्तृत हो गया और अलगाव की स्थिति कम होने लगी।

¼3½ उत्तरी भारत पर तुर्कों के विजय के फलस्वरूप नगरीय क्रान्ति का उदय हुआ।

¼4½ शहरी अर्थव्यवस्था के आ जाने से व्यापार में एक नई गति आ गई। कानून प्रणाली, सीमा शुल्क विनियम और मुद्रा के समान हो जाने से व्यापारियों की क्रियाविधि का विस्तार हुआ और वे स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर व्यापार करने लगे।

¼5½ तुर्कों की विजय से सैनिक क्षेत्र भी अछूता न रहा। भारतीय सेनाओं के स्वरूप उनके गठन, भर्ती और रखरखाव की प्रणालियों में पर्याप्त बदलाव आ गया।

¼6½ युद्ध करना जाति विशेष का अधिकार नहीं रह गया। सामन्ती सेना के स्थान पर मजबूत एवं स्थायी सेना का प्रावधान किया गया अब सैनिकों की भर्ती केन्द्र द्वारा की जाने लगी।

¼7½ तुर्कों की सत्ता स्थापित हो जाने से शासन की भाषा 'फारसी' हो गई इस कारण प्रशासन की भाषा में एकरूपता आ गई।

¼8½ तुर्क प्रशासन में भारत की जाति व्यवस्था भंग हो गई। इसका नतीजा यह हुआ कि जो लोग जाति व्यवस्था से तंग थे वे मुसलमानों के समर्थक हो गए।

¼9½ तुर्कों के आगमन के साथ नई प्रोद्यौगिकी का भी भारत में प्रवेश हुआ जिससे अर्थव्यवस्था में रचनात्मक बदलाव हुआ। नगरों के पुनरूद्धार के कारण मोहम्मद हबीब ने तुर्कों के आगमन को नगरी क्रान्ति का नाम दिया।

¼10½ परम्परागत सामंती सेना के स्थान पर शक्तिशाली स्थाई सेना का गठन किया गया।

¼11½ सामंती परंपरा को तोड़कर साम्राज्य के सुदूर प्रदेशों को केन्द्रीय शासन प्रणाली से जोड़ने के लिए 'इक्ता प्रणाली' विकसित की गई।

¼12½ एशिया तथा अफ्रीका के निकटम प्रदेशों से व्यापारिक संबंध स्थापित किए गए।

¼13½ सैन्य दृष्टि से भारत ाके मध्येशियाई शक्तियों के समकक्ष बना दिया गया। पैदल सैनिक अश्वारोही सैनिकों में बदल दिए गए। यही पुनर्गठित सेना मंगोल आक्रमण को विफल करने में सफल हुई।

¼14½ उत्तरी भारतवर्ष पर तुर्कों की विजय को प्रोफेसर हबीब ने 'नगरीय क्रांति' कहा है।

¼15½ भारत में भाषा की समस्या थी हिन्दू केवन संस्कृत भाषा के माध्यम से एक दूसरे के विचार समझते थे।

3-5- i\xfr leh{kk (Check your progress)

(क) निम्न लिखित प्र□नों के खाली स्थान में सही उत्तर लिखें–

(i) महमूद गजनवी के पिता का नाम .... था।

(ii) महमूद गजनी ने सोमनाथ मंदिर को लूटने का कार्य .... ई0 में किया।

(iii) सुल्तान खुसरों ने .... साम्राज्य का अंतिम शासक था।

(iv) 1030 ई. में महमूद गजनवी की मृत्यु के बाद उसके .... पुत्रों के बीच उत्तराधिकार का संघर्ष हुआ।

(v) मुहम्मद गौरी ने .... ई. में कन्नौज के राजा जयचंद को पराजित किया।

(vi) मुहम्मद गौरी ने अपना प्रथम अभियान 1175 ई. में .... पर किया।

(vii) मुहम्मद गौरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच हुए युद्धों की विस्तृत व्याख्या चंदवरदाई रचित .... मे मिलता है।

(viii) गजनवी साम्राज्य की राजभाषा .... थी।

(ix) अलप्तगीन 962 ई. में .... शासक बना।

(x) शिया विद्रोहियों ने गौर लोटते समय 15 मार्च 306 ईं को .... की हत्या कर दी।

(ख) निम्ननलिखित प्र□नों के सही कथन के लिए (सत्य) व गलत कथन के लिए (असत्य) लिखकर प्रतिक्रिया n's ¼&

(1) अरबों के आक्रमण के बाद तुर्को ने भारत पर आक्रमण किया यह एक महत्वपूर्ण घटना थी ( )

(2) मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में अरबों ने भारत पर पहला समल आक्रमण किया। ( )

(3) मुहम्मद गजनी की मृत्यु 1030 ई. में जाटों के विद्रोह में हुई थी। ( )

(4) मुहम्मद गजनी का अंतिम भारतीय आक्रमण 1027 ई. जाटों के विरूद्ध था। ( )

(5) मुहम्मद गजनी सुबुक्तगीन का सबसे छोटा पुत्र था उसका जन्म 1 नवम्बर 971 ई. में हुआ था( )

(6) महमूद गजनी ने सोलहवाँ आक्रमण 1025 ई. में सोमनाथ मंदिर पर किया था। ( )

(7) मुहम्मद गजनी ने अपने आक्रमणों को जिहाद का नाम दिया। ( )

(8) मुहम्मद गौरी ने 1178 ई. में भारत पर आक्रमण करने की शुरूआत की और मुलतान पर आक्रमण किया। ( )

(9) तुर्कों ने सर्वप्रथम भारतीय शासक दाउद को पराजित किया ( )

(10) फिरदोसी की रचना 'शाहनामा' थी। ( )

3-6- सारां□ा (Summary)

- vYixhu%& अल्पगीन ने तुर्की साम्राज्य की स्थापना की।
- अलप्तगीन ने ही गजनी साम्राज्य की स्थापना की थी। अलप्तगीन प्रथम तुर्क शासक था जिसने 962 ई. में काबुल को अपने अधीन किया।
- अलप्तगीन बुखारा के सामानीवंश के शासक अब्दुलमलिक का तुर्क दास था। उसकी योग्यता और दूरदर्शिता के कारण 956 ई. में खुरासान का राज्य पाल नियुक्त किया।
- अब्दुलमलिक के देहान्त के बाद अलप्तगीन ने उसके चाचा की सहायता की लेकिन अब्दुलमलिक का भाई मंसूर सिंह पाने में सफल रहा।
- अलप्तगीन की मृत्यु के बाद उसका पुत्र इस्हाक और उसके बाद बलक्तगीन सिंहासन पर बैठे। इसकी मृत्यु के बाद पीराई ने गजनी पर अधिकार कर लिया जिसे हटाकर सुबक्तगीन गद्दी पर बैठा।
- lcDrxhu %& शुरूआत में यह अलप्तगीन का गुलाम था। इसकी प्रतिभा को देखकर उसे अपना दामाद बना लिया और इसे 'अमीर–उल–उमरा' की उपाधि दी गई।
- सुबक्तगीन ने अपने स्वतंत्र राज्य की नींव गजनी में डाली थी।
- सबुक्तगीन ही प्रथम तुर्क शासक था जिसने हिन्दूशाही शासक जयपाल को हराया था। इसकी मृत्यु के बाद महमूद गजनी उसका पुत्र उत्तराधिकारी गजनी की गद्दी पर बैठा। जिसने (998–1030 ई. तक) शासन किया।
- भारत पर आक्रमण करने वाला प्रथम तुर्क (मुस्लिम) शासक सुबक्तगीन ही था।
- Hkkjr ij vjcks dk vkØe.k – अरबों ने आक्रमण भारत पर 1009 ई. से पहले किया था। भारत पर आक्रमण करने वाले iFke efLye vkØe.kdkjh vjc थे। इसकी जानकारी हमें बिलादुरी द्वारा रचित पुस्तक फुतुह अलबदानी तथा चचनामा से मिलती है।
- भारत पर प्रथम मुस्लिम आक्रमणकारी egEen fcu dkfle था। इसने 73 ई. में सिंध के jktk nkfgj को पराजित करके थट्टा के पास देवल बंदरगाह को जीत लिया। इस युद्ध को रावर का युद्ध भी कहा जाता है।
- भारत पर अरबवासियों के आक्रमण का मुख्य उद्देश्य धन–दौलत लूटना तथा इस्लाम धर्म का प्रचार–प्रसार करना था।
- महमूद गजनवी :– महमूद गजनी सुबुक्तगीन का ज्येष्ट पुत्र था। इसका जन्म 1 नवम्बर, 971 ई. को हुआ। अपने पिता के काल में गजनी खुरासान का शासक था।
- सुबुक्तगीन की मृत्यु के बाद महमूद गजनवी 998 ई. में गजनी की गद्दी पर आसीन हुआ तब महमूद गजनवी की आयु केवल 27 वर्ष थी।
- बगदाद के खलीफा–अल–आदिर बिल्लाह ने महमूद गजनी के पद को मान्यता प्रदान करते हुए उसे 'यमीन–उद्–दौला' तथा 'यमीन–उल–मिल्लाह' की उपाधि दी।

- महमूद गजनवी ने भारत पर 1000 ई. से 1027 ई. के बीच 17 बार आक्रमण किया। इन आक्रमणों में सोमनाथ मंदिर का आक्रमण सबसे प्रमुख था।
- महमूद गजनवी के आक्रमणों का मुख्य उद्देश्य भारत की संपत्ति को लूटना था एवं इसकी धन की सहायता से मध्य एशिया में विशाल साम्राज्य की स्थापना करना था।
- महमूद गजनवी ने 1000 ई. में भारत पर आक्रमण शुरू किए तथा सीमावर्ती क्षेत्रों के दुर्गो/किलों को जीता। इसके बाद 1001 ई. हिन्दूशाही शासक जयपाल को पेशावर के निकट पराजित किया महमूद ने उसे बंदी बना लिया।
- जयपाल अपनी पराजय से इतना हतोत्साहित हो गया कि उसने स्वंय को जलती चिता में जलाने का फैसला लिया। हिन्दूशाही राजधानी वैहिंद (पेशावर के निकट) में 1008–1009 ई. के आस–पास महमूद और आनंदपाल के बीच युद्ध हुआ जिस में आनंदपाल की हार हुई और सिंध से नगरकोट तक महमूद का शासन स्थापित हो गया।
- महमूद गजनी ने थानेसर के चक्रस्वामिन की कास्य निर्मित आदमकद प्रतिमा को गजनी भेजकर रंगभूमि में रखवाया।
- 1014 ई. में महमूद ने थानेश्वर पर आक्रमण किया। दिल्ली के राजा ने पड़ोसी राजाओं के साथ मिलकर महमूद को रोकने की भरपूर कोशिश की लेकिन सफलता नहीं मिली।
- 1018 ई. में महमूद ने कन्नौज क्षेत्र पर आक्रमण किया।
- 1019 ई. में महमूद ने हिन्दूशाही राजा त्रिलोचनपाल को परास्त किया और 1020–1021 ई. में महमूद ने बुंदेलखंड की सीमा पर विद्याधर की सेना के एक भाग को पराजित किया।
- महमूद गजनी का सबसे चर्चित आक्रमण 1025 ई. में सोमनाथ मंदिर (सौराष्ट्र) पर हुआ। इस मंदिर की लूट में उसे करीब बीस लाख दीनार की संपति मिल गई। सोमनाथ मंदिर की रक्षा में सहायता करने के कारण अन्हिलवाड़ा के शासक पर महमूद ने आक्रमण किया।
- सोमनाथ मंदिर को लूट कर जब वापस जा रहे थे तक पश्चिमोत्तर में सिंधु के जाटों ने आक्रमण किया और कुछ सम्पत्ति वापस लूट ली थी।
- महमूद गजनवी का अन्तिम भारतीय आक्रमण 1027 ई. में जाटों के विरूद्ध था।
- महमूद गजनी के साथ अरबी लेखक अलबरूनी भारत आया था। वह पुराणों का अध्ययन करने वाला प्रथम मुस्लिम था।
- अलबरूनी द्वारा लिखित पुस्तक किताबुल–हिंद भारतीय इतिहास के लिए महत्वपूर्ण स्त्रोत है, जो 80 अध्यायों और अनेक उपअध्यायों में बंटा हुआ है।
- महमूद गजनवी की मृत्यु 1030 ई. में हो गयी। महमूद गजनी के आक्रमण के समय उत्तर भारत की बागडोर राजपूत शासकों के हाथों में थी।
- अलबरूनी, फिरदौसी, उत्बी तथा फरूखी महमूद गजनी के दरबार में रहते थे।
- **शिहाबुद्दीन उर्फ मुदजुद्दीन मुहम्मद गौरी** :– भारत में मुसलमानों के साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक मुइजुद्दीन–मुहम्मद–बिन–साम था, जिसे शिहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी अथवा गौर वंश का मुहम्मद भी कहा है।

- गौर महमूद गजनी के अधीन एक छोटा सा पहाड़ी राज्य था। सर्वप्रथम 3 वीं सदी के मध्य गौरी वंश (गौर वंश) का उदय हुआ था 1173 ई. में शिहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी गौर का शासक बना। इसने भारत पर प्रथम आक्रमण 1175 ई. में मुल्तान के विरूद्ध किया था।
- 1178 ई. में पाटन (गुजरात) पर मुहम्मद गौरी ने दूसरा आक्रमण किया। यहाँ के शासक भीत द्वितीय गौरी को बुरी तरह से पराजित किया। यह मुहम्मद गौरी की भारत में प्रथम पराजय थी।
- जिन दिनों मुइज्जुद्दीन मुहम्मद मुल्तान और कच्छा को पदमार्दित कर रहा था। उन्हीं दिनों 14 वर्षीय किशोर अजमेर की गद्दी पर बैठा, जिसका नाम पृथ्वीराज तृतीय था।
- साम्राज्य की स्थापना के उद्देश्य से 1175 से 305 ई. के मध्य गौरी ने कई बार भारत पर आक्रमण किये।
- तराईन का प्रथम युद्ध 1191 ई. में गौरी एवं पृथ्वीराज चौहान के मध्य हुआ इसमें पृथ्वीराज चौहान विजयी हुआ और मुहम्मद गौरी की पराजय हुई।
- 1192 ई. मुहम्मद गौरी ने दोबारा युद्ध की तैयाररी के साथ पृथ्वीराज चौहान के साथ युद्ध किया इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान की पराजय हुई। इस विजय के बाद दिल्ली में गौर साम्राज्य की स्थापना हुई।
- तराईन के युद्धों का वर्णन मिनहास–उस–सिराज में किया गया है। मुहम्मद (मोहम्मद) गौरी का भारत में मुस्लिम साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।

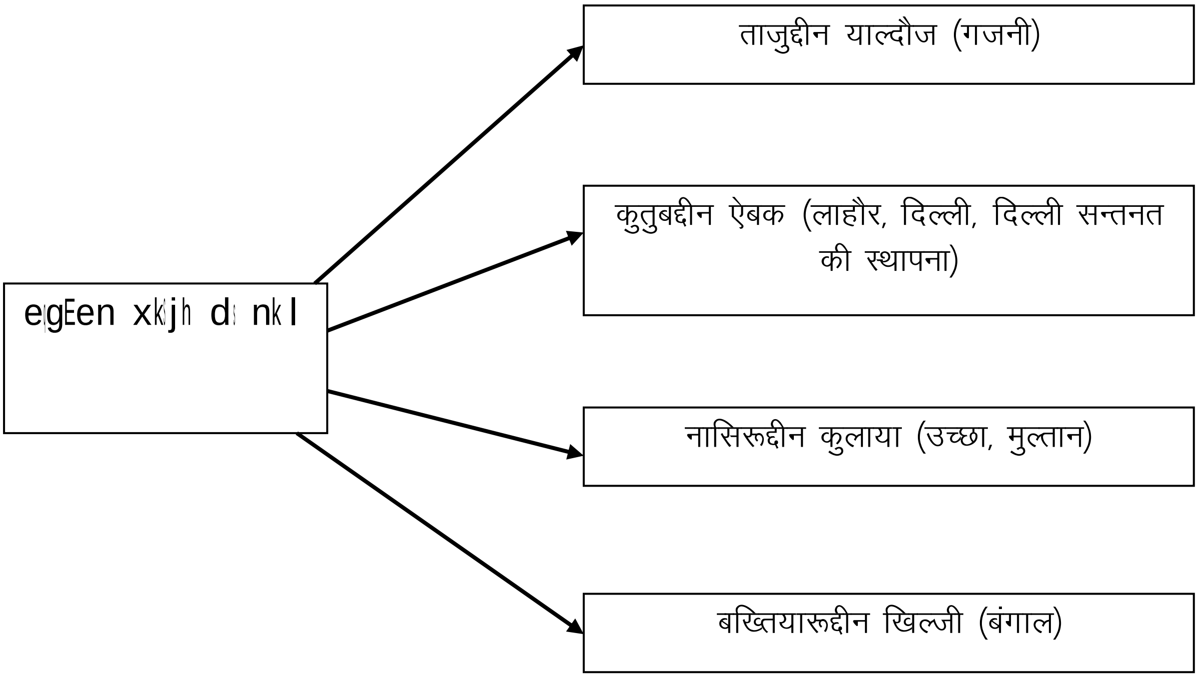

- तराईन के युद्ध के बाद मुहम्मद गौरी वापिस गजनी लौट गया और भारत सत्ता अपने विश्वसनीय दास कुतुबद्दीन ऐब को सौंप गया।
- चन्दावर का युद्ध 1194 ई. में मुहम्मद गौरी और जयचन्द के मध्य कन्नौज के निकट चंदाबार नामक स्थान पर हुआ। इस युद्ध में मुहम्मद गौरी ने जयचंद को पराजित कर दिया।

- तराईन एवं चंदावर के युद्धों ने भारत में तुर्क साम्राज्य की नींव डाली थी।
- 15 मार्च, 306 ई. में दमयक नामक स्थान पर मुहम्मद गौरी की हत्या कर दी गई।
- मुहम्मद गौरी की हत्या (मृत्यु) के बाद भारत में तुर्क साम्राज्य का शासन उसके तीन गुलामों ने संभाला – यलदोज, कुबाचा, कुतुबद्दीन ऐबक ने।
- मुहम्मद गौर के साथ एक प्रसिद्ध संत शेख मोइनुदीन चिश्ती भारत आया। इस संत ने भारत में चिश्ती संप्रदाय की स्थापना की थी। मुहम्मद गौरी, राजनैतिक स्थितियों को जानने एवं सुधारने में महमूद गजनी से अधिक योग्य था।
- मुहम्मद गौरी के सिक्कों पर एक ओर 'कलमा' खुदा रहता था एवं दूसरी ओर देवी 'लक्ष्मी' की आकृति रहती थी।

3-7- l¡d¡r&l¡pd (Key-Words)

- मूर्तिभंजक – मूर्ति तोड़ने वाला
- आविर्भाव – प्रकट होना/ उत्पन्न
- अश्वारोही – घुड़सवार
- रूबरू – अवगत करना
- लाभान्वित – लाभ प्राप्त करना
- धार्मिक कट्टरता – धर्म के प्रति जकड़न/धार्मिक विश्वास को लेकर लोगों को बाध्य करना
- शासनवधि – शासनकाल
- महत्वाकांक्षी – अपना स्वार्थ हल करने की नीति
- अवलंब – साहरा

3-8- Lo&eY;kdu ijh{kk (Self Assessment Test)(SAT)

Hkkx (क) बहु विकल्पी प्र□न (Multiple choice based Questions)

pkj fodYik e l ,d lgh mÙkj dk p;u dj %&

¼bud mÙkj nk;h vkj dk"Bd e fn, g, g½

1. तुर्कों ने सर्वप्रथम किस भारतीय शासक को पराजित किया था। ?

(A) भीम प्रथम (B) जयपाल (B)

(C) दाउद (D) राजा हरदत

2. म्हमूद गजनवी के दरबार का सुप्रसिद्ध कवि था ?

(A) फिरदौसी (B) अलबेरूनी (A)

(C) उत्वी (D) फाराबी

3. महमूद गजनी के साथ भारत आने वाला विद्वान था ?

(A) अलबेरूनी (B) फिरदौसी (A)

(C) मिन्हाज (D) उत्वी

4. तराइन का दूसरा युद्ध हुआ ?

(A) 1191 ई. में (B) 308 ई. में (D)

(C) 1194 ई. में (D) 1192 ई. में

5. चांदवाड़ का युद्ध निम्नलिखित में से किसके मध्य हुआ –

(A) मुहम्मद गौरी और पृथ्वीराज चौहान (i)

(B) मुहम्मद गौरी और परमल देव

(C) मुहम्मद गौरी और जयचन्द राठौर

(D) मुहम्मद गौरी और भीमदेव द्वितीय

6. मुहम्मद गौरी की मृत्यु हुई ?

(A) 1191 ई. में (B) 15 मार्च, 306 ई. में (B)

(C) 16 मार्च, 316 ई. में (D) 1194 ई. में

7 महमूद गजनवी का जन्म हुआ ?

(A) 997 ई. में (B) 973 ई. में (C)

(C) 1171 ई. में (D) 1173 ई. में

8 महमूद गजनी के दरबार का प्रसिद्ध गणितज्ञ, ज्योतिषी, दार्शनिक था

(A) फिरदौसी (B) उत्वी (D)

(C) शहाबुद्दीन (D) अलबेरूनी

9 महमूद गजनवी ने भारत पर कितने आक्रमण किए –

(A) तेरह (B) सत्रह (B)

(C) अठारह (D) छब्बीस

10 सिन्ध पर अरबों ने कब विजय प्राप्त की थी ?

(A) 73 ई. में	(B) 997 ई. में	(A)
(C) 636 ई. में	(D) 722 ई. में	

भाग (ख) दीर्घ उत्तरीय प्र□न (Long Answer Type Questions)

(1) मुहम्मद गौरी के भारतीय आक्रमणों का विवरण दीजिए।

(Describe the invesions of Mahmud Ghori on India.)

(2) महमूद गजनवी के भारत पर आक्रमणों के उद्देश्यों का विश्लेषण कीजिए तथा प्रमुख आक्रमणों का उल्लेख कीजिए।

(Analyse the motives of Mahamud Gazanavi's invasion of India and describe the main invasions maid by him.) (M.D.U. ROHTAK, 2015, Dec.,201)

(3) महमूद गजनवी के भारतीय आक्रमणों का संक्षिप्त वर्णन करें तथा उनके परिणामों की व्याख्या करें।

(Describe in brief the attacks of Mahmud Ghazni and their effects in India.)

(4) तुर्कों के विरूद्ध राजपूतों की पराजय के क्या कारण थे?

(What were the reasons of defeat of Rajputs against Turks?)

3-9- प्रगति समीक्षा हेतु प्र□नोत्तर (Answers to check your Progress)

3-5 ¼d½ dk mÙkj ¼&

(i) सुबुक्तगीन	(ii) 1025	(iii) गजनी
(iv) मसूद और मुहम्मद	(v) 1194	(vi) मुल्तान
(vii) (पृथ्वीराज रासो)	(viii) फारसी	
(ix) गजनी	(x) मुहम्मद गौरी	

3-5 ¼[k½ dk mÙkj ¼&

(1) सत्य	(2) सत्य	(3) असत्य	(4) सत्य
(5) असत्य	(6) सत्य	(7) सत्य	(8) असत्य
(9) असत्य	(10) सत्य		

11-10- lanHkZ xzUFk ,oa lgk;d iqLrdsa@lgk;d v/;;u lkexzh

(References/Suggested Readings)

- हरि□ाचन्द्र वर्मा – मध्यकालीन भारत (750–1540) हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदे□ालय दिल्ली वि□वविद्यालय, द्वितीय संस्करण : 20 फरवरी, 1985।
- i:kphu ,o: i:o: e/;dkyhu Hkkjr dk bfrgkl ¼i:kjEHk l: 1526 b:- तक) – अविना□ा चन्द्र vjkMk] तृतीय संस्करण : 1987, प्रदीप पब्लिके□ान्ज, प्रताप रोड़, जालन्धर
- भारतीय इतिहास एवं राश्ट्रीय आन्दोलन – दृश्टि पब्लिके□ान्स, डॉ- e[kthi uxj] fnYyh & f}rh; laLdj.k % tu] 2018A
- Hkkjr dk bfrgkl ¼i:kjfHkd dky l: 300 b:- rd ½&Mk- य□वीर सिंह एवं vfuy ;kno] y{eh cqd fMiks & fHkokuh ¼gfj;k.kk½
- सामान्य अध्ययन – स्पेक्ट्रम पब्लिके□ान, अहीर नगर दिल्ली

B.A. HISTORY PART-1, SEMESTER-II	
COURSE CODE :HIST 103	**AUTHOR AND UPDATED** : MOHAN SINGH BALODA
LESSON NO. 04	
fnYyh lYrur ¼1200 bZ-&1526 bZ-½**(Delhi Sultanate 1200A.D. - 1526 A.D.)**	

v/;k; lajpuk **(Lesson Structure)**

4-1- vf/kxe mís”; **(Learning Objectives)**

4-2- ifjp; **(Introduction)**

4-3- fo"k; oLrq dk e[; fcUnq **(Main Body of Text)**

4-3-1 fnYyh lYrur dk laLFkkid o”k % xqyke o”k

(Founder Dynesty of Delhi Sultanate : Slave Dynasty)

4-3-2 f[kyth o”k dk dky esa fnYyh lYrur dk foLrkj

(Fragmentation of Delhi Sultanate in the period of Khilji)

4-3-3 rqxydo”kdkyhu fnYyh lYrur

(Delhi Sultanate during Tughlaq)

4-3-4 fnYyh lYrur dk detksj o”k % lS;n ,oa ykknh o”k

(Weak dynasty of Delhi Sultanate : Sayyid and Lodhi) %&

4-4- fo"k; oLrq dk iqu% iLrqrhdj.k **(Further Main body of the text)**

4-4-1 fnYyh lyrur dk okLrfod laLFkkid % bYrqrfe”kA

(Real Faunder of delhi sultanate : Ilutmish)

4-4-2- प्रसिद्ध भासक बलवन और उसकी उपलब्धियां।

(Famous Ruler Balban and his achivements)

4-4-3- vykmíhu f[kyth dk iz”kklfud ,oa vkfFkZd lq/kkj

(Khilji administrative and economic reform of Ala-ud-din)

4-4-4- **विरोधी तत्वों के मिश्रण वाला दिल्ली सल्तनत का प्रसिद्ध भाासक मुहम्मद बिन तुगलक।**

(Eminent ruler of Admixture Muhammad bin Tughlaq)

4-5- izxfr leh{kk **(Check your progress)**

4-6- lkjka"k **(Summary)**

4-7- lwpd&lwpd **(Key-Words)**

4-8- Lo&ewY;kadu ijh{kk **(Self Assessment Test)(SAT)**

4-9- izxfr leh{kk gsrq iz"ukÙkj **(Answers to check your Progress)**

4-10- lanHkZ xzUFk ,oa lgk;d iqLrdsa@lgk;d v/;;u lkexzh

(References/Suggested Reading)

4-1- vf/kxe mís"; **(Learning Objectives) :-** bl v/;k; ds m/kkfyf[kr mís"; fuEufyf[kr gSa ftuds v/;;u ds mijkUr Nk= fuEu ;kX; gksxsa %&

- f"k्षार्थी दिल्ली सल्तनत के उदय के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- दिल्ली सल्तनत का विस्तार किस प्रकार से हुआ इस पर अधिगमकर्ता परिचर्चा कर सकेगें।
- दिल्ली सल्तनत के पतन के पीछे किन कारकों की अह्म भूमिका रही।
- विद्यार्थी अलाउद्दीन खिलजी के आर्थिक व प्र"ाासनिक सुधारों का वर्णन कर सकेंगे।
- गुलाम वं"ा के सबसे प्रसिद्ध शासक गयासुद्दीन बलबन की उपलब्धियों की विवेचना कर सकेंगे।
- पाठकगण मुहम्मद बिन तुगलक के विरोधी गुण–अवगुण के मिश्रणों पर अपने तर्क प्रस्तुत कर सकेंगे।

4-2- ifjp; **(Introduction) :-** तुर्की आक्रमणों के प"चात भारत में मुf"लम सत्ता की स्थापना दिल्ली सल्तनत के नाम से हुई, जिसके अंतर्गत कुल पाँच वं"ाों – गुलाम वं"ा, खिलजी वं"ा, तुगलक वं"ा, सैयद वं"ा व लोदी वं"ा के अलग–अलग शासकों ने राज किया। इस क्रम में सर्व प्रथम कुतुबद्दीन ऐबक का नाम आता है, जिसने

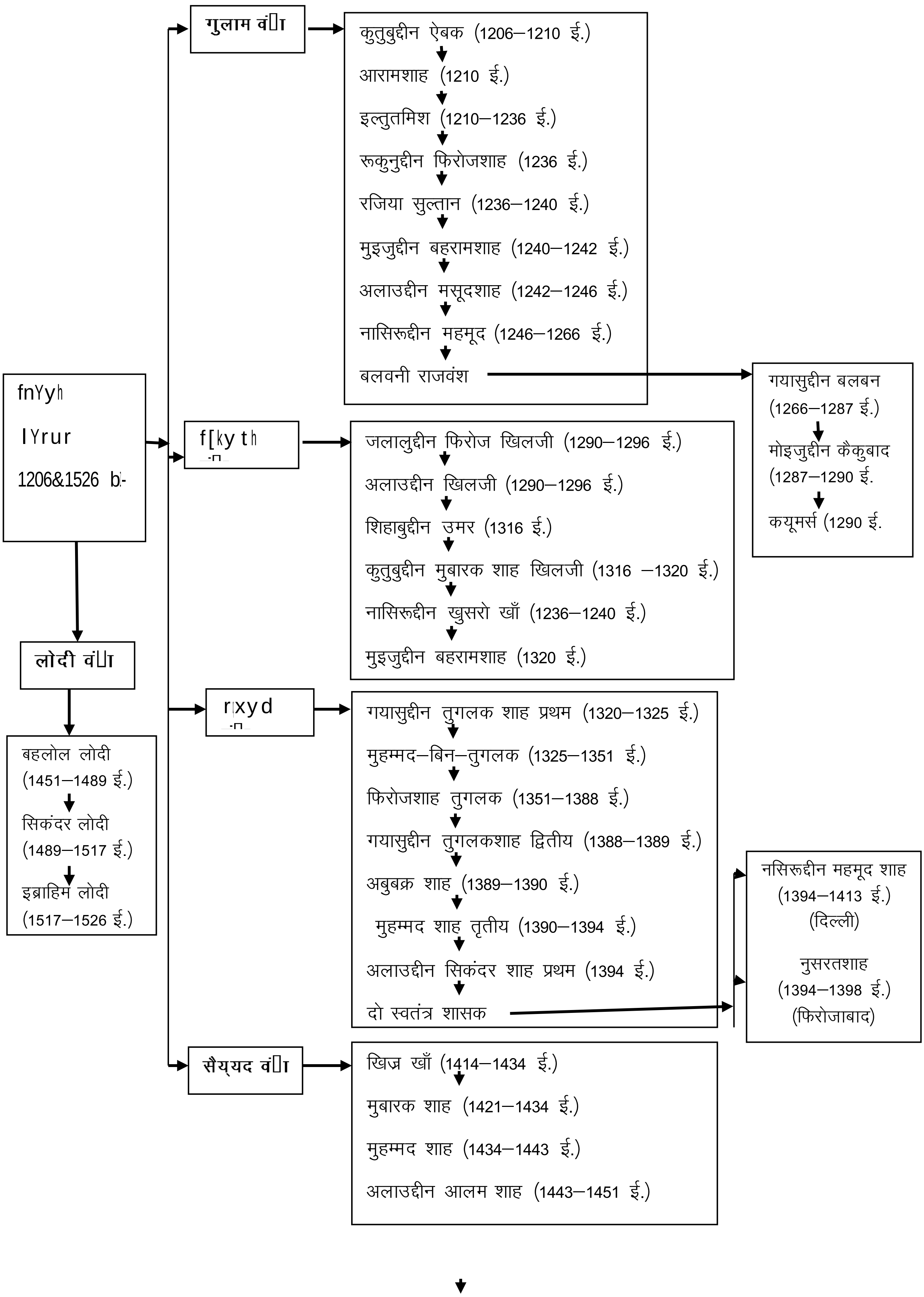
fnYyh
lYrur
1206&1526 b-
गुलाम वं□ा
कुतुबुद्दीन ऐबक (1206–1210 ई.)
आरामशाह (1210 ई.)
इल्तुतमिश (1210–1236 ई.)
रूकुनुद्दीन फिरोजशाह (1236 ई.)
रजिया सुल्तान (1236–1240 ई.)
मुइजुद्दीन बहरामशाह (1240–1242 ई.)
अलाउद्दीन मसूदशाह (1242–1246 ई.)
नासिरूद्दीन महमूद (1246–1266 ई.)
बलवनी राजवंश
गयासुद्दीन बलबन
(1266–1287 ई.)
मोइजुद्दीन कैकुबाद
(1287–1290 ई.
कयूमर्स (1290 ई.
f[kyth
जलालुद्दीन फिरोज खिलजी (1290–1296 ई.)
अलाउद्दीन खिलजी (1290–1296 ई.)
शिहाबुद्दीन उमर (1316 ई.)
कुतुबुद्दीन मुबारक शाह खिलजी (1316 –1320 ई.)
नासिरूद्दीन खुसरो खाँ (1236–1240 ई.)
मुइजुद्दीन बहरामशाह (1320 ई.)
लोदी वं□ा
बहलोल लोदी
(1451–1489 ई.)
सिकंदर लोदी
(1489–1517 ई.)
इब्राहिम लोदी
(1517–1526 ई.)
rxyd
गयासुद्दीन तुगलक शाह प्रथम (1320–1325 ई.)
मुहम्मद–बिन–तुगलक (1325–1351 ई.)
फिरोजशाह तुगलक (1351–1388 ई.)
गयासुद्दीन तुगलकशाह द्वितीय (1388–1389 ई.)
अबुबक्र शाह (1389–1390 ई.)
मुहम्मद शाह तृतीय (1390–1394 ई.)
अलाउद्दीन सिकंदर शाह प्रथम (1394 ई.)
दो स्वतंत्र शासक
नसिरूद्दीन महमूद शाह
(1394–1413 ई.)
(दिल्ली)
नुसरतशाह
(1394–1398 ई.)
(फिरोजाबाद)
सैय्यद वं□ा
खिज्र खाँ (1414–1434 ई.)
मुबारक शाह (1421–1434 ई.)
मुहम्मद शाह (1434–1443 ई.)
अलाउद्दीन आलम शाह (1443–1451 ई.)

गुलाम वं"ा की नींव रखी। कुतुबद्दीन ऐबक तुर्क आक्रमणकारी मुहम्मद गौरी का गुलाम था इसलिए इसके द्वारा स्थापित वं"ा को गुलाम वं"ा के नाम से जानते हैं। किन्तु इतिहासकार गुलाम वं"ा के नाम पर आपत्ति व्यक्त करते है। उनका कहना है कि ऐबक जन्मजात गुलाम नहीं था। अतः ऐबक द्वारा स्थापित वं"ा को गुलाम वं"ा की बजाय ममलूक वं"ा कहना अधिक उचित है। इस प्रकार दिल्ली सल्तनत का प्रथम वं"ा गुलाम (दास) वं"ा था ममलूक वं"ा के नाम से जाना जाता है। यह वं"ा 1206 से 1290 ई. तक कायम रहा। इसमें कुल 11 शासकों ने राज किया। कुतुबद्दीन ने लाहौर से शासन किया था। शासन की राजधानी दिल्ली लाने वाला इल्तुतमि"ा को ही दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। इस वं"ा का प्रसिद्ध शासक बलबन हुआ जिसने इल्त्तुतमि"ा के कमजोर उत्तराधिकारियों के कारण राज्य के क्षीण हुए वैभव को फिर से स्थापित किया। इसी वं"ा के अंतर्गत इल्तुतमि"ा के बाद उसकी पुत्री रजिया सुल्तान दिल्ली सल्तनत की गद्दी पर शासन करने वाली प्रथम व अंतिम महिला शासिका हुई थी। बलबन की मृत्यु के बाद ही तीन वर्षों के अंदर यह वं"ा समाप्त हो गया। इसके बाद जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के द्वारा खिलजी वं"ा की स्थापना की गयी। यह वं"ा 1290 से 420 ई. तक चला। इसमें कुल 5 शासकों ने राज किया। इस वं"ा का सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक अलाउद्दीन खिलजी हुआ। विस्तारवादी नीति के कारण इसे सिकंदर–उ–सानी या सिकंदर द्वितीय सानी की उपाधि के रूप में भी इतिहास में जाना जाता है। अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली सल्तनत के अंतर्गत ही नहीं बल्कि मध्यकालीन भारतीय इतिहास में प्र"ाासनिक व आर्थिक सुधारों के लिए प्रसिद्ध है। इसकी बाजार नियंत्रण की नीति सल्तनत काल में वि"िाष्ट स्थान रखता है। अलाउद्दीन खिलजी के बाद के शासक कमजोर हुए जिस कारण यह वं"ा इसके चार वर्षो के बाद ही 420 ई. में समाप्त हो गया। इसके बाद गयासुद्दीन तुगलक या गाजी मलिक ने तुगलक वं"ा की स्थापना की। यह वं"ा 420 से 1414 ई. तक चला। इसमें कुल 9 शासकों ने राज किया। दिल्ली के गद्दी पर सबसे अधिक समय तक 94 वर्षो तक इस वं"ा के शासकों ने राज किया। गयासुद्दीन तुगलक दिल्ली सल्तनत का प्रथम सुल्तान था जिसने सिंचाई के लिए नहरों का निर्माण शुरू करवाया और इसी वं"ा के फिरोज"ाह तुगलक ने सबसे अधिक नहरों का निर्माण करवाया। किन्तु इस वं"ा का सबसे प्रसिद्ध शासक मुहम्मद बिन तुगलक हुआ जो मध्यकालीन इतिहास में विद्वान, दा"ानिक, कला प्रेमी, धर्मनिरपेक्ष, अनुभवी किन्तु पागल सुल्तान के नाम से प्रसिद्ध है। इसलिए इसे विरोधाभासी गुणों के मिश्रण के रूप में भी इतिहास में जाना जाता है। इसके राजधानी परिवर्तन व सांकेतिक सिक्के चलाने की नीति की आलोचना की जाती है। इसकी गलत नीतियों के कारण ही दिल्ली सल्तनत का विघटन होने लगा और क्षेत्रीय राज्यों ने अपनी स्वतंत्र पहचान बनानी शुरू कर दी। मुहम्मद बिन तुगलक के काल में ही दक्षिण भारत में महान विजयनगर साम्राज्य तथा बहमनी साम्राज्य की स्थापना हुई। तुगलक वं"ा के शासकों खासकर मुहम्मद बिन तुगलक की गलत नीतियों के कारण दिल्ली सल्तनत जो खिलजी वं"ा के काल में यौवन अवस्था में अब पतन के लक्षण वृद्धावस्था की ओर अग्रसर हो गया। इस वं"ा के संस्थापक गयासुद्दीन तुगलक का सूफी संत निजामुद्दीन औलिया से विवाद भी प्रसिद्ध है। इसी वं"ा का फिरोज"ाह तुगलक ने ब्राह्मणों पर भी जजिया कर लगाया।

फिरोज"ाह तुगलक के बाद अयोग्य शासक के कारण यह वं"ा जैसे–तैसे 1414 ई. तक चला। इसके बाद खिज्र खाँ ने सैयद वं"ा की स्थापना की। खिज्रखाँ अपने को तैमूर के लड़के शाहरूख का प्रतिनिधि मानता था और साथ ही उसे नियमित कर भेजा करता था। खिज्र खाँ ने सुल्तान की उपाधि न धारण कर अपने को 'रैयत–ए–आला' की

उपाधि से खु”ा रखा। यह वं”ा 1414–1451 ई. तक चला। इस वं”ा की दिल्ली सल्तनत के अंतर्गत कोई उपलब्धि नहीं है। इस वं”ा के काल से ही दिल्ली सल्तनत पतन की ओर अग्रसर हो गया।

इस वं”ा का अंतिम शासक अलाउद्दीन आलम”ाह विलासी प्रवृत्ति का था। इसके बाद यह वं”ा समाप्त हो गया।

दिल्ली सल्तनत का अंतिम वं”ा लोदी वं”ा था। यह वं”ा 1451 से 1526 ई. तक चला। अब तक जिन चार वं”ाों ने दिल्ली सल्तनत पर राज किया वे सभी तुर्की थे, किन्तु लोदी वं”ा वाल अफगानी थे।

बहलोल लोदी को दिल्ली में प्रथम अफगान राज्य का संस्थापक माना जाता है। इस वं”ा का प्रसिद्ध शासक सिकंदर लोदी हुआ जिसे 1489 से 1517 ई. तक राज किया। इसने 1504 ई. में आगरा शहर की नींव रखी और इसे अपनी राजधानी बनाया। आर्थिक सुधार के अंतर्गत इसने भूमि मापन के लिए एक प्रमाणिक पैमाना 'गजेसिकन्दरी' का प्रचलन करवाया। धार्मिक रूप से अस हिष्णु शासक सिकंदर लोदी 'गुलरूखी' उपनाम से कविता लिखता था। सिकंदर लोदी के बाद इस वं”ा का और दिल्ली सल्तनत का भी अंतिम शासक इब्राहिम लोदी बना। 1526 ई. में पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने इब्राहिम लोदी को हराकर दिल्ली पर मुगल वं”ा की सत्ता स्थापित की और इस प्रकार 1506 ई. में गुलाम वं”ा से जो दिल्ली सल्तनत आरंभ हुआ था उसका अंत हो गया। 1206 से लेकर 1526 ई. तक 5 राजवं”ाों ने कुल 320 वर्षों तक दिल्ली सल्तनत के नाम से दिल्ली पर राज किया था।

4-3-1 fnYyh lYrur dk lLFkkid o”k % xyke o”k (Founder Dynesty of Delhi Sultanate : Slave Dynasty)

मुहम्मद गोरी के प्रतिनिधि के रूप में उसके विजित क्षेत्र को अपने नियंत्रण में लेकर कुतुबद्दीन ऐबक ने भारत में दिल्ली सल्तनत के नाम से मुस्लिम सत्ता की स्थापना की। इसके द्वारा स्थापित वं”ा को गुलाम वं”ा या ममलूक वं”ा के नाम से जानते है। ऐबक का राज्यभिषेक 1206 ई. में लाहोर में 'मलिक' एवं 'सिपहसालार' की उपाधि के साथ हुआ। उसने अपने नाम से न तो कोई सिक्का जारी करवाया और न कभी खुतबे पढ़वाये।

सिंहासन पर बैठते ही कुतुबद्दीन ऐबक को मुहम्मद गोरी के अन्य उत्तराधिकारी गयासुद्दीन मुहम्मद, ताजुद्दीन एल्दौज एवं नासिरूद्दीन कुबाचा के विद्रोह का सामना करना पड़ा। ऐबक ले अपनी कूटनीतिक योग्यता का परिचय देते हुए वैवाहिक संबंधों के आधार पर इन विद्रोहियों को शांत किया। उसने गजनी के शासक ताजुद्दीन एल्दौज की पुत्री से अपना विवाह, नासिरूद्दीन कुबाचा से अपनी बहन का तथा इल्तुतमि”ा से अपनी पुत्री का विवाह किया। कुबाचा इस समय मुल्तान एवं सिंध पर तथा एल्दौज गजनी पर शासन कर रहा था। इन वैवाहिक संबंधों के कारण एल्दौज तथा कुबाचा की ओर से विद्रोह का खतरा टल गया। कालांतर में गोरी के उत्तराधिकरी गयासुद्दीन ने ऐबक को 1208 ई. में सुल्तान के रूप में स्वीकार कर लिया। इस प्रकार ऐबक एक स्वतंत्र शासक के रूप में भारत में तुर्की राज्य का संस्थापक बना। स्वतंत्र शासक के रूप में स्थापित करने के बाद ऐबक ने भारत में नये प्रदे”ा जीतने की अपेक्षा जीते हुए प्रदे”ा को सुरक्षित करने और तुर्की राजय को दृढ़ीकृत करने पर वि”ोष ध्यान दिया। ऐबक को अपनी उदारता एवं दानी प्रवृत्ति के कारण ' लाखबख्श' (लाखों का दानी) कहा गया है। इतिहासकार मिनहाज ने उसकी दान”ीलता के कारण ही उसे हातिम द्वितीय की संज्ञा दी है। ऐबक हमे”ाा अपने साथ कुरान की एक प्रति रखता था और नित्य इसका पाठ करता था। इस कारण

ऐबक को कुरान खाँ (कुरान का पाठ करने वाला) भी कहा जाता था। साहित्य एवं स्थापत्य कला में भी कुतुबद्दीन ऐबक की रूचि थी।

विद्वान इसन निजामी एवं फख–ए–मुदब्बिर को ऐबक के काल में संरक्षण प्राप्त था। स्थापत्य कला के क्षेत्र में ऐबक ने दिल्ली में कुव्वत–उल–इस्लाम मस्जिद तथा अजमेर में ढाई दिन का झोपड़ा का निर्माण करवाया। कुतुबद्दीन ऐबक को सूफी संत शेख ख्वाजा कुतुबद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में दिल्ली में कुतुबमीनार का निर्माण कार्य प्रारंभ करवाने का श्रेय भी जाता है। अपने शासन के 4 वर्ष बाद 1210 ई. में लाहौर में चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से गिरकर ऐबक की मृत्यु हो गई।

ऐबक की अचानक मृत्यु के कारण उत्पन्न विषम स्थिति सैनिक असंतोष व जनता में विद्रोह तथा अ’’ाांति की भावना को देखते हुए लाहौर के सरदारों ने उसके अयोग्य पुत्र आराम’’ाह को गद्दी पर बैठाया। परंतु दिल्ली की जनता ने इसको मन से स्वीकार नहीं किया और बदायूँ के गर्वनर (प्राताध्यक्ष) इल्तुतमि’’ा जो ऐबक का दामाद भी था को आमंत्रित किया। इसके बाद सत्ता को लेकर दिल्ली के जड नामक स्थान पर आराम’’ाह तथा इल्तुतमि’’ा के बीच संघर्ष हुआ जिसमें इल्तुतमि’’ा की जीत हुई और आराम’’ाह को बंदी बनाकर उसकी हत्या कर दी गई। इस प्रकार आराम’’ाह के 8 माह का शासन समाप्त हो गया और दिल्ली की सत्ता पर इल्तुतमि’’ा का अधिकार हो गया। अंततः ऐबक की मृत्यु के बाद कुछ महीनों तक आराम’’ाह के शासन के बाद दिल्ली सल्तनत का शासक इल्तुतमि’’ा बना।

- bYrqrfe"k ¼1210&1236 bZ- ½

इल्तुतमि’’ा इल्बरी तुर्क था। इस कारण इससे आरंभ वं’’ा को इल्बरी वं’’ा के नाम से भी जानते है। इल्तुतमि’’ा ने सल्तनत की राजधानी को लाहौर से दिल्ली लाया। अतः इसे दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। यह 1210 से 1236 ई. तक दिल्ली का सुल्तान बना रहा। वह बहुत ही योग्य शासक था। उसने अपने पराक्रम एवं साहस से न केवल आराम’’ाह बल्कि पंजाब के एल्दोज, सिंध के कुबाचा तथा बंगाल के अली मर्दान खाँ को भी पराजित किया। रणथम्भौर एवं ग्वालियर को उसने फिर से हिन्दुओं से छीन लिया तथा मालवा एवं उज्जैन पर भी अपनी जीत दर्ज की। इल्तुतमि’’ा ने कुतुबद्दीन के समय के सरदार 'कुत्बी' तथा गोरी के समय के सरदार 'मुइज्जी' का कठोरता से दमन करते हुए अपने गुलाम मंगोल चंगेज खाँ के आक्रमण से अपने राज्य को बचाया। उसने अपनी कूटनीति के द्वारा 40 सरदारों का गुट चालीसा गुट (तुर्कान–ए–चिहलगानी) बनाया और इसे राजत्व का एक अंग बना लिया। शासन को व्यवस्थित करने के लिए 'इक्ता–व्यवस्था' प्रचलन में लाया। 1229 ई. में उसे बगदाद के खलीफा से भारत में स्वतंत्र तुर्क शासन के रूप में 'खिलअत' एवं प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ। शुद्ध अरबी सिक्के चलाने वाला भारत में वह पहला तुर्क सुल्तान था। उसने 1232 ई. में कुतुबमीनार का निर्माण पूरा किया तथा दिल्ली के सुल्तानगढ़ी में पहला मकबरा निर्मित करवाने का श्रेय भी इल्तुतमि’’ा को ही दिया जाता है।

1236 ई. में उसकी मृत्यु हो गई। अपने 25 वर्षों के शासन काल में उसने एक कु’’ाल प्र’’ाासक का परिचय दिया, इसलिए उसे दिल्ली के प्रारंभिक सुल्तानों में सबसे महान कहा जाता है।

- :Duqíhu fQjkst ¼1236 bZ-½
- इल्तुतमि’’ा ने अपनी पुत्री रजिया को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था, पर उसकी मृत्यु के बाद उसके दरबारियों को किसी स्त्री का शासक बनना बर्दास्त नहीं हुआ और उन्होंने उसके बड़े पुत्र जो विलासी, निरंकु’’ा

तथा अयोग्य था को गद्दी पर बैठा दिया। उसे शासन के कार्य में कोई रूचि नहीं थी। वस्तुतः शासन की बागडोर उसकी माँ शाहतुर्कान के हाथों में थी। जनता ने इसको बर्दास्त नहीं किया और विद्रोह कर दिया और अंततः कुछ ही महीनों के शासन के उपरांत रूक्नुद्दीन की हत्या कर दी गई और जनता की समर्थन से रजिया को सिंहासन पर बैठाया गया।

- **jft;k lqYrku ¼1236&1240 bZ-½**

रजिया एकमात्र महिला सुल्तान थी, जो दिल्ली के सिंहासन पर बैठी। उसने 1236 से 1240 ई. तक शासन किया। वह एक योग्य शासिका थी। चूंकि रजिया को सुल्तान बनाने का अधिकार सिर्फ दिल्ली के अमीरों को मिला इसलिए अन्य तुर्क अमीर/सरदार उससे अप्रसन्न रहते थे। इसलिए वे उसे सुल्तान के पद से हटाना चाहते थे। इसके लिए सरदारों ने सिंध के सूबेदार अल्तूनिया को नेता बनाकर रजिया के खिलाफ विद्रोह कर दिया जबकि रजिया ने याकूत नामक एक गुलाम को अपना वि”वासपात्र बनाया था। इस ‘ाड्यंत्र से निकलने के लिए रजिया ने अल्तूनिया से विवाह कर लिया, किंतु सरदारों ने अंततः 1240 ई. में रजिया तथा उसके पति अल्तूनिया को युद्ध में परास्त कर मार डाला।

उसने मात्र तीन या साढ़े तीन वर्षों तक शासन किया, किंतु इस बीच उसने अपनी वीरता, कूटनीतिज्ञता और नेतृत्व क्षमता का पर्याप्त परिचय दिया। उसने भारत में तुर्की सत्ता की पुनः प्रतिष्ठा की और सुल्तान की शक्ति को निरंकु”ा बनाने का प्रयत्न किया। रजिया दिल्ली सल्तनत पर शासन करने वाली पहली महिला सुल्तान थी जिसने अमीरों एवं मालिकों को सभी प्रकार के आदे”ाों को मानने के लिए विव”ा किया। सामान्यतः ऐसा माना जाता है कि रजिया के पतन का मुख्य कारण उसका स्त्री होना था। परंतु इस बात में सच्चाई नहीं है कि उसके पतन का सबसे बड़ा कारण अमीरों और मालिकों की महत्वकांक्षाएं थीं। अमीरों एवं मालिकों ने अपने अधिकार क्षेत्र में वृद्धि के लिए रजिया के विरूद्ध ‘ाड्यंत्र किया और मरवा डाला।

- **eqbZtqíhu cgjke”kkg ¼1240&1242 bZ-½**

रजिया के बाद मुईजुद्दीन बहराम”ाह सुल्तान बना। वह नाममात्र का ही सुल्तान था। क्योंकि शासन का संचालन तुर्क अमीरों द्वारा ही हो रहा था। इसके काल में सुल्तान के अधिकार को कम करने के लिए तुर्क सरदारों ने एक नये पद 'नायब' अथवा 'नायब–ए–मुमलिकात' का सृजन किया। इस पद पद नियुक्त व्यक्ति संपूर्ण अधिकारों का स्वामी होता था। बहराम”ाह के समय में इस पद पर सर्वप्रथम मलिक इख्यिारूद्दीन एतगीन को नियुक्त किया गया। एतगीन ने सुल्तान के कुछ अधिकार अपने हाथों में ले लिए और उसकी बहन के साथ विवाह भी रचाया। एतगीन की बढ़ती शक्ति से बहराम”ाह घबरा गया और उसने उसका वध करवा दिया और सम्पूर्ण सत्ता अपने हाथों में ले ली। इसी के शासनकाल में 1241 ई. में मंगोलों ने पंजाब पर आक्रमण किया। 1242 ई. में तुर्क सरदारों के ‘ाड्यंत्र के कारण सैनिकों द्वारा उसकी हत्या कर दी गयी। इस प्रकार 1240 ई. में सत्तासीन हुए बहराम”ाह के शासनकाल की समाप्ति 2 वर्षो की छोटी सी अवधि में हो गई।

- **vykmíhu elwn”kkg ¼1242&1246 bZ-½**

बहराम”ाह की हत्या के प”चात् तुर्क सरदारों ने मसूद”ाह दिल्ली का शासक बना दिया। वह एक अयोग्य शासक सिद्ध हुआ। उसके शासन काल में बलबन ने मंगोलों को हराकर राज्य में अपना वि”िाष्ट स्थान प्राप्त कर लिया था। अमीरे हाजिब के पद पर बने रहकर बलबन ने शासन का वास्तविक अधिकार अपने हाथ में ले लिया। मसूद”ाह नाम मात्र का शासक रह गया था। अंततः बलबन ने एक ‘ाडयंत्र द्वारा सुल्तान को कैद करवा दिया तथा उसका वध करवा दिया और दिल्ली की गद्दी पर नसिरूद्दीन महमूद को बिठा दिया।

- **ukfl : íhu egen ¼1246&1266 bZ-½**

नासिरूद्दीन महमूद धर्म–पराजय और सच्चरित्र था, परंतु वह नाममात्र का शासक रह गया था। राज्य की समस्त शक्तियों का प्रयोग नायब–ए–मुमलिकात बलवन के हाथों में सौंप दिया और स्वयं सुल्तान तुर्की अधिकारियों की आज्ञा के बिना कोई कार्य नहीं करता था। बलबन ने आन्तरिक विद्रोहों तथा मंगोलों के आक्रमणों का सफलतापूर्वक विरोध किया जिससे महमूद के शासनकाल में उसका राजनीतिक कद काफी बढ़ गया। नायब के पद के साथ सुल्तान ने बलबन को 'उलगू खाँ' की उपाधि प्रदान की। बलबन ने अपनी पुत्री का विवाह सुल्तान से करवाया। 1266 ई. में महमूद की मृत्यु के बाद बलबन स्वयं सुल्तान बन गया।

- **x;kl íhu cycu ¼1246&1286 bZ-½**

बलबन इल्बरी तुर्क था। महमूद की मृत्यु के बाद 1266 ई. में वह गयासुद्दीन की उपाधि के साथ दिल्ली की गद्दी पर बैठा। गद्दी पर बैठते ही उसने चालीसा गुट को समाप्त कर दिया। बलबन ने अमीरों के प्रभाव एवं बढ़ी हुई शक्ति को कमजोर करने तथा सुल्तान को शक्ति’’ाली बनाने के उद्दे’’य से इनकी शक्ति को कुचलने का कार्य किया। उसने आंतरिक विद्रोहों का सफलता पूर्वक दमन किया। अपने सफल रणनीति के द्वारा उलेभाओं को राजनीति से पृथक कर दिया।

अपनी प्रभुसत्ता, अधिकार एवं शक्ति को स्पष्ट करने के लिए बलबन ने राजत्व के दैवीय सिद्धान्त का समर्थन किया और स्वयं को जिल्ले इलाही (ई’’वर की छाया) से नवाजा तथा अपने आप को शाही वं’’ाज होने का दावा किया।

उसने अपने राज्य में ईरानी आद’’ाों एवं परंपराओं – 'सिजदा' एवं 'पाबोस' का पालन तथा 'नौरोज' उत्सव मनाने का प्रचलन प्रारंभ किया। राज्य की शक्ति बढ़ाने के लिए उसने 'दीवान–ए–अर्ज' नाम से नियमित सेना का गठन किया।

शासन व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए 'बरीद–ए–मुमालिक' के नाम से गुप्तचर विभाग बनाया। बलबन की न्याय व्यवस्था कठोर तथा गैर–पक्षपात पूर्ण थी। सुल्तान प्रमुख अपराधों से संबंधित मामलों का न्याय स्वयं करता था। अपने विद्रोहियों के प्रति शासक व्यवस्था में उसने 'रक्त एवं लौह' की नीति का पालन किया जिसके अंतर्गत विद्रोही व्यक्ति की हत्या कर उसकी स्त्री एवं बच्चों को दास बना लिया जाता था। 1286 ई. में बलबन की मृत्यु हो गई। बलबन की मृत्यु के 3–4 वर्षों के अंदर ही उसके द्वारा स्थापित व्यवस्थाएँ और सुल्तान की मद–प्रतिष्ठा नष्ट हो गई।

- **बलबन के उत्तराधिकारी कैकुबाद एवं भाE l íhu D;e l ¼1286&1290 bZ-½**

दिल्ली सल्तनत के निर्माता शासकों में से एक बलबन ने राज्य को स्थायित्व प्रदान किया तथा आंतरिक प्र’’ाासन की व्यवस्था की परंतु अपने उत्तराधिकारियों के लिये वह कुछ न कर सका। उसके जीवनकाल में ही युवराज शहाजादा मुहम्मद की मंगोलों से युद्ध करते हुए मृत्यु और दूसरे पुत्र बुगरा खाँ की सुल्तान पद से उदासीनता के कारण अपनी मृत्यु के पूर्व उसने शहाजादा मुहम्मद के पुत्र कैखुसरों को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। परंतु बलबन की मृत्यु के बाद उसके वि’’वस्तों ने ही उसके आदे’’ा की अवहेलना करते हुए बुगरा खाँ के अल्पव्यस्क विलासी पुत्र कैकुबाद को सुल्तान बना दिया।

1290 ई में कैकुवाद लकवाग्रस्त हो गया तो उसके पुत्र क्यूमर्स को सुल्तान बनाया गया लेकिन उसके संरक्षक मलिक फिरोज खिलजी ने उसकी हत्या कर दिल्ली सल्तनत पर अपना कब्जा कर लिया। इस सत्ता परिवर्तन के साथ ही ममलूक या गुलाम वं’’ा का अंत हो गया और दिल्ली सल्तनत पर एक नवीन वं’’ा खिलजी वं’’ा का शासन स्थापित हो गया।

4-3-2 f[kyth o”k dh dky esa fnYyh lYrur dk foLrkj **(Fragmentation of Delhi Sultanate in the period of Khilji)**

- f[kyth o”k ¼1290&420 bZ-½

खिलजी वं’ा की स्थापना मध्यकालीन भारतीय इतिहास में दिल्ली सल्तनत के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण परिर्वतन को इंगित करती है। इसकी स्थापना जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के द्वारा 1290 ई. में किया गया। इतिहास में खिलजी वं’ा की स्थापना को खिलजी क्रांति के नाम से जाना जाता है।

खिलजी क्रान्ति का सामान्य अर्थ है – जाति व नस्ल आधारित शाही वं’ा के शासन की समाप्ति, क्योंकि अब उच्च समझे जाने वाले इल्बरी तुर्कों के स्थान पर निम्न तुर्क खिलजियों ने सत्ता पर अधिकार कायम कर ली।

इसके अतिरिक्त खिलजी क्रांति के परिणामस्वरूप दिल्ली सल्तनत का सुदूर दक्षिण तक विस्तार हुआ, तुर्की अमीर सरदारों के प्रभाव क्षेत्र में कमी आई, जातिवाद में कमी आई, प्र’ाासन में सामाजिक विस्तार (भारतीय मुसलमान, मंगोलों को शामिल करना), प्रतिभा या योग्यता को शासन में महत्व, प्र’ाासन में धर्म व उलेमा के महत्व को अस्वीकार करना आदि परिवर्तन हुये। जिस कारण इस दौरान तत्कालीन भारतीय सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक संरचना में मूलभूत परिवर्तन हुए। यही कारण है कि खिलजी वं’ा को एक क्रांति के रूप में देखा जाता है। इस वं’ा के अंतर्गत कुल पाँच शासकों ने 30 वर्षो तक शासन किया जिसका वर्णन निम्न प्रकार है :–

- tykyqíhu fQjkst f[kyth **(Jalaluddin Firoz Khilji)** ¼1290&1296 bZ-½

खिलजी वं’ा का संस्थापक फिरोज खिलजी 1290 ई. में दिल्ली की गद्दी पर जलालुद्दीन की उपाधि के साथ बैठा। उसने कैकुबाद द्वारा निर्मित किलोखरी के महले में अपना राज्याभिषेक करवाया और इसे अपनी राजधानी बनाया। राज्याभिषेक के समय इसकी आयु 70 वर्ष थी।

जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने बलबन की ‘रक्त और लौह’ की नीति त्यागकर शासन व्यवस्था में उदार नीति को महत्व देते हुये जनता की इच्छा को शासन का आधार बनाया।

जलालुद्दीन को अहस्तक्षेप की नीति के लिए जाना जाता है। उसका 1291 ई. में रणथम्भौर का अभियान असफल रहा। 1292 ई. में मन्डौर एवं झाईन के किलों को जीतने में जलालुद्दीन को सफलता मिली।

1292 ई. में ही इसके काल में एक बार अब्दुल्ला के नेतृत्व में तथा दूसरी बार उलगू खाँ के नेतृत्व में मंगोलों का आक्रमण हुआ जिसमें मंगोलों की हार हुई। अन्त में दोनों के बीच संधि हुई।

इसी समय जलालुद्दीन के काल में लगभग 4 हजार मंगोल उलूग के नेतृत्व में इस्लाम धम्र ग्रहण कर दिल्ली के निकट मुगरलनुर /मंगोलपुरी में बस गए, जो ‘नवीन मुसलमान’ के नाम से जाने जाते हैं। जलालुद्दीन के शासनकाल में ही उसके भतीजे अलाउद्दीन ने भिलसा एवं देवगिरी (’ाासक रामचंद्र देव) का सफल अभियान किया।

अपने भतीजे अलाउद्दीन की सफलता से खु’ा होकर जब जलालुद्दीन उससे मिलने कड़ा–भानिकपुर की ओर चला तो रास्ते में ही स्वागत के दौरान उसकी हत्या कर दी गई। इस प्रकार अलाउद्दीन ने अपने उदार चाचा की हत्या कर 1296 ई. में दिल्ली की गद्दी पर अपना राज्यभिषेक करवाया।

- vykmíhu f[kyth **(Alauddin Khilji)** ¼1296&416 b-½

जलालुद्दीन खिलजी का भतीजा, अलाउद्दीन खिलजी के बचपन का नाम 'अली' तथा 'गुर''ाास्प' था। अलाउद्दीन के पिता की मृत्यु के बाद जलालुद्दीन ने उसका पालन–पोषण किया और बाद में उसे अपना दामाद बनाया। जलालुद्दीन के सुल्तान बनते ही उसे 'अमीर–ए–तुजुक' का पद मिला तथा इलाहाबाद (वर्तमान प्रयागराज) स्थित कड़ा–मानिकपुर की जागीर भी प्रदान की। प्रारंभ से महत्वाकांक्षी अलाउद्दीन ने जैसे ही मौका मिला कड़ा मानिकपुर में अपने चाचा जलालुद्दीन की हत्या कर अपने आप को सुल्तान घोषित कर दिया। इस प्रकार अलाउद्दीन 1296 ई. में दिल्ली का सुलतान बना। उसने 416 ई. तक राज किया। अलाउद्दीन ने 'सिकन्दर–ए–सानी' या 'सिकन्दर द्वितीय सानी' की उपाधि धारण की।

जलालुद्दीन की हत्या के प''चात् उसकी पत्नी मलिका–ए–जहाँ ने अपने छोटे पुत्र कद्र खाँ को रूक्नुद्दीन इब्राहिम के नाम से सिंहासन पर बैठा दिया अपने बड़े पुत्र अर्कली खाँ को मुल्तान से बुलाया। लेकिन अलाउद्दीन खिलजी के कूटनीति एवं पराक्रम के सामने इन दोनों की कुछ भी न चली। जब दिल्ली में बैठे इब्राहिम ने देखा कि अलाउद्दीन का विरोध असंभव है तो वह अपनी माता के साथ मुल्तान की ओर भाग गया और अंततः कड़ा–मानिकपुर से दिल्ली आकर अलाउद्दीन खिलजी ने अपना राज्यभिषेक करवाया।

इसके दिल्ली सल्तनत पर आसीन होने के बाद सल्तनत का विस्तार हुआ। उसने एक बड़ी सेना का गठन किया और राज्य के विस्तार के लिए कई अभियान शुरू किए।

अपने राज्य विस्तार के अभियान के अंतर्गत उत्तर भारत की विजय के दौरान गुजरात पर आक्रमण (1298–1299 ई.), रणथंभौर पर आक्रमण (401 ई.), चित्तौड़ की विजय (403 ई.), मालवा की विजय (405 ई.), मारवाड़ की विजय (408 ई.), जालौर की विजय (411 ई.) को सफलतापूर्वक पूरा किया।

उत्तर भारत में राज्य विस्तार के साथ ही अलाउद्दीन ने दक्षिण भारत में भी राज्य विस्तार का सफलता पूर्वक अभियान चलाया। इसके दक्षिण भारत के अभियानों का नेतृत्व मनिक काफूर जो उसे गुजरात आक्रमण के दौरान एक हजार दीनार के बदले प्राप्त हुआ था ने किया। इसीलिए मलिक काफूर को 'हजार दीनारी' भी कहा जाता है। उसके दक्षिण अभियान की विस्तृत जानकारी बरनीकृत 'तारीख–ए–फिरोज''ाही' तथा अमीर खु''ारों की रचना खजायन–उल–फुतूह एवं इसामी की रचना '' फुतूह–उस–सलातीन से मिलती है। इन विवरणों से पता चलता है कि दक्षिण भारत में राज्य विस्तार के अभियान में अलाउद्दीन खिलजी ने देवगिरी का आक्रमण (407–408 ई.), तेलंगाना (वारंगल) की विजय (409–410 ई.) , पांड्य राज्य की विजय (411ई.), देवगिरी पर पुनः आक्रमण (44 ई.) के अभियान को सफलतापूर्वक चलाया। अपने कूटनीति का परिचय देते हुए अलाउद्दीन खिलजी ने उत्तर भारत के विपरीत दक्षिण भारत में विजित क्षेत्रों के साथ अप्रत्यक्ष शासन की नीति को अपनाया, क्योंकि प्रत्यक्ष साम्राज्य अलाउद्दीन खिलजी ने मंगोल आक्रमण का भी सफलतापूर्वक सामना किया। विस्तार से साम्राज्य का स्थायित्व प्रभावित होता। एक प्र''ाासक के तौर पर अलाउद्दीन खिलजी मध्यकालीन भारतीय इतिहास में महत्वूपर्ण स्थान रखता है। अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली का ऐसा पहला सुल्तान था जिसने उलेमा वर्ग की उपेक्षा करते हुए धर्म पर राज्य का नियंत्रण स्थापित किया। उसने अपने आपको 'यामिन–उल–खिलाफत ना सिरी अमीर–उल–मुमनिन' कहा। वह निरंकु''ाता में वि''वास करता था। उसने अपने

विरोधियों का निर्ममतापूर्वक दमन करके सारी सत्ता अपने हाथ में केंद्रित कर ली थी। सुल्तान ने अपनी सहायता के लिये एक मंत्रिपरिषद नियुक्त की, किंतु उन्हें केवल सुल्तान की आज्ञा का पालन करना पड़ता था।

अलाउद्दीन खिलजी ने अमीरों का दमन कर साधारण लोगों को उच्च पदों पर नियुक्त किया। उसके काल में दंड विधान अत्यधिक कठोर थे। राज्य की सर्वोच्च न्यायिक शक्ति सुल्तान में निहित थी।

सैन्य सुधार के अंतर्गत अलाउद्दीन पहला ऐसा सुल्तान था जिसने स्थायी सेना की व्यवस्था की, जो हमे''ाा राजधानी में तैनात रहती थी। सैनिकों को पूर्व से चली आ रही जागीर देने की प्रथा को समाप्त करके उसके स्थान पर नकद वेतन देने की प्रथा को आरंभ किया। सैनिकों का हुलिया लिखना व घोड़ों को दागने की प्रथा को भी अलाउद्दीन खिलजी ने ही आरंभ किया। अलाउद्दीन खिलजी ने व्यक्तिगत संपत्ति तथा जागीरों की जब्ती के द्वारा अमीरों पर नियंत्रण स्थापित किया। अमीरों के विभिन्न उत्सवों पर मिलने–जुलने पर भी प्रतिबंध लगा दिया।

अलाउद्दीन की आर्थिक सुधार के अंतर्गत सबसे महत्वूपर्ण सुधार भूमि की माप करवाना व बाजार नियंत्रण की नीति को माना जाता है। अलाउद्दीन खिलजी को 'सार्वजनिक वितरण प्रणाली ' का आरंभ करने वाला के रूप में भी जाना जाता है।

वि''ााल साम्राज्य को चलाने के लिए अलाउद्दीन खिलजी ने पर्याप्त राजस्व एवं कर व्यवस्था को भी अपने राज्य में स्थापित किया। अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल का मूल्यांकन करते हुए एलफिंस्टन ने कहा – '' उसका शासन गौरवपूर्ण था। अनेक मूर्खतापूर्ण एवं क्रूर नियमों के बावजूद भी वह सफल शासक था, उसने अपनी शक्ति का उचित रूप से किया।''

- vykmíhu f[kyth dk mÙkjkf/kdkjh **(Alauddin Khilji's successor)**

अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु (416 ई.) के बाद इसके उत्तराधिकारी क्रम''ाः ि''ाहाबुद्दीन उमर, कुतुबुद्दीन मुबारक''ााह खिलजी तथा नासिरूद्दीन खुसरों शाह जैसे अयोग्य शासक सत्ता पर बैठे।

ि''ाहाबुद्दीन उमर (416 ई.) जो 5–6 वर्ष का ही था को नाम मात्र का सुल्तान बनाकर उसके संरक्षक के रूप में मलिक काफूर ने सारा अधिकार अपने हाथों में कर लिया। इसके नाममात्र के शासन के कुछ ही दिन बाद (लगभग 35 दिन) मलिक काफूर की हत्या अलाउद्दीन के तीसरे पुत्र मुबारक खिलजी ने करवा दी। मलिक काफूर की हत्या के बाद वह स्वयं सुल्तान का संरक्षक बन गया और कालांतर में उसने ि''ाहाबुद्दीन को अंधा करा के कैद करवा दिया और सत्ता हथिया ली।

ि''ाहाबुद्दीन उमर के बाद कुतुबद्दीन मुबारक''ााह खिलजी (416–420 ई.) पहला शासक था जिसने अपने आपको 'खलीफा' घोषित किया। 417–418 ई. में देवगिरि की पुनर्विजय उसकी एक बड़ी उपलब्धि थी। बाद के दिनों में वह विलासी प्रवृति का हो गया और दरबार में भी स्त्रियों की पो''ााकें धारण करने लगा। उसकी इस कमजोरी का फायदा उठाते हुये उसके वजीर खु''ाखवाह ने 15 अप्रैल, 420 ई. को उसकी हत्या कर स्वयं दिल्ली की गद्दी को हथिया लिया।

नासिरूद्दीन खुसरव’’ाह 15 अप्रैल, 420 को दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। उसने अपने नाम से खुतबे पढ़ाये और साथ ही ‘पैगम्बर के सेनापति’ की उपाधि धारण की। लगभग साढ़े चार माह के शासन के उपरांत 5 सितंबर, 420 को गाजी मलिक जिसने अलाउद्दीन खिलजी के काल में मंगोल आक्रमण को विफल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी एवं खसरव के मध्य युद्ध हुआ जिसमें खु’’रवाह पराजित हुआ। इस प्रकार खिलजी वं’’ा का अंत हो गया और गाजी मलिक गयासुद्दीन तुगलक नाम से गद्दी पर बैठा तथा एक नवीन वं’’ा तुगलक वं’’ा आरंभ हो गया।

13-3-3 rqxydo”kdkyhu fnYyh lYrur (Delhi Sultanate during Tughlaq) ¼&

दिल्ली सल्तनत पर सबसे अधिक समय तक 94 वर्षों तक तुगलक वं’’ा का शासन रहा। यह वं’’ा 420 ई. से 1414 ई. तक राज किया। इस दौरान इस वं’’ा के संस्थापक गयासुद्दीन तुगलक से लेकर अंतिम शासक नासिरूद्दीन महमूद तक कुल 8 शासकों ने राज किया। इसका वर्णन निम्न प्रकार है –

- Xk;klqíhu rqxyd **(Gayasudin Tughlaq)** ¼420&425 bZ-½

अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में सैन्य अभियानों का अध्यक्ष तथा दीपालपुर का राज्यपाल रहे गाजी मलिक ने 420 ई. में तुगलक वं’’ा की स्थापना की। इसने गयासुद्दीन तुगलक की उपाधि धारण की। इसका जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था। उसकी माता पंजाब की एक जाट महिला थी तथा पिता बलबन का तुर्की दास था। इसके काल में सबसे अधिक 29 बार मंगोलों के आक्रमण हुये। मंगोलों को हराने के कारण गयासुद्दीन तुगलक ‘मलिक–उल–गाजी’ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसने अलाउद्दीन खिलजी की कठोरता की नीति के स्थान पर संयम, सख्ती एवं नर्मी के मध्य संतुलन को शासन का आधार बनाया। गयासुद्दीन ने अमीरों की भूमि पुनः लौटा दी जिसे अलाउद्दीन खिलजी ने जब्त कर लिया था। इसने अमीरों एवं उलेमाओं के साथ अलाउद्दीन की कठोरता के स्थान पर नर्मी बरती। इस कारण इसके काल में सामंतों और उलेमाओं की शक्ति में वृद्धि हुई तथा निरंकु’’ा राजतंत्र की परंपरा दुर्बल हुई। गयासुद्दीन तुगलक ने दिल्ली सल्तनत राज्य के विस्तार के लिए कई प्रयास किए। उसकी महत्वपूर्ण विजय थी – वारंगल व तेलंगााना की विजय (421–423 ई.), उडीसा की विजय (424 ई.), बंगाल की विजय (424 ई.), तिरहुती विजय (424ई.), मंगोल विजय (424 ई.) आदि। गयासुद्दीन ने अपने शासन काल में कृषि को प्रोत्साहना देने के लिए किसानों के हितों की रक्षा करने की नीति का पालन किया। दिल्ली सल्तनत में सिंचाई के लिए नहरों का निर्माण करवाने वाला वह पहला सुल्तान था। उसने लगान के रूप में 1/10 या 1/12 भाग ही लेने का आदे’’ा जारी कराया। अकाल की स्थिति में भूमि कर को माफ करने का नियम बनाया।

अलाउद्दीन खिलजी काल के सैनिक व्यवस्था को कु’’ालतापूर्वक बनाए रखा। जन कल्याणकारी कार्य के अंतर्गत गयासुद्दीन की डाक व्यवस्था उत्कृष्ट थी और शीघ्र डाक पहुँचाने के लिए उसने घुड़सवार नियुक्त किये। प्र’’ाासन में नैतिक नियमों व ि’’ाष्टाचारों के पालन के लिए ‘मुहतसिब’ नामक अधिकारी नियुक्त किया। अपने शासनकाल में शराब उत्पादन एवं बिक्री पर इसने पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया।

परंतु अलाउद्दीन खिलजी की तरह हिन्दुओं के प्रति गयासुद्दीन की नीति कठोर थी। स्थापत्य कला के क्षेत्र में इसने तुगलकबाद नामक नगर बसाया। वास्तुकला की तुगलक शैली का प्रारंभ इसके मकबरे के निर्माण से

हुआ। सूफी संत निजामुद्दीन औलिया के साथ विवाद के कारण भी गयासुद्दीन तुगलक प्रसिद्ध रहा। सूफी संत निजामुद्दीन औलिया ने गयासुद्दीन के बारे में ही कहा था – 'दिल्ली अभी दूर है' (हूनूज दिल्ली दूरस्थ)। 425 ई. में बंगाल अभियान से वापस लौटते समय गयासुद्दीन के स्वागत में दिल्ली के समीप अफगानपुर में उसके पुत्र जौना खाँ द्वारा स्वागत के लिए निर्मित लकड़ी के भवन में दबकर उसकी मृत्यु हो गई। इसके बाद उसका पुत्र जौना खाँ मुहम्मद बिन तुगलक के नाम से दिल्ली की गद्दी पर बैठा।

- egEen fcu r|xyd **(Muhammad Bin Tughlaq)** ¼425&451 bZ-½

गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु के बाद उसका पुत्र जौना या जूना खाँ 'मुहम्मद बिन तुगलक' के नाम से दिल्ली सल्तनत का शासक बना। दिल्ली सल्तनत के अंतर्गत विरोधी तत्वों के मिश्रण वाला सुल्तान के रूप में उसकी प्रसिद्धी रही है। मुहम्द बिन तुगलक को शिक्षित, दार्शनिक, धर्मनिरपेक्ष, बुद्धि सम्पन्न, कला प्रेमी एवं अनुभवी सेनापति किन्तु पागल व सनक भरे निर्णयों एवं कार्यों के लिए जाना जाता है। दिल्ली सल्तनत का सर्वाधिक विस्तार इसी के शासनकाल में हुआ। इसका मूल नाम 'उलूग खाँ' था। मुहम्मद बिन तुगलक के समय में जियाउद्दीन बरनी द्वारा लिखी पुस्तक 'तारीख–ए–फिरोजशाही' और मोरक्को यात्री इब्नबतूता के यात्रा वृतांतों से इसके शासनकाल के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। इब्नबतूता ने मुहम्मद–बिन–तुगलक के समय की घटनाओं को अपनी पुस्तक 'किताब–उल–रेहला' में वर्णन किया।

इब्नबतूता के विवरण से पता चलता है कि मुहम्मद बिन तुगलक के गद्दी पर बैठते समय सल्तनत 23 प्रांतों में बटाँ हुआ था। कश्मीर एवं आधुनिक बलूचिस्तान को छोड़कर लगभग सारा हिंदुस्तान दिल्ली सल्तनत के अधिकार में था।

शासक बनने के बाद मुहम्मद बिन तुगलक ने कुछ नवीन योजनाओं को बनाने व उन्हें क्रियान्वित करने का प्रयास किया किन्तु पूर्व परिस्थितयों का गलत आकलन तथा वस्तुस्थिति की समझ का अभाव के कारण वह इसमें असफल रहा। इतिहासकार बरनी सुल्तान की ऐसे पाँच प्रमुख शासन संबंधी योजनाओं का वर्णन करता है।

ये योजनायें थी – दोआब में कर वृद्धि (425 ई.), राजधानी परिवर्तन (426–427 ई.), सांकेतिक मुद्रा जारी करना (429–430 ई.) खुरासान एवं कराचिल।

दोआब में कर वृद्धि के दौरान ही अकाल पड़ने के कारण अत्यधिक उपजाऊ वाले इस क्षेत्र के किसानों में कर अदा करने की क्षमता नही रही। परंतु इस विपरीत परिस्थति में कर वसूलने में कठोरता बरती गई जिससे यह योजना असफल रही।

सुल्तान का राजधानी परविर्तन की योजना को व्यावहारिक रूप देने का तरीका गलत था जिससे इसका लोगों पर विपरीत प्रभाव पड़ा। मुद्रा के प्रचलन पर नियंत्रण का अभाव के कारण सांकेतिक मुद्रा जारी करने की योजना भी विफल रही है। खरासान पर आक्रमण तथा कराचिल का सैनिक अभियान परिस्थितियों का आंकलन कर पूर्व योजना नहीं बनाने के कारण राज्य को इससे बहुत बड़ी हानि हुई।

इन अभियानों के अलावा मुहम्मद बिन तुगलक के अन्य कार्यों में सबसे महत्वपूर्ण कृषकों की सहायता के लिए अलग से 'दीवान–ए–कोही' नाम से कृषि विभाग की स्थापना करना है। उसने अकाल राहत संहिता बनवाये।

सिंचाई के लिए इंतजाम किये। कृषि ऋण 'तकावी' की व्यवस्था की। कुएँ खोदने एवं बीज व हल खरीदने के लिए कृषि ऋण 'सोनधर' प्रदान किया।

मुहम्मद बिन तुगलक ने अपने शासनकाल में मिस्त्र (Egypt) के अब्बासी खलीफा से स्वीकृति–पत्र प्राप्त किया तथा सिक्कों पर उसके नाम अंकित करवाये।

जनता को राहत देने के लिए सुल्तान ने 'उश्र' तथा 'जकात' को छोड़कर शेष कर समाप्त कर दिये।

मुहम्मद बिन तुगलक का मूल्यांकन करते हुए अधिकां"ा इतिहासकार इस बात पर सहमत है कि एक शासक के रूप में वह पूर्णतः असफल रहा। जब वह गद्दी पर बैठा तब साम्राज्य में लगभग समस्त उत्तर तथा दक्षिण भारत सम्मिलत था किंतु उसने अपने अदूरद"िता पूर्ण तथा अलोकप्रिय नीति के द्वारा क्षेत्रीय शासकों को विद्रोह के लिए मजबूर कर दिया। इसके काल में सर्वाधिक 22 विद्रोह हुए और सल्तनत का विघटन होने लगा तथा उत्तर व दक्षिण में स्वतंत्र मजबूत राज्य उभर कर आये। इस प्रकार उसके अंतिम समय तक वि"ााल दिल्ली सल्तनत दिल्ली तक सिमट कर रह गया।

451ई. में एक विद्रोह को दबाने हेतु थट्टा (सिंध) की यात्रा के द्वौरान वह बीमार पड़ गया और अंततः मार्च 451 ई. में उसकी मृत्यु हो गई। इसके बाद उसका चचेरा भाई फिरोज"ाह तुगलक दिल्ली का शासक बना।

- fQjkt "kkg rqxyd **(Firoz Shah Tughlaq)** ¼451&488 b-½

फिरोज"ाह तुगलक मुहम्मद तुगलक का चचेरा भाई एवं सिपहसालार रजब का पुत्र था। उसकी माँ 'बीबी जैला' राजपूत सरदार रणमल की पुत्री थी। मुहम्मद बिन तुगलक की थट्टा (सिंध) अभियान के दौरान 451 ई. में मृत्यु के बाद वहीं थट्टा के नजदीक इसका राज्याभिषेक हुआ। दिल्ली आने पर 451 ई. में ही फिरोज का पुनः राज्याभिषेक हुआ।

सुल्तान बनते ही इसने साम्राज्य विस्तार की नीति को छोड़कर मात्र साम्राज्य को बचाने रखने के दृष्टिकोण से सैनिक अभियान आरंभ किया।

अपने इस सैनिक अभियान के अंतर्गत इसने 453–455 ई. के बीच बंगाल के शासक शम्सुद्दीन इलियास व इसके पुत्र सिंकदर"ाह के खिलाफ दो बार अभियान किया किंतु दोनों बार असफल रहा।

460 ई. में फिरोज"ाह ने जाजनगर (उड़ीसा) के शासन के विरूद्ध आक्रमण किया और जगन्नाथ मंदिर को नष्ट कर दिया। इस अभियान में उसने काफी धन लूटा किंतु उड़ीसा को सल्तनत में मिलाने में असफल रहा।

461 ई. में फिरोज"ाह ने कांगड़ा (हिमाचल प्रदे"ा) का सफल अभियान किया। इस अभियान में उसने नगरकोट के शासक को परास्त कर प्रसिद्ध ज्वालामुखी मंदिर को ध्वस्त कर दिया। 462–464 ई. के दौरान इसका अंतिम सैनिक अभियान थट्टा (सिंध) के खिलाफ था जो सफल रहा। उसने सिंध को अपने अधीनता स्वीकार करवाई तथा कर देने को मजबूर किया। फिरोज"ाह तुगलक का शासनकाल अमीरों, सेना और उलेमाओं के प्रति तुष्टीकरण की नीति के रूप में जाना जाता है। उसने अपनी सत्ता को उन्हीं प्रदे"ाों में कायम रखने की

कोि''ा की जिन पर केन्द्र से नियंत्रण आसानी पूर्वक किया जा सके। इस नीति के तहत उसने दक्षिण भारत और दक्कन पर फिर से अधिकार स्थापित करने का प्रयास नहीं किया।

राजस्व संबंधी सुधारों के अंतर्गत फिरोज ने जनता को राहत देते हुए पहले से चले आ रहे 24 कष्टदायक करों के स्थान पर सिर्फ 4 कर खराज (लगान), खुम्स (युद्ध में लूट का माल), जजिया (गैर मुस्लिमों पर) एवं जकात (मुस्लिम धार्मिक कर) वसूलने का आदे''ा दिया।

खेती के लिए सिंचाई का उचित प्रबंध किया। सबसे अधिक नहरों के निर्माण करने वाला सुल्तान के रूप में भी फिरोज को जाना जाता है। उसने एक नया कर सिंचाई कर भी लगाया जो उपज का 1/10 भाग होता था। इसके काल में लगान उपज का 1/5 भाग से 1/3 भाग होता था। उसने लगभग 1200 फलों के बाग लगवाये। जिससे राज्य को अतिरिक्त आय प्राप्त होती थी। राजपरिवार के उपयोग में आने वाली आव''यक वस्तुओं तथा विलासिता की वस्तुओं के उत्पादन के लिए राज्य के नियंत्रण पर चलने वाले 36 शाही कारखानों की स्थापना करवाई।

नगर एवं सार्वजनिक निर्माण कार्यों के अंतर्गत सुल्तान ने लगभग 300 नये नगरों की स्थापना की जिनमें हिसार, फिरोजाबाद (दिल्ली), फतेहाबाद, जौनपुर, फिरोजपुर आदि प्रमुख है। जौनपुर नगर जो सुल्तान को सबसे अधिक प्रिय था की स्थापना मुहम्मद बिन तुगलक की स्मृति में की थी। इसके शासनकाल में ही अ''ोक दो स्तंभों को मेरठ एवं टोपरा से लाकर दिल्ली में स्थापित किया गया।

अपने कल्याणकारी कार्यों के अंतर्गत फिरोज ने एक रोजगार का दफ्तर एवं मुस्लिम अनाथ स्त्रियों, विधवाओं एवं लड़कियों की सहायता हेतु एक नये दीवान–ए–खैरात नामक विभाग की स्थापना की थी। इसके काल में दासों की संख्या सर्वाधिक 1,80,000 तक पहुँच गई थी जिनके देखभाल के लिए सुल्तान ने 'दीवान–ए–बंदगान' एक विभाग की अलग से स्थापना की। उसने सैन्य पदों को वं''ानुगत बनाते हुए पुनः जागीर के रूप में वेतन देने की व्यवस्था की जिसका सैनिक व्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ा।

इस्लामी नियमों का कड़ाई से पालन करते हुए उलेमा वर्ग को राज्य में महत्व देने वाला फिरोज''ाह कट्टर सुन्नी मुसलमान था। इस्लाम न स्वीकार करने वाले हिन्दुओं को 'जिम्मी' कहा। फिरोज दिल्ली सल्तनत का प्रथम सुल्तान था जिसने ब्राहमणों से भी जजिया कर लिया। वह पहला शासक था जिसने राज्य की खर्च पर हज की व्यवस्था की थी।

ि''ाक्षा के प्रचार–प्रसार हेतु अनेक मकतबों एवं मदरसों का निर्माण करवाया तथा अपने राज्य में विद्वानों को सरंक्षण प्रदान किया। उसने जियाउद्दीन बरनी एवं शम्स–ए–सिराज अफीफ को अपना संरक्षण प्रदान किया। बरनी ने 'फतवा–ए–जहाँदारी' एवं 'तारीख–ए–फिरोज''ाही' की रचना की।

फिरोज''ाह ने अपनी आत्मकथा फुतूहात–ए–फिरोज''ाही' नाम से लिखी थी। फिरोज ने ज्वालामुखी मंदिर के पुस्तकालय से लूटे गये 400 ग्रंथों में से कुछ का फारसी में विद्वान अपाउद्दीन द्वारा 'दलाचले फिरोज''ाही' नाम से अनुवाद कराया जो आयुर्वेद से संबंधित ग्रंथ था।

इसके शासनकाल में तांबे व चाँदी मिश्रित सिक्के चलाये गये जिन्हे 'अद्धा' एवं 'बिरव' कहा जाता था। फिरोज तुगलक ने शसगानी (6जीतल का) नाम से नया सिक्का भी अपने शासनकाल में जारी किया था। 488 ई. में इसकी मृत्यु हो गई।

- **fQjkst”kkg rqxyd ds mÙkjkf/kdkjh (Successors of Firoz Shah Tughlaq) ¼451&488 bZ-½**

फिरोज”ााह तुगलक की 488 ई. में मृत्यु के बाद यह वं”ा जैसे–तैसे 144–1414 ई. तक चला। इसके बाद के शासक अयोग्य साबित हुए जिनका शासनकाल का निम्न प्रकार रहा –

- गयासुद्दीन तुगलक द्वितीय (तुगलक”ााह) – (488–489 ई.)
- अबूबक्र – (फरवरी,489 से अगस्त, 490 ई.)
- नासिरूद्दीन मुहम्मद”ााह – (490–494 ई.)
- अलाउद्दीन सिकन्दर”ााह (हुमायूँ) – (494 ई.)
- नासिरूद्दीन महमूद – (494–1412 ई.)

इस वं”ा के अंतिम शासक नासिरूद्दीन महमूद के काल में 498–499 ई. में समरकंद के शासक तैमुर लंग का दिल्ली पर आक्रमण हुआ। उसने दिल्ली में खूब लूट–पाट मचायी तथा साम्राज्य को तबाह कर दिया। सुल्तान को दिल्ली छोड़कर भागने के लिए मजबूर कर दिया। 1405 ई. में तैमुर की मृत्यु के बाद वह दिल्ली लौट सका।

नासिरूद्दीन महमूद के समय तक दिल्ली सल्तनत से दक्षिण भारत, बंगाल, खानदे”ा, गुजरात, मालवा, राजस्थान, बुदेलखंड आदि प्रान्त स्वतंत्र हो गये थे।

1412 ई. में नासिरूद्दीन महमूद”ााह की मृत्यु के बाद 144 ई. में दौलत खाँ एवं खिज्र खाँ के बीच सत्ता को लेकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में खिज्र खाँ ने दौलत खाँ को हराकर दिल्ली पर एक नये राजवं”ा सैयद वं”ा की स्थापना की।

4-3-3-½ fnYyh lYrur ds detksj o”k½ l\;n ,oa yksnh o”k (Weak dynasty of Delhi Sultanate : Sayyid and Lodhi)

तुगलक वं”ा के बाद जिन दो राजवं”ाों – सैय्यद एवं लोदी ने राज किया ये कमजोर साबित हुये। इस दौरान न तो खिलजी काल की तरह विस्तार के क्षेत्र में कोई कार्य हुआ और न ही तुगलक काल की तरह कोई प्र”ाासनिक सुधार। जैसे–तैसे इन दोनों वं”ाों ने दिल्ली पर शासन किया और अंततः 1526 ई. में बाबर ने दिल्ली सल्तनत को समाप्त कर दिया। इस शीर्षक के अंतर्गत हम इन्हीं दोनों वं”ाों का अध्ययन करेंगे।

- **l\;\;n o”k (Sayyid dynasty) ½&**

सैय्यद वं”ा का संस्थापक खिज्र खाँ था। यह वं”ा 1414 से 1450 ई. तक दिल्ली सल्तनत पर राज किया। इस वं”ा में 37 वर्ष के शासनकाल में कुल चार शासक हुए जिनका वर्णन निम्न प्रकार है –

- **f[kt: [kka (Khizr Khan) ¼1414&1421 bZ-½ ½&**

सैय्यद वं”ा का संस्थापक खिज्र खाँ 1414 ई. में दिल्ली की गद्दी पर बैठा। दिल्ली की गद्दी पर बैठते ही उसने अपने आपको सुल्तान की उपाधि के स्थान पर ‘रैयत–ए–आला’ की उपाधि से ही खु”ा रखा। तैमूर जिस समय भारत से वापस जा रहा था, उसने खिज्र खाँ को मुल्तान, लाहौर एवं दीपालपुर का शासक नियुक्त कर दिया था। अतः खिज्र खाँ अपने को तैमूर के लड़के शाहरूख का प्रतिनिधि मानते हुये उसे नियमित कर भेजा करता था। उसने अपने सिक्कों पर तैमूर तथा उसके पुत्र शाहरूख मिर्जा का नाम अंकित करवाया। इसका शासनकाल क्षेत्रीय राजवं”ाों का उदय और चुनौतियों में ही बीत गया। इतिहासकार फरि”ता ने खिज्र खाँ को एक न्यायप्रिय व उदार शासक बताया। सात वर्ष के शासन के बाद 1421 ई. में खिज्र खाँ की मृत्यु हो गई।

- **मुबारक भााह (Mubarak Shah)** ¼1421&1434 b-½

खिज्र खाँ की मृत्यु के बाद उसका पुत्र मुबारक शाह दिल्ली की गद्दी पर बैठा। उसने ‘”ााह’ की उपाधि ग्रहण कर अपने नाम के सिक्के जारी किये। इसने अपने नाम से खुत्बा पढ़वाया। अपने शासनकाल में मुबारक शाह ने भटिण्डा एवं दोआब में हुए विद्रोह को सफलतापूर्वक दबाया परंतु खोक्खर जाति के नेता जसरथ द्वारा किये गये विद्रोह को दबाने में असफल रहा। अपने पिता की भांति इसे भी राजस्व वसूलने के लिए सैनिक अभियान का सहारा लेना पड़ता था। यमुना नदी के किनारे मुबारकाबाद की स्थापना मुबारक”ााह ने की थी। उसने ‘तारीख–ए–मुबारक”ााही’ के लेखक ‘याहिया बिन अहमद सरहिंदी’ को सरंक्षण प्रदान किया। 1434 ई. में ‘ाड्यंत्र द्वारा उसके वजीर ने उसकी हत्या कर दी।

- e|gEen”kkg **(Muhammadshah)** ¼1434&1445 b-½

मुबारक”ााह की मृत्यु के बाद उसका भतीजा मुहम्मद”ााह के नाम से गद्दी पर बैठा। उसके काल में सत्ता की वास्तविक शक्ति उसके वजीर सरवर–उल–मुल्क के पास ही थी। अपने वजीर सरवर–उल–मुल्क की बढ़ती महत्वाकांक्षा को देखते हुए सुल्तान ने अमीरों की सहायता से उसकी हत्या करवा दी। इसके शासनकाल में मालवा के शासक महमूद द्वारा दिल्ली पर आक्रमण किया गया जिसे सुल्ताने ने मुल्तान के सुबेदार बहलोल की सहायता से विफल कर दिया। मुहम्मद”ााह ने मालवा की जीत की खु”ाी में बहलोल को ‘खान–ए–खाना’ की उपाधि दी और साथ ही उसे अपना पुत्र कहकर पुकारा। अपने अन्तिम समय में हुए विद्रोह को दबाने में वह असमर्थ रहा। अतः अधिकां”ा राज्यों ने अपने को स्वतंत्र घोषित कर लिया।

1445 ई. में इसकी मृत्यु के साथ ही सैय्यद वं”ा पतन की ओर अग्रसर हो गया।

- vykmíhu vkye”kkg **(Alauddin AlamShah)** ¼1445&1451 b-½

मुहम्मद”ााह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र अलाउद्दीन आलम”ााह की उपाधि के साथ दिल्ली की गद्दी पर बैठा। वह आरामपंसद एवं विलासी प्रवृत्ति का था। उसका अपने वजीर हम्मीर खाँ से विवाद होने के कारण वह दिल्ली छोड़कर बदायूँ चला गया और अपनी मृत्यु के समय 1476 तक वहीं रहा। आलम”ााह के चले जाने के बाद सत्ता संघर्ष की स्थिति में बहलोल लोदी को आमंत्रित किया। बहलोल लोदी ने दिल्ली आने के कुछ दिन बाद हमीद खाँ की हत्या कर दिल्ली की सत्ता को अपने कब्जे में कर लिया। इस प्रकार सैय्यद वं”ा के अंतिम शासक आलम”ााह के वजीर हमीर खाँ की हत्या के बाद अंततः 451 ई. में बहलोल लोदी ने एक नवीन वं”ा लोदी वं”ा की स्थापना की।

- yknh o”k **(Lodhi Dyanasty)** ¼1451&1526 b-½

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में सल्तनत युग में दिल्ली की गद्दी पर राज्य करने वाले 5 राजवं'ाों में लोदी वं'ा अंतिम था।

दिल्ली सल्तनत पर शासन करने वाले पूर्व के 4 राजवं'ा तुर्क थे परन्तु अंतिम लोदी वं'ा वाले अफगान थे। इस प्रकार दिल्ली सल्तनत पर प्रथम अफगान वं'ा लोदी वं'ा की नींव बहलोल लोदी के द्वारा रखी गई इस वं'ा के कुल तीन शासक निम्न हुए।

- बहलोल लोदी (1451 – 1489 ई.)
- सिकंदर लोदी (1489 – 1517 ई.)
- इब्राहिम लोदी (1517 – 1526 ई.)
- cgyky yknh **(Bahlol Lodhi)** ¼1451&1489 bZ-½

बहलोल लोदी दिल्ली में प्रथम अफगान राज्य का संस्थापक था। उसका संबंध अफगानिस्तान के 'गिलजाई कबीले' की महत्वूपर्ण शाखा ' शाहूखेल' से था। 1451 ई. में वह 'बहलोल शाह गाजी' की उपाधि से दिल्ली की गद्दी पर आसीन हुआ। गद्दी पर बैठने के बाद बहलोल लोदी ने सम्भल, कोल, इटावा, रपरी, भोगाँव एवं मेवात पर सफल आक्रमण किया। जौनपुर राज्य को दिल्ली में एक बार फिर शामिल करना उसकी सबसे महत्वपूर्ण सफलता थी। ग्वालियर के मानसिंह के विरूद्ध किया गया अभियान उसका अंतिम अभियान था जिसमें उसे मानसिंह के द्वारा 80 लाख टंके प्राप्त हुये। इसी अभियान से वापस लोटते समय जलाली के समीप उसकी मृत्यु हो गई। वह अपने सरदारों को मसनद–ए–अली कह कर पुकारता था। वह अपने सरदारों के खड़े रहने पर खुद भी खड़ा रहता था। बहलोल लोदी ने 'बहलोली' सिक्के का प्रचलन करवाया।

- fldanj yknh **(Sikandar Lodhi)** ¼1489&1517 bZ-½

बहलोल लोदी की मृत्यु के बाद उसका पुत्र निजाम खाँ 1489 ई. में सुल्तान सिकन्दर शाह की उपाधि से दिल्ली की गद्दी पर बैठा। वह स्वर्णकार हिन्दू माँ की संतान था। गद्दी पर बैठते ही उसने अपनी कु'ालता, कर्मठता व योग्यता का परिचय देते हुए राज्य में फैली अराजकता को दूर करने के लिए वि'ोष प्रयास किए। प्रांतीय शासकों, जमींदारों तथा सरदारों का उसने सख्ती के साथ दमन किया। अपने शासन के दौरान उसने बंगाल के साथ–साथ धौलपुर और चंदेरी की सीमा तक दिल्ली सल्तनत का विस्तार किया। 1504 ई. में उसने आगरा नगर की नींव डाली। सिकंदर लोदी ने कृषि और व्यापार के विकास के लिये प्रयास किये। भूमि माप के लिए उसने एक प्रमाणिक पैमाना 'गजेसिकन्दरी' का प्रचलन करवाया। उसके काल में सभी आव'यक वस्तुओं की कीमत कम कर दी गई।

धार्मिक दृष्टि से सिकंदर लोदी असहिष्णु था। उसने हिन्दू मंदिरों को तोड़कर वहाँ पर मस्जिद का निर्माण करवाया। उसने हिन्दूओं पर पुनः जजिया कर लगा दिया।

मुसलमानों को ताजिया निकालने एवं मुसलमान स्त्रियों के पीर एवं सन्तों के मजार पर जाने पर प्रतिबंध लगा दिया।

इतिहासकार सिकंदर लोदी को लोदी वं"ा का सर्वाधिक सफल शासक मानते हैं। वह विद्या का पोषक था। वह स्वयं फारसी भाषा का जानकार था तथा 'गुलरूरकी' उपनाम से फारसी में कविताएँ लिखता था। उसने संगीत के एक ग्रंथ 'लज्जत–ए–सिकंदर"ाही' की भी रचना की। उसके आदे"ा पर संस्कृत के एक आयुर्वेद ग्रंथ का फारसी में फरहंगे सिकंदरी' के नाम से अनुवाद हुआ। उसने आगरा को अपनी नई राजधानी बनाया। सिकंदर लोदी की मृत्यु 1517 ई. में गले की बीमारी के कारण हुई।

- bckfge yksnh **(Ibrahim Lodhi)** ¼1517&1526 bZ-½

सिकंदर लोदी की मृत्यु के बाद अमीरों ने आम सहमति से उसके पुत्र इब्राहिम को 1517 ई. में इब्राहिम शाह की उपाधि से आगरा की गद्दी पर बैठाया। यह दिल्ली के लोदी वं"ा का तीसरा और अंतिम शासक था। अपने शासन के शुरूआती दिनों में उसने 1518 ई. में ग्वालियर को दिल्ली सल्तनत में मिला लिया। परन्तु 1517–1518 ई. में ही उसका खतोली के युद्ध में मेवाड़ के शासक राणा सांगा से सामना हुआ, जिसमें इसकी हार हुई। इब्राहिम के भाई जलाल खाँ ने स्वार्थी अफगान सरदारों की सहायता से जौनपुर को जीत कर कालपी में जलालुद्दीन नाम से अपना राज्याभिषेक करवाया था। अतः इब्राहिम का अपने भाई जलाल खाँ के साथ उत्तराधिकार को लेकर संघर्ष हुआ और अंततः इब्राहिम ने जलाल खाँ की हत्या करवा दी। अफगान सरदारों के प्रति इब्राहिम लोदी के दमनकारी नीति से असंतुष्ट सरदारों में पंजाब का शासक दौलत खाँ लोदी एवं इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ ने काबुल के तैमुर वं"ाी शासक बाबर को भारत पर आक्रमण के लिए निमंत्रण दिया। जिसे बाबर ने स्वीकार कर लिया और अंतः 21 अप्रैल, 1526 ई. को इतिहास प्रसिद्ध पानीपत का प्रथम युद्ध बाबर और इब्राहिम लोदी के मध्य पानीपत के मैदान में लड़ा गया। इसमें इब्राहिम लोदी की बुरी तरह से हार हुई और उसकी हत्या कर दी गई। इसकी मृत्यु के साथ ही दिल्ली सल्तनत समाप्त हो गया और भारत में बाबर ने एक नवीन वं"ा मुगल वं"ा की स्थापना की।

4-4-1 fnYyh lyrur dk okLrfod laLFkkid % bYrqrfe"kA **(Real Faunder of delhi sultanate : Ilutmish)**

इल्तुतमि"ा का वास्तविक नाम शम्सउद्दीन था। वह इल्बरी तुर्क था। मुहम्मद गोरी का गुलाम कुतुबद्दीन ऐबक ने उसे गुलाम के रूप में खरीदा था। अतः इसे दास का दास/ गुलाम का गुलाम कहा जाता है। इसकी योग्यता और बुद्धिमता से प्रभावित होकर ऐबक ने अपनी एक पुत्री का विवाह उससे कर दिया तथा उसे बदायुँ का सूबेदार (गर्वनर) नियुक्त कर दिया। ऐबक की मृत्यु के समय वह बदायूँ का ही सूबेदार था। ऐबक की मृत्यु के बाद 1210 ई. में कुछ समय के लिए उसका पुत्र आराम"ाह गद्दी पर बैठा परंतु इल्तुतमि"ा ने अपने पराक्रम व कूटनीति द्वारा दिल्ली के लोगों की सहमति व कुछ सरदारों की सहायता से आराम"ाह को अपदस्त कर सल्तनत का शासक बन गया।

सुल्तान का पद प्राप्त करने के बाद इल्तुतमि"ा को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अपने साहस, पराक्रम व सफल कूटनीति के द्वारा इसने ना केवल इन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की बल्कि शासन को भी सुव्यवस्थित किया। इसके पहले ऐबक और उसका पुत्र आराम"ाह ने लाहौर को अपनी राजधानी बनाकर

शासन किया था। किन्तु इल्तुतमि”ा ने राज्य की राजधानी को लाहौर से दिल्ली लाया। इस कारण इल्तुतमि”ा को दिल्ली का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।

इल्तुतमि”ा द्वारा शासन के समक्ष मौजूद समस्याओं के प्रति उठाये गये कठोर कदमों तथा शासन को व्यवस्थित करने के लिए किय गये कार्यों का वर्णन निम्न प्रकार है।

¼**i**½ fnYYkh d vehjk dk neu **(Suppression of Rich of Delhi)** :– दिल्ली में कुतुबद्दीन के समय के सरदार 'कुत्बी' तथा गोरी के समय के सरदार 'मुइज्जी' कहलाते थे। इन सरदारों ने इल्तुतमी”ा के सुल्तान पद को मान्यता न देते हुए इसके खिलाफ 'ाड्यंत्र करना प्रारंभ कर दिया। अतः इल्तुतमि”ा ने गद्दी पर बैठते ही सर्वप्रथम इन 'ाड्यंत्रकारी अमीरों का दमन किया और सैनिक जागीरदारों को अपने कब्जे में कर लिया।

¼**ii**½ pkyhl vehjk d ny@ pkyhl xqV dk xBu **(Formation/Formed a team of forty of chalisa group rich people)** :– इल्तुतमि”ा ने विद्रोही सरदारों/अमीरों पर वि”वास न करते हुए अपने गुलाम 40 सरदारों का एक गुट/ संगठन बनाया जिसे तुर्कान–ए–चिहालगानी या चालीसा गुट का नाम दिया गया। इस संगठन को 'चरगान' के नाम से भी जानते है। इसमें योग्य, प्रतिभा”ााली और वि”वसनीय सरदारों को शामिल किया गया तथा इन्हें राजत्व का एक अंग बना लिया।

¼**iii**½ ;Ynkt dk neu **(Suppression of Yaldauj)** :– इल्तुतमि”ा का मुख्य प्रतिद्वंद्वी यल्दोज मुहम्मद गोरी के प्रसिद्ध सेनापतियों में से एक था और उसकी मृत्यु के प”चात् गजनी का शासक बन बैठा था। इल्तुतमि”ा ने अपने इस प्रतिद्वंद्वी को 1215 ई. में तराईन के मैदान में युद्ध कर उसे बंदी बना लिया और बाद में उसकी हत्या कर दी।

¼**iv**½ dqckpk dk neu **(Suppression of Kubacha)** :– नासिरूद्दीन कुबाचा, जो कुतुबद्दीन ऐबक का बहनोई था उसने मुल्तान तथा उच्च में अपना स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर लिया था। इल्तुतमि”ा ने यल्दौज का दमन करने के प”चात् अपने इस शत्रु को दबाने के लिए 1217 ई. में एक वि”ााल सेना सहित उस पर आक्रमण कर दिया और उसे पराजित करके अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए विव”ा कर दिया।

¼**v**½ cxky d fonkfg;k dk neu **(Suppression of Bengal Rebels)** :– 1225 ई. में इल्तुतमि”ा ने बंगाल के स्वतंत्र शासक हुसामुद्दीन इवाज के विरूद्ध सफल अभियान किया और इसे अपनी अधीनता स्वीकार करने को विव”ा किया। इल्तुतमि”ा के दिल्ली वापस लौटते ही इवाज ने पुनः विद्रोह कर दिया। इस बार विद्रोह को दबाने के लिए इल्तुतमि”ा के पुत्र नासिरूद्दीन महसूद (अवध का शासक) ने 1226 ई. में उसे पराजित कर बंगाल को सल्तनत में मिला लिया।

¼**vi**½ jktiwrk d izn”kk dh fot; **(Conquest of territories of Rajputs)** :– राज्य के शत्रुओं की समाप्ति के बाद इल्तुतमि”ा ने राजपूतों के प्रदे”ाों पर विजय प्राप्त करने का नि”चय किया। राजपूतों के प्रदे”ाों की विजय अभियान के क्रम में इल्तुतमि”ा ने 1226 ई. में रणथंभौर पर तथा 1227 ई. में परमारों की राजधानी मन्दौर पर अधिकार कर लिया। 1231 ई. में उसने ग्वालियर के किले पर घेरा डालकर वहाँ के शासक मंगलदेव को पराजित किया। 1233 ई. में चंदेलों के विरूद्ध एवं 1234–1235 ई. में उज्जैन एवं भिलसा के विरूद्ध उसका अभियान सफल रहा।

¼**vii**½ eaxksy vkØe.kksa ls lkezkT; dh j{kk **(Protecting the empire from Mongol Invasions)** :– इल्तुतमि’’ा ने अपनी कूटनीति के द्वारा मंगोल नेता चंगेज खाँ के शत्रु जलालजुद्दीन मांगबर्नी को अपने राज्य में शरण न देकर मंगोल आक्रमण की समस्या से साम्राज्य की रक्षा करने में सफल रहा।

¼**viii**½ [kyhQk dk izek.k i= **(Proof of Khalifa)** :– 1229 ई. में इल्तुतमि’’ा को बगदाद के खलीफा से खिलअत (सम्मान सूचक वस्त्र) एवं प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ। प्रमाण पत्र प्राप्त होने के बाद इल्तुतमि’’ा वैद्य सुल्तान एवं दिल्ली सल्तनत एक वैद्य राज्य बन गया। इससे इल्तुतमि’’ा की शक्ति में वृद्धि हुई तथा सुल्तान के पद को वं’’ाानुगत रूप देने व अपनी संतानों के अधिकार को सुरक्षित करने में सहायता मिली।

¼**ix**½ uohu rFkk mÙke flDdksa dk izpyu **(Circulation of new and excellent coins)** :– दिल्ली सल्तनत की कु’’ाल मुद्रा प्रणाली स्थापित करने में इल्तुतमि’’ा का महत्वपूर्ण योगदान है। उसने तांबे की जीतल तथा चांदी का टंका चलाया। ये दोनों सिक्के आगे के सभी सुल्तानों के काल में जारी रहे। वह पहला तुर्क सुल्तान था जिससे शुद्ध अरबी सिक्के चलवाये। उसने ही सबसे पहले सिक्कों पर टकसाल के नगर के नाम अंकित करवाये। इसके अतिरिक्त सिक्कों पर अरबी भाषा में सुल्तान का नाम व खलीफा का नाम भी अंकित करवाया।

¼**x**½ bDrk O;oLFkk dk izpyu **(Circulation of Ekta)** :– इल्तुतमि’’ा ने अपने शासन काल में इक्ता व्यवस्था का प्रचलन आरंभ किया। इक्ता प्रथा के अंतर्गत सैनिकों, राज्य अधिकारियों को वेतन के बदले भूमि दी जाती थी। इस प्रथा को उसने 1226 ई. में शुरू किया था। इक्ता व्यवस्था की शुरूआत भारत से बाहर फारस (ईरान) क्षेत्र तथा प’’िचम ए’’िाया में हो चुकी थी।

¼**xi**½ dyk rFkk lkfgR; dk laj{k.k **(Protection of art and literature)** :– इल्तुतमि’’ा ने अपने शासनकाल में कला तथा साहित्य का भी संरक्षण किया। उसने कुतुबुद्दीन द्वारा आरंभ किये गये कुतुबमीनार के निर्माण कार्य को पूरा किया। सुलतानगढ़ी का मकबरा (दिल्ली) भारत में किसी तुर्क शासकों द्वारा निर्मित पहला मकबरा बनवाने का श्रेय इल्तुतमि’’ा को ही जाता है। उसे विद्वानों का आदर करने वाला सुल्तान के रूप में भी जाना जाता है। उसने मध्य ए’’िाया से मंगोलों के भय से भाग निकले बहुत विद्वानों, सन्तों निर्धन लोगों को उदारतापूर्वक अपने राज्य में सरंक्षण दिया व सुविधा प्रदान की।

^तबकात–ए–नासिरी' के रचनाकार प्रसिद्ध इतिहासकार मिनहाज–उस–सिराज इसके दरबार को सु’’ाोभित करते थे। इस पुस्तक से हमें आरंभिक मध्यकालीन इतिहास का ज्ञान होता है।

उपरोक्त विवरणों से यह स्पष्ट होता है कि डॉ. आर. पी. त्रिपाठी ने ठीक ही कहा कि – ''भारत में स्वतंत्र मुस्लिम साम्राज्य का इतिहास वास्तविक रूप से इल्तुतमि’’ा से ही आरंभ होता है।'' उससे पहले कई मुस्लिम शासकों ने भारत पर सफल आक्रमण किये परन्तु किसी न किसी कारण से उनमें से किसी को भी मुस्लिम साम्राज्य स्थापित करने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हो सका। प्रथम मुस्लिम आक्रमणकारी अरबी मुहम्मद बिन कासिम तो केवल सिन्त तथा मुल्तान तक ही सिमट कर रह गया था। जबकि 17 बार सफल आक्रमण करने वाला महमूद गजनवी अपने उद्दे’’य धन के लूट–पाट व इस्लाम का प्रचार तक ही अपने आपको सीमित रखा। मुहम्मद गौरी पहला मुस्लिम आक्रमणकारी था जिसने लगभग समस्त उत्तर भारत को विजित किया परंतु सत्ता स्थापित करने का सौभाग्य उसे प्राप्त नहीं हो सका। उसने अपने विजित प्रदे’’ा को अपने गुलाम कुतुबद्दीन ऐबक को सौंप दिया। उसके बाद कुतुबद्दीन ऐबक और कुछ समय के लिए शासक बना आराम’’ााह लाहौर को

राजधानी बनाकर दिल्ली सल्तनत के नाम से शासन किया। वास्तव में अपने विद्रोहियों को दमन कर एक सुव्यवस्थित शासन प्रणाली के तहत राजधानी को लाहौर से दिल्ली लाकर दिल्ली सल्तनत का राज्य विस्तार करने वाला स्वतंत्र शासक इल्तुतमि”ा ही था।

4-4-2- प्रसिद्ध भाासक बलवन और उसकी उपलब्धियां (Famous Ruler Balban and his achivements)

गयासुद्दीन बलबन इल्बरी तुर्क था। बचपन में मंगोलों ने उसे पकड़कर गुलाम के रूप में बेच दिया था। ख्वाजा जमालुद्दीन वसरी नाम का एक व्यक्ति ने उसे गुलाम के रूप में खरीद कर 1232–1233 ई. में दिल्ली लाया था। ख्वाजा जमालुद्दीन से बलबन को गुलाम के रूप में इल्तुतमि”ा ने ग्वालियर विजय के दौरान खरीदा था। उसकी योग्यता क्षमता से प्रभावित होकर इल्तुतमि”ा ने उसे अपने 40 तुर्की सरदारों का गुट 'चालीसा गुट' का सदस्य बनाया। वह समस्त तुर्की सरदारों में सबसे अधिक प्रसिद्धि प्राप्त सरदार बन गया। वह अपने शौर्य, पराक्रम व कूटनीति के द्वारा रजिया के समय से अमीर–ए–f”ाकार, बहराम”ाह के समय में अमीर–ए–आखूर, मसूद”ाह के समय में अमीर–ए–हाजिब एवं सुल्तान नासिरूद्दीन के समय में प्रधानमंत्री के रूप में राज्य की सम्पूर्ण शक्ति का केन्द्र बन गया। नासिरूद्दीन के काल में राज्य की समस्त शक्तियाँ व्यावहारिक रूप में बलबन के हाथ में आ गई और सुल्तान केवल नाम मात्र का रह गया। नासिरूद्दीन के शासनकाल में बलबन ने कई सफल अभियान चलाये। उसने 1246 ई. में पंजाब के खोखरों का दमन किया। उसके बाद उसने दोआब के हिन्दू शासकों को अपनी अधीनता स्वीकार करने को मजबूर किया और दिल्ली से कालिंजर तक राज”ाक्ति को पुनः स्थापित किया। उसने ग्वालियर, मेवात, रणथम्भौर, चन्देरी तथा मालवा के खिलाफ सफलतापूर्वक अभियान चलाकर वि”ााल धनरा”ा के साथ 1252 ई. दिल्ली लौटा। इससे उसका महत्व और अधिक बढ़ गया। अपनी शक्ति को और भी अधिक बढ़ाने के लिए बलबन ने कूटनीति के द्वारा सुल्तान कीबहन से स्वयं विवाह किया तथा अपनी पुत्री का सुल्तान से विवाह करवाया। इसके बाद उसने 1255 ई. में अवध के शासक कुतलुग खाँ को हराया तथा मेवों के विरूद्ध अभियान में 12,000 मेवों को मौत के घाट उतार दिया। उसने अपने पराक्रम तथा कूटनीति के द्वारा नासिरूद्दीन के काल में मंगोलों का सफलतापूर्वक विरोध किया तथा राज्य को इनसे सुरक्षित किया। अंततः 1266 ई. में नासिरूद्दीन की मृत्यु के बाद बलबन दिल्ली की गद्दी पर बैठा। वह 1266 ई. से लेकर 1286 ई. तक राज्य किया। अपने शासनकाल के 20 वर्षों में उसने राज्य के विस्तार तथा सुदृढ़ीकरण के लिए ऐसे महान कार्य किये जो इससे पूर्व दास वं”ा के किसी अन्य शासकों ने नहीं किये। इसलिये उसे दास/गुलाम वं”ा का सबसे महान् सुल्तान माना जाता है। अपने शासनकाल के दौरान उसके द्वारा उठाये गये कदम निम्नलिखित है –

¼i½ pkyhlk xqV dh lekfIr (Ending of chalisa group) :- सल्तनत के अलग–अलग सुल्तानों के काल में शासन के महत्व पूर्ण पदों पर रहते हुए बलबन ने तुर्क सरदारों/अमीरों के ‘ाड्यंत्र को देख चुका था। अतः सुल्तान बनते ही उसने इनके प्रभाव को कम करने तथा इन्हें कमजोर करने के लिए इल्तुतमि”ा के काल के 40 तुर्की सरदारों के दल को समाप्त कर दिया।

¼ii½ jDr ,oa ykSg dh uhfr (Blood and Iron policy) :- बलबन ने अपने विद्रोहियों को समाप्त करने के लिए जो कठोर नीति अपनाई उसे रक्त एवं लौह की नीति के नाम से जाना जाता है। इस नीति के तहत उसने असाधारण साहस तथा उत्साह से शत्रुओं का दमन किया और राज्य में आगे कोई विद्रोह का साहस नहीं कर सके

को ध्यान में रखते हुए उनका वध करके सफाया कर दिया जाता था। उसने उपद्रवी मेवों, दोआब के डाकुओं, कटेहर तथा बंगाल के विद्रोहियों से निपटने के लिये सफलतापूर्वक इस नीति को अपनाया। इसके फलस्वरूप बलबन ने साम्राज्य को आंतरिक तथा बाहरी दोनों खतरों से सुरक्षित करते हुए सुदृढ़ तथा शक्ति''ाली बनाने का कार्य किया।

¼**iii**½ lSuk dk laxBu **(Military organisation) :-** आंतरिक तथा बाह्य दोनों दृष्टियों से वि''ाल साम्राज्य को सुव्यवस्थित करने के लिए बलबन ने 'दीवान–ए–अर्ज' नाम से एक अलग सैन्य विभाग का गठन किया था। सेना में भर्ती के लिए योग्यता को महत्व दिया। उसने अयोग्य एवं वृद्ध सैनिकों को पें''ान देकर मुक्त करने की योजना चलाई। सैनिकों को नकद वेतन देना आरंभ किया। बलबन ने दीवान–ए–अर्ज पद पर इमादुलमुल्क को प्रतिष्ठित किया तथा सीमान्त क्षेत्र में स्थित किलों का पुनर्निर्माण करवाया।

¼**iv**½ eaxksy ,oa lhekUr lEcU/kh uhfr **(Policy related to Mangols Frontier) :-** प''चमोत्तर सीमा प्रान्त पर मंगोल आक्रमण से राज्य को सुरक्षित करने के लिए बलबन ने एक सुनि''चत योजना का क्रियान्वयन किया। इस नीति के अंतर्गत मुलतान, सामाना व दीपालपुर आदि प्रदे''ों को सीमांत प्रांत घोषित किया गया। इन प्रदे''ों में पुराने किलों की मरम्मत नये, किलों का निर्माण तथा योग्य सैनिकों के नेतृत्व में सैनिक चौकियां स्थापित करने का अभियान चलाया गया। सीमांत प्रांत के शासन को सुदृढ़ करने के लिये सुल्तान ने अपने वीर तथा योग्य सम्बन्धियों को नियुक्त किया। सेना में और अधिक सुधार करते हुए सैनिकों के प्र''ाक्षण की व्यवस्था की गयी। बहुत अधिक संख्या में शस्त्र बनवाये गये। इस प्रकार मंगोलों का सफलतापूर्वक विरोध करने के लिए एक नीति के तहत शक्ति''ाली सेना का निर्माण किया गया।

¼**v**½ eaxksyksa dk vkØe.k **(Invasion Mangols) :-** मंगोलों के आक्रमण से राज्य को सुरक्षित करने के लिए बलबन ने सीमान्त नीति के तहत एक वि''ाल प्र''ाक्षित सेना की व्यवस्था की थी। यही कारण है कि 1279 ई. में जब मंगोलों ने भारत पर आक्रमण करने का साहस किया तो उन्हें बुरी तरह परास्त करके भगा दिया गया। इसके बाद 1285 ई. में पुनः मंगोलों का आक्रमण हुआ। उस समय सीमा प्रान्त का शासक बलबन का पुत्र मुहम्मद था। मुहम्मद के नेतृत्व में सेना ने डटकर सामना किया, परन्तु इस युद्ध में उसका पुत्र मारा गया। मंगोल आक्रमण ने बलबन की राज्य नीति को कई तरह से प्रभावित किया। मंगोलों के आक्रमण के कारण बलबन को दूर–दूर के प्रदे''ों को विजय करने का विचार छोड़ना पड़ा। इसके लिए उसे राज्य के आय का बहुत बड़ा हिस्सा सेना निर्माण पर खर्च करना पड़ा जिसे प्रजा–हित प्रभावित हुआ। इसके अतिरिक्त उत्तर–प''चम में मंगोलों के साथ उलझे रहने के कारण सुदूर पूर्व में विद्रोह बढ़ गये और अंततः मंगोल आक्रमण में सुल्तान को अपना पुत्र खोना पड़ा जो उसके स्वयं के लिए प्राण घातक साबित हुआ।

¼**vi**½ jktRo&fl)kUr **(The theory of goverenance) :-** राजत्व से अभिप्राय उन सिद्धान्तों नीतियों एवं कार्यों से है जिन्हें सुल्तान अपनी प्रभुसत्ता, अधिकार एवं शक्ति को स्पष्ट करने के लिए अपनाता था। बलबन दिल्ली सल्तनत का पहला और एकमात्र सुल्तान था जिसने राजत्व के संबंध में स्पष्ट विचार रखे। बलबन के राजत्व सिद्धान्त के महत्वपूर्ण तत्व थे – राजवं''ाज अर्थात् राजा को राजवं''ा से संबंधित होना चाहिए। राजत्व को दैवी संस्था मानते हुए बलबन ने कहा कि राजा पृथ्वी पर ई''वर का प्रतिनिधि (नियाबते खुदाई) होता है। अतः उसका स्थान कैवल पैगम्बर के प''चात् है। राजा का न्याय ही अंतिम न्याय है। उसके द्वारा किया गया कार्य न्याय संगत

होता है। उसने अपने शासनकाल में उच्च कुल एवं निम्न कुल के व्यक्तियों के बीच अंतर स्थापित करने को महत्व दिया। बलबन ने अपने इस सिद्धान्त के तहत् भव्य दरबार एवं दिखावटी मान मर्यादा को महत्व देते हुए अपने दरबार में फारसी (ईरानी) रीति–रिवाज को स्थापित किया। 'सिजदा' (घुटने पर बैठकर सम्राट के सामने सिर झुकाना) एवं पाबोस (पाँव को चूमना) की प्रथा शुरू की। उसने ईरानी त्यौहार नौरोज को मनाना प्रारंभ किया। बलबन ने ई"वर, शासक तथा जनता के बीच त्रिपक्षीय संबंधों को राजत्व का आधार बनाना चाहा। उसने राजा द्वारा निष्पक्ष एवं कठोर न्याय किये जाने को महत्व दिया और साथ ही शासन में कुरान के नियमों को स्थान दिया। उसने खलीफा के महत्व को स्वीकार करते हुए अपने द्वारा जारी किये गये सिक्कों पर खलीफा के नाम से अंकित कराया तथा उसके नाम से खुतबे पढ़ें।

¼**vii**½ x|rpj foHkkx dk l|xBu **(Intelligence Department organisation) :-** बलबन ने अपने शासन व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए 'बरीद–ए–मुमालिक' नाम से गुप्तचर विभाग का गठन किया था। इस विभाग के अधिकारी को बारीद कहा जाता था। इन्हें नकद वेतन दिया जाता था तथा वे सीधे सुल्तान के नियंत्रण में होते थे। गुप्तचरों द्वारा सुल्तान को राज्य संबंधी महत्वपूर्ण सूचनायें प्राप्त होती थीं।

¼**viii**½ U;k; O;oLFkk **(Judiciary system) :-** बलबन की न्याय व्यवस्था कठोर तथा गैर–पक्षपातपूर्ण थी। न्याय का केन्द्र बिंदु सुल्तान होता था। सुल्तान का न्याय अंतिम न्याय होता था। अपराधियों को वह बर्बरतापूर्वक दंड देता था।

¼**ix**½ myek dk j.kuhfr l| iFkd djuk **(To separate the Ulama from Strategy) :-** बलबन से पूर्व उलेमा का शासन–प्र"ाासन में बहुत महत्व था। बलबन ने अपनी रणनीति के द्वारा उलेमा के हस्तक्षेप पर रोक लगा दी। बलबन ने उससे सलाह लेना बंद कर दिया।

¼**x**½ fo}kuk| dk lj{kd **(Scholar Mentor) :-** उसने अपने राजदरबार में अनेक विद्वानों, कलाकारों एवं साहित्यकारों को संरक्षण प्रदान किया। फारसी के प्रसिद्ध कवि 'तूतीये हिन्द' अमीर खुसरों उसके समय का सबसे प्रसिद्ध विद्वान था। अमीर खुसरों के साथ–साथ फारसी में एक अन्य विद्वान अमीर हसन को भी उसके काल में संरक्षण प्राप्त था। इनके अतिरिक्त ज्योतिषी एवं चिकित्सक मौलाना हमीदुद्दीन मुतरिज, प्रसिद्ध मौलाना बदरूद्दीन एवं मौलाना हिसानुद्दीन भी उसके दरबार में रहते थे।

निश्कर्शत : बलबन एक महान योद्धा, शासक तथा राजनीतिज्ञ था जिसने विकसित हो रहे मुस्लिम साम्राज्य को भयानक समय में नष्ट होने से बचाया और इसकी नींव को मजबूत किया जिसके ऊपर आगे के वं"ाों व शासकों ने वि"ााल साम्राज्य खड़ा किया। अतः मध्यकालीन भारतीय इतिहास में उसे गुलाम वं"ा का सबसे महान सुल्तान माना जाता है।

4-4-3- vykmíhu f[kyth d| i|"kklfud ,o| vkfFkd l|/kkj **(Khilji administrative and economic reform of Ala-ud-din) :-** अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली सल्तनत का विस्तार उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत तक किया। इस वि"ााल साम्राज्य को चलाने के लिए उसने आव"यकतानरूप प्र"ाासनिक एवं आर्थिक सुधार किये। अलाउद्दीन खिलजी मध्यकालीन भारतीय इतिहास में एक प्र"ाासक के रूप में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

डॉ. के. एस. लाल के अनुसार, '' अलाउद्दीन एक प्र''ाासकीय प्रयोगकर्त्ता था, उसने नवीन विचारों को जन्म दिया और नवीन भूमि पर उन्हें रोपा।''

mld i"kklfud l/kkjk dk o.ku fuEu idkj g &

¼i) भासन का केंद्रीकरण (Centralisation of Governance) : - अलाउद्दीन खिलजी ने वि''ााल दिल्ली साम्राज्य को उचित प्र''ाासन देने के लिए शासन में उलेमा वर्ग की उपेक्षा करते हुए धर्म पर राज्य का नियंत्रण स्थापित किया। उसने अपने आपको 'यामिन–उल–खिलाफत नासिरी अमीर–उल मुमनिन कहा। वह निरंकु''ाता में वि''वास करता था। उसने अपने विरोधियों का निर्ममतापूर्वक दमन करके सारी सत्ता का अधिकार अपने पास कर लिया था। उसने शक्ति''ााली अमीरों/सरदारों का दमन करके उन्हे अपनी इच्छानुसार चलाया व शासन में साधारण लोगों को उच्च पदों पर नियुक्त किया। उसने अमीरों की भूमि जब्त कर ली और उनके सार्वजनिक समारोहों में मिलने–जुलने पर प्रतिबंध लगा दिया ताकि वे कोई 'ाड्यंत्र न रच सके।

¼ii) मंत्रिपरिशद (Council of Ministers) : - सुल्तान ने शासन चलाने के दृष्टिकोण से अपनी सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद नियुक्त की, किन्तु उन्हें केवल सुल्तान की आज्ञा का पालन करना पड़ता था। अलाउद्दीन के मंत्रिपरिषद में 4 महत्वपूर्ण मंत्री थे जिनके ऊपर प्र''ाासन की सम्पूर्ण जिम्मेदारी होती थी। ये मंत्री एवं संबधित विभाग निम्न थे –

1. nhoku&,&otkjr %& ;g सबसे महत्वपूर्ण विभाग था। इस विभाग के मुख्यमंत्री को वजीर कहा जाता है। वह सुल्तान का प्रधानमंत्री होता था। वित्त के अतिरिक्त उसे सैनिक अभियान के समय शाही सेनाओं को नेतृत्व भी करना पड़ता था। अलाउद्दीन के शासन काल में ख्वाजा खातिर, ताजुद्दीन काफूर, नुसरत खाँ आदि वजीर के पद पर नियुक्त किये गये थे।
2. nhoku&,&vtl ;k vkfjt %& यह सैन्य विभाग था। इस विभाग का मंत्री आरिज–ए–मुमालिक युद्धमंत्री व सैन्यमंत्री होता था। प्र''ाासन में वजीर के बाद दूसरा महत्वपूर्ण स्था इसी मंत्री का होता था। इसके मुख्य कार्य सैनिकों की भर्ती करना, उन्हें वेतन बांटना, सेना की दक्षता एवं साज–सज्जा की देखभाल करना, युद्ध के समय सेनापति के साथ युद्धक्षेत्र में जाना आदि था।
3. nhokuk&,&b"kk %& अलाउद्दीन खिलजी के काल में यह तीसरा महत्वपूर्ण मंत्रालय होता था जिसके प्रधान को बरीद–ए–मुमालिक कहते थे। उसका महत्वपूर्ण कार्य शाही उद्घोषनाओं एवं पत्रों का प्रारूप तैयार करना तथा प्रांतपतियों एवं स्थानीय अधिकारियों से पत्र व्यवहार करना होता था। इसका सहायक सचिव ' दबीर' कहलाता था। दबीर के प्रमुख को 'दबीर–ए–मुमलिकात' कहते थे।
4. nhoku&,&blkyr %& यह विदे''ाी कार्यों का मंत्री होता था। पड़ोसी राज्यों से संबंध स्थापित रखना, उन राज्यों में राजदूत भेजना तथा उनके राजदूतों को स्वीकार करना इनके मुख्य कार्य थे।

इन मुख्य मंत्रियों के अतिरिक्त शासन चलाने के लिए अलाउद्दीन खिलजी ने आर्थिक मामलों से सम्बन्धित नये विभाग 'दीवान–ए–रियासत' की स्थापना की थी। राजमहल के कार्यों की देख–रेख करने वाला मुख्य अधिकारी वकील–ए–दर होता था। सुल्तान के अंगरक्षकों के मुखिया को 'सजादार' कहा जाता था।

'अमीर–ए–आखूर' – अ''व''ाला का अध्यक्ष होता था।

''ाहना–ए–पील' – इस्ति''ाला का अध्यक्ष होता था।

'अमीर–ए–f''ाकार' – सुल्तान के लिये f''ाकार की व्यवस्था करने वाला होता था।

¼**iii**½ U;k; iz''kklu **(Judicial Administration) : -** न्याय की सर्वोच्च शक्ति सुल्तान में निहित थी। सुलतान का न्याय ही अंतिम न्याय होता था। सुल्तान के बाद 'सद्र–ए–जहाँ' या काजी–उल–कुजात होता था। इसके नीचे नायब काजी या अदल कार्य करता था जिनकी सहायता के लिए मुफ्ती होते थे। 'अमीर–ए–दाद' नाम का अधिकारी दरबार में ऐसे प्रभाव''ाली व्यक्ति को प्रस्तुत करता था जिस पर काजियों का नियंत्रण नहीं होता था।

¼**iv**½ iqfyl ,oa xqIrpj **(Police and Detective) : -** अलाउद्दीन खिलजी के काल में पुलिस एवं गुप्तचर विभाग प्रभावी तरीके से कार्य करते थे। पुलिस विभाग का प्रमुख अधिकारी 'कोतवाल' होता था। पुलिस विभाग को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए एक नये पद 'दीवान–ए–रियासत' का गठन किया जो व्यापारी वर्ग पर नियंत्रण रखता था। ''ाहना' व दंडाधिकारी भी पुलिस विभाग से संबंधित अधिकारी थे। जन–सामान्य के आधार की रक्षा एवं देखभाल के लिए नियुक्त अधिकारी – 'मुहतसिव' होता था।

इस काल में गुप्तचर विभाग का प्रमुख अधिकारी – 'बरीद' अर्थात् संदे''ावाहक कार्य करते थे। बरीद के अतिरिक्त अन्य सूचदाता को 'मुन्ही' कहा जाता था।

¼**v**½ lSfud izcU/k **(Military Management) : -** अलाउद्दीन खिलजी ने वि''ाल साम्राज्य के समक्ष अ आंतरिक विद्रोहों एवं बाह्य आक्रमणों जैसे चुनौतियों का सामना करने तथा राज्य विस्तार हेतु सुव्यवस्थित स्थायी सेना का गठन किया था। दिल्ली सल्तनत में स्थायी सेना को गठित करने वाला वह पहला सुल्तान था। उसने घोड़ों को दागने एवं सैनिकों के हुलिया लिखे जाने की प्रथा को भी आरंभ किया। उसने सैनिकों को वेतन के रूप में जागीर देने की प्रथा को समाप्त करके उसके स्थान पर नकद वेतन देने की प्रथा को प्रारंभ किया। अलाउद्दीन खिलजी का सेना आकार में भी वि''ाल था। अमीर खु''ारों के अनुसार 'तुमन' दस हजार सैनिकों की टुकड़ी को कहा जाता था। उसकी सेना में घुड़सवार, पैदल सैनिक एवं हाथी सैनिक थे। इनमें घुड़सवार सैनिक सबसे अधिक महत्वपूर्ण थे। इतिहासकार फरि''ता अपने विवरण में उसके 4 लाख 75 हजार सुसज्जित एवं वर्दीधारी सैनिक का वर्णन करता है। पूर्णतया जांच–परख कर योग्यता के आधार पर भर्ती किये जाने वाले सैनिक को मुर्रत्तब कहा जाता था। एक घोड़े वाले सैनिक 'एक अस्था' तथा दो घोड़े वाले सैनिक को 'दो अस्था' के नाम से जानते थे। एक अस्था सैनिक को 234 टंका वेतन जबकि दो अस्था सैनिक को प्रतिवर्ष 378 टंका वेतन के रूप में मिलता था।

¼**vi**½ Mkd i)fr **(Post System) : -** अलाउद्दीन के प्र''ाासन व्यवस्था में उसका डाक पद्धति प्रभावी व सुव्यवस्थित तथा तीव्रगामी था। उसने डाक चौकियों पर कु''ाल घुड़सवारों एवं लिपिकों को नियुक्त कर रखा था, जो राज्य भर का समाचार शीघ्रतापूर्वक पहुँचाते थे।

¼**vii**½ izkarh; iz"kklu **(State Administration) : -** इतिहासकार बरनी अलाउद्दीन के साम्राज्य में 11 प्रांतों का वर्णन करता है प्रांत के मुख्य शासक को प्रांतपति कहा जाता था। प्रांतपति एक प्रकार का लघु सुल्तान था जिसका अधिकार केन्द्र के अंर्तगत एक प्रांत तक सीमित होता था। मध्यकालीन भारतीय इतिहासकार प्रांतपति के लिए बली/मुक्ता शब्द का प्रयोग बताते है जो 'अक्ता' (जागीर) का अधिकारी होता था।

vkfFkZd lq/kkj **(Economic Reform)**

साम्राज्य विस्तार की महत्वाकांक्षा एवं निरंतर हो रहे मंगोल आक्रमण से राज्य की रक्षा हेतु वि"ााल सेना की आव"यकता ने अलाउद्दीन को आर्थिक सुधार के लिए प्रेरित किया। उसने सैनिक व्यय व शासन के अन्य खर्चों के लिए नवीन आर्थिक नीति का निर्माण किया। अलाउद्दीन खिलजी की आर्थिक सुधारों के विषय में व्यापक जानकारी के स्त्रोत है –

जियाउद्दीन बरनी कृत 'तारीखे–फिरोज"ाही', अमीर खु"ारो कृत 'खजाइनुल फतूह', इब्नबतूता कृत 'रेहला' एवं इसामी कृत 'फुतूहस्सलातीन' आदि। इन विवरणों के आधार पर उसके आर्थिक सुधार निम्न प्रकार है –

¼**i**½ O;fDrxr lEifÙk rFkk tkxhjksa dh tCrh **(Seizure of personal property and estates) : -** अलाउद्दीन खिलजी ने सुल्तान बनते ही पहले से प्रचलित जागीर प्रथा को समाप्त कर दिया। उसने अमीरों पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए कठोर कदम उठाये जिसके तहत उनको जागीर के रूप में दी गयी भूमि को जब्त कर लिया जिससे राज्य के राजस्व में भी वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त उसने उन सभी व्यक्तियों से भूमि छीन ली जो उन्हें राज्य की ओर से 'मिल्क' तथा 'वक्फ' के रूप में मिली थी। 'मिल्क' वह भूमि या संपत्ति थी जो राज्य अपने व्यक्ति को इनाम, पें"ान या इंदराज के रूप में देती थी। जबकि 'वक्फ' धर्म कार्य के लिए दी गयी भूमि को कहते थे। इससे खालसा भूमि (सरकारी भूमि) का अतिरिक्त विस्तार हुआ।

¼**ii**½ fgUnw inkf/kdkfj;ksa ds fo**"ोशधिकारों की समाप्ति (Abolition of special rights of hundu officials) : -** पूर्व व्यवस्था के अनुसार मुकद्दम, खुत तथा चौधरी जो हिन्दू थे कर वसूली का कार्य करते थे उन्हें वि"ोषाधिकार के तहत कर की छूट थी जिसे अलाउद्दीन ने समाप्त कर दिया। अन्य सामान्य नागरिकों के समान उन्हें भी कर देना पड़ता था। इससे राज्य की आय में वृद्धि हुई।

¼**iii**½ Hkwfe dh eki **(Measurement of Land)**

भूमि की माप अलाउद्दीन खिलजी की सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक सुधार है। इसके आधार पर भूमि की गुणवत्ता का पता लगाकर व्यवस्था की जानी थी। भूमि मापन को 'मसाहत' कहते थे। इसके लिए उसने 'दीवान–ए–मुस्तखराज' विभाग बनाये तथा उसमें योग्य एवं ईमानदार अधिकारी नियुक्त किये गये।

¼**iv**½ dBksj dj uhfr **(Rigid Tax Policy)**

अलाउद्दीन खिलजी के काल में करों में अत्यधिक वृद्धि कर दी गई तथा इसे कठोरतापूर्वक वसूला भी गया। इसने पैदावार का 50 प्रति"ात भूमिकर के रूप में वसूला जिसे 'खराज' कहते थे। अलाउद्दीन प्रथम

सुल्तान था जिसने भूमि की पैमाइ"ा कराकर (मसाहत) उसकी वास्तविक आय पर अन्न के रूप में कर वसूलने की व्यवस्था की थी। अलाउद्दीन के काल में दुधारू प"ाुओं पर 'चराई कर' तथा घरों एवं झोपड़ी पर 'घरी कर' लगाये गये थे। 'जजिया' कर गैर मुस्लिमों से लिया जाता था। लूट के माल पर खुम्स नाम का कर लगाया जाता था जिसका 1/5 भाग सेना को तथा 4/5 भाग राज्य का होता था। 'जकात' केवल मुसलमानों से लिया जाने वाला एक धार्मिक कर था जो सम्पत्ति 1/40 भाग अर्थात् 2.5 प्रति"ात होता था।

¼v½ cktkj fu;=.k dh uhfr **(Policy of market control) :-** अलाउद्दीन खिलजी के आर्थिक सुधार में उसका बाजार नियंत्रण प्रणाली सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। बाजार नियंत्रण की प्रणाली के अंतर्गत उसने कई महत्वपूर्ण कदम उठाए जिनका वर्णन निम्न प्रकार है

1. oLrqvksa dk ewY; ij fu;=.k **(Control of the price of goods) :-** अलाउद्दीन ने एक नियम बनाकर दैनिक उपभोग की वस्तुओं का मूल्य नि"िचत कर दिया था। उसने तय कर दिया कि मूल्य वही होगा जो, सरकार द्वारा निर्धारित मूल्य सूची में दिया हुआ है। आव"यक वस्तुओं का मूल्य इतना कम कर दिया था कि एक सैनिक कम वेतन में भी अपना निर्वाह कर सके। अतः मूल्यों की स्थिरता अलाउद्दीन की महत्वपूर्ण वि"ोषता थी। इसके लिए अलग विभाग बनाये। इसमें योग्य व ईमानदार अधिकारियों की नियुक्ति की।

2. cktkj dk vf/kdkjh ,oa deZpkjh **(Market official and employee) :-** अलाउद्दीन के काल में बाजार नियंत्रण की पूरी व्यवस्था का संचालन दीवान–ए–रियासत का नाम का अधिकारी करता था। उसके नीचे काम करने वाले कर्मचारी वस्तओं के क्रय–विक्रय एवं व्यवस्था का निरीक्षण करते थे। बाजार का सबसे बड़ा अधिकारी दीवान–ए–रियासत/सदर–ए–रियासत कहलाता था जिसकी नियुक्ति सुल्तान करता था। सदर–ए–रियासत के नीचे तीन अधिकारी – शहना–ए–मंडी (निरीक्षक) बरीद (गुप्तचर अधिकारी) और मुनहियान (गुप्तचर) नियुक्त किये गये थे। दिल्ली आकर व्यापार करने वाले प्रत्येक व्यापारी को दीवान–ए–रियासत में अपना नाम दर्ज करवाना पड़ता था। अलाउद्दीन खिलजी ने बाजार व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए परमिट जारी करने वाले एक अधिकारी की भी नियुक्ति की थी।

3. forj.k dh O;oLFkk **(Distribution System) : -** सामान के वितरण के लिए दिल्ली में विभिन्न प्रकार के बाजारों की व्यवस्था की गई। सराय–ए–अदल सरकारी सहायता प्राप्त बाजार था जहाँ वस्त्र, शक्कर, जड़ी–बूटी, मेवा, दीपक जलाने का तेल एवं अन्य निर्मित वस्तुएं बिकने के लिए आती थीं। दीवान–ए–रियासत नाम का अधिकारी अपने अधीनस्थ अधिकारी एवं कर्मचारी के माध्यम से सम्पूर्ण बाजार पर नियंत्रण रखता था। नगर के प्रत्येग मुहल्ले में स्थापित वि"ोष अनाज मंडी से ही अनाजों की खरीद बिक्री होती थी। इसके लिए लाइसेंस भी जारी करने की व्यवस्था थी। उपभोक्तओं को आज्ञा पत्र के आधार पर ही वस्तुएँ मिलती थी।

4. **भाासकीय** HkaMkj.k O;oLFkk **(Government stores system) : -** मध्यकालीन भारतीय इतिहास में अलाउद्दीन खिलजी को सार्वजनिक वितरण प्रणाली के जनक के रूप में जाना जाता है। उसने वस्तुओं के कम कीमत में उपलब्धता के लिए मूल्य नियंत्रण के साथ–साथ भंडारण व्यवस्था के महत्व को भी बाजार व्यवस्था में शामिल किया। अतः उसने अनाज के भंडारण के लिए बड़े–बड़े गौदाम बनावाए। गोदामों का अनाज आपातकालीन परिस्थितयों में ही निकाला जाता था। इस प्रकार के प्रमाण

मिलते है कि अलाउद्दीन ने रा''ानिंग व्यवस्था भी लागू किया था। अकाल के समय प्रत्येक घर को आधा मन अनाज प्रतिदिन दिया जाता था।

4-4-4- विरोधी तत्वों के मिश्रण वाला दिल्ली सल्तनत का प्रसिद्ध भाासक मुहम्मद बिन तुगलक (Eminent ruler of Admixture Muhammad bin Tughlaq)

मुहम्मद बिन तुगलक दिल्ली सल्तनत का सबसे विद्वान, ''ाक्षित व निपुण सल्तान था। वह गणित, भूगोल, ज्योतिष, चिकित्सा शास्त्र, द''ान शास्त्र आदि कई विषयों का ज्ञान रखता था। दूसरी ओर उसमें व्यावहारिक बुद्धिमता का अभाव था। वह मूर्खतापूर्ण निर्णय लेने और योजना बनाने के रूप में भी प्रसिद्ध है। वह एक साथ ही बहुत क्रूर तथा दयालु शासक भी था। वह राज्य विस्तार की महत्वाकांक्षा भी रखता था तो दूसरी ओर मंगोलों के आक्रमण का विरोध करने का साहस भी नहीं कर पा रहा था।

उसके व्यवहार कई बार सरदारों तथा प्रजा से घृणा व नीचता का प्रद''ान वाला भी हुआ तो इसके विपरीत कई मौकों पर विनम्रता व सह्रदयता का व्यवहार भी प्रद''ात किया। वह इस्लाम का सच्चा अनुयायी भी था तो दूसरी ओर उलेमा तथा मुस्लिम धार्मिक वर्ग के अन्य लोगों के विरूद्ध था।

उपरोक्त वर्णित इन तमाम बातों से यह स्पष्ट होता है कि मुहम्मद–बिन–तुगलक विरोधी तत्वों अथवा विरोधी गुणों–अवगुणों के मिश्रण वाला प्रसिद्ध सल्तान था।

मुहम्मद बिन तुगलक 425 से 451 ई. तक तुगलक वं''ा का शासक रहा। दिल्ली सल्तनत की सीमा का सर्वाधिक विस्तार इसी के शासनकाल में हुआ। इसके बचपन का नाम जौना खाँ था। 420 ई. में पिता गयासुद्दीन तुगलक के सुल्तान बन जाने के बाद राजकुमार जौना खाँ की उत्तराधिकारी के रूप में नियुक्ति हो गई और उसे 'उलूग खाँ' की उपाधि दी गई। अपने पिता के शासनकाल में राजकुमार जौना खाँ ने 421 और 422–23 ई. में वारंगल में दो अभियानों का नेतृत्व किया। यद्यपि प्रथम अभियान में वह असफल रहने के बाद दूसरे अभियान में सफल रहा। मुहम्मद बिन तुगलक के काल में एक तरफ जहाँ सल्तनत का सर्वाधिक विस्तार हुआ वहीं दूसरी ओर उसकी क्रूर नीतियों के कारण विद्रोह का आरंभ हो गया जिसके फलस्वरूप दक्षिण में नये स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हुई और ये क्षेत्र दिल्ली सल्तनत से पृथक हो गए। बंगाल भी स्वतंत्र हो गया। इस प्रकार विस्तार का चरमोत्कर्ष दिल्ली सल्तनत को विघटन की ओर ले गया। मुहम्मद बिन तुगलक का शासनकाल मध्यकालीन भारतीय इतिहास में राजस्व, कृषि, धर्म व शासन संबंधी योजनाओं में अनेक प्रकार के परिवर्तन के कारण अपना पृथक महत्व रखता है। इब्नबतूता जो 433 ई. में मोरक्को (अफ्रीका) से आया था ने मुहम्मद बिन तुगलक के समय की घटनाओं को अपनी पुस्तक 'किताब–उल–रेहला' में उल्लिखित किया। इतिहासकार बरनी ने अपने विवरण में उसकी पाँच प्रमुख शासन संबंधी योजनाओं का उल्लेख किया है। इस प्रकार इतिहासकारों के विवरण के आधार पर मुहम्मद बिन तुगलक के शासन व्यवस्था का वर्णन निम्न प्रकार है –

¼i½ nkvkc e dj of) (Tax increase in Doab) :- राजस्व में वृद्धि के लिए उसने 425 ई. में दोआब में कर वृद्धि की। यह क्षेत्र सल्तनत का सबसे उपजाऊ क्षेत्र था। अतः खाली खजाना की पूर्ति के लिए उसने इस क्षेत्र में 10 से 20 गुणा तक कर वृद्धि की। परंतु जिस समय कर वृद्धि की गई, उसी दौरान अकाल पड़ने के कारण जनता में कर अदा करने की क्षमता नहीं रही। ऐसी स्थिति में जनता बढ़ी हुई कर देने को तैयार नहीं थी। कर वसूली की कठोरता के कारण आक्रो''ात जनता में सुल्तान के प्रति भयंकर असंतोष फैल गया और इस प्रकार यह योजना असफल हो गई।

¼ii½ jkt/kkuh ifjor'u (Capital Change) (426-427 Ad) :- मुहम्मद बिन तुगलक ने अपने शासनकाल में शासन व्यवस्था के अंतर्गत सामरिक महत्व के साथ–साथ विस्तृत साम्राज्य के केन्द्र में स्थित स्थान के दृष्टि से राजधानी परिवर्तन का प्रयोग भी किया। उसने सल्तनत की राजधानी दिल्ली से लगभग 700 मील दूर देवगिरी में स्थानांतरित कर दी। देवगिरी का नाम बदलकर दौलताबाद रख दिया। कुछ इतिहासकार यह भी कहते है कि दिल्ली निवासियों के व्यवहार से परे"ाान होकर सुल्तान ने उन्हें सजा देने के लिए राजधानी परिवर्तन का कार्य किया। किन्तु यह योजना अव्यावहारिक थी तथा इसके लागू करने का तरीका भी गलत था। इस कारण उसकी यह योजना भी असफल रहा। अंततः 435 ई. में राजधानी पुनः दिल्ली स्थानांतरित कर ली।

¼iii½ lkdfrd enk dk ipyu (Nominal currency system) :- मुद्रा प्रणाली सुधार योजना के तहत मुहम्मद बिन तुगलक ने बहुमूल्य धातुओं के सिक्कों के आपेक्षिक मूल्य निर्धारित किए और अनेक प्रकार के नए सिक्के जारी किए। इसी क्रम में 429–30 ई. में सांकेतिक मुद्रा को जारी करना उसका सर्वाधिक उल्लेखनीय कार्य थ। इसके शासनकाल तक राजकोष में बहुमूल्य धातुओं का अभाव हो गया था। अकाल तथा अन्य प्रकार की आपदाओं के वजह से आय में कमी हो गयी थी। अतः मुहम्मद बिन तुगलक ने नए अध्यादे"ा जारी कर तांबे के सिक्के को कानूनी मुद्रा घोषित कर दिया और मूल्य की दृष्टि से उन्हें सोने तथा चांदी के सिक्कों के समकक्ष रखा। संभवतः नये प्रयोगों में माहिर सुल्तान को इसकी प्रेरणा 4 वीं शताब्दी में चीनी शासकों द्वारा सांकेतिक मुद्रा जारी करने से मिली थी। परंतु इसके प्रभावी प्रयोग के अभाव में यह योजना भी सफल नहीं हो सकी।

¼iv½ [kjklku ij vkØe.k (Khurasan invasion) :- एक महत्त्वाकांक्षी शासक के रूप में मुहम्मद बिन तुगलक ने 437 ई. में अपेक्षाकृत कमजोर राज्य खुरा"ाान पर आक्रमण करने की योजना बनाई। मंगोल नेता तरम "ारीन तथा मिस्त्र के सुल्तान खुरासान को अपने अधिकार में लेने की योजना बना रहे थे। मुहम्मद तुगलक उनसे पीछे नहीं रहना चाहता था और उसने भी खुरासान पर आक्रमण करने के लिए 3,70,000 जवानों की सेना तैयार की और सैनिकों को पूरे एक वर्ष का अग्रिम वेतन प्रदान किया गया। कालांतर में मध्य ए"ाया की राजनीति में परिवर्तन आ जाने से सुल्तान को खुरासान पर आक्रमण का अभियान टालना पड़ा। परिणमतः सुल्तान अपनी इस योजना में भी असफल रहा।

¼v½ djkfpy dk lfud vfHk;ku (The Military campaign of Karachil) :- कराचिल का सैनिक अभियान मुहम्मद बिन तुगलक की परिस्थितियों के समझ का अभाव उसके अदूरद"ितापूर्ण नीति को द"ााता है। जिसके तहत उसने बिना सोचे समझे उत्तरी भारत के पहाड़ी प्रदे"ा कराचिल (आधुनिक कुगाऊँ गढ़वाल) में एक लाख सेना भेज दी। इस अभियान में पहले वर्षा और फिर ठंडी तथा महामारी व भोजन सामग्री कम हो जाने से काफी सैनिक मारे गए। कुछ इतिहासकार यहां तक कहते है कि केवल तीन सैनिक बचकर लौटे। इस प्रकार इस योजना से राज्य को बहुत बड़ी हानि हुई।

¼vi) कृशि विभाग का निर्माण (Construction of agriculture department) :- मुहम्मद बिन तुगलक ने अपने शासनकाल में अलग से अमीर–ए–कोही/दीवान–ए–कोही नाम से कृषि विभाग को निर्माण करवाया था। राज्य की ओर से सीधी आर्थिक सहायता देकर कृषि योग्य भूमि का विस्तार इस विभाग की स्थापना का मुख्य उद्दे"य था। इसके अंतर्गत कृषि के विकास के लिए सिंचाई की व्यवस्था भी की गई। अकाल राहत संहिता तैयार करवाई। कृषकों को कृषि ऋण (तकावी) प्रदान करने की व्यवस्था भी की गई। इन सब

कार्यो में दो वर्ष के भीतर राज्य का बहुत बड़ा रकम लगभग 70 लाख खर्च कर दिये गये। किंतु कई कारणों से यह योजना भी असफल हो गई।

mijkDr foवराण से स्पश्ट है कि मुहम्मद बिन तुगलक ने अपने शासनकाल में कई योजनाएं बनाई जो पूर्ण रूप से असफल हुई। इतिहास में उसकी योजनाओं को काल्पनिक योजनायें कहकर आलोचना की गई है। परंतु गंभीरता से विचार करने पर पता चलता है कि वह असाधारण योग्यता तथा नवीन बातों को सोचने वाला उत्साह ही शासक था। परन्तु इन योजनाओं के क्रियान्वयन में उसने भारी भूले की। इसलिए लेनपूल ने लिखा है –''अपने उत्तम उद्दे”यों और उच्च विचारों के होते हुए भी, संतुलन अथवा धैर्य और यथोचित भावों के अभाव के कारण मुहम्मद तुगलक पूर्णतः असफल हुआ।''

4-5 izxfr leh{kk **(Check your progress)**

¼d½ fuEufyf[kr iz”uksa dks [kkyh LFkku esa lgh mÙkj fy[ksa ¼&

(Fill in the blanks based Questions)

(1) कुतुबद्दीन ऐबक .... का गुलाम था।

(2) दिल्ली सल्तनत के.................................. शासन ने इक्ता व्यवस्था का प्रचलन किया।

(3) अलाउद्दीन खिलजी के काल में हजार दिनारी .... को कहा जाता था।

(4) सिकन्दर द्वितीय (सानी) की उपाधि .... सुल्तान ने धारण की।

(5) बलबन के काल में दीवान–ए–अर्ज .... था।

(6) .... सुल्तान ने किलोखरी को अपनी राजधानी बनाया।

(7) ब्राह्मणों पर जजिया कर लगाने वाला दिल्ली का सुल्तान .... था।

(8) अफ्रीकी यात्री इब्नबतूता....................................... के काल में आया था।

(9) दिल्ली में प्रथम अफगान राज्य का संस्थापक .... था।

(10) दिल्ली सल्तनत की राजधानी को लाहौर से दिल्ली लाने वाला सुल्तान .... था

¼[k½ lR; ;k vlR; dFku vk/kkfjr iz”u **(True or False statement based Questions)**

(1) फीरोज तुगलक पहला शासक था जिसने राज्य की खर्च पर हज की व्यवस्था किया था। (   )

(2) मुहम्मद तुगलक द्वारा स्थापित दीवान–ए–अमीर को ही सैन्य विभाग था (   )

(3) 'गुलरूखी' उपनाम से कविता लिखने वाला दिल्ली सल्तनत का सुल्तान इब्राहिम लोदी था।

( )

(4) इल्तुतमि”ा द्वारा गठित 40 तुर्क सरदारों के गुट तुर्कान–ए– चिहालगानी को बलबन ने समाप्त कर दिया। ( )

(5) कुतुबद्दीन ऐबक को अपनी उदारता एवं दानी प्रवृति के कारण लाखबख्श (लाखों का दानी) कहा गया है। ( )

(6) सुल्तान के अधिकार को कम करने के लिए तुर्क सरदारों ने एक नये पद 'नाईब' अर्थात् नाईब–ए–मुमलिकात का सृजन रजिया सुल्तान के काल में किया था। ( )

(7) अलाउद्दीन खिलजी के बचपन का नाम अली तथा गुरू”ास्प था। ( )

(8) मुहम्मद बिन तुगलक के शासन काल में ही दक्षिण में 436 ई. में हरिहर एवं बुक्का नामक दो भाइयों ने विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की। ( )

(9) दिल्ली सल्तनत के सैय्यद व”ा का संस्थापक खिज्र खाँ था। ( )

(10) दिल्ली सल्तनत के 1206 ई. से 1526 ई. तक के शासनकाल में कुल 5 राजवं”ाों में खिलजी वं”ा वालों ने सबसे अधिक समय तक राज किया। ( )

4-6- lkjk”k (Summary)

- दिल्ली सल्तनत का संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक मुहम्मद गोरी का गुलाम था।
- दिल्ली सल्तनत 1206 ई. से लेकर 1526 ई. तक चला।
- दिल्ली सल्तनत पर कुल 5 राजवं”ाों ने राज किया।
- दिल्ली सल्तनत पर सबसे अधिक तुगलक वं”ा का शासन रहा।
- कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा स्थापित वं”ा का नाम–गुलाम वं”ा है।
- गुलाम वं”ा को ममलूक वं”ा के नाम से भी जानते है।
- कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमि”ा तथा बलबन इन तीनों तुर्क शासकों का जन्म स्वतंत्र माता–पिता से हुआ था अतः इन्हें प्रारंभिक तुर्क शासक व ममलूक शासक भी कहा जाता था।
- ऐबक का राज्याभिषेक 1206 ई. में लाहौर में हुआ था।
- वह 'मलिक' एवं 'सिपहसालार' की पदवी धारण कर गद्दी पर बैठा।
- लाखबख्श (लाखों का दानी) – ऐबक की उपाधि थी।
- ऐबक के दरबार में विद्वान हसन निजामी एवं फख–ए–मुदबिबर को संरक्षण प्राप्त था।
- ऐबक 1206–1210 ई. तक शासन रहा।
- इल्तुतमि”ा इल्बरी तुर्क था।

- इल्तुतमि”ा कुतुबुद्दीन ऐबक का दामाद था।
- ऐबक की मृत्यु के समय वह बदायूँ का सूबेदार (गवर्नर) था।
- इल्तुतमि”ा ने सल्तनत की राजधानी को लाहौर से दिल्ली लाया था।
- इसे दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- इसे गुलाम का गुलाम कहा जाता है।
- तुर्कान–ए–चिहलगानी/चरगान – 40 तुर्क सरदारों का एक गुट या संगठन इल्तुतमि”ा ने बनाया।
- चंगेज खाँ – मंगोल आक्रमणकारी था।
- चंगेज खाँ – इल्तुतमि”ा के काल में भारत में सिंध तक आ गया था।
- 1229 ई. में इल्तुतमि”ा को बगदाद के खलीफा से खिलअत एवं प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ।
- शुद्ध अरबी सिक्के चलाने वाला इल्तुतमि”ा पहला तुर्क सुल्तान था।
- इसके दो महत्वपूर्ण सिक्के थे – चाँदी का 'टंका' तथा तांबे का 'जीतल'।
- इल्तुतमि”ा ने 'इक्ता व्यवस्था' का प्रचलन किया।
- इक्ता व्यवस्था के अंतर्गत सभी सैनिकों व गैर सैनिक अधिकारियों को नकद वेतन के बदले भूमि प्रदान की जाती थी।
- इक्ता एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ भूमि है। इस भूमि को लेने वाले 'इक्तादार' कहलाते थे।
- दिल्ली का प्रथम शासक था जिसने सुल्तान की उपाधि धारण की।
- घंटी बजाकर न्याय माँगने की व्यवस्था करने वाला सुल्तान इल्तुतमि”ा था।
- इसके काल में न्याय चाहने वाला व्यक्ति लाल वस्त्र धारण करता था।
- इल्तुतमि”ा 1210 से 1236 ई. तक सल्तनत का शासन रहा।
- इल्तुतमि”ा की मृत्यु के बाद उसका बड़ा पुत्र रूक्नुद्दीन फिरोज जो विलासी प्रवृति का व अयोग्य था शासक बना।
- फिरोज के शासनकाल में सत्ता की बागडोर उसकी मां शाहतुर्कान के हाथों में थी।
- रजिया दिल्ली सल्तनत की प्रथम तुर्क महिला शासिका थी।
- वह 1236 से 1240 ई. तक दिल्ली की शासिका रही।
- वह दिल्ली की जनता तथा अमीरों के सहयोग से शासिका बनी।
- वह इल्तुतमि”ा की बेटी थी।
- रजिया ने पर्दा प्रथा को त्याग दिया और पुरूषों के समान कुबा (कोट) और कुलाह (टोपी) पहनकर दरबार में बैठती थी तथा शासन कार्य संभालती थी।
- वजीर निजाम–उल–मुल्क जुनैदी ने उसकी राज्यारोहण का विरोध किया था और उसके विरूद्ध अमीरों के विद्रोह का समर्थन किया था।
- उसके पति का नाम अल्तूनिया था।

- 1240 ई. में कैथल (हरियाणा) में उसकी हत्या कर दी गयी।
- मुईजुद्दीन बहराम''ाह (1240–1242 ई.) के शासन काल में सुल्तान के अधिकार को कम करने के लिए तुर्क सरदारों ने एक नये पर 'नाइब' अर्थात नाइब–ए–मुमलिकात का सृजन किया।
- अलाउद्दीन मसूद''ाह (1242–1246 ई.) दिल्ली का शासक बना जो रूकनुद्दीन फिरोज''ाह का पुत्र तथा इल्तुतमि''ा का पौत्र था।
- वह अयोग्य व नाममात्र का शासक था। वास्तविक सत्ता वजीर मुहाजुबुद्दीन के हाथों में थी जो तजाकिस्तान का गैर–तुर्क था।
- इसके काल में हाँसी का इक्ता प्राप्त बलबन सबसे प्रमुख व्यक्ति बन गया।
- नासिरूद्दीन महमूद (1246–1266 ई.) के शासन काल में समस्त शक्ति बलबन के हाथों में थी।
- 1249 ई. में उसने बलबन को 'उलगू खाँ' की उपाधि प्रदान की और सेना पर पूर्ण नियंत्रण के साथ 'नायबे मुमलकात' का पद दिया।
- नसिरूद्दीन महमूद की मृत्यु के बाद गयासुद्दीन बलबन 1266 से 1286 ई. तक दिल्ली का शासक रहा।
- बलबन पहला सुल्तान था जिसने राजत्व के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।
- उसने राजत्व को नियाबते खुदाई (ई''वर द्वारा प्रदत्त) तथा राजा को जिल्ले–इलाही (ई''वर की छाया) कहा है।
- बलबन ने अपने शासनकाल में मद्यपान का निषेध कर दिया जाता था।
- उसने फारसी (ईरानी) परंपरा सिजदा (घुटने पर बैठकर सम्राट के सामने सिर झुकाना) एवं पाबोस(पाँव को चूमना) के प्रचलन को प्रारंभ किया।
- बलबन ने फारसी नववर्ष नौरोज उत्सव मनाने की प्रथा को भारत में प्रारंभ किया था।
- उसने 'दीवान–ए–अर्ज' नाम से सैन्य विभाग का गठन किया।
- सैनिकों को नकद वेतन देना आरंभ किया।
- सैना का पुनर्गठन के लिए वृद्ध सैनिकों को पें''ान देकर मुक्त करने की योजना चलायी।
- इल्तुतमि''ा के चालीसा दल को पूर्णतः समाप्त कर दिया।
- उसने अपने विद्रोहियों के प्रति 'रक्त और लौह' की नीति का पालन किया। इसके अंतर्गत अपराधियों का बर्बरता पूर्वक हत्या कर दी जाती थी।
- इस वं''ा का अंतिम शासक शम्सुद्दीन क्यमर्स था।
- यह वं''ा 1206 से लेकर 1290 ई. तक चला।
- दिल्ली सल्तनत का दूसरा वं''ा खिलजी वं''ा का शासन 1290–420 ई. तक रहा।
- दिल्ली सल्तनत पर खिलजी वं''ा की स्थापना को इतिहास में खिलजी क्रांति के नाम से जाना जाता है।
- इस वं''ा का संस्थापक – जलालुद्दीन फिरोज खिलजी था।
- उसने किलोखरी (दिल्ली के निकट को अपनी राजधानी बनाया।
- वह 1290 से 1296 ई. तक दिल्ली का शासक रहा।

- उसने अपने शासनकाल में इस्लाम धर्म ग्रहण कर भारत में बसने को इच्छुक मंगोलो को 'नवीन मुसलमान' के नाम से दिल्ली के समीप मुगरलपुर/मंगोलपुरी नाम से बस्ती बनाकर बसाई।
- अपने उदार चाचा जलालुद्दीन फिरोज खिलजी की हत्या कर अलाउद्दीन खिलजी 1296 ई. में दिल्ली की गद्दी पर बैठा।
- अलाउद्दीन के बचपन का नाम – अली तथा गुर’’ास्प था।
- उसका राज्याभिषेक दिल्ली में स्थित बलबन के लाल महल में हुआ था।
- खिलजी वं’’ा ही नहीं दिल्ली सल्तनत का सबसे प्रसिद्ध शासक अलाउद्दीन खिलजी ने सिकन्दर द्वितीय (सानी) की उपाधि ग्रहण किया और इसका उल्लेख अपने सिक्कों पर करवाया।
- उसने दान, उपहार एवं पें’’ान के रूप में अमीरों को दी गयी भूमि को जब्त कर लिया।
- अमीरों के आपस में मेल–जोल, सार्वजनिक समारोहों एवं वैवाहिक समारोहों पर प्रतिबंध लगा दिया।
- सर्वप्रथम दक्षिण भारत के राज्यों को सल्तनत में मिलाने का श्रेय अलाउद्दीन खिलजी को जाता है।
- अलाउद्दीन खिलजी ने शासन में इस्लाम के सिद्धान्तों को प्रमुखता न देकर राज्यहित को सर्वोपरि माना।
- मलिक काफूर हिन्दू हिजड़ा था।
- गुजरात विजय के दौरान नुसरतखाँ ने उसे एक हजार दिनार में खरीदकर अलाउद्दीन को सौंपा।
- इसलिए मलिक काफूर को 'हजार दिनारी' के नाम से भी जानते है।
- मलिक काफूर ने दक्षिण भारत के विजय अभियान का नेतृत्व किया था।
- वह वि’’ाल स्थायी सेना का गठन करने वाला पहला सुल्तान था।
- सैनिकों की सीधी भरती एवं नकद वेतन देने की व्यवस्था की।
- घोड़ों को दागने एवं सैनिकों के हुलिया लिखने की व्यवस्था भी थी।
- बाजार नियंत्रण अलाउद्दीन के आर्थिक सुधारों में सबसे महत्वपूर्ण था।
- बजार नियंत्रण अधिकारी दीवान–ए–रियासत कहलाता था।
- शहना–ए–मंडी बाजार का अधीक्षक होता था।
- मध्यकालीन भारतीय इतिहास में अलाउद्दीन खिलजी को रा’’ानिंग व्यवस्था आरंभ करने का श्रेय जाता है।
- सराय–ए–अदल ऐसा बाजार था जहाँ पर वस्त्र, शक्कर, जड़ी–बुटी, मेवा, तेल व अन्य निर्मित वस्तुएं बिकने के लिए आती थीं।
- इसके काल में 'दीवाने मुस्तखराज' कर विभाग था।
- भूमिकर पैदावार का 50 प्रति’’ात होता था जिसे 'खराज' के नाम से जानते थे।
- 'जजिया' कर गैर मुस्लिमों से लिया जाता था।
- 'जकात' मुस्लिमों से लिया जाने वाला धार्मिक कर था जो आय का 1/40 भाग अर्थात 2.5 प्रति’’ात होता था।
- 'बैरीद' गुप्तचर अधिकारी को कहते थे।
- खिलाफत की उपेक्षा करने वाला खिलजी वं’’ा का शासक कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी था।

- तुगलक वं"ा की स्थापना गयासुद्दीन तुगलक ने की।
- इसका असली नाम गाजी मलिक था।
- नहर का निर्माण करवाने वाला पहला सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक को ही माना जाता है।
- इसने अलाउद्दीन खिलजी के विपरीत अमीरों को भूमि पुनः लौटा दी।
- सूफी संत निजामुद्दीन औलिया से विवाद के लिए भी उसको जाना जाता है।
- 'हुनूज दिल्ली दूरस्त' (दिल्ली अभी दूर है) सूफी संत औलिया का यह कथन गयासुद्दीन तुगलक के लिए ही कहा गया था।
- गयासुद्दीन तुगलक के बाद 425 ई. में मुहम्मद बिन तुगलक दिल्ली का सुल्तान बना।
- सभी सुल्तानों में सर्वाधिक िाक्षित, विद्वान, योग्य, कलाप्रेमी किन्तु सनकी व पागल के रूप में उसको जाना जाता है।
- उसके बचपन का नाम जूना खाँ था।
- उसके काल में 'अमीर–ए–कोही' कृषि विभाग था।
- 426–427 ई. में उसने राजधानी परिवर्तन – दिल्ली से देवगिरी (दोलबाद) की योजना बनायी जो असफल रहा।
- 429–430 ई. में सांकेतिक/ प्रतीकात्मक सिक्कों का प्रचलन किया।
- यह सांकेतिक सिक्का तांबा या पीतल का था।
- इसके काल में ही अफ्रीकी यात्री इब्नबतूता मौरक्को दे"ा से 433 ई. में भारत की यात्रा पर आया था।
- इब्नबतूता को दिल्ली का काजी नियुक्त किया गया।
- इसकी पुस्तक का नाम 'रेहला' है।
- इसके शासनकाल में दिल्ली सल्तनत का विघटन आरंभ हो गया।
- इसके शासनकाल में ही दक्षिण भारत में 436 ई. में महान विजयनगर साम्राज्य तथा बहमनी साम्राज्य (447 ई. में) स्वतंत्र राज्य की स्थापना हुई थी।
- 451 ई. में थट्टा के विद्रोह के समय मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु हो गयी।
- मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु के बाद फिरोज"ाह तुगलक 451–488 ई. तक दिल्ली का शासक रहा।
- उसने सैनिकों को पुनः जागीर के रूप में वेतन देना आरंभ करके सैन्य पदों का वं"ानुगत बना दिया।
- उसने ब्राह्मणों से भी 'जजिया कर वसूला।
- सर्वाधिक नहरों का निर्माण करने वाला सुल्तान के रूप में फिरोज"ाह तुगलक को जाना जाता है।
- उसने हिसार, फिरोजाबाद (दिल्ली), फतेहाबाद, जौनपुर तथा फिरोजपुर नये नगर बसाये।
- उसके काल में मुस्लिम अनाथ स्त्रियों, विधवाओं एवं लड़कियों की सहायता हेतु दीवान–ए–खैरात विभाग बनाये गये।
- 'दीवान–ए–बंदगान' दासों की देखभाल हेतु था।
- उसकी आत्मकथा का नाम 'फतूहा–ए–फिरोज"ाही' है।

- उसके काल का विवरण हमें बरनी कृत 'फतवा–ए–जहाँदारी' तथा 'तारीख–ए–फिरोज”ाही' से प्राप्त होता है।
- तुगलक वं”ा के शासन नासिरूद्दीन महमूद के समय में तैमूर लंग ने 498 ई. में दिल्ली पर आक्रमण किया।
- तुगलक वं”ा के बाद 1414 से 1450 ई. तक दिल्ली पर सैय्यद वं”ा का शासन रहा।
- सैय्यद वं”ा का संस्थापक – खिज्र खाँ था।
- सैय्यद वं”ा का शासन 1414 –1450 ई. तक रहा।
- लोदी वं”ा, दिल्ली सल्तनत का अंतिम वं”ा था।
- इसका संस्थापक बहलोल लोदी अफगानी था।
- लोदी वं”ा 1451 से 1526 ई. तक चला।
- इस वं”ा का प्रसिद्ध शासक सिकंदर शाह लोदी हुआ।
- सिकंदर लोदी ने 1504 ई. में आगरा नगर की स्थापना की और इसे अपनी राजधानी बनाया।
- इसने 'गजेसिकन्दरी' नाम से भूमि मापन के लिए एक प्रमाणिक पैमाने का प्रचलन करवाया।
- वह फारसी भाषा का ज्ञाता था तथा 'गुलरूखी' उपनाम से कविता लिखता था।
- इस वं”ा का अंतिम शासक इब्राहिम लोदी (1517–1526 ई.) था
- इब्राहिम लोदी को पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने हराया।
- इस प्रकार पानीपत के प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 के द्वारा बाबर ने इब्राहिम लोदी को हराकर एक नवीन वं”ा मुगल वं”ा की नींव रखी।
- 1206 ई. से लेकर 1526 ई. तक चले आ रहे इस वि”ाल साम्राज्य के पतन के कारण थे –

  स्वेच्छाचारी शासन, सुल्तानों का धर्मतंत्र, मंगोलों के आक्रमण, राजसिंहासन के लिए आपसी संघर्ष, सल्तनत एक सैनिक राज्य, सल्तनत की वि”ालता, मुहम्मद तुगलक की असफल योजनाये, बाद के तुगलक सुल्तानों की अयोग्यता, तैमूर का आक्रमण, इब्राहिम लोदी की अयोग्यता, बाबर का आक्रमण आदि।

4-7- l:d:r&l:pd (Key-Words)

- ममलूक – अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है अपनाया गया। इसका प्रयोग प्रायः उन तुर्की दासों के लिए किया जाता था जो घर में काम करने की अपेक्षा सैनिक सेवा करते थे।
- चौगान – पोलो खेल
- लाखबख्श – लाखों का दान करने वाला।
- तुर्की – यूरे”िाया में स्थित एक दे”ा है। यहां के निवासी तुर्क कहे जाते है और इनकी भाषा तुर्की कहलाती है।
- इलबरी/अलबरी – तुर्कों का एक कबीला।
- खिल्लत/खिलअत – पो”ाक।
- मंगोल – मध्य ए”िाया और पूर्वी ए”िाया में रहने वाली एक जाति, जिसने वि”व इतिहास को अत्यधिक प्रभावित किया।
- मकबरा – कब्र पर बनी हुई इमारत या गुंबद।

- अक्ता – जागीर अर्थात् वेतन के बदले सैनिकों और गैर सैनिक अधिकारियों को दी जाने वाली भूमि का टुकड़ा।

4-8- Lo&eY;kdu ijh{kk (Self Assessment Test)(SAT)

(क) वस्तुनिश्ठ प्र”u ¼cgqfodYih iz”u½ (objective Question) (Multiple Choice Qyestions) :-

(इनके उत्तर दायीं ओर कोश्ठक में अंकित है)

1 चहलगानी अथवा चालीस की शक्ति को किस सुल्तान ने समाप्त किया।

(i) बलबन (ii) इल्तुतमि”ा (i)

(iii)अलाउद्दीन खिलजी (iv) मुहम्मद तुगलग

2 अलाउद्दीन खिलजी के समय में भूमि कर उपज का कितना भाग लिया जाता था।

(i) 1/3 भाग (ii) 1/4 भाग (iii)

(iii) 1/2 भाग (iv) 1/6 भाग

3 तैमूर ने भारत पर आक्रमण किया

(i) 448 ई. (ii) 478 ई. (iv)

(iii) 1518 ई. (iv) 498 ई.

4 अपने विद्रोहियों के प्रति किस सुल्तान ने 'रक्त एवं लौह' की नीति अपनाई।

(i) इल्तुतमि”ा (ii) बलबन (ii)

(iii)रजिया बेगम (iv) ऐबक

5 चंगेज खाँ कौन था?

(i) मंगोल (ii) तुर्क (i)

(iii) अरबी (iv) अफगानी

6 दिल्ली सल्तनत का वह प्रथम सुल्तान कौन था जिसने स्थायी सेना रखी?

(i) इल्तुतमि”ा (ii) बलबन (iii)

(iii)अलाउद्दीन खिलजी (iv) मुहम्मद तुगलग

7 दिल्ली सल्तनत के किस शासक को इक्ता प्रथा शुरू करने का श्रेय जाता है?

(i) बलबन (ii) कुतुबुद्दीन ऐबक (iii)

(iii) इल्तुतमि”ा (iv) अलाउद्दीन खिलजी

8 सल्तनत काल में किस सुल्तान ने सर्वप्रथम 'सिचाई कर' लगाया?

(i) अलाउद्दीन खिलजी (ii) गयासुद्दीन तुगलक (iv)

(iii)मुहम्मद तुगलक (iv) फिरोज तुगलक

9 ब्राह्मणों पर जजिया कर सर्वप्रथम किस सुल्तान ने लगाया ?

(i) बलबन (ii) अलाउद्दीन खिलजी (iv)

(iii)मुबारक”ाह खिलजी (iv) फिरोज तुगलग

10 निम्न में से किसकी स्थापना फिरोज तुगलक द्वारा की गयी?

1. जौनपुर 2. दौलताबाद 3. हिसार 4. फिरोजपुर

5. फिरोजाबाद 6. तुगलकाबाद 7. फतेहाबाद

(i) 1,3,4,5,7 (ii) 1,2,5,6,4 ( )

(iii) 1,2,3,5,6 (iv) 3,4,5,6,7

4-9- i xfr leh{kk gsr i ”ukÙkj (Answers to check your Progress)

4-5 ¼d½ dk mÙkj ¾&

1. मुहम्मद गोरी 2. इल्तुतमि”ा 3. मलिक काफूर

4. अलाउद्दीन खिलजी 5. सैन्य विभाग 6. गयासुद्दीन तुगलक

7. फिरोज तुगलक 8. मुहम्मद बिन तुगलक 9. बहलोल लोदी

10. इल्तुतमि”ा

4-5 ¼[k½ dk mÙkj ¾&

1. सत्य 2. असत्य 3. असत्य

4. सत्य 5. सत्य 6. असत्य

7. सत्य 8. सत्य 9. सत्य

10. असत्य

4-10- lanHk xzFk ,oa lgk;d i Lrd@lgk;d v/;;u lkexh (References/Suggested Reading)

- vfouk”k pUn vjkMk ¼,-lh-vjkMk½ & i kphu ,oa i o e/;dkyhu Hkkjr dk bfrgkl ¼i kjEHk l 1526 bz- rd½] i nhi ifCydS”kUt vi k thV f”kryk efUnj] tkyU/kj ¼i tkc½] r rh; lLdj.k ¼ 1987
- e/;dkyhu Hkkjr i Fke [kM ¼750&1540½ & gfj”kpUn oek] fgUnh ek/;e dk;kUo; funs”kky; fnYyh fo”ofo|ky;] 20 Qjojh] 1985
- भारतीय इतिहास एवं राश्ट्रीय आन्दोलन– द्वितीय संस्करण : जून, 2018 – दृश्टि पब्लिके”kUl 641] i Fke ry] Mk- e [kthZ uxj] fnYYkh
- lkekU; v/;;u & ;fud ifCyds”kUl] 35@1] tokgj yky uxg: jkM] cVyj ekdZV] tktkZ Vkmu & bykgkckn ¼mÙkj i n”k½
- lkekU; v/;;u & LiDVe (Spectrum) ifcYd”kUl] vgkj uxj] fnYyh

B.A. HISTORY PART-1, SEMESTER-II	
COURSE CODE :HIST 103	AUTHOR AND UPDATED : MOHAN SINGH BALODA
LESSON NO. 5	
Ckgeuh vkSj fot;uxj lkezkT; **(Bahmani and vijaynagar kingdoms)**	

v/;k; lajpuk **(Lesson Structure)**

5-1- अधिगम उद्दे□य **(Learning Objectives)**

ifjp; **(Introduction)**

5-3- fo"k; oLrq dk eq[; fcUnq **(Main Body of Text)**

5-3-1- fot;uxj lkezkT; ¼1336&1565½ dk mRFkkuA

(Emergence of vijaynagar kingdoms)

5-3-2- cgeuh lkezkT; ¼1346&1518 bZ-½ dk mn;A

(Rise of Bahmani kingdom)

5-3-3- cgeuh lkezkT; dk iru

(Downfall of Bahmani Kingdom)

5-3-4- fot;uxj&cgeuh dk la?k"kZA

(Struggle between Vijaynagar and Bahman5-4- fo"k; oLrq dk iqu% iLrqrhdj.k **(Further Main body of the text)**

5-4-1 विजयनगर साम्राज्य : राज्य व्यवस्था व प्र□ासन

(Polity and Administratation of Vijaynagar kingdom)

5-4-2- fot; uxj lkezkT; dh vFkZ0;oLFkkA

(Economy of Vijaynagar kingdom)

5-4-3- विजय नगर साम्राज्य : सामाजिक द□ाा

(Vijaynagar kingdom : social condition)

5-4-4- fot;uxj lkezkT; dk iruA **(Downfall of vijaynagar empire)**

5-5- izxfr leh{kk **(Check your progress)**

5-6- lारां□ा **(Summary)**

5-7- ldr&lpd **(Key-Words)**

5-8- Lo&eY;kdu ijh{kk **(Self Assessment Test)(SAT)**

5-9- **प्रगति समीक्षा हेतु प्र□नोत्तर (Answers to check your Progress)**

5-10- lnHk xFk ,o lgk;d iLrd@lgk;d v/;;u lkexh

(References/Suggested Readings)

5-1- **अधिगम उद्दे□य (Learning Objectives) :-** bl v/;k; d v/;;u d mijkr fo|kFkh fuEu ;kX;rk dk ikIr dj yx &

(i) विजयनगर व बहमनी साम्राज्य की स्थापना व इनके उत्थान की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

(ii) बहमनी साम्राज्य के पतन के कारणों को बता सकेंगे।

(iii) विजयनगर –बहमनी के बीच संघर्ष क्रम का वर्णन कर सकेंगे।

(iv) विजयनगर साम्राज्य के प्रशासन व राज्य–व्यवस्था का विस्तार से व्याख्या कर सकेंगे।

(v) विजयनगर साम्राज्य के समाज पर पाठक आपस में चर्चा कर सकेंगे।

(vi) विजयनगर साम्राज्य के पतन के कारणों को गिना (Count) सकेंगे।

5-2- ifjp; **(Introduction) :-** दक्षिण भारत में प्रांतीय राजवंशों के उदय के क्रम में दो तरह के स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ। इस क्रम में प्रथम चरण के अंतर्गत वे राज्य शामिल है जिनका उदय चालुक्य एवं चोल जैसे साम्राज्यों के पतन के फलस्वरूप हुआ। जब चालुक्य एवं चोल जैसे केन्द्रीय सत्ता कमजोर हुई तो इनके अधीनस्थ शासक अर्थात जो सामंत के रूप में कार्य कर रहे थे ने मौका पाकर अपने स्वतंत्र राज्य की घोषणा कर दी। इन राज्यों के अवशेष पर दक्षिण भारत में जिन चार स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ वे थे – देवगिरी के यादव, वारगंल के काकतीय, द्वार समुद्र के होयसल एवं मदुरई के पाड्ंय।

स्वतंत्र राज्यों की उदय के दूसरे चरण के अंतर्गत 1325–1350 ई. के बीच मुहम्मद बिन तुगलक की गलत नीतियों के कारण दिल्ली सल्तनत का विघटन होने लगा। केन्द्रीय सत्ता कमजोर होने लगी। लगातार अत्याचार बढ़ रहे थे। इससे दक्षिण भारत में निरंतर विद्रोह और अशांति का वातावरण बन रहा था। ऐसे में क्षेत्रीय राज्यों ने अपनी स्वतंत्र पहचान बनानी शुरू कर दी। इस समय दक्षिण में चार स्वतंत्र राज्यों –माबर, खानदेश बहमनी एवं विजयनगर का आविर्भाव हुआ। इनमें से बहमनी एवं विजयनगर अत्यंत प्रमुख राज्य थे। जिनका दक्षिण भारत के राज्यों में विशेष महत्व है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि बहमनी साम्राज्य की स्थापना मुहम्मद बिन तुगलक के काल में दक्षिण में निरंतर विद्रोह और अंशाति का परिणाम थी। मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में व्याप्त अत्याचारों के विद्रोहस्वरूप दक्षिण भारत में उसके एक अधिकारी जफर खां अराजकता की स्थिति का लाभ उठाकर विद्रोह कर दिया। जफर खां ने दिल्ली की शाही सेना को पराजित कर अलाउद्दीन बहमन शाह की पदवी धारण की और इस प्रकार एक स्वतंत्र बहमनी साम्राज्य की स्थापना हुई। बहमनी साम्राज्य की स्थापना 1346–47 ई. में हुई। इस दौरान उसने कोलगिरी, कल्याणी और बीदर को जीतकर अपने साम्राज्य का विस्तार किया। इसने गुलबर्गा को अपनी राजधानी बनाया। वारंगल के शासक को भी उसने अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य कर दिया। बहमनशाह राज्य विस्तार के लिए उदार नीति अपनाते हुए अपने राज्य में जजिया कर की वसूली पर रोक लगा दी। बहमनशाह ने आर्थिक विकास की प्रक्रिया के अंतर्गत वाणिज्य एवं व्यापार को बढ़ावा दिया। बहमनी राजवंश में बहमनशाह के अतिरिक्त 13 अन्य सुल्तानों ने राज किया। बहमनी की प्रारंभिक राजधानी गुलबर्गो को कालातंर में स्थानांतरित कर बीदर में स्थापित कर दिया गया था। बहमनी साम्राज्य का अंतिम शासक शिहाबुद्दीन महमूद था जिसने 1518 ई. तक राज किया। इसकी मृत्यु के बाद बहमनी साम्राज्य 5 राज्यों–बीजापुर, अहमदनगर, बरार, गोलकुण्डा तथा बीदर में विभाजित हो गया। बहमनी राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था का मूल आधार निरकुंश राजतंत्र की व्यवस्था था। इस राज्य के अंतर्गत सुल्तान केन्द्रीय शासन के साथ–साथ न्याय विभाग व सैन्य विभाग का भी पदेन प्रधान होता था। बहमनी साम्राज्य के आरंभिक सुल्तानों ने इस्लामी शिक्षा को प्रोत्साहन दिया। कालांतर में शासकों ने परिस्थितियों को समझते हुए इसमें सुधार किया और हिन्दुओं को भी महत्व देना आरंभ किया। बहमनी साम्राज्य के प्रारंभिक शासकों ने मुस्लिम स्थापत्य कला को महत्व दिया लेकिन 1397 ई. के बाद शासकों ने हिंदू–मुस्लिम मिश्रित स्थापत्य को प्रोत्साहन दिया। दक्षिण भारत में बहमनी साम्राज्य के समानांतर मुहम्मद बिन तुगलक के काल में ही स्थापित विजयनगर साम्राज्य का शासन भी चल रहा था। बहमनी साम्राज्य वाले निरंतर विजयनगर साम्राज्य के साथ संघर्षरत रहे। बहमनी और विजयनगर साम्राज्य का मध्य कालीन भारत के इतिहास में दिलचस्प इतिहास रहा है।

विजयनगर साम्राज्य के संस्थापक हरिहर और बुक्का दोनों भाई वारंगल के काकतीयों के सामंत थे। तुगलकों ने 1323 ई. में वारंगल पर आक्रमण कर उसे अपने कब्जे में कर लिया। इस कारण दोनों भाई कांपिली में आकर बस गए। इन दोनों भाईयों ने मुहम्मद बिन तुगलक के एक विद्रोही को शरण दिया था जिससे क्रोधित होकर मुहम्मद बिन तुगलक कांपिली पर आक्रमण कर दिया और हरिहर तथा बुक्का को बंदी बनाकर दिल्ली ले जाया गया जहाँ इन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार कर सुल्तान के विश्वास पात्र बन गये। इसके बाद हरिहर और बुक्का को विद्रोहियों के दमन के लिए सल्तनत की सेना के साथ दक्षिण भारत भेजा गया। यहां इनका संपर्क गुरू विधारण्य से हुआ। इनके प्रभाव में आकर हरिहर और बुक्का ने दक्षिण भारत में फैली अराजकता और तुर्क सत्ता विरोधी लहर का फायदा उठाते हुए स्वतंत्र राज्य विजयनगर साम्राज्य की घोषणा कर दी। और इस प्रकार हरिहर और बुक्का ने अपने पिता की स्मृति में संगम वंश की नींव रखी। जिससे 1336 ई. में विजय नगर साम्राज्य की स्थापना हो गई जिसका प्रथम वंश संगम वंश था। विजयनगर साम्राज्य पर 4 राजवंशों संगम वंश, सालुव वंश, तुलुव वंश और अराविडु वंश ने 300 वर्षो से अधिक समय तक राज किया। विजयनगर के शासकों में कृष्णदेव राय जो तुलुव वंश से संबंधित था। इस साम्राज्य का सबसे प्रसिद्ध एवं शक्तिशाली शासक था। उसने 1509 ई. से 1529 ई. तक शासन किया। कृष्णदेव राय ने अपने शासनकाल के दौरान न केवल विजयनगर साम्राज्य का विस्तार ही किया अपितु इसे अच्छी प्रकार से संगठित भी किया। इसके शासन काल में विजयनगर साम्राज्य अपनी उन्नति के शिखर पर था। 1565 ई. में अहमनगर, बीजापुर, गोलकुंडा एवं बीदर की संयुक्त सेनाओं ने तालीकोटा अथवा राक्षसी तांगडी की लडाई में

विजयनगर साम्राज्य की सेना को करारी पराजय दी। वास्तव में यह लड़ाई विजयनगर साम्राज्य के लिए बहुत घातक साबित हुई।

इसके बाद ही इस साम्राज्य के अंतिम वंश अराविडु ने जैसे–तैसे राज किया और अंततः 1674 ई. में इस महान साम्राज्य का अंत हो गया।

विजय नगर साम्राज्य के शासकों जिन्हें राय कहा जाता था ने एक कुशल शासन व्यवस्था की स्थापना की थी। इसका प्रमुख उद्देश्य प्रजा की भलाई करना था। विजयनगर साम्राज्य की राजधानियाँ भी बदलती रहीं जिनका क्रम है –

आनेगोंडी, विजयनगर (हम्पी), पेनुकोंडा और चंद्रगिरी। विजयनगर का वर्तमान नाम हम्पी है जो कर्नाटक में स्थित है। विजयनगर साम्राज्य के शासकों ने सुव्यवस्थित शासन प्रणाली के साथ–साथ समृद्ध वाणिज्य–व्यापार की नीति के द्वारा सुदृढ़ आर्थिक विकास की नीति को अपनाया तथा सामाजिक–सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा दिया। कृषि इनकी अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार था। विजयनगर साम्राज्य के सबसे प्रतापी शासक कृष्णदेवराय के दरबार में ही तेलगु साहित्य के आठ विद्वान अष्टदिग्गज को आश्रय प्राप्त था। इस काल में क्षेत्रीय भाषा तेलुगू के साथ–साथ संस्कृत भाषा का भी उत्थान हुआ। कृष्णदेव राय ने एक से बढ़कर एक मन्दिर के निर्माण के द्वारा स्थापत्य कला के विकास को भी बढ़ावा दिया।

कृष्णदेवराय को उसकी सांस्कृतिक उपलब्धियों के कारण आंध्रभोज कहा जाता है। उसका काल तेलुगू साहित्य का कलासिकल युग माना जाता है। इस प्रकार स्वतंत्र प्रांतीय राज्य के विकास क्रम में विजयनगर साम्राज्य का दक्षिण भारत के सामाजिक–सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा यही कारण है कि विजयनगर साम्राज्य की राजधानी हम्पी विश्व विरासत स्थल में शामिल है जिसके दर्शन के लिए देश–विदेश से कला प्रेमी आते है। यह भारत का महत्वपूर्ण विरासत स्थल है।

5-3-1- fot ;uxj lkekT; ¼1336&1565½ dk mRFkkuA **(Emergence of vijaynagar kingdoms):-**

विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हरिहर और बुक्का नामक दो भाईयों द्वारा अपने गुरू विधारण्य की सहायता से 1336 ई. में की गई थी। इस साम्राज्य के चार राजवंशों व उनके शासकों को निम्न रेखाचित्र द्वारा दिखा सकते है।

संगम वं”ा

¼हरिहर प्रथम (1336–1356 ई.)

¼बुक्का प्रथम (1356–1377 ई.)

¼हरिहर द्वितीय (1377–1406 ई.)

¼देवराय प्रथम (1406–1422 ई.)

¼देवराय द्वितीय (1422–1446 ई.)

¼मल्लिकार्जुन (1446–1465 ई.)

¼विरूपाक्ष द्वितीय (1465–1485 ई.)

विजयनगर साम्राज्य

सालुव वं”ा

¼सालुव नरसिंह (1485–1490 ई.)

¼तिम्मा राय (1490–1491 ई.)

¼इम्माड़ी नरसिंह (1491–1505 ई.)

(वीर नरसिंह (1505–1509 ई.)

तुलुव वं”ा

(कृष्ण देवराय (1509–1529 ई.)

(अच्युत राय (1529–1542 ई.)

(वेंकट i (1542–1543 ई.)

(सदाशिव (1543–1570 ई.)

(तिरूमल (1570–1572 ई.)

(श्री रंग (1572–1585 ई.)

अराविडु वं”ा

(वेंकट ii (1585–1614 ई.)

(श्रीरंग ii (1614–1614 ई.)

(रामदेव (1614—1530 ई.)

(वेंकट iii (1630—1642 ई.)

(श्रीरंग iii (1642—1652 ई.)

विजयनगर साम्राज्य के चार वंशों और उनके भासकों का वर्णन इस प्रकार है —

संगम राजवंश (1336—1485 ई-) :— इसके प्रमुख भासक —

¼i½ gfjgj izFke ¼1336&1356 bZ-½ ¼&अपने भाई बुक्का प्रथम की सहायता से हरिहर प्रथम ने विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की थी। हरिहर प्रथम ने विजय एवं विस्तार की नीति के तहत 1346 ई. में होयसल तथा 1347 ई. में कदंबों के प्रदेशों पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। 1352—53 ई. में इसने मदुरै के सुल्तान पर आक्रमण किया। हरिहर प्रथम के काल में ही विजयनगर बहमनी संघर्ष प्रारंभ हुआ, जो अगले दो सौ वर्षो तक चलता रहा। अपने शासन काल के सातवें वर्ष में वह अपनी राजधानी आनेगोंडी से विजयनगर (हम्पी) ले आया। इसने राजा या महाराजाधिराज की उपाधि धारण नहीं की। 1347 ई में बहमनी साम्राज्य की स्थापना के बाद विजयनगर साम्राज्य का विस्तार रूक गया। 1356 ई. में हरिहर प्रथम की मृत्यु के बाद बुक्का प्रथम अगला शासक हुआ।

¼ii½ cqDdk izFke ¼1356&1377 bZ-½ ¼&इसने वेदमार्ग प्रतिष्ठापक' की उपाधि धारण की तथा विजयनगर के उभरते हुये साम्राज्य को सुदृढ़ और विस्तृत किया। इसने मदुरै को विजयनगर साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया। सर्वप्रथम बुक्का ने ही बहमनी और विजयनगर साम्राज्य के मध्य बने विवाद के कारण कृष्णा नदी को बहमनी तथा विजयनगर साम्राज्य के मध्य की सीमा माना। इसने अपनी वैदेशिक नीति का विस्तार करने के लिए एक दूतमंडल चीन भेजा। 1377 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

¼iii½ gfjgj f}rh; ¼1377&1406 bZ-½ ¼&बुक्का प्रथम के बाद गद्दी पर बैठने वाला हरिहर द्वितीय ने विजयनगर साम्राज्य को संगठित करते हुये बहमनी शासक मुजाहिदशाह के आक्रमण को विफल कर दिया। इसने कनारा मैसूर त्रिचिनापल्ली तथा काँची को जीत कर अपने राज्य में मिला लिया। इसने बहमनी से गोवा व बेलगांव को छीन लिया। साम्राज्य विस्तार की नीति के तहत श्री लंका पर भी आक्रमण किया। अपने पूर्ववर्ती शासकों के विपरीत इसने 'राजपरमेश्वर' व 'महाराजाधिराज' जैसी उपाधियाँ धारण की। ऋग्वेद के प्रसिद्ध टीकाकार सायण इसके प्रधानमंत्री थे। इसके शासनकाल में ही विजयनगर साम्राज्य में व्यापार को बढ़ावा मिलने लगा। हरिहर द्वितीय शिव के विरूपाक्ष रूप का उपासक था किंतु अन्य धर्मो के प्रति सहिष्णु था। 1406 ई. में उसकी मृत्यु हो गई। इसकी मुत्यु के बाद उसके पुत्रों में सत्ता के लिये संघर्ष छिड़ गया जिसमें अंततः देवराय प्रथम सफल रहा।

¼iv½ nsojk; izFke ¼1406&1422 bZ-½ ¼& देवराय प्रथम अपने शासन काल में तुंगभद्रा— दोआब में वर्चस्व के लिये बहमनी सुल्तान फिरोजशाह के आक्रमण का सामना करना पड़ा। इसके अतिरिक्त देवराय प्रथम को आंतरिक विद्रोह का भी सामना करना पड़ा। इसके अतिरिक्त देवराय प्रथम को आंतरिक विद्रोह का भी सामना करना पड़ा, परन्तु अंततः वह सफल रहा। देवराय प्रथम ने राज्य में सिंचाई की सुविधा के लिए तुंगभद्रा नदी पर बाँध बनाकर नहरें निकाली। उसके शासनकाल में ही इटली का यात्री निकोलो काण्टी 1420 ई. में विजयनगर की यात्रा पर आया। 1422 ई. में देवराय प्रथम की मृत्यु हो गई। देवराय प्रथम की मृत्यु के बाद वीर विजय और रामचंद्र थोड़े समय के लिये शासक बने। इसके बाद देवराय द्वितीय शासक बना।

¼v½ nsojk; f}rh; ¼1422&1446 bZ-½ ¼& देवराय द्वितीय को संगम वंश सबसे महानतम शासक माना जाता है। इसने अनेक उपाधियाँ जैसे — गजबटेकर (हाथियों का शिकारी) तथा इम्मादि देवराय आदि धारण की। इसके दरबार में

'हरविलासम्' पुस्तक के लेखक तेलुगू विद्वान श्री नाथ रहते थे जिनकी उपाधि कवि सार्वभौम (कवियों का राजा) था। देवराय द्वितीय ने सेना तथा प्रशासन का पुनर्गठन किया और भारी संख्या में मुसलमानों को अपनी सेना में शामिल किया। इसने कोदाविदु साम्राज्य को अधिगृहीत किया, उडीसा के गजपतियों के साम्राज्य पर आक्रमण किया तथा केरल के कुछ छोटे शासकों का दमन किया। इसने कृष्णा–तुंगभद्रा दोआब का क्षेत्र भी जीता।

फारसी (ईरानी) यात्री अब्दुर्रज्जाक ने इसी के शासनकाल में विजयनगर की यात्रा की थी। उसे खुरासान के सुल्तान मिर्जा शाहरूख ने अपने दूत के रूप में भेजा था। अब्दुर्रज्जाक विजयनगर को संसार के देखे और सुने नगरों में सबसे भव्य मानता है। 1446 ई. में देवराय की मृत्यु के बाद संगम वंश का पतन शुरू हो गया। देवराय द्वितीय का उत्तराधिकारी मल्लिकार्जुन था।

¼**vi**½ efYydktZu ¼1446&1465 bZ-½ ½& मल्लिकार्जुन गद्दी पर बैठा जिसे प्रौढ देवराय भी कहा जाता है। इसके काल में बहमनी के शासक अलाउद्दीन द्वितीय एवं उड़ीसा के कपिलेश्वर गजपति ने विजयनगर पर आक्रमण कर दिया। इनका युद्ध 1463 ई. तक चलता रहा। 1465 ई. में मल्लिकार्जुन की मृत्यु के बाद विरूपाक्ष द्वितीय गद्दी पर बैठा।

¼**vii**½ fo:ik{k f}rh; ¼1465&1485 bZ-½ ½& संगम वंष का अन्तिम शासक था। इसके समय में विजयनगर राज्य में अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गई जिसका लाभ उठाकर चंद्रगिरी के गर्वनर सालुव नरसिंह ने एक नये वंश सालुव वंश की स्थापना की।

- **सालुव वं□ा (1485–1505 ई-½ ½&**

  Lkkyqo ujflag ¼1485&1490 bZ-½ ½& इस वंश का संस्थापक था वह योग्य एवं प्रतिभा सम्पन्न शासक था। उसने विजयनगर के वे क्षेत्र जो संगम वंश के समय बहमनी और उड़ीसा द्वारा हड़प लिये गए थे को पुनः प्राप्त कर लिया। उसने अरब से होने वाले घोड़े के व्यापार को पुनः प्रारंभ किया। 1490 ई. में सालुव नरसिंह की मृत्यु हो गई। सालुव नरसिंह की मृत्यु के बाद उसका अल्प वचस्क पुत्र इम्माड़ि नरसिंह (1490–1505ई.) शासक बना। जिसका सरंक्षक नरसा नायक था। इम्माड़ि नरसिंह को नरसा ने पेनुकोंडा के किले में कैद कर दिया और सत्ता की जिम्मेदारी अपने हाथों में ले लिया। अपने 12–13 वर्ष के शासन काल में नायक ने रायचूर दोआब के अनेक किलों पर अधिकार कर लिया। इसके अतिरिक्त नरसा नायक बीजापुर, बीदर, मदुरा, श्रीरंगपट्टम के शासकों के विरूद्ध किये गये अभियान में सफल रहा। उसने बीजापुर के शासक यूसुफ आदिल खान एवं उड़ीसा के शासक प्रताप रूद्रदेव गजपति को भी परास्त किया। नरसा नायक ने चोल–पाण्डय एवं चेर शासकों को भी विजयनगर की अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश किया। 1505 ई. में नरसा नायक के पुत्र वीर नरसिंह ने इम्माड़ि नरसिंह की हत्या करके सालुव वंश का अंत कर दिया और एक नवीन वंश का तुलुव वंश की स्थापना की।

- **तुलुव वं□ा (1505–1565 ई-½ ½&** 1505 ई. में वीर नरसिंह तुलुव वंश का प्रथम शासक हुआ। उसका पूरा शासनकाल आन्तरिक विद्रोह एवं बाह्य आक्रमणों से प्रभावित था। 1509 ई. में नरसिंह की मृत्यु हो गई। यद्यपि उसका शासनकाल अल्प रहा, परंतु फिर भी उसने सेना को सुसंगठित किया, अपने नागरिकों को युद्धप्रिय बनाया। पुर्तगाली गर्वनर अलमीडा द्वारा लाये गये सभी घोड़ों को खरीदने के लिए उसने एक समझौता किया। उसने विवाह कर को हटाकर एक उदार नीति को आरंभ किया। पुर्तगाली यात्री नूनिज द्वारा वीर नरसिंह का वर्णन एक धार्मिक राजा के रूप में किया गया है, जो पवित्र स्थानों पर दान किया करता था।

1509 bZ- esa उसकी मृत्यु के बाद उसका सौतेला भाई कृष्णदेव राय (1509–1529) शासक बना जो तुलुववंश का ही नहीं बल्कि विजयनगर साम्राज्य का महानतम और सबसे प्रसिद्ध शासक था।

- d".kno jk; ¼1509&1529 bZ-½ %& विजयनगर के महानतम शासक कृष्णदेव राय 1509 ई. में गद्दी पर बैठा। उसके शासन काल में विजयनगर ऐश्वर्य एवं शक्ति के दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास के दृष्टिकोण से भी चरमोत्कर्ष पर था। कृष्णदेव राय ने अपने शासन के प्रारंभ में ही सफल सैनिक अभियान के द्वारा 1509–10 ई. में बीदर के सुल्तान महमूदशाह को अदोनी के समीप हराया। 1510 ई. में उसने उम्मूतूर के विद्रोही सामन्त को पराजित किया। 1512 ई. में कृष्णदेव राय ने बीजापुर के शासक यूसुफ आदिलशाह को परास्त कर रायचूर दोआब पर अधिकार कर लिया। इसके बाद गुलबर्गा के किले को अपने कब्जे में कर लिया। कृष्णदेव राय ने बीदर पर फिर से आक्रमण कर वहाँ के बहमनी सुल्तान महमूदशाह को बरीद के कब्जे से छुड़ा कर पुनः सिंहासन पर बैठाया और साथ ही 'यवन राज स्थापनाचार्य' की उपाधि धारण किया।

1513–18 ई. के बीच कृष्णदेवराय ने उड़ीसा के गजपति शासक के विरूद्ध कई बार युद्ध अभियान किये। उड़ीसा शासक प्रताप रूद्रदेव ने कृष्णदेवराय से संधि कर उससे अपनी पुत्री का विवाह कराया। 1520 ई. में कृष्णदेवराय ने गोलकुंडा को हराकर बारंगल पर अधिकार कर लिया। अतः मात्र दस वर्षो में कृष्णदेवराय ने अपने सभी विरोधियों को पराजित कर दक्षिण भारत में स्वयं एवं विजयनगर की प्रभुसत्ता को सिद्ध भी कर दिया।

कृष्णदेवराय के पुर्तगाली व्यापारियों से संबंध मैत्रीपूर्ण थे। इन संबंधों से मिलने वाली सुविधाओं एवं लाभों के द्वारा पुर्तगालियों ने पश्चिमी समुद्र में अपनी नौसेना का विकास भी कर लिया था। कृष्णदेवराय के समय में पुर्तगाली यात्री डोमिगोस पायस विजयनगर की यात्रा पर आया। बारबोसा ने भी समकालीन सामाजिक एवं आर्थिक जीवन का बहुत सुन्दर वर्णन किया है।

कृष्णदेवराय तेलुगू साहित्य का महान विद्वान था। उसने तेलुगू के प्रसिद्ध ग्रंथ 'अमुक्त माल्यद् की रचना की। उसके दरबार में तेलुगू साहित्य के 8 सर्वश्रेष्ठ कवि रहते थे, जिन्हें अष्टदिग्गज कहा जाता था। अष्टदिग्गज में सर्वाधिक महत्वपूर्ण अल्लसानि पेद्दल को तेलुगू कविता के पितामह की उपाधि प्रदान की गई। कृष्णदेवराय ने संस्कृत भाषा में एक नाटक जाम्बुवती कल्याणम् की रचना की। साहित्य के क्षेत्र में कृष्णदेवराय के काल को तेलुगू साहित्य का 'क्लासिकी युग' कहा गया। कृष्णदेव राय ने आन्ध्र भोज, अभिनव भोज, आन्ध्र पितामह आदि उपाधि धारण की। कृष्णदेवराय के काल में संगीत पर लक्ष्मीनारायण के संगीत–सर्वोदय के अतिरिक्त संगीतसार ग्रंथ भी लिखा गया था।

प्रशासक के रूप में कृष्णदेव राय की धार्मिक सहिष्णुता की प्रंशसा पुर्तगाली यात्री बारबोसा ने की है। स्वयं वैष्णव धर्म के प्रति आस्था रखते हुए भी उसने सभी धर्मो का अपने राज्य में आदर किया। कृष्णदेवराय की सांस्कृतिक गतिविधियों ने उसे समस्त भारत के मध्य युगीन इतिहास में विशेष स्थान दिया है। चोलों के स्थापत्य कला में अपनी सोच से नवीनता का समावेश कर कृष्णदेवराय ने एक सांस्कृतिक आदर्श प्रस्तुत किया। कृष्णदेवराय की सांस्कृतिक अभिरूचियां स्थापत्य और मूर्तिकला के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है।

इस समय चोल स्थापत्य की पृष्ठभूमि में नवीन विशेषताएं – अलंकार, स्तंभों की विविधता, कल्याणमंडप आदि जोडे गये। स्थापत्य कला के क्षेत्र में कृष्णदेवराय ने अपनी माता की स्मृति में 'नागलपुर' नामक नये नगर की स्थापना की। इस नगर में जलापूर्ति हेतु नए जलाशय की व्यवस्था की गई।

कृष्णदेवराय ने अपनी राजधानी हंपी में हजारा एवं विटठलस्वामी नामक मंदिर का निर्माण करवाया। कृष्णदेवराय के समय में मूर्तियां धातु और पत्थर दोनों से बनाई गई।

इस प्रकार कृष्णदेवराय के समय में सांस्कृतिक विकास उत्कर्ष पर था। सांस्कृतिक विकास के साथ–साथ सुव्यवस्थित प्रशानिक नीति के द्वारा उसके आर्थिक एवं सामाजिक विकास भी उल्लेखनीय रहे। इसके काल में अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि ही था। कृष्णदेवराय ने अपने राज्य में कृषि योग्य भूमि का विस्तार किया और सिंचाई के उचित प्रबंध हेतु तालाबों एवं नहरों का निर्माण करवाये। जिससे साम्राज्य के राजस्व में भी वृद्धि हुई।

सामाजिक विकास के अंतर्गत उसने विवाह कर जैसे अलोकप्रिय करों को समाप्त करके अपनी प्रजा को करों से राहत दी। इस प्रकार उपयुर्क्त विवरण से यह स्पष्ट है कि सफल प्रशासक होने के साथ–साथ वह महान्, विद्वान, विद्याप्रेमी एवं कला का संरक्षक भी था। इसीलिए बाबर ने अपनी आत्मकथा 'तुजूके बावरी' में कृष्णदेवराय को भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक बताया है। विजयनगर साम्राज्य के इस महान शासक की 1529 ई. में मृत्यु हो गई।

कृष्णदेवराय ने अपने जीवन काल में ही अपने चचेरे भाई अच्युत को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत कर दिया था क्योंकि उसका अल्पव्यस्क पुत्र सिंहासन के योग्य नहीं था। अतः कृष्णदेव राय के बाद अच्युतदेव राय (1529–42 ई.) तुलुव वंश का शासक बना।

- vP;qrnso jk; ¼1529&1542 bZ-½ %& अच्युतदेव राय ने अपने शासन काल में बीजापुर के शासक इस्माइल आदिल खान से रायचूर एवं मुद्गल के किले छीन लिया। उसने गजपति शासक के आक्रमण को असफल किया और साथ ही 1530 ई. में गोलकुण्डा के सुल्तान को पराजित किया। 1542 ई. में उसकी मृत्यु के बाद अच्युत के साले सलक राज तिरूमल ने अच्युत के अल्पायु पुत्र वेंकट प्रथम को सिंहासन पर बैठाया, उसका शासन काल मात्र 6 महीने तक रहा। इसके बाद विजयनगर की सत्ता अच्युत के भतीजे सदाशिव के हाथों में आ गई।
- **सदाशिव (1542–1570 ई-½** %& यह नाममात्र का ही शासक था। उसके शासन काल में वास्तविक सत्ता रामराय के हाथ में रही। रामराय ने विजयनगर की परंपरा के विपरीत पड़ोसी मुस्लिम राज्यों की आन्तरिक राजनीति में हस्तक्षेप किया जिसका परणिाम अंततः विजयनगर साम्राज्य के लिए घातक सिद्ध हुआ।

परन्तु रामराय जो एक महान राजनीतिज्ञ एवं कुशल सेनापति था ने अपनी कुशल नीति के द्वारा 1560 ई. तक दक्षिण भारत में विजयनगर की स्थिति को उत्कर्ष पर पहुँचा दिया। अहमदनगर गोलकुंडा और बीदर तीनों की शक्ति को कुचल दिया गया था और बीजापुर का अस्तित्व विजयनगर की दया पर आश्रित था। विजयनगर की इस बढ़ती हुई शक्ति से दक्षिणी राज्यों अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा और बीदर ने आपसी शत्रुता का भूलाकर विजयनगर के विरूद्ध एक संघ का गठन किया। इस महासंघ के नेता अली आदिलशाह ने रामराय से रायचूर एवं मुद्गल के किलों को वापस मांगा। रामराय द्वारा मांग ठुकराये जाने पर दक्षिण में चारों राज्यों की संयुक्त सेना ने राक्सी–तंगडी अथवा तालीकोटा के युद्ध में 1565 ई. में

रामराय को परास्त किया और पकड़कर उसकी हत्या कर दी। इस युद्ध को बन्नीहट्टी के युद्ध के नाम से भी जाना जाता है। यद्यपि इस युद्ध के बाद विजयनगर साम्राज्य लगभग 100 वर्षो तक जैसे–तैसे चलता रहा तथापि उसके वैभव और शक्ति में कमी आ गई।

इस युद्ध के बाद तिरूमल के सहयोग से सदाशिव ने पेनुकोंडा को अपनी राजधानी बनाकर शासन करना प्रारंभ किया। बाद में तिरूमल ने सदाशिव को अपदस्थ कर विजयनगर के चौथे राजवंश अरावीडु वंश की स्थापना की।

- **अरावीडु वंश (1570–1650 ई-½** ¼& अराविडु वंश की स्थापना 1570 b- के लगभग तिरूमल ने पेनुकोंडा में की थी। यह दक्षिण भारत के महान् विजयनगर साम्राज्य का चौथा ओर अंतिम वंश था।
  इस वंश के शासक वेंकट द्वितीय ने चंद्रगिरी को अपनी राजधानी बनाई। इस वंश का अंतिम शासक श्रीरंग तृतीय था जिसके राज्य में तंजौर, मैसूर, मदुरा आदि स्वतंत्र राज्यों का निर्माण हुआ और विजयनगर साम्राज्य का पतन हो गया।

5-3-2- cgeuh lkekT; ¼1346&1518 b-½ dk mn; **(Rise of Bahmani kingdom) :-**मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में व्याप्त अत्याचारों के विद्रोहस्वरूप दक्षिण भारत में सम्राट द्वारा नियुक्त 'अमीर–ए–सादा जफर खाँ ने सल्तनत की सेना को पराजित कर अलाउद्दीन हसन बहमनशाह की पदवी धारण कर एक स्वतंत्र राज्य बहमनी साम्राज्य की स्थापना की। इस प्रकार बहमनी राजवंश की स्थापना 1346–47 ई. में हुई जिसका संस्थापक व प्रथम शासक बहमनशाह था। बहमनशाह के अतिरिक्त 13 अन्य सुल्तानों/शासकों ने बहमनी साम्राज्य के शासक के रूप में राज्य किया। इन सुल्तानों/शासकों को निम्न रेखाचित्र के द्वारा दर्शाया जा सकता है।

गयासुद्दीन (1397 ई.)
शमसुद्दीन (1397 ई.)
फिरोजशाह (1397–1422 ई.)
अहमद प्रथम (1422–36ई.)
अलाउद्दीन (1436–58 ई.)
हुमायू शाह (1458–61 ई.)
निजामुद्दीन तृतीय (1461–1463 ई.)
मुहम्मद तृतीय (1463–1482 ई.)

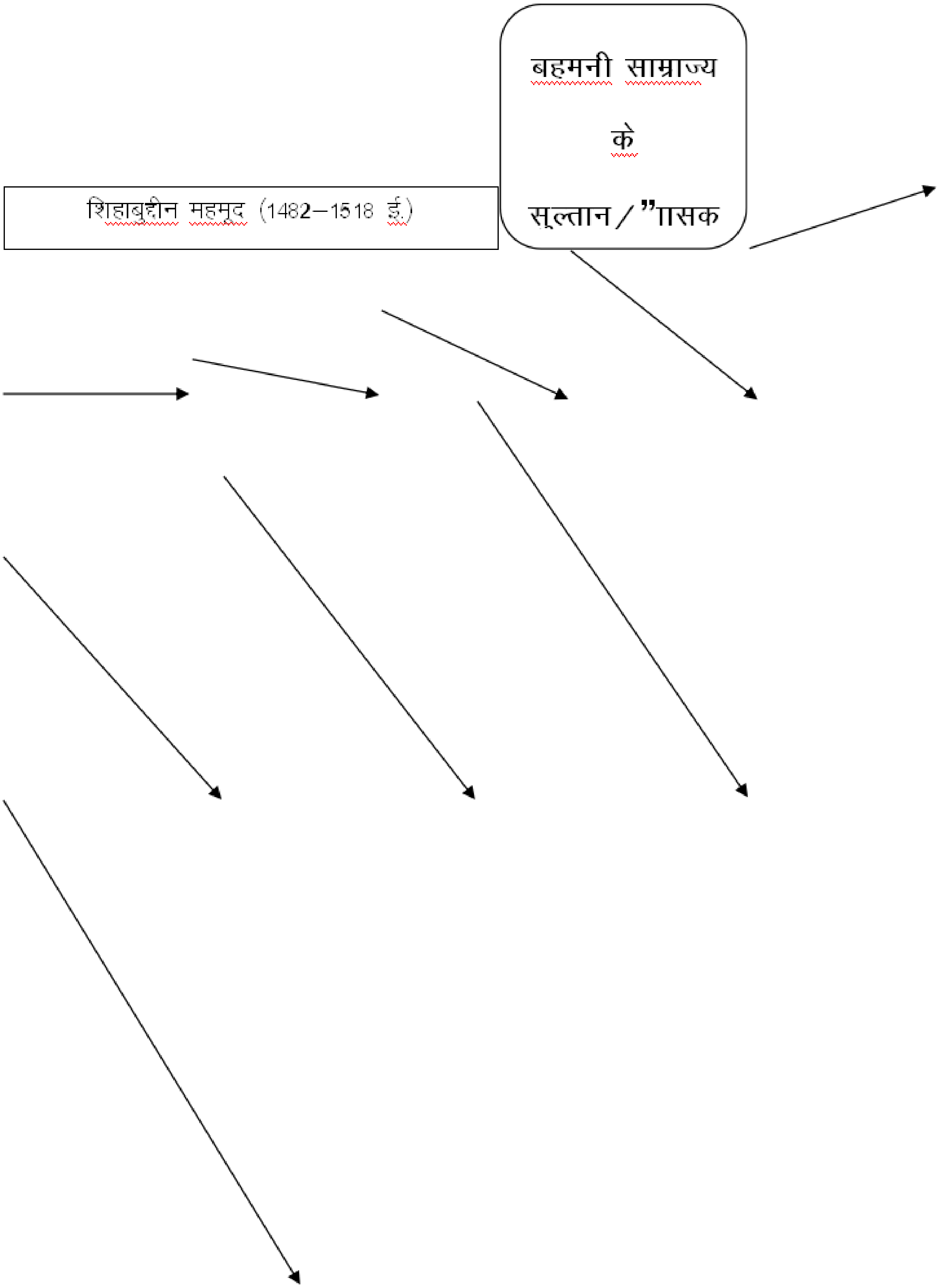
बहमनी साम्राज्य
के
सुल्तान / ”ाासक
शिहाबुद्दीन महमूद (1482–1518 ई.)

बहमनशाह (1347–1358 ई.)

दाउद (1378 ई.)

मुहम्मद द्वितीय (1378–97ई.)

मुहम्मद प्रथम (1358–75 ई.)

मुजाहिद/अलाउद्दीन मुहम्मद (1375–78 ई.

ग्यासुद्दीन (1397 ई.)

शमसुद्दीन (1397 ई)

(बहमनी साम्राज्य के सुल्तान / शासक)

फिरोजशाह (1397–1422 ई.

अहमद प्रथम (1422–1436 ई.)

अलाउद्दीन (1436–1458ई.)

हुमायु शाह (1458–1461ई.)

निजामुद्दीन (1461–1463ई.)

मुहम्मद तृतीय (1463–1482 ई.)

शिहाबुद्दीन महमूद (1482–1518ई.)

- **बहमनी सुलतान और उनका भाासन**
- **अलाउद्दीन हसन बहमन भााह (1347–1358 ई) :–** बहमनशाह ने 1347 ई से 1358 ई. तक शासन किया। सिहांसन पर बैठने के पश्चात् विस्तावरदारी नीति अपनाते हुए उसने कंधार, कोटगिरी, कल्याणी और बीदर को जीतकर अपने साम्राज्य मे ंमिला लिया। अपने पराक्रम से उसने वारंगल के शासक को भी अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश कर दिया। इसने गुलबर्गा को अपनी राजधानी बनाया तथा इसका नाम अहसानाबाद रखा। अलाउद्दीन ने अपने शासन के अंतिम दिनों में दाबुल पर अधिकार कर लिया।

  इस प्रकार दाबुल पश्चिमी समुद्र तट पर बहमनी साम्राज्य का महत्वपूर्ण बंदरगाह बन गया जिससे विदेशी व्यापार में उसे काफी सहायता मिलती थी। उसने हिन्दूओं के प्रति उदार नीति अपनाते हुये अपने राज्य में जजिया कर पर प्रतिबंध लगा दिया। 1358 ई. में इसकी मृत्यु हो गई।

  - **मुहम्मद भााह प्रथम/मुहम्मद प्रथम (1358–1375 ई) :–** अलाउद्दीन हसन की मृत्यु के बाद उसका पुत्र मुहम्मद शाह प्रथम शासक बना। उसने तेलंगाना के शासक को पराजित किया तथा गोलकुण्डा को भी जीत लिया। मुहम्मद शाह प्रथम का सम्पूर्ण शासनकाल विजयगनर और वारंगल से युद्ध एवं विजय से संबंधित रहा। इसने अपने शासनकाल में प्रशासनिक व्यवस्था को सुसंगठित करते हुये अपने राज्य को चार अतराफों (प्रांतों) में विभक्त किया और वहां तरफदारों की नियुक्ति की जो प्रांतीय शासन के प्रति उत्तरदायी थे। उसने अपने राज्य में समस्त सार्वजनिक मद्य गृह को बंद कर दिये और अपने कठोर प्रबंधन से राज्य की अनुशासनहीनता को समाप्त कर दिया। उसके काल में चार प्रांत या अतराफ थे –गुलबर्गा, दौलताबाद, बरार, बीदर। इसी के काल में पहली बार बारूद का प्रयोग हुआ जिससे सैन्य प्रणाली व रक्षा संगठन में एक नवीन क्रांति आयी। 1375 ई. में मुहम्मदशाह प्रथम की मृत्यु हो गई।
  - **eg[मद भााह प्रथम के उत्तराधिकारी :–** 1375 ई. में मुहम्मदशाह प्रथम की मृत्यु के बाद अगले 22 वर्षो में बहमनी साम्राज्य के अंतर्गत 5 सुल्तानों ने शासन किये। अलाउद्दीन मुहम्मद (1375–78), दाउद (1378), मुहम्मदशाह द्वितीय (1378–97), गयासुद्दीन (1397) और सम्सुद्दीन दाउद

(1397) क्रमशः गद्दी पर बैठे। परंतु बहमनी साम्राज्य में बने इन शासकों का शासन कोई विशेष महत्व नहीं रखता है।

- **ताजुद्दीन फिरोजशाह(1397–1422 ई- ½ ¾&** यह बहमनी वंश का महत्वपूर्ण शासक था। इसने 1397 से 1422 ई. तक राज किया। फिरोजशाह ने खेरला के शासक नरसिंह राज को हराकर बरार का प्रांत जीता। इसका विजयनगर साम्राज्य के देवराय प्रथम से युद्ध हुआ था जिसमें देवराय पराजित हो गया तो देवराय ने अपनी पुत्री का विवाह ताजुद्दीन के साथ कर दिया। इस युद्ध को सोनार की बेटी का युद्ध कहा जाता है। फिरोजशाह बहमनी वंश का एक योग्य, विद्वान व कला प्रेमी शासक था। उसे अरबी, फारसी और तुर्की के अलावा तेलुगू, मराठी एवं मलयालम भाषा का अच्छा ज्ञान था। दक्षिण भारत में भीमानदी के तट पर एक नवीन नगर फिरोजाबाद का निर्माण उसी ने कराया था। उसका अंतिम समय काफी कष्टप्रद रहा। उसके भाई अहमद 1422 ई. में उसे गद्दी से हटा दिया।
- **शिहाबुद्दीन अहमद प्रथम/अहमदशाहवली (1422–1436 ई- ½ ¾&** इसने अपनी राजधानी गुलबर्गा से स्थानांतरित कर बीदर को बनाया। उसने बीदर का नया नाम मुहम्मदाबाद रखा। इसने अपने सैनिक अभियान के अंतर्गत विजयनगर, वारंगल एवं मालवा पर सफल आक्रमण किया। विनम्र एवं उदार शासक के रूप में अहमदशाह का शासनकाल न्याय तथा धर्मनिष्ठता के लिए प्रसिद्ध था। अतः उसे इतिहास में अहमदशाहवली या संत अहमद भी कहा जाता है।
- vykmíhu vgen f}rh; ¼1436&1458 bZ- ½ ¾& यह अपने पिता की तरह योग्य एवं विद्वान शासक था। इसका संपूर्ण शासनकाल तेलंगाना, गुजरात, खानदेश, विजयनगर, मालवा और उड़ीसा के साथ युद्ध में व्यतीत हुआ। इसी के काल में महमूद गवाँ को राज्य की सेवा में लिया गया। महमूद गवाँ को नलगोंडा के विद्रोह का दमन करने के लिए नियुक्त किया गया था। 1458 ई. में इसकी मृत्यु हो गई। अहमद द्वितीय ने अपने जीवनकाल में ही अपने सबसे बड़े पुत्र हुमायूँ को अपना उत्तराधिकारी नामजद (मनोनित) किया था।
- **हुमायूँशाह (1458–1461 ई- ½ ¾&** अलाउद्दीन द्वितीय के बाद उसका पुत्र हुमायूँ गद्दी पर बैठा। सत्ता पर बैठते ही उसने महमूद गवाँ को प्रधानमंत्री नियुक्त किया। इसके शासनकाल की समस्त सफलताओं का श्रेय महमूद गवाँ को है और इन सफलताओं ने उसे इतिहास में प्रसिद्ध होने का अवसर दिया।

  हुमायूँ को उसके क्रूर स्वाभाव के कारण जालिम कहा जाता था। इसे दक्कन का नीरो भी कहा गया।

हुमायूँ की मृत्यु के समय उसके पुत्र निजामुद्दीन की आयु केवल आठ वर्ष की थी। इस कारण से हुमायूँ ने शासनव्यवस्था को चलाने के लिए अपने जीवन काल में ही एक प्रशासनिक परषिद् की स्थापना की थी। इसमें राजमाता और महमूद गवाँ सहित चार सदस्य थे।

अतः हुमायूँ की मृत्यु के बाद 1461ई. में निजामुद्दीन को गद्दी पर बैठाकर राजमाता मकदूमे में जहाँ ने सत्ता की बागडोर अपने हाथ में रखी। सम्पूर्ण सत्ता के प्रबंधन की जिम्मेदारी महमूद गवाँ सँभाल रहा था। इसके काल में प्रशासनिक परिषद् की उदारवादी एवं समझौतावादी नीति का लाभ उठाकर उड़ीसा के गजपति शासक व मालवा के खलजी शासक ने बहमनी साम्राज्य पर आक्रमण कर दिया। परंतु महमूद गवाँ ने अपनी कूटनीति के द्वारा परिस्थिति को बहमनी साम्राज्य के पक्ष में कर लिया।

अचानक 1463 ई. में अल्पायु में ही सुल्तान निजामशाह की मृत्यु हो गई।

- **सुल्तान भाम्सुद्दीन मुहम्मद तृतीय (1463–1482 ई- ½ ½&** निजामुद्दीन का अनुज मुहम्मद तृतीय 9 वर्ष की अवस्था में सिहांसन पर बैठा। उसके शासनकाल में महमूद गवाँ का व्यक्तित्व प्रभावशाली ढंग से सामने आया। उसे 'ख्वाजा जहाँ की उपाधि से नवाजा गया और प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया। बहमनी वंश का आगे का 20 वर्ष का इतिहास महमूद गवाँ के चारों तरफ घूमता रहा।

उसने बहमनी साम्राज्य का विस्तार कोरोमंडल से अरब सागर के तट तक किया, जिनसे उसके राज्य की सीमा उत्तर में उड़ीसा की सीमा एवं दक्षिण में कांची तक फैल गई। महमूद गवाँ ने मालवा, संगमेश्वर, कोंकण एवं गोवा पर सफल सैनिक अभियान किया। गोवा पर आधिपत्य, जो विजयनगर साम्राज्य का सर्वाधिक उत्तम बंदरगाह था, को महमूद गवाँ ने अपनी सर्वोत्कृष्ट सफलता कहा। विजयनगर के भेल्लार एवं कांची प्रदेशों पर आक्रमण महमूद गवाँ का अन्तिम सैनिक अभियान था। 1482 ई. में दक्खनियों ने षड्यंत्र द्वारा सुल्तान शम्सुद्दीन मुहम्मद को भड़का कर महमूद गवाँ की हत्या करवा दी। महमूद गवाँ ने नये जीते गये प्रदेशों के साथ बहमनी साम्राज्य को 8 प्रान्तों में विभाजित किया। उसने भूमि की नाप जोख गांव की सीमाओं का निर्धारण एवं लगान के निर्धारण के लिए जाँच का आदेश दिया।

महमूद गवाँ एक पराक्रमी योद्धा के साथ–साथ विद्वान एवं विद्वानों का सरंक्षक था। वह बड़ा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक सुरूचि–संपन्न व्यक्ति था। उसने बीदर में एक महाविद्यालय की भी स्थापना की। उसने अपनी राजनीतिक गतिविधियों को केवल बहमनी साम्राज्य तक ही सीमित नहीं रखा, वरन् भारत और उसके बाहर ईरान, ईराक और मिश्र व टर्की के सुल्तानों के साथ पत्र–व्यवहार किया। 'रियाजुल–इन्शा' के नाम से महमूद के पत्रों को संग्रह किया गया।

महमूद गवाँ की मृत्यु के बाद 22 मार्च 1482 को सुल्तान शम्सुद्दीन मुहम्मद तृतीय की भी मृत्यु हो गई। इसके बाद शिहाबुद्दीन महमूद/महमूदशाह (1482–1518ई.) बहमनी का शासक बना। वह एक अयोग्य शासक था। उसके समय में बहमनी राज्य राजधानी के आस–पास ही सिमट कर रह गया। महमूदशाह एवं उसके शेष उत्तराधिकारी दक्कन की लोमड़ी कहे जाने वाले तुर्क सरदार 'बरीद–उल–मुमलिक' के कठपुतली शासक बन कर रह गये। अर्थात महमूदशाह व इसके बाद के अन्य बहमनी शासक नाम मात्र के शासक रह गये जिनका इतिहास में कोई महत्व नहीं है।

अतः बहमनी वंश का अंतिम महत्वपूर्ण शासक मुहम्मद तृतीय की मृत्यु के बाद अंततः दो–तीन दशकों के बीच ही बहमनी साम्राज्य 5 स्वतंत्र राज्यों में विभक्त हो गया, जो निम्न है –

(i) बीजापुर का आदिलशाही राज्य (1489 ई.), संस्थापक – युसूफ आदिलशाह

(ii) अहमदनगर का निजामशाही राज्य (1490ई.) संस्थापक – मलिक अहमद

(iii) बरार का इमादशाही राज्य (1484 ई. स्वतंत्रता की घोषणा एवं 1490 ई. में स्वतंत्र)
संस्थापक – फतह उल्लाद इमाद

(iv) गोलकुंडा का कुतुबशाही राज्य (1518 ई.), संस्थापक – कुली कुतुबशाह

(v) बीदर की बरीदशाही राज्य (1526 ई.) संस्थापक – अमीर अली बरीद

5-3-3- cgeuh lkekT; dk iru (Downfall of Bahmani Kingdom)

बहमनी साम्राज्य के पतन के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे –

(i) बहमनी राज्य की प्रशानिक व्यवस्था का मूल आधार निरंकुश राजतंत्र की व्यवस्था था। इसके शासक स्वेच्छाचारी एवं निरंकुश थे। उनके अधिकारों पर कोई अकुंश नही था। मंत्रिपरिषद की व्यवस्था थी तथा प्रांतीय अधिकारी भी थे लेकिन तालमेल का अभाव था। प्रांत स्तर पर शासकों को नियुक्ति की शक्ति का अधिकार

प्राप्त था। अतः निरंकुश केन्द्रीय शासक व प्रांतीय शासन व्यवस्था के अंतर्गत अधिकारियों को दिए गए अधिकारों की अतिशयता भी बहमनी साम्राज्य के विघटन का एक महत्वपूर्ण कारण सिद्ध हुई।

(ii) अधिकांश सुल्तान धर्मांध भोग–विलासी तथा अत्याचारी प्रवृति के थे अतः बहमनी सुल्तानों ने अपनी प्रजा की उन्नति के लिए कोई ठोस नीति नहीं अपनाई। जिस कारण शासकों को लेकर प्रजा में अविश्वास व असंतुष्टि का भाव व्याप्त था। यह भी एक कारण था जिससे बहमनी साम्राज्य पतन की ओर चला गया।

(iii) बहमनी सुल्तानों की असहिष्णु धार्मिक नीति के कारण हिंदुओं में असंतोष व्याप्त था। उन शासकों धार्मिक असहिष्णुता की यह नीति भी उनको ले डूबी।

(iv) अपनी स्थापना से लगभग 175 वर्ष तक पूरे अस्तित्व काल में बहमनी सुल्तानों को आंतरिक कलह तथा बाहरी शत्रुओं का निरंतर सामना करना पड़ा। इस आंतरिक कलह का प्रमुख कारण दरबार में मुस्लिम अमीरों के दो दलों के मध्य ईर्ष्या, प्रतिस्पर्द्धा तथा शत्रुता का होना था। इस शत्रुता के कारण धीरे–धीरे बहमनी साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर हो गया।

(v) बहमनी साम्राज्य के शासक महमूद गवाँ जैसे योग्य राजनीतिज्ञ की पहचान कर उसका राज्य के हित में सही उपयोग करने में असफल रहे। महमूद गवाँ जैसे योग्यता वाले प्रधानमंत्री को भी आंतरिक कलह का रोष भुगतना पड़ा। वास्तव में उसकी हत्या के साथ हो बहमनी साम्राज्य का पतन सुनिश्चित हो गया था।

5-3-4- fot;uxj&cgeuh dk chp l?k"kZ **(Struggle between Vijaynagar and Bahmani)**

दक्षिण भारत में तुगलक सत्ता के पतन के बाद स्वतंत्र राज्यों के उदय के क्रम में चौदहवीं शताब्दी के मध्य में विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य दोनों लगभग एक ही समय पर अस्तित्व में आए। स्थापना के प्रांरभ से ही इन दोनों साम्राज्यों के बीच कृष्णा एवं तुंगभद्रा नदियों के मध्य स्थित प्रसिद्ध रायचूर दोआब संघर्ष का केन्द्र बिन्दु बना रहा। जिस प्रकार पूर्व मध्यकाल में उत्तर भारत में पाल, प्रतिहार एवं राष्ट्रकूट के बीच गंगा–यमुना के दोआब में स्थित कन्नौज को लेकर लगभग दो सौ वर्षो तक संघर्ष चलता रहा जिसे त्रि–पक्षीय संघर्ष के नाम से जानते है। उसी प्रकार ये दोनों साम्राज्य रायचूर दोआब संघर्ष केन्द्र को लेकर लगभग दो सौ वर्षो तक उलझे रहे। इसीलिए इतिहास में इसे रायचूर दोआब की समस्या भी कहा जाता है।

यद्यपि सामान्य रूप से देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि इन दोनों साम्राज्यों के बीच संघर्ष का मुख्य कारण विवादग्रस्त रायचूर दोआब पर अधिकार को ही लेकर था। परंतु समकालीन इतिहासकारों ने संघर्ष का वास्तविक कारण इससे परे कई कारणों को बताया है जिनमें धार्मिक या सांप्रदायिक, भौगोलिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामरिक आदि को महत्वपूर्ण मानते है। उस समय के इतिहासकारों का कहना है कि रायचूर दोआब तो मात्र संघर्ष का क्रीड़ास्थल था।

कृष्णा एवं तुंगभद्रा के बीच का भौगोलिक क्षेत्र दोनों साम्राज्यों के संयुक्त अधिकार क्षेत्र में पड़ता था। कोई स्पष्ट विभाजन करना कठिन था। पीछे भी इसको लेकर पल्लव, राष्ट्रकूट, चालुक्य व चोल आपस में संघर्षरत रहे। अतः इस समय भी रायचूर दोआब की समस्या पूर्ववर्ती संघर्ष की पुर्नावृति मात्र थी।

इस संघर्ष का दूसरा प्रमुख कारण राजनीतिक रूप से दोनों साम्राज्यों की विस्तावरवादी नीति थी। बहमनी एवं विजयनगर दोनों क्रमंशः तुंगभद्रा के दक्षिणी एवं उत्तरी छोर पर अपने साम्राज्यवाद का विस्तार करना चाहते थे, क्योंकि बहमनी साम्राज्य तीन ओर से तीन शक्तिशाली राज्यों –मानवा, गुजरात और उड़ीसा से घिरा था जबकि विजयनगर साम्राज्य तीन तरफ से समुद्र से घिरा हुआ था और उसके विस्तार का मार्ग केवल तुंगभद्रा के उत्तर में था। अतः रायचूर दो आब में इन दोनों राज्यों के बीच संघर्ष राजनीतिक विस्तारवाद को लेकर बहुत ही स्वाभाविक था।

इस संघर्ष का तीसरा महत्वपूर्ण कारण आर्थिक कारण को माना जाता है। दोनों की साम्राज्य में अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था। कृषि क्षेत्र के दृष्टिकोण से कृष्णा का दक्षिणी भाग अधिक उपजाऊ था और साथ ही वाणिज्य एवं व्यापार की तरक्की के अर्थ में अधिकांश बड़े बंदरगाह इसी भाग में स्थित थे। अधिकांश निर्यात योग्य माल का उत्पादन भी इसी क्षेत्र में होता था। विवादग्रस्त रायचूर दोआब हीरा और लोहे जैसे बहुमूल्य खनिज पदार्थ के लिए प्रसिद्ध थे। अतः दोनों साम्राज्यों के आर्थिक हित उपजाऊ कृषि क्षेत्र, वाणिज्य–व्यापार के लिए बंदरगाह व समृद्ध खनिज क्षेत्र को लेकर यह क्षेत्र महत्वपूर्ण केन्द्र बना था। किसी भी स्थिति में दोनों इस पर अपना अधिकार चाहते थे। ऐसे में आर्थिक प्रतिस्पर्द्धा ने दोनों के बीच संघर्ष को जन्म दिया और ये दोनों इसके लिए निरंतर संघर्षरत रहे।

प्रारंभ में कुछ इतिहासकार इस संघर्ष के कारणों में एक कारण धार्मिक या सांप्रदायिक कारण को भी बता रहे थे। परंतु सामंप्रदायिक कारण इस संघर्ष में कहीं भी दिखाई नहीं पड़ता है। वास्तव में आर्थिक–राजनीतिक एवं सामरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ही ये दोनों साम्राज्य इस क्षेत्र में लगातार संघर्षरत रहे।

विजयनगर–बहमनी संघर्ष के क्रम में प्रथम बहमनी सुल्तान बहमनशाह ने अपनी सेना को रायचूर के किले पर घेरा डालने को भेजा। इस पर विजयनगर नरेश हरिहर प्रथम ने परिस्थिति को समझाते हुये घोड़े और धन देकर समझौता कर लिया। इसके बाद बहमनशाह के पुत्र मुहम्मदशाह प्रथम एवं बुक्का प्रथम के समय में दोनों सेनाओं के बीच तीन युद्ध हुए। जिसका कोई परिणाम नहीं निकला। चौदहवीं शताब्दी के अंत में बहमनी शासक फिरोज और विजयनगर नरेश देवराय प्रथम के बीच भयंकर संघर्ष हुआ जिसमें विजयनगर साम्राज्य की काफी क्षति हुई। यहां तक कहा जाता है कि देवराय प्रथम को फिरोजशाह के साथ अपनी पुत्री का विवाह करके समझौता करना पड़ा। समझौता के बाद भी दोनों के बीच युद्ध हुये लेकिन इसका कोई परिणाम नहीं निकला।

बहमनी के शासक अहमद प्रथम और विजयनगर साम्राज्य के प्रसिद्ध शासक देवराय द्वितीय के बीच चार युद्ध लड़े गये। जिनमें प्रथम दो युद्ध में विजयनगर पराजित हुआ किंतु तीसरे युद्ध में विजयनगर नरेश देवराय द्वितीय को सफलता मिली। अंततः चौथे युद्ध के बाद दोनों राज्यों के मध्य समझौता हो गया।

देवराय द्वितीय की मृत्यु के बाद विजयनगर–बहमनी संबंधों में एक नया मोड़ आया। इस समय परिस्थितयां बिल्कुल बदल चुकी थी। विजयनगर साम्राज्य को उड़ीसा के गजपति शासकों के आक्रमण का भी सामना करना पड़ रहा था। तात्कालिक विजयनगर के शासक इतने मजबूत नहीं थे वे कि एक साथ दो मोर्चे पर युद्ध लड़ सके। दूसरी ओर महमूद गवाँ के युग में बहमनी साम्राज्य की स्थिति श्रेष्ठ हो गई। 1471 ई. में महमूद गवाँ ने गोआ पर अधिकार कर लिया तथा इससे आगे बढ़कर नेल्लोर और कांची तक विजयनगर के प्रदेशों पर प्रहार किया। इसके बाद 1485 ई. में विजयनगर के प्रथम वंश का पतन हो गया और इसके दो दशकों के भीतर ही बहमनी साम्राज्य भी पांच राज्यों में विभक्त हो गया। परंतु रायचूर दोआब की समस्या यथावत बनी रही सिर्फ युद्ध करने वाले बदल गये।

5-4-1 विजयनगर साम्राज्य : राज्य व्यवस्था व प्रशासन

(Polity and Administratation of Vijaynagar kingdom)

विजयनगर साम्राज्य से पूर्व दक्षिण भारत के चार प्रादेशिक राज्यों चोल, चालुक्य, पल्लव व पांड्य काल में भी राज्य व्यवस्था व प्रशासन में हमें विकेन्द्रीकृत प्रणाली देखने को मिलता है। इस काल में भी केन्द्रीय प्रांतीय से लेकर स्थानीय स्तर तक की प्रशासनिक व्यवस्था राजकाज चलाने के लिए मौजूद थी। चोल काल में स्थानीय स्तर ग्राम पंचायत व्यवस्था अत्यंत सुदृढ़ व उनको काफी स्वायत्तता थी। परंतु इन प्रादेशिक राज्यों की तुलना में

विजयनगर साम्राज्य बहुत विशाल और शक्तिशाली था तथा इसका स्वरूप भी उन राज्यों से काफी भिन्न था। यद्यपि विजयनगर साम्राज्य के राज्य व्यवस्था व प्रशासन के बारे में अलग–अलग मत मिलते है तथापि पूर्व की भांति थोडे बहुत परिवर्तन के साथ यहां भी केन्द्रीय, प्रान्तीय व स्थानीय स्तर की विकेन्द्रीकृत शासन प्रणाली मौजूद रही। चोल–चालुक्य युग में ग्राम्य–प्रशासन में जो काफी स्वायन्तता थी विजयनगर युग में उसमें कमी आई। विजयनगर काल में ग्राम्य प्रशासनिक संस्थाओं क ऊपर नौकरशाही एवं सामंती व्यवस्था को आरोपित किया गया जिससे उनकी स्वायन्तता पर बुरा प्रभाव पड़ा। पूर्व के शासन प्रणाली से अलग एक महत्वपूर्ण तथ्य हमें इस साम्राज्य में देखने को मिलता है और वह यह कि इस काल में विजयनगर के बड़े–बड़े सेनानायकों, अधिकारियों और नौकरशाहों ने भू–स्वामित्व के साथ अपने को जाड़ने की कोशिश की। ये अधिकारी सामान्यतः बड़े–बड़े सेनानायक थे जो नायक कहलाते थे और स्थानीय नौकरशाह आयंगार कहलाते थे।

आधुनिक काल की सामान्य भाासन व्यवस्था की तरह विजयनगर की भाासन व्यवस्था तीन भागों –
dUnh;] izkrh; o LFkkuh; Lrj ij foHkDr FkhA bldk fooj.k fuEu izdkj g :–

केन्द्रीय भाासन व्यवस्था (Central Government System): किसी भी राजतंत्रत्रात्मक शासन प्रणाली की तरह विजयनगर में भी राज्य एवं शासन का केन्द्र बिन्दु राजा ही होता था इस काल में राजा की उपाधि 'राय' थी। राज्य व्यवस्था में प्राचीन राज्य की सप्तांग विचारधारा का ध्यान रखा जाता था। राजा के चयन में राज्य के मंत्रियों एव ंनायकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। राज्यभिषेक भव्य दरबार का आयोजन करके होता था जिसमें अनेक नायक, अधिकारी तथा जनता के प्रतिनिधि सम्मिलित होते थे। इसमें राजा को प्रजापालन एवं निष्ठा की शपथ लेनी पड़ती थी। युवराज राजा का बड़ा पुत्र व राज्य परिवार का कोई भी योग्य पुरूष बन सकता था युवराज काल में उसे विद्या साहित्य, कला, ललित कलाओं व युद्ध आदि की शिक्षा भी दी जाती थी युवराज के राज्यभिषेक को युवराज पट्टाभिषेक कहते थे। विजयनगर साम्राज्य में संयुक्त शासन की परंपरा भी मौजूद थी, जैसे– हरिहर एवं बुक्का तथा विजय राय एवं देवराय। युपराज के अल्पायु होने की स्थिति में राजा अपने जीवन काल में ही स्वयं किसी मंत्री को उसका संरक्षक नियुक्त करता था। इस काल के कुछ महत्वपूर्ण संरक्षक थे –

वीर नरसिंह, नरसा नायक एवं रामराय आदि। बाद में यही संरक्षक व्यवस्था ही विजयनगर के पतन में बहुत कुछ जिम्मेदार रही। विजयनगर के शासकों ने अपने व्यक्तिगत धर्म होते हुये भी धार्मिक सहिष्णुता को अपने राज्य में लागू किया। इस काल में राजा निरंकुश होने पर भी बर्बर नही होता था। उसकी निरंकुशता पर नियन्त्रण हेतु व्यापारिक निगम, ग्रामीण संस्थाये एवं धार्मिक संस्थाओं से जुड़ी जन समितियां एवं मंत्रिपरिषदें थी। राज्य परिषद राजा को सलाह देती थी तथा उसका राज्याभिषेक करती थी। राजा को सलाह देने के लिए बनी एक अन्य परिषद में प्रांतीय गर्वनर, बडे–बडे नायक, सामंत, शासक, व्यापारिक निगमों के प्रतिनिधि सदस्य होते थे।

प्रशासनिक कार्यो में सहयोग करने के एक ' मंत्रिपरिषद' की व्यवस्था थी जिसमें प्रधानमंत्री, मंत्री, उपमंत्री, विभागों के अध्यक्ष तथा राजा के कुछ नजदीक के संबंधी होते थे। मंत्रिपरिषद के मुख्य अधिकारी को प्रधानी या महाप्रधानी कहा जाता था। इसकी स्थिति प्रधानमंत्री जैसी थी। यह राजा एवं युवराज के बाद तीसरे स्थान पर आता था। मंत्रिपरषिद् में कुल 20 सदस्य होते थे। मंत्रिपरिषद् के अध्यक्ष को सभानायक कहा जाता था। कभी–कभी प्रधानमंत्री भी मंत्रिपरिषद की अध्यक्षता करता था। राजा इस मंत्रिपरिषद की राय लेता था पर वह उसे मानने के लिए बाध्य नहीं था।

विद्वान, राजनीति में निपुण, पचास से सत्तर वर्ष के आयु वाले और स्वस्थ व्यक्तियों को ही इस मंत्रिपरिषद का सदस्य बनाया जाता था।

टी.वी. महालिंगम ने विजयनगर प्रशासक की राजपरिषद् और मंत्रिपरिषद में अंतर स्पष्ट किया है। राजपरिषद् प्रान्तों के नायकों, सामन्त शासकों, विद्वानों, प्रमुख धर्माचार्यो, संगीतकारों, कलाकारों, व्यापारियों और यहां तक कि विदेशी राज्यों के राजदूतों को शामिल करके गठित किया गया एक विशाल संगठन होता था। केन्द्र में दण्डनायक नाम का उच्च अधिकारी होता था।

यह दण्डनायक प्रशासन का प्रमुख तथा सेनाओं का नायक होता था। दण्डनायक को न्यायधीश, सेनापति, गर्वनर या प्रशासकीय अधिकारी आदि का कार्यभार सौंपा जा सकता था। कुछ अन्य अधिकारियों को 'कार्यकर्त्ता' कहा जाता था।

केन्द्र में एक सचिवालय की व्यवस्था होती थी जिसमें विभागों का वर्गीकरण किया जाता था। इन विभागों में 'रायसम' या सचिव 'कर्णिकम' अर्थात् एकाउन्टेंट जैसे अधिकारी होते थे। अन्य विभाग एवं उनके अधिकारी जैसे मनिय प्रधान, गृहमंत्री, मुद्राकर्ता, शाही मुद्रा को रखने वाला अधिकारी आदि थे।

प्रांतीय प्र□ासन (Provincial administration) :- विशाला साम्राज्य विजयनगर अनेक प्रांतों में विभक्त किया गया था। ये प्रांत राज्य या मंडल कहलाते थे। कृष्णदेव राय के शासनकाल में प्रांतों की संख्या सबसे अधिक थी।

प्रांतों में गवर्नर के रूप में राज परिवार के सदस्य या अनुभवी दण्डनायकों की नियुक्ति की जाती थी। इन्हें सिक्कों को प्रसारित करने, नये कर लगाने, पुराने कर माफ करने एवं भूमिदान करने आदि की स्वतंत्रता प्राप्त थी। प्रांत के गवर्नर को निर्धारित भू–राजस्व का एक निश्चित हिस्सा केन्द्र सरकार को देना होता था।

प्रांत को 'मंडल एव मंडल को' कोट्टम' या जिले में विभाजित किया गया था। कोट्टम को 'वलनाडु' भी कहा जाता था। कोट्टम का विभाजन नाडुओं में हुआ था जिसकी स्थिति आज के परगना एवं ताल्लुका जैसी थी। नाडुओं को मेलग्राम में बांटा गया था। एक मेलग्राम के अर्न्तगत लगभग 50 ग्राम होते थे। उर या ग्राम प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी। इस समय गांवों के समूह को 'स्थल' एवं 'सीमा' भी कहा जाता था।

foHkktu d Øe dk fuEu j[kkfp= }kjk fn[kk;k tk ldrk g &

प्रांत मंडल कोट्टम/वलनाडु नाडु मेलग्राम उर/ग्राम ➔➔➔➔➔

uk;dkj 0;oLFkk (Nayankar system) :- विजयनगर की नायंकार व्यवस्था की उत्पति के बारे में इतिहासकारों के बीच मतभेद है। कुछ इतिहासकारों के अनुसार सेना के सेनानायकों को नायक कहा जाता था। तो कुछ का मानना है कि नायक भू–सामन्त होते थे जिन्हे वेतन के बदले एवं स्थानीय सेना के खर्च चलाने के लिए विशेष भू–खण्ड दिया जाता था, जिसे 'अमरम' कहते थे। अमरम भूमि का प्रयोग करने वाले भू–सामन्त 'अमरनायक' भी कहलाते थे। अमरम भूमि की आय का एक हिस्सा केन्द्रीय कोष के लिए देना होता था एवं इसी आय में से राजा की सहायता के लिए एक सेना का रख–रखाव करना होता था। नायक को अमरम भूमि में शांति, सुरक्षा एवं अपराधों को रोकने के दायित्व का भी निर्वाह करना होता था। इसके अतिरिक्त उसे जंगलों को साफ करवाना एवं कृषि योग्य भूमि का विस्तार भी करना होता था।

राजधानी में नायकों के दो सम्पर्क अधिकारी एक नायक की सेना का सेनापति और दूसरा प्रशासनिक अभिकर्ता स्थानपति रहते थे। विजयनगर शासक अच्युत देव राय ने नायकों की उच्छृंखलता को रोकने के लिए महामंडलेश्वर या विशेष कमिश्नरों की नियुक्ति की थी।

vk;xkj 0;oLFkk **(Ayangar system) :-** प्रशासन को सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिए प्रत्येक ग्राम को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में संगठित किया गया था। इन संगठित ग्रामीण इकाइयों पर शासन हेतु 12 प्रशासकीय अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी जिनको सामूहिक रूप से आयंगर कहा जाता था। ये आयगंर अवैतनिक होते थे। इनकी सेवाओं के बदले सरकार इन्हें पूर्णतः कर मुक्त एवं लगान मुक्त भूमि प्रदान करती थी। इनका पद आनुवंशिक होता था। यह अपने पद को किसी दूसरे व्यक्ति को बेच या गिरवी रख सकता था। ग्राम स्तर की कोई भी सम्पत्ति या भूमि इन अधिकारियों की इजाजत के बगैर न तो बेची जा सकती थी और नही दान दी जा सकती थी। 'कर्णिक' नामक आयंगर के पास जमीन के क्रय एवं विक्रय से संबंधित समस्त दस्तावेज होते थे।

स्थानीय भासन (Local Government) :- सम्पूर्ण दक्षिण भारत के लगभग सभी राजवंशों में शासन व्यवस्था की जो प्रणाली सदैव मौजूद रही वह थी – स्थानीय शासन। विजयनगर काल में चोलकालीन सभा को कहीं–कहीं महासभा उर एवं महाजन कहा जाता था। गांव को अनेक वार्डो या मुहल्लों में विभाजित किया गया था। 'सभा' में विचार विमर्श के लिए गांव या क्षेत्र विशेष के लोग भाग लेते थे। 'सभा' नई भूमि या अन्य प्रकार की सम्पत्ति उपलब्ध कराने गांव की सार्वजनिक भूमि को बेचने, ग्रामीणों की तरफ से सामूहिक निर्णय लेने गांव की भूमि को देने के अधिकार अपने पास सुरक्षित रखती थी। न्यायिक अधिकारों के अन्तर्गत सभा के पास दीवानी मुकदमों एवं फौजदारी के छोटे–मोटे मामलों का निर्णय करने का अधिकार होता था। नाडु गाँव की बडी राजनीतिक इकाई के रूप में प्रचलित थी। नाडु की सभा को नाडु एवं सदस्यों को नात्तवार कहा जाता था। इनमें अधिकार ग्राम सभा की तरह होते थे परंतु इसका अधिकार क्षेत्र काफी बड़ा होता था। लेकिन इसे शासकीय नियंत्रण में रहना पड़ता था। चोल युग में बहुत शक्तिशाली स्थानीय संस्थाएं इस काल में पतन की ओर अग्रसर होती गई। विजयनगर काल में इनकी जीवंतता लगभग समाप्त हो गई। विजयनगर सम्राटों द्वारा स्थानीय शासन हेतु गठित आचंगार – व्यवस्था ने स्थानीय स्वायत्तता और इन ग्रामीण गणतंत्रों के मुक्त जीवन का गला घोंट दिया।

विजयनगर साम्राज्य में गांव के आय–व्यय की देखभाल करने वाले को 'सेनेटेयवा' कहते थे। गांव में चौकीदारी का कार्य करने वाले चौकीदार को 'तलस' कहा जाता था। 'बेगरा' गाँव में बेगार, मजदूरी आदि की देखभाल का कार्य करता था।

इस काल में स्थानीय शासन के अंतर्गत आय के प्रमुख जरिया थे – लगान, सम्पत्ति कर, व्यावसायिक कर, उद्योगों पर कर, सिंचाई कर, चारागाह कर, उद्यान कर एवं अनेक प्रकार के अर्थ दण्ड।

Hk&jktLo 0;oLFkk **(Land Revenue System) :-** विजयनगर साम्राज्य में कई प्रकार के कर वसूले जाते थे जिनके नाम इस प्रकार मिलते है – कदमाइ, मगमाई, कनिकई, कत्तनम, कणम्, वरम्, भोगम्, वारि, पत्तम, इराई और कत्तायम।

विजयनगर राज्य की आय का प्रमुख एवं सबसे बड़ा स्त्रोत 'शिष्ट' नामक भूमिकर था। राज्य उपज का 1/6 भाग कर के रूप में वसूल करता था। कर निर्धारण से पूर्व भूमि का वर्गीकरण देवरान, ब्रह्मदेय आदि में किया जाता था। कृष्णदेव राय ने अपने शासनकाल में भूमि का व्यापक सर्वेक्षण कराकर भूमि की उर्वरता के अनुसार उपज का 1/3 या 1/6 भाग कर के रूप में निर्धारित किया था। संभवतः विभिन्न प्रांतों में राजस्व की दर अलग–अलग थी। राज्य प्रजा को सिंचाई की सुविधा के ऊपर सिंचाई कर वसूल करती थी। तमिल प्रदेश में इसे दासावन्दा एवं आन्ध्र प्रदेश व कर्नाटक में कट्टकोडेज के नाम से जानते थे। सिंचाई कर सिंचाई के

साधनों का उपयोग करने वालों से ही लिया जाता था। ब्राह्मणों के अधिकार वाली भूमि से उपज का 20 वां भाग तथा मंदिरों की भूमि से उपज का 30 वां भाग लगान के रूप में वसुला जाता था।

सामाजिक एवं सामुदायिक कर के रूप में विवाह कर का भी प्रचलन विजयनगर साम्राज्य में था। परंतु विधवा विवाह इस कर से मुक्त था। परंतु कृष्णदेव राय के काल में विवाह कर को समाप्त कर दिया था।

राजस्व वस्तु एवं नकद दोनों ही रूपों में वसूले जाते थे 'भंडारवाद' ग्राम से राज्य को सीधे कर प्राप्त होता था। ये वे ग्राम थे जिनकी भूमि सीधे राज्य के नियंत्रण में थी। इस भूमि को उपयोग में लाने वाले किसान सीधे राज्य को कर देते थे। इस प्रकार करों की अधिकता से ऐसा प्रतीत होता है कि विजयनगर साम्राज्य में प्रजा के ऊपर करों का बहुत अधिक बोझ था। परंतु इसके साथ यह भी सच्चाई है कि इस साम्राज्य में समाज के लगभग सारे वर्ग आर्थिक रूप से समृद्ध थे और फिर करों की अधिकता तो थी लेकिन उसके दर कम थे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि विजय नगर के शासक अपनी प्रजा के आर्थिक समृद्धि का ध्यान रखते थे। आपात स्थिति में उदारता का परिचय देते हुये करों को माफ कर देते थे।

अतः इससे स्पष्ट होता है कि विजयनगर कालीन राजतंत्र और शासन व्यवस्था में शासकों के सम्मुख प्रजा का कल्याण और समृद्धि शासन का मूल–मंत्र था। उन्होंने अपनी प्रजा के हितों का बलिदान करके राज्य के उद्देश्यों और हितों की पूर्ति नहीं की।

lSU; O;oLFkk (Military system) :- विजयनगर की सेना में पैदल, अश्वारोही, हाथी तथा ऊँट शामिल थे। सैन्य विभाग को कन्दाचार कहा जाता था। इस विभाग का उच्च अधिकारी दण्डनायक या सेनापति होता था। विजयनगर साम्राज्य में बिना किसी भेदभाव के मजबूत सैन्य व्यवस्था के लिए योग्यता के आधार पर हिन्दू अथवा मुस्लिम किसी को भी भर्ती करने का प्रावधान था।

U;k; O;oLFkk (Judicial system) :- विजयनगर साम्राज्य में राज्य का प्रधान न्यायाधीश राजा होता था। राज्य में अपराध को रोकने व शांति व्यवस्था कायम रखने के लिए प्रांतों से लेकर गांवों तक समुचित न्याय की व्यवस्था थी। भयंकर अपराध के लिए शरीर के अंग विच्छेदन तक का दंड दिया जाता था।

प्रान्तों में प्रान्तपति तथा गांवों में आयंगर न्याय करता था। इस काल में न्याय व्यवस्था हिन्दू धर्म पर आधारित थी। पुलिस विभाग का खर्च वेश्याओं पर लगाये गये कर से चलता था।

5-4-2- fot; uxj lkezkT; dh vFkZ O;oLFkk (Economy of Vijaynagar kingdom)

¼i½ **d`f"k (Agriculture) :-** विजयनगरकालीन अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था। इस काल में अधिकांश जनसंख्या कृषि पर आश्रित थी। दक्षिण के पूर्व के राजवंशों की अपेक्षा विजयनगर साम्राज्य अधिक विस्तृत था। इस काल में ग्रामों की संख्या में काफी वृद्धि हो गई। अतः चोल काल की तुलना में विजयनगर काल में कृषिजन्य अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। इस समय चोलकालीन 'नाडु' घटकर ग्राम के रूप में अब एक छोटी इकाई मात्र रह गया। गांवों में बाहर से आये लोग भू–स्वामित्व रूप में काफी संख्या में स्थापित हो गये । इन तेलुगू और दूसरे क्षेत्रों से आये बाहरी भू–स्वामियों को कृषि उत्पादन विकास में सहयोग देने के बदले में अतिरिक्त उत्पादन में हिस्सा दिया गया। इस काल में कृषि अर्थव्यवस्था के विकास में मंदिरों की भूमिका बढ़ गई। भूमि पर प्रभावशाली कृषक समूहों का अधिकार था तथा कृषकों का राज्य में खूब सम्मान था। विजयनगर साम्राज्य के शासन व राज्य संस्थायें कृषि योग्य भूमि के विस्तार में खूब रूचि लेती थी। इससे कृषक वर्ग में खूब उत्साह था।

इसका फायदा समाज के हर वर्ग को मिल रहा था। इस काल में समाज के हर वर्ग में समृद्धि थी। विजयनगर काल में भू–धारण (Land tenure) पद्धति बड़ी व्यापक थी जिनका विवरण निम्न प्रकार है :–

¼ii½ HkaMkjokn xzke :- जिन ग्रामों की भूमि राज्य के सीधे नियंत्रण में थी, ऐसे ग्रामों को 'भंडारवाद' ग्राम कहा जाता था। इन ग्रामों के किसान सीधे राज्य को कर देते थे।

¼iii½ czgens; @nsons; @eBkiqj Hkwfe :- राज्य द्वारा धार्मिक सेवाओं के रूप में जो भूमि ब्राह्मणों, मंदिरों और मंठों को दान में दे दी जाती थी उन्हें क्रमशः ब्रह्मदेय, देवदेय व मठापुर भूमि के नाम से जानते थे। इस प्रकार की भूमि कर मुक्त होती थी।

¼iv½ veje Hkwfe :- नायंकार व्यवस्था के अंतर्गत विजयनगर के शासन सैनिक एवं असैनिक अधिकारियों को उनकी विशेष सेवाओं के बदले जो भूमि प्रदान करते थे उस भूमि को अमरम् भूमि कहते थे। इस भूमि को प्राप्त करने वाले अमर नायक कहलाते थे। प्रारंभ में यह भूमि केवल सेवा शर्त के रूप में ही थी लेकिन कालांतर में यह आनुवंशिक हो गई और सामंती व्यवस्था का रूप धारण कर लिया। अमरनायकों की इस भूमि का एक अंश राज्य को भी देना पड़ता था।

¼v½ mcfy Hkwfe :- ग्राम में विशेष सेवाओं के बदले दी जाने वाली लगान मुक्त भूमि को उबलि भूमि कहते थे।

¼vi½ jDr ¼[kÙk½ dksMxs Hkwfe :- युद्ध में शौर्य का प्रदर्शन करने वाले या अनुचित रूप से युद्ध में मृत लोगों के परिवार को दी गई भूमि रत्त(खत्त) कोड़गे भूमि कहलाती थी।

¼vii½ dqêfx Hkwfe :- ब्राह्मण, मंदिर एवं बड़े भू–स्वामी जो स्वयं खेती नहीं कर सकते थे, वे खेती के लिए किसानों को पट्टे पर भूमि देते थे। इस तरह पट्टे पर खेती के लिए दी गई भूमि को कुट्टगि कहते थे।

भू–स्वामी एवं पट्टीदार के मध्य उपज की हिस्सेदारी को 'वारम' व्यवस्था कहते थे। इस काल में कृषि का व्यापक विस्तार था। अंतः जनसंख्या का वह भाग जो कृषक मजदूरों के रूप में कार्य करते थे उन्हें 'कुर्दि' के नाम से जानते थे। भूमि के क्रय–विक्रय के साथ इन कृषक मजदूरों का हस्तांतरण हो जाता था। राज्य में ऐसी व्यवस्था कि इन कृषक मजदूरों को मनमाने ढंग से सेवामुक्त नहीं किया जा सकता था।

विजयनगर काल में हमें सिंचाई का कोई विभाग प्रशासनिक स्तर पर देखने को नहीं मिलता है। सिंचाई साधनों के विस्तार में मंदिरों, मठों, व्यक्तियों और संस्थाओं का समान रूप से योगदान था। समाज में सिंचाई विस्तार के कार्य को पुण्य का कार्य माना जाता था तथा राज्य सिंचाई के साधनों का विकास करने वाले व्यक्ति को कर मुक्त भूमि देकर इसका प्रोत्साहन करती थी। सिंचाई के लिए नदी पर बांध बनाकर नहरें निकालने व तालाबों के विस्तार के प्रमाण मिलते है।

राज्य में जिस संपत्ति का कोई मालिक नहीं होता था उसका उपयोग सिंचाई साधनों के मरम्मत के लिए किया जाता था। विजयनगर काल में इस प्रकार का प्रमाण मिलता है कि जब सिंचाई साधनों के नष्ट हो जाने पर रैयत (किसान) गांव छोड़कर चली जाती थी राज्य स्वयं के प्रयासों से सिंचाई साधनों का पुनःनिर्माण करके इन्हे बसाने का कार्य करती थी। कभी–कभी सिंचाई के साधनों के पुनःनिर्माण के लिए राज्य स्थानीय करों को भी माफ कर देता था।

खेतों की नियमित पैमाइश की व्यवस्था थी और उनके सीमांकन के लिए पत्थर लगाए जाते थे। खेती की सुविधा को ध्यान में रखते हुए भूमि को दो भागों– सिंचाई की सुविधायुक्त भूमि तथा सिंचाई की सुविधाहीन या शुष्क भूमि के रूप में विभाजित किया गया था। सिंचाई की सुविधा वाले भूमि में दो या तीन फसलें तक उगाई जाती थी।

इस समय चावल, दालें, चना, जौ, तिलहन, नील एवं कपास की खेती की जाती थी। पश्चिमी तटवर्ती क्षेत्रों में काली मिर्च एवं अदरक तथा कर्नाटक के क्षेत्र में इलायची पैदा की जाती थी। नारियल का तो सारे तटवर्ती क्षेत्रों में उत्पादन होता था।

¼**viii**½ 0;kikj **(Trade) :-** विजयनगर काल में वाणिज्य एवं व्यापार का भी अच्छा विकास हुआ था। इस काल में मलाया, बर्मा, चीन, अरब, ईरान, अफ्रीका, अबीसीनिया एवं पुर्तगाल से व्यापार होता था। निर्यात की मुख्य वस्तुएं थीं – कपड़ा, चावल, गन्ना, इस्पात, मसाले, इत्र, शोरा, चीनी इत्यादि। आयात की जाने वाली वस्तुएं थीं – अच्छी नस्ल के घोड़े, हाथी दांत, मोती, बहुमूल्य पत्थर, नारियल पॉम, नमक आदि। मोती फारस की खाड़ी से तथा बहुमूल्य पत्थर पेगू से मंगाये जाते थे।

पुर्तगाली यात्री नूनिज ने ऐसे हीरों के बन्दरगाह की चर्चा की है जहाँ विश्वभर में सर्वाधिक हीरों की खानें पायी जाती थी।

¼**ix**½ eqnzk 0;oLFkk **(Monetary system) :-** विजयनगर साम्राज्य की मुद्रा प्रणाली भारत की सर्वाधिक प्रशंसनीय मुद्रा प्रणालियों में से थी। विजयनगर का सर्वाधिक प्रसिद्ध सिक्का स्वर्ण का 'वराह' था जिसका वजन 52 ग्रेन था। विदेशी यात्रियों ने स्वर्ण के वराह सिक्कों का उल्लेख –हूण, परदौस या पगोडा के रूप में किया है। चाँदी के छोटे सिक्के तार कहलाते थे।

विजयनगर साम्राज्य के संस्थापक हरिहर के स्वर्ण वराह सिक्कों पर हनुमान एवं गरूड़ की आकृतियाँ अंकित है। तुलुव वंश के सिक्कों पर सामान्यतः उमा–महेश्वर, वेकंटेश, बालकृष्ण की आकृतियाँ अंकित है। सदाशिव राय के सिक्कों पर लक्ष्मीनारायण की आकृति अंकित है। आरवीडु वंश के शासक वैष्णव धर्मानुयायी थे। अतः उनके सिक्कों पर वेंकटेश, शंख एवं चक्र अंकित हैं।

5-4-3- विजय नगर साम्राज्य : सामाजिक द□ा (Vijaynagar kingdom : social condition)

विजयनगर साम्राज्य के अभिलेखों में राज्य–कर्त्तव्यों से संबंधी जो विवरण दिये गये है उनसे पता चलता है कि इस समय सामाजिक व्यवस्था सैद्धान्तिक रूप से शास्त्रीय परंपराओं पर आधारित थी। समाज में ब्राह्मणों को चारों वर्णों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। क्षत्रियों के बार में विजयनगरकालीन समाज में कोई जानकारी नही मिलती है। ब्राह्मणों को सर्वाधिक विशेषाधिकार प्राप्त थे। इन्हें शासन के उच्च पदों पर नियुक्त किया जाता था। अभिलेखों में विजयनगर की सेना में अनेक सफल ब्राह्मण सेनानायकों का उल्लेख मिलता है। ब्राह्मणों को मृत्युदंड से मुक्त रखने का प्रावधान था।

मध्यवर्गीय लोगों में शेट्टियों एवे चेट्टियों का महत्वपूर्ण स्थान था। अधिकांश व्यापार इन्ही के द्वारा किया जाता था। व्यापार के अतिरिक्त ये लोग लिपिक एवं लेखाकार्यों में भी निपुण थे। इनकी अनेक शाखाएँ एवं अपशाखाएँ थी। अतः चेट्टियों का विजयनगर साम्राज्य में बहुत प्रभाव था। चेट्टियों की तरह व्यापार में निपुण दस्तकार वर्ग के लोगों को 'वीर पांचाल' कहा जाता था।

कैकोल्लार (जुलाहे), कंबलत्तर अर्थात चपरासी और शास्त्रवाहक, नाई तथा आंध्र क्षेत्र में रेड्डी कुछ महत्वपूर्ण समुदायों में माने जाते थे। इस काल में उत्तर भारत से दक्षिण भारत में आकर बसे लोगों को 'बडवा' कहा गया।

निम्न व छोटे समूह के अंतर्गत लोहार, बढई, मूर्तिकार, स्वर्णकार व अन्य धातुकर्मी तथा जुलाहे आते थे। जुलाहे मंदिर क्षेत्र में रहते थे और साथ ही मंदिर प्रशासन व स्थानीय घरों के आरोपण में उनका सहयोग होता था।

nkl iFkk (Slavery system) :- इस काल में दास प्रथा का प्रचलन था। महिला एवं पुरूष दोनों वर्ग के लोग दास हुआ करते थे। विजयनगर युग से पहले चोल काल में भी यह दास प्रथा प्रचलित थी। मनुष्यों के खरीदे एवं बेचे जाने को 'वेस–वग' कहा जाता था। लिये गये ऋण को न दे पाने एवं दिवालिया होने की स्थिति में ऋण लेने वालों को दास बनना पड़ता था।

fL=;ksa dh fLFkfr (Status of Women) :- समस्त समाज के दृष्टिकोण से स्त्रियों की स्थिति इस युग में भी अच्छी नहीं थी। उन्हें सामान्यतः भोग की वस्तु समझा जाता था। राजपरिवार की स्त्रियां तथा राज्य–व्यवस्था से जुड़ी स्त्रियों को उच्च सुविधायें उपलब्ध थी। अभिजात वर्ग की कन्याओं के लिए भाषा, संगीत व नृत्य की शिक्षा उपलब्ध थी। लेकिन साहित्यिक क्षेत्र में महिलाओं का योगदान देखने को नहीं मिलता है।

bl dky esa jkT;&O;oLFkk ds vUrxZr efgyk,¡ fuEu Hkwfedk fuHkkrh Fkh&

¼i½ राजा के कार्यों को लिखना ।

¼ii½ आय–व्यय की गणना करने में।

¼iii½ मल्ल युद्ध में भाग लेने के रूप में।

¼iv½ ज्योतिष के कार्य में।

¼v½ अंगरक्षक व पहरेदार की भूमिका में।

¼vi½ न्यायाधीश के रूप में।

¼vii½ नृत्य व गायन–वादन का कार्य।

इससे स्पष्ट है कि संपूर्ण भारतीय इतिहास में विजय नगर ही ऐसा एकमात्र साम्राज्य था, जिसने विशाल संख्या में स्त्रियों को राजकीय पदों पर नियुक्त किया था। यद्यपि समाज में कुछ कुप्रथायें विद्यमान थी जैसे बाल–विवाह, देवदासी एवं सती प्रथा आदि।

मंदिरों में देवपूजा के लिए रहने वाली स्त्रियों को देवदासी कहा जाता था। इन्हें आजीविका के लिए या तो भूमि दे दी जाती थी अथवा नियमित वेतन दिया जाता था।

गणिकाओं का समाज में महत्वपूर्ण स्थान था। ये गणिकाएँ दो तरह की होती थी – मंदिरों से संबंधित और स्वतंत्र रूप से जीवन यापन करने वाली। अधिकांश गणिकाएँ पर्याप्त शिक्षित, धनाढ्य और विशेषधिकार प्राप्त होती थी। सार्वजनिक

उत्सवों पर समस्त गणिकाएँ अनिवार्यतः उत्सव में भाग लेती थी। राजा एवं सामन्त लोग बिना किसी आपत्ति के इनसे सम्बन्ध बनाते थे।

समाज में पर्दा प्रथा प्रचलित नहीं थी और परिवार में महिलाओं की उपयोगी भूमिका मानी जाती थी। पूर्व की भांति इस काल में भी समाज में विधवाओं का जीवन बहुत हेय और अपमानजनक माना जाता था।

lrh i:Fkk (Satipratha) :- विजयनगर साम्राज्य के अभिलेखों एवं विदेशी वृतांत दोनों समाज में सती प्रथा के प्रचलन का उल्लेख करते हैं। विजयनगर के 1354 ई. के एक अभिलेख में माला गौडा नामक महिला का सती होने का प्रमाण मिलता है। सती को मुक्ति एवं स्वर्गारोहन से जोड़कर देखने की भावना इस प्रथा का और प्रोत्साहित करती थी। यह एक तरह से समृद्ध विजयनगर साम्राज्य पर काला धब्बा था। लगभग समस्त विदेशी यात्रियों ने इस क्रूर प्रथा का बड़े विस्तार के साथ उल्लेख किया है। यह प्रथा केवल नायकों और राजपरिवार तक ही सीमित थी। विदेशी यात्री डुआर्ट बार्बोसा के विवरण से पता चलता है कि यह प्रथा लिगायतों, चेट्टियों और ब्राह्मणों में प्रचलित नहीं थी।

विधवा विवाह करने वाले युगल विवाह कर से मुक्त थे। इससे पता चलता है कि राज्य व्यवस्था व्यावहारिक दृष्टि से सती प्रथा को प्रश्रय नहीं देता था।

oL=kHk"k.k :- इस काल में सामान्य वर्ग के पुरूष धोती और सफेद सूती या रेशमी कमीज पहनते थे तथा कंधे पर दुपट्टा डालते थे। सिर पर टोपी या पगड़ी पहनने का भी प्रचलन था। विदेशी यात्रियों के विवरण अधिकांशतः अभिजात वर्ग के वस्त्राभूषणों का विस्तार से वर्णन करते हैं। इनके विवरण से पता चलता है कि राजपरिवार के पुरूष एवं स्त्रियां दोनों कीमती एवं जरीदार कपड़े पहनते थे। सामान्य लोग जूते नही पहनते थे किंतु अभिजात एवं राजपरिवार के लोग रोमन शैली के जूते पहनते थे। राजपरिवार की स्त्रियाँ पावड (एक प्रकार का पेटीकोट), दुपट्टा और चोली पहनती थी। इनके वस्त्र कीमती एवं जरीदार होते थे। सामान्यवर्ग की स्त्रियाँ साड़ी और चोली पहनती थी। स्त्री और पुरूष दोनों आभूषणप्रिय थे।

युद्ध में वीरता दिखाने वाले पुरूषों को सम्मान के रूप में पैर में 'गंडपेद्र' नाम का कडा पहनाया जाता था। यह सम्मान का प्रतीक था। बाद में यह सम्मान असैनिक सम्मान के रूप में मंत्रियों, विद्वानों एवं अन्य सम्मानीय व्यक्तियों को भी दिया जाने लगा।

शिक्षा एवं मनोरंजन (Education and Recreation) :- विजयनगर साम्राज्य में शिक्षा के मामले में शासकों में रूचि और प्रोत्साहन का अभाव दृष्टिगोचर होता है। पूर्व के राजवंशों चोल व पल्लव की भांति प्रत्यक्ष रूप से विजयनगर शासकों ने विद्यामंदिरों को बढ़ावा नहीं दिया फिर भी अप्रत्यक्ष रूप से उन्होंने विद्या को प्रोत्साहन दिया। अभी भी मंदिर, मठ एवं अग्रहार मुख्य शिक्षा के केन्द्र थे। अग्रहारों में मुख्य रूप से वेदों की शिक्षा दी जाती थी।

इतिहास, काव्य, नाटक, आयुर्वेद और शास्त्र एवं पुराण अध्ययन के लोकप्रिय विषय थे। तुलुववंश के शासकों ने विद्या एवं ज्ञान को पर्याप्त प्रश्रय दिया। राजकीय सेवा के इच्छुक विद्यार्थियों के लिए विशेष विद्यालय होते थे जहाँ उन्हें भाषा और गणित की शिक्षा दी जाती थी।

मनोरंजन के क्षेत्र में नाटक और यक्षगान (जिसमें मंच पर संगीत और वाद्यों द्वारा अभिनय किया जाता था) इस काल में बहुत लोकप्रिय थे। बोमलाट (छाया–नाटक) समाज में बहुत लोकप्रिय था। अभिजात वर्ग के पुरूष एवं स्त्री के बीच मनोरजंन के रूप में शतरंज, पासा और यहाँ तक कि जुआ खेलने तक के प्रचलन के प्रमाण मिलते हैं।

उत्तर भारत से दक्षिण भारत में आकर बसने वाले लोगों से उत्पन्न स्थिति, सामाजिक कुरीतियों एवं रूढ़ियों के कारण उत्पन्न सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए विजयनगर साम्राज्य के शासकों ने बिना किसी भेदभाव व पक्षपात के सदैव प्रयत्नशील रहे। इस काल में शासकों ने सामाजिक समरूपता व एकता को बहुत अधिक महत्व दिया। इस अर्थ में जनता के प्रयासों को राज्य द्वारा पर्याप्त समर्थन मिलता था। इसका प्रमाण मिलता है कि बाल–विवाह के कारण उत्पन्न दहेज की कुरीति की अधिकता को जब ब्राह्मण समुदाय ने अवैध घोषित किया तो राज्य ने इसे स्वीकृति देकर विधान का रूप दिया।

जाति संबंधी विवाद उत्पन्न हो जाने पर नगर प्रशासन जातियों के बीच उचित परामर्श की व्यवस्था द्वारा इसका समाधान निकालती थी। सामाजिक अपराध करने वालों को जाति बहिष्कृत करने का प्रावधान था। इससे ब्राह्मण भी वंचित नहीं थे। समाज में दस्तकार समुदायों – बढ़ई, लोहार, स्वर्णकार आदि को पूर्ण सुरक्षा प्राप्त थी ताकि वे स्वतंत्रता पूर्वक अपनी सेवा कर सके।

सामाजिक नियमों की अवहेलना या इसे तोड़ने की स्थिति में पर्याप्त व कठोर दंड की व्यवस्था थी।

सांप्रदायिक मामलों में राज्य तटस्थ दृष्टिकोण अपनाकर सामाजिक सद्भावना व एकता को प्रोत्साहन देता था। श्रवणबेलगोला के अभिलेखों में जैन एवं वैष्णव संप्रदाय के विवाद में राज्य द्वारा जैन–संप्रदाय के हितों की रक्षा करने का उल्लेख है।

5-4-4- fot;uxj lkezkT; dk iruA **(Downfall of vijaynagar empire)**

विजयनगर साम्राज्य के पतन के लिए अनेक कारण जिम्मेदार थे। इनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है

¼**i**½ detkj dsfUnz; ljdkj **(Weak central government):-** विजयनगर साम्राज्य के अंतर्गत शासन केन्द्र, प्रांत से लेकर स्थानीय स्तर तक विकेन्द्रीकरण प्रणाली के रूप में थी। इसमें प्रांतों को अधिक शक्तियाँ प्रदान की गई थी। प्रांत के गवर्नरों को सेना रखने, नियुक्तियाँ करने, सिक्के जारी करने तथा कर लगाने के अधिकार प्राप्त थे। कालांतर में प्रांतीय सरकार और भी मजबूत होती गई और केंद्रीय शक्ति कमजोर होते गये जिससे विजयनगर साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर हो गया।

¼**ii) भिन्न–भिन्न राजवं□ा (Different Dynasties):-** विजयनगर साम्राज्य विशाल था। इसके स्थायित्च एवं शक्तिशाली होने के लिए यह आवश्यक था कि राज्य की सत्ता मजबूती के साथ किसी एक राजवंश के हाथ में होता। परंतु दुर्भाग्यवश इस साम्राज्य पर अलग–अलग चार राजवंशों ने राज्य किया। प्रत्येक वंश द्वारा अपना राज्य स्थापित करने के चक्कर में यह विशाल साम्राज्य षड्यंत्र का शिकार हो गया। अतः भिन्न–भिन्न राजवंशों का राज भी पतन का एक कारण बना।

¼**iii**½ fucZy lsuk **(Weak Army) :-** विजयनगर साम्राज्य के पतन में उसकी सेना की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। विजयनगर साम्राज्य के शासक अपनी सैनिक शक्ति के लिए सामंतों पर निर्भर रहते थे। ये सैनिक राजा की अपेक्षा सामंतों के प्रति अधिक निष्ठावान होते थे। इसके अलावा इन सैनिकों में परस्पर तालमेल भी नही था। ऐसे में विजयनगर साम्राज्य का अंत निश्चित था।

¼**iv**½ cgeuh lkekT; d fo :) l?k"k **(Struggle against Bahamani Empire) :-** लगभग विजयनगर साम्राज्य के साथ ही इसके समांतर दक्षिण भारत में बहमनी साम्राज्य की स्थापना हुई ये दोनों साम्राज्य स्थापना के साथ ही साम्राज्य विस्तार, सामरिक शक्ति, सुरक्षा आदि कारणों से लगातार एक दूसरे के विरूद्ध संघर्ष करते रहे। इस लंबे संघर्ष के कारण विजयनगर साम्राज्य की वित्तीय स्थिति तथा सैनिक शक्ति पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। निरंतर लड़ाईयों के कारण राज्य की शासन व्यवस्था भी शिथिल पड गई। ये बातें विजयनगर साम्राज्य को पतन की ओर ले गई।

¼**v**½ d".kno jk; d ncy mÙkjkf/kdkjh **(Weak Successors of Krishnadev Raya) :-** कृष्णदेव राय विजयनगर के महानतम शासक हुए। कुशल प्रशासन के साथ–साथ विद्या एवं कलां के भी संरक्षक थे। कृष्णदेवराय ने अपने कौशल से विजयनगर साम्राज्य को शिखर पर पहुँचा दिया था। परंतु कृष्णदेव राय के उत्तराधिकारी निर्बल तथा अयोग्य निकले और वे इस विरासत को संभालने में विफल रहे। अतः यह भी विजयनगर साम्राज्य के पतन का एक कारण साबित हुआ।

¼**vi**½ ykxk dk foykl h thou **(Lexurios Life of the People) :-** विजयनगर साम्राज्य अपने समय का समृद्ध समाज था। यह समृद्धि समाज के हर वर्ग में थी। धन की अधिकता के कारण लोग ऐश्वर्य का जीवन व्यतीत करते थे। समकालीन ऐतिहासिक विवरणों से पता चलता है कि समाज में खुले रूप से गणिकाओं (वेश्याओं) का कारोबार चलता था। सरायों में तो उनकी भरमार रहती थी।

bl i:dkj leLr lekt foykl i.f जीवन जीने को उत्सुक था। ऐसे समाज का पतन कोई आश्चर्य की बात नही थी।

¼**vii**½ rkyhdkVk dh yMkb **(Battle of Talikota) :-** कृष्णदेव राय के बाद के विजयनगर के शासकों ने मुसलमानों पर भारी अत्याचार करने आरंभ कर दिये। इससे समाज का यह वर्ग असंतुष्ट था। दूसरी ओर बहमनी साम्राज्य के पतन के फलस्परूप बने मुस्लिम राज्य विजयगनर साम्राज्य के आक्रमण से परेशान थे। बहमनी साम्राज्य के विघटन के फलस्वरूप बने 5 मुस्लिम राज्यों में से कोई भी अलग–अलग विजयनगर साम्राज्य का सामना करने में असमर्थ नहीं था। ऐसे में इन मुस्लिम राज्यों ने अपने परस्पर शत्रुता को भुलाकर एक महासंघ बनाने का निर्णय लिया। इसमें बरार को छोड़कर बाकी सभी मुस्लिम राज्य–अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुंडा एवं बीदर शामिल थे। इस महासंघ ने 1565 ई. में तालीकोटा अथवा राक्षसी तांगड़ी की लड़ाई में विजयनगर को कड़ी पराजय दी। इस लड़ाई में रामराय मारा गया। मुसलमानों ने विजयनगर में भयंकर लूटपाट की और समस्त नगर को नष्ट–भ्रष्ट कर डाला। मुसलमानों ने विजयनगर साम्राज्य के बहुत बड़े भाग पर अधिकार कर लिया था। इस युद्ध के बाद विजयनगर साम्राज्य फिर नहीं संभल पाया और अंततः 1674 ई. में इस वंश के अंतिम शासक श्रीरंग तृतीय की मृत्यु के साथ ही विजयनगर साम्राज्य का अस्तित्व समाप्त हो गया।

5-5- ixfr leh{kk **(Check your progress)**

(क) रिक्त स्थानों को भरने पर आधारित प्रश्न **(Question based on filling in the blanks) :-**

(1) विजयनगर साम्राज्य की स्थापना............................ सन् में की गई थी

(2)) विजयनगर साम्राज्य का महान शासक कृष्णदेव राय .... वंश से संबंधित थे

(3) बहमनी साम्राज्य का संस्थापक अलाउद्दीन बहमनशाह ने .... को अपनी राजधानी बनाया।

(4) बहमनी साम्राज्य के अंतर्गत 'ख्वाजा जहाँ' की उपाधि से .... को प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया।

(5) बहमनी साम्राज्य के .... योग्य एवं विद्वान शासक ने दक्षिण में भीमानदी के तट पर नवीन नगर फिरोजाबाद की स्थापना की।

(6) तुंगभद्रा और कृष्णा नदियों के बीच का क्षेत्र .... कहलाता था।

(7)) विजयनगर साम्राज्य के संस्थापक .... थे।

(8) हजारा एवं विट्ठल स्वामी मंदिर का निर्माण .... ने करवाया।

(9)) विजयनगर साम्राज्य में प्रांत को .... कहा जाता था।

(10)) विजयनगर का सर्वाधिक प्रसिद्ध सिक्का स्वर्ण का .... था।

(ख) सत्य–असत्य आधारित प्र□न (True-False based Question)

प्रत्येक कथन के सामने उपयुक्त उत्तर सत्य या असत्य भाब्द लिखकर अंकित करें :–

(1) अष्टदिग्गज कृष्णदेव राय के दरबार में आठ तमिल भाषा के महान कवि थे। (   )

(2) बहमनी साम्राज्य का विघटन 5 मुस्लिम राज्यों अहमदनगर, गोलकुंडा, बीजापुर, बरार व बीदर में हो गया था (   )

(3) विजयनगर साम्राज्य के महान् शासक कृष्णदेव राय की उपाधि आन्ध्र भोज, अभिनव भोज, आन्ध्र पितामह आदि थी (   )

(4) तालिनकोटा का युद्ध (1565 ई. में विजयनगर विरोधी महासंघ में अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुंडा और बरार शामिल था। (   )

(5) विजयनगर साम्राज्य में प्रशासन की सबसे छोटी इकाई 'उर' या 'ग्राम' थी। (   )

(6) विजयनगर साम्राज्य को उन्नति के शिखर पर पहुँचाने में महमूद गवाँ का बहुत बडा योगदान था। (   )

(7) विजयनगर की राजधानी हंपी को यूनेस्को द्वारा 1986 ई. में विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया। (   )

(8) विजयनगर साम्राज्य का संस्थापक हरिहर एवं बुक्का ने अपने गुरू विद्यारण्य की प्रेरणा से संगम वंश की स्थापना की थी। ( )

(9) बहमनी राज्य का संस्थापक अलाउद्दीन हसन बहमनशाह ने गुलबर्गा को अपनी राजधानी बनाया तथा उसका नाम बदलकर अहसनाबाद कर दिया। ( )

(10) बहमनी साम्राज्य का प्रधानमंत्री महमूद गवाँ जिसने ईरान, ईराक, मिस्त्र एवं टर्की के शासकों को स्वयं पत्र लिखा के पत्रों को 'रियाजुल–इन्शा' के नाम से संग्रहित किया गया। ( )

5-6- सारांश (Summary)

- विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 1336 ई. में हरिहर और बुक्का नाम के दो भाइयों ने की थी।
- ये दोनों वारंगल (तेलंगाना) के काकतीय राजा के सामंत थे और बाद में कांपिली (आधुनिक कर्नाटक में) नामक राज्य में मंत्री बन गए।
- कांपिली पर मुहम्मद–बिन–तुगलक ने आक्रमण कर उसे जीत लिया और इन दोनों भाइयों को बंदी बनाकर दिल्ली ले गया और इस्लाम में दीक्षित कर दिया गया।
- अपने गुरू विधारण्य की प्रेरणा से वे फिर से हिन्दू धर्म में दीक्षित हुए तथा उन्होंने विजयनगर में अपनी राजधानी स्थापित की।
- विजयनगर साम्राज्य पर चार राजवंशों ने राज किया।
- **चार राजवंशों का वर्णन निम्न प्रकार है –**

वंश	संस्थापक	समय	अंतिम शासक
संगम	हरिहर प्रथम	1336–1485 ई.	विरूपाक्ष द्वितीय
सालुव	सालुव नरसिंह	1485–1505 ई.	इम्माड़ी नरसिंह
तुलुव	वीर नरसिंह	1505–1570 ई.	सदा शिव राय
आरविडु	तिरूमल	1570 के बाद	श्रीरंग तृतीय

- हरिहर और बुक्का ने अपने पिता के नाम पर संगम वंश की स्थापना की।
- संगम वंश के प्रथम शासक हरिहर प्रथम की पहली राजधानी अनेगोण्डी थी, जो तुंगभद्रा नदी के तट पर स्थित थी
- हरिहर प्रथम ने विजयनगर (हम्पी) को अपनी द्वितीय राजधानी बनाया।
- विजयनगर साम्राज्य के अवशेष आज हम्पी (कर्नाटक में) विद्यमान हैं।
- हंपी को भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय महत्त्व का स्थल 1976 ई. में घोषित किया गया।
- हंपी को यूनेस्को द्वारा विश्व पुरातत्व स्थल/अंतरराष्ट्रीय धरोहर 1986 ई. में घोषित किया गया।
- हरिहर प्रथम के बाद गद्दी पर बैठने वाला संगम वंशीय शासक बुक्का प्रथम को 'सागरों' का स्वामी' कहा गया है।

- बुक्का प्रथम के समय में ही एक अफगान अलाउद्दीन हसन, जिसका उत्थान गंगू नामक एक ब्राह्मण की सेवा में रहते हुए हुआ, जिसे हसन गंगू के नाम से भी जाना जाता है। उसने अलाउद्दीन हसन बहमनशाह के नाम से बहमनी साम्राज्य की स्थापना 1347 ई. में की थी।
- विजयनगर के शासकों और बहमनी सुल्तानों के हितों का टकराव तीन अलग–अलग क्षेत्रों तुंगभद्रा के दोआब, कृष्णा–गोदावरी के डेल्टा–क्षेत्र और मराठवाड़ा प्रदेश में था।
- हरिहर द्वितीय विजयनगर साम्राज्य का प्रथम शासक था, जिसने महाराजाधिराज और राजपरमेश्वर की उपाधि धारण की।
- वेदों के प्रसिद्ध टीकाकार सायणाचार्य हरिहर द्वितीय के मुख्यमंत्री थे।
- जैन धर्म का अनुयायी और नानार्थ रत्नमाला का लेखक ईरूगांपा उसका सेनापति था।
- विजयनगर साम्राज्य के संगमवंशीय शासक देवराय प्रथम ने ही सबसे पहले विजयनगर की सेना में दस हजार मुस्लिमों को भर्ती किया।
- देवराय प्रथम के शासनकाल में इटैलियन यात्री निकोलो डी कॉण्टो ने 1430 ई. में विजयनगर की यात्रा की थी।
- कॉण्टी कहता है कि इस नगर की परिधि साठ मील है। इसकी दीवारें पहाड़ों तक चली गई हैं और इन पहाड़ों की तराई में पहुँचकर उन्होंने घाटियों के गिर्द घेरा बना दिया है।
- देवराय द्वितीय ने गजबटेकर (हाथियों का शिकारी), इम्माडि, देवराय (प्रौढ़ देवराय) की उपाधि धारण की।
- फारसी यात्री अब्दुर्रज्जाक देवराय द्वितीय के शासनकाल में ही विजयनगर पहुँचा था।
- अब्दुर्रज्जाक ईरान (प्राचीन नाम फारस) के शासक मिर्जा शाहरूख के दूत के रूप में भारत आया था।
- अब्दुर्रज्जाक मानता था कि उसने दुनिया में जितने भी नगर देखे या जितने नगरों के बारे में सुना था, विजयनगर उनमें से सबसे भव्य नगरों में से था।
- देवराय द्वितीय ने तेलुगू के प्रसिद्ध कवि श्रीनाथ को कवि सार्वभौम की उपाधि से सम्मानित किया।
- संगमवंशीय शासक मल्लिकार्जुन ने भी अपने पिता देवराय द्वितीय की भाँति गटबटेकर की उपाधि धारण की थी।
- विजयनगर साम्राज्य का सबसे महान् शासक तुलुव वंशीय शासक कृष्णदेवराय था।
- वह स्वयं तेलुगू और संस्कृत का प्रकांड विद्वान था।
- उसने 'अभुक्तमाल्यद', 'जाम्बवतीकल्याण' एवं उषा परिणय की रचना की।
- कृष्णदेव राय के दरबार में रहनेवाले तेलुगू साहित्य के आठ कवियों को 'अष्टदिग्गज' कहा गया।
- कृष्णदेव राय का राजकवि 'पेद्दाना' था, जो संस्कृत एवं तेलुगू दोनों भाषाओं का ज्ञाता था।
- कृष्णदेव राय ने 'यवन राज स्थापनाचार्य' आन्ध्र भोज, अभिनव भोज, आन्ध्र पितामह आदि उपाधि धारण की।
- कृष्णदेव राय एक महान् निर्माता भी था। उसने राजधानी के दक्षिणी सीमांत पर अपनी माता के नाम पर नागलपुर नामक नया नगर बसाया।
- कृष्णदेव राय ने हास्पेट नामक नगर अपनी पत्नी की स्मृति में बसाया था।
- उसने अपनी राजधानी में हजारा एवं विट्ठलस्वामी नामक मंदिर का निर्माण करवाया।
- कृष्णदेवराय के काल में डोमिगोस पायस और बारबोसा दोनों पुर्तगाली यात्री का आगमन हुआ था।

- पुर्तगाली यात्री बारबोसा कहता है– राजा इतनी आजादी देता है कि कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छानुसार आ जा सकता है तथा अपने धर्म के अनुसार जीवन व्यतीत कर सकता है।
- कृष्णदेव राय बाबर के समकालीन थे।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा 'तुजूके बाबरी' में कृष्णदेव राय को भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक बताया है।
- कृष्णदेव राय की मृत्यु 1529 ई. में हो गयी।
- कृष्णदेव राय के बाद तुलुव वंश का शासक अच्युतदेव राय बना।
- अच्युतदेव राय ने महामण्डलेश्वर नामक एक नये अधिकारी की नियुक्ति की।
- तुलुववंशीय शासक सदाशिवराय के शासन काल में वास्तविक सत्ता रामराय के हाथों में थी।
- तालिकोटा या राक्षसतंगड़ी का युद्ध 1565 ई. में हुआ था।
- तालिकोटा के युद्ध को बन्नीहट्टी के युद्ध के नाम से भी जाना जाता है।
- बन्नीहट्टी तालिकोटा के ही निकट एक जगह का नाम है।
- तालिकोटा के युद्ध क्षेत्र में राक्षस व तांगड़ी दोनों गाँव पड़ता है।
- इसलिए तालिकोटा के युद्ध को इन नामों से भी जानते है।
- तालिकोटा के युद्ध 1565 ई. में विजयनगर के विरूद्ध बने महासंघ में अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा व बीदर शामिल थे।
- इस युद्ध में रामराय की हत्या कर दी गयी।
- तालिकोटा के युद्ध को सामान्यतः विजयनगर के महान् युग का अंत माना जाता है।
- विजयनगर के चौथे राजवंश आरविडु वंश के संस्थापक तिरूमल ने पेनुकोण्डा को अपनी राजधानी बनाया।
- विजयनगर का शासन राजतंत्रात्मक था। राजा को राय की उपाधि से संबोधित किया जाता था।
- राजा के चयन में नायकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी।
- युवराज के राज्यभिषेक को 'युवराज पट्टाभिषेकम्' कहा जाता था।
- राज्य संबंधित कार्यो के संचालन के लिए राजपरिषद् होती थी।
- राजपरिषद् के बाद शासन संचालन के लिए केंद्रीय मंत्रिपरिषद् होती थी।
- मंत्रिपरिषद् के प्रमुख अधिकारी को प्रधानी या महाप्रधानी कहा जाता था।
- मंत्रिपरिषद् के अध्यक्ष को सभानायक कहा जाता था।
- केन्द्र में अधिकारियों की विशेष श्रेणी को दंडनायक कहा जाता था।
- शासन प्रबंधन के लिए विजयनगर साम्राज्य बहुत से प्रांतों में बँटा था।
- प्रांतों में जो इकाई का क्रम मिलता है, उसमें राज्य या मंडलम् कोट्टम या वलनाडु, नाडु, मेलाग्राम और उर या ग्राम होते थे
- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई 'उर' या ग्राम होती थी।
- 'मेलाग्राम' 50 ग्रामों के समूह को कहते थे।
- ग्रामीण प्रशासन के संचालन के लिए 'आयंगार' व्यवस्था थी।
- प्रत्यक्ष राजकीय नियंत्रण की भूमि को 'भंडारवाद ग्राम' के नाम से जानते थे।
- ब्रह्मदेय – ब्राह्मणों को दान में दी गई भूमि।

- देवदेय – मंदिरों को दान में दी गई भूमि।
- मठापुर – मठों को दान में दी गई भूमि।
- ब्रह्मदेय, देवदेय, मठापुर भूमि कर–मुक्त भूमि होती थी।
- नायकों को प्रदान की जाने वाली भूमि को 'अमरम्' कहते थे।
- रत्तकोडगै – युद्ध में शोर्य प्रदर्शन करने वालों को दी जाने वाले भूमि जो कर मुक्त होती थी।
- विजयनगर शासक कृष्णदेव राय ने भूमि का सर्वेक्षण कराया था।
- राज्य की आय का मुख्य स्त्रोत भूमि कर था जिसे 'रया रेखा' कहा जाता था।
- सिंचाई व्यवस्था में पूंजी निवेश द्वारा भी आय प्राप्त की जाती थी, जिसे तमिल क्षेत्र में 'दासवंदा' तथा आंध व कर्नाटक में 'कोट्टकुडगै' कहा जाता था।
- विजयनगर साम्राज्य द्वारा घोड़ों का आयात अरब और मध्य एशिया से किया जाता था।
- विजयनगर साम्राज्य में घोड़ों के व्यापारियों को 'कुदिरई चेट्टी कहा जाता था।
- विजयनगर साम्राज्य द्वारा आयात की जाने वाली वस्तुएं थीं –घोड़ा, हाथी दाँत, बहुमूल्यरत्न, आभूषण आदि।
- विजयनगर साम्राज्य द्वारा निर्यात की जाने वाली वस्तुएं थीं – गर्म मसाले, वस्त्र, सफेद चावल, लोहा, हीरा आदि।
- विजयनगर का सर्वाधिक प्रसिद्ध सिक्का सोने का 'वराह' था।
- चाँदी के छोटे सिक्के को 'तार' कहते थे।
- विजयनगर साम्राज्य में जुलाहे को 'कैकोल्लार' एवं दस्तकारों को 'वीर पांचाल' कहा जाता था।
- गीली भूमि को 'नन्जाई' कहते थे।
- नकद लगान को 'सिद्दम' कहते थे।
- उम्बलि – गांवों में विशेष सेवाओं के लिए दी गई लगान मुक्त भूमि।
- कुट्टगि – बड़े भूस्वामियों तथा मन्दिरों द्वारा पट्टे पर दी गई भूमि।
- बोमलाट – छाया नाटक को कहते थे।
- विजयनगर के शासक शैव एवं वैष्णव धर्म के अनुयायी थे।
- अराविड्डु राजवंश की दो राजधानियां थीं – पेनुकोंडा एवं चंद्रगिरी।
- विजयनगर साम्राज्य में सैनिक कमांडर को 'अमर नायक' कहा जाता था।
- विजयनगर साम्राज्य का मुख्य त्यौहार – 'महानवमी' था।
- विजयनगर साम्राज्य का सर्वाधिक प्रसिद्ध जलाशय कमलपुरम् था।
- तुंगभद्रा और कृष्णा नदियों के बीच का क्षेत्र रायचुर दोआब कहलाता था।
- 'विरूपाक्ष' मंदिर हंपी में स्थित है।
- विजयनगर साम्राज्य के शासक 'विरूपाक्ष' के नाम पर शासन चलाते थे।
- विजयनगर साम्राज्य की स्थानीय देवी – पंपा देवी थी।
- विजयनगर साम्राज्य की राजकीय भाषा –कन्नड़ थी।
- मंदिरों में बना विशाल खुला हॉल – 'मंडप' कहलाता था।
- मंदिरों के प्रवेश द्वार को – गोपुरम् कहते थे।

- कृष्णदेव राय द्वार निर्मित विट्ठल मंदिर –विष्णु देवता को समर्पित है।
- समाज में पर्दा प्रथा का प्रचलन नहीं था।
- सती प्रथा का वर्णन मिलता है।
- कृष्णदेव राय ने विधवा विवाह को कर मुक्त कर दिया था।
- देवदासी प्रथा का प्रचलन था।
- मनुष्यों के क्रय–विक्रय को 'वेस–वग' कहा जाता था।
- युद्ध में वीरता दिखाने वाले पुरूष को 'गंडपेड' नामक आभूषण पैरों में पहनाया जाता था।
- 'यक्षगान' नृत्य शैली का विकास इस काल में ही हुआ था।
- विजयनगर साम्राज्य में शतरंज और पासा अत्यंत लोकप्रिय खेल थे।
- उत्तर भारत से दक्षिण भारत में आकर बसने वाले लोगों को 'बडवा' कहा जाता था।
- मंठों, मंदिरों व अग्रहारों में शिक्षा प्रदान की जाती थीं।
- 'अग्रहारों' में मुख्यतः वेदों की शिक्षा दी जाती थी।
- **fo t ;uxj lाम्राज्य में आये विदे�ी यात्रियों का विवरण :–**

;k=h	दे�ा	भाासक	fooj.k
अब्दुर्रज्जाक	फारस (ईरान)	देवराय प्रथम	विजयनगर सचिवालय का वर्णन
निकोलो कॉण्टो	इटली	देवराय प्रथम	विजयनगर शहर का वर्णन
पायस	पुर्तगाली	कृष्णदेव राय	विजयनगर के शिल्प व व्यापार का वर्णन
बारबोसा	पुर्तगाली	कृष्णदेव राय	सती प्रथा का वर्णन
सीजर फ्रेडरिक	पुर्तगाली	तालिकोटा युद्ध के बाद आया	विजयनगर का वर्णन किया
नूनीज	पुर्तगाली	अच्युत देवराय	सती प्रथा का उल्लेख
निकितीन	रूस	मुहम्मद तृतीय (बहमनी वंशीय सल्तान)	विजयनगर की असमानता का वर्णन

- बहमनी साम्राज्य का संस्थापक अलाउद्दीन हसन बहमनशाह था।
- अलाउद्दीन हसन बहमनशाह ने गुलबर्गा को राजधानी बनाया।
- अलाउद्दीन हसन बहमनशाह ने सम्पूर्ण साम्राज्य को चार तराफों (प्रांतों) – गुलबर्गा, दौलताबाद, बीदर, बरार में विभाजित किया।
- बहमनी साम्राज्य के शासक मुहम्मद शाह प्रथम का मुदकल के किले पर अधिकार को लेकर विजयनगर शासक बुक्का प्रथम से 1367 ई. में युद्ध हुआ था जिसमें पहली बार युद्ध में तोपखाने का प्रयोग किया गया।
- फिरोजशाह बहमनी साम्राज्य का विद्वान सुल्तान था।
- उसे कई भाषाओं का ज्ञान था।
- उसने खगोलशास्त्र के अध्ययन के लिए दौलताबाद में एक वेधशाला का निर्माण करवाया।

- बहमनी शासक शिहाबुद्दीन अहमद प्रथम ने गुलबर्गा की जगह बीदर को राजधानी बनाया और इसका नाम 'मुहम्मदाबाद' रखा।
- अहमद प्रथम का शासनकाल न्याय तथा धर्मनिष्ठता के लिए प्रसिद्ध था तथा उसका संपर्क सूफी संत गेसूदराज से था। अतः उसे इतिहास में अहमदशाह 'वली' या 'संत' अहमद भी कहा जाता है।
- बहमन सुल्तान हुमायूँ को इसकी क्रूरता के कारण जालिम शाह के नाम से जाना जाता है। इसे 'दक्कन' का 'नीरों' भी कहा जाता था।
- बहमनी साम्राज्य के सुल्तान मुहम्मद तृतीय के शासन काल में ख्वाजा जहाँ इसका मंत्री बना।
- इसके समय में ईरानी व्यापारी महमूद गवाँ को शासन में सेवा दिया गया तथा इसे 'मलिक–ए–तुज्जार' की उपाधि दी गयी।
- egen xok &
- जन्म से ईरानी था
- प्रारंभ से वाणिज्य–व्यापार में लगा था।
- बहमनी साम्राज्य के अंतर्गत उसे मलिक–ए–तुज्जार (व्यापारियों का प्रधान) की उपाधि दी गयी।
- सुल्तान का प्रधानमंत्री बनाया गया।
- महमूद गवाँ ने पश्चिमी तट के प्रदेशों दाभोल और गोवा पर विजय प्राप्त की थीं।
- महमूद गवाँ ने बहमनी राज्य को आठ प्रांतों या तराफों में विभाजित किया था।
- महमूद गवाँ विद्या तथा कला का बहुत बड़ा सरंक्षक था।
- उसने राजधानी बीदर में एक भव्य महाविद्यालय की स्थापना की।
- महमूद गवाँ ने भूमि की व्यवस्थित पैमाइश, ग्रामों के सीमा– निर्धारण और लगान –निर्धारण की जाँच कराई।
- उसने अपनी राजनीतिक गतिविधियों को केवल बहमनी साम्राज्य तक ही सीमित नहीं रखा, वरन भारत और उसके बाहर ईरान, इराक मिस्त्र, टर्की के सुल्तानों के साथ पत्र–व्यवहार किया।
- महमूद–गवाँ के पत्रों का संग्रह – 'रियाजुल–इन्शा' नाम से किया गया है।
- बहमनी सल्तन की एक बड़ी समस्या अमीरों के मध्य होने वाले झगड़े थे। अमीर लोग पूर्वागंतुकों दक्कनियों तथा अफाकियों (नवोगंतकों) में बँटे हुए थे।
- महमूद गवाँ अफाकी अर्थात् नावगंतुक था।
- उसके विरोधियों ने युवा सुल्तान को भड़का दिया तथा 1482 ई. में उसने महमूद गवाँ को मृत्युदंड दे दिया।
- इसके कुछ वर्षो के बाद ही बहमनी साम्राज्य पाँच छोटे–छोटे राज्यों – गोलकुंडा, बीजापुर, अहमदनगर, बरार और बीदर में बंट गया।

5-7- ldr&lpd **(Key-Words)**

- nkvkc – दो नदियों के बीच का क्षेत्र। जैसे – तुंगभद्रा और कृष्णा के बीच का क्षेत्र रायचूर दो आब।
- **भाही** – केंद्रीय/राज्य शासन से संबंधित। –राजा अथवा शासक से संबंधित।
- vrjkQ – प्रांत (बहमनी साम्राज्य में)
- vkQkdh – नवागंतुक अर्थात् बाहर से आये अमीर। (बहमनी साम्राज्य में)

- oyh –संत
- **अश्टदिग्गज** – आठ महान् व्यक्तियों का समूह। (विजयनगर साम्राज्य में तेलुगू साहित्य के विद्वान)
- xf.kdk – वेश्या (Prostitute)
- gih – विजयनगर साम्राज्य की राजधानी जो वर्तमान में कर्नाटक में स्थित है।
- j;k j[kk – भूमि कर
- jk; – राजा/शासक (विजयनगर काल में)

5-8- Lo&eY;kadu ijh{kk (Self Assessment Test)(SAT)

Hkkx (क) **बहु विकल्पी प्र॔न (Multiple choice based Questions) :-** pkj fodYiks esa ls ,d lgh

mÙkj dk p;u djsa %&

¼budk mÙkj nk;h vkj dk"Bd esa fn, gq, gS½

1. विजयनगर साम्राज्य की राजधानी थी?

   (i) हंपी (ii) काँची (i)

   (iii) मदुरा (iv) तालीकोटा

2. विजयनगर साम्राज्य की स्थापना किस नदी के किनारे हुई थी ?

   (i) कृष्णा (ii) तुंगभद्रा (ii)

   (iii) कांवेरी (iv) गोदावरी

3. विजयनगर साम्राज्य पर शासन करने वाला प्रथम शासक कौन था ?

   (i) बुक्का (ii) हरिहर (ii)

   (iii) देवराय प्रथम (iv) कृष्णदेव राय

4. विजयनगर साम्राज्य के किस शासक ने सर्वप्रथम महाराजाधिराज की उपाधि धारण की ?

   (ii) हरिहर (ii) बुक्का (iii)

   (iii) हरिहर द्वितीय (iv) देवराय प्रथम

5. विजयनगर साम्राज्य में प्रांत को कहा जाता था ?

   (i) मंडलम (ii) नाडु (i)

   (iii) स्थल (iv) मुक्ति

6. तेलुगू भाषा की महत्वपूर्ण कृति 'अमुक्तमाल्यद' की रचना विजयनगर के किस शासक ने की ?

   (i) कृष्णदेव राय (ii) देवराय प्रथम (i)

(iii) हरिहर राय (iv) विरूपाक्ष

7. कृष्णदेव राय के शासनकाल में अष्ट–दिग्गज किसे कहा गया ?

(i) आठ मंत्रियों वाले परिषद् को (iii)

(ii) विजयनगर साम्राज्य के आठ बहादुरों को

(iii) तेलुगू भाषा के आठ विद्वानों को

(iv) कृष्णदेव राय द्वारा लिखी गयी एक पुस्तक को

8. उत्तर भारत से बड़ी संख्या में दक्षिण भारत आकर बसे हुए लोगों को कहा गया ?

(i) वेसबाग (ii) बड्वा (ii)

(iii) गंडपेंद्र (iv) अफाकी

9. सर्वप्रथम विजयनगर के किस शासक ने विजयनगर की सेना में मुसलमानों की भर्ती आरंभ की ?

(i) कृष्णदेव राय (ii) विरूपाक्ष (iii)

(iii) देवराय द्वितीय (iv) अच्युतराय

10. जिस समय विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य की नींव पड़ी उस समय पर कौन शासन कर रहा था ?

(i) मुहम्मद–बिन–तुगलक (ii) गयासुद्दीन तुगलक (i)

(iii) फिरोज तुगलक (iv) नासिरूद्दीन मुहम्मद तुगलक

भाग (ख) निबंधात्मक प्रश्न (Essay based Questions) :-

(1) विजयनगर साम्राज्य के प्रशासन की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

(Write down the main characteristics of Vijaynagar administration.)

(2) विजयनगर साम्राज्य की सामाजिक एवं आर्थिक दशा का वर्णन कीजिए ?

(Describe the social and economic condition of vijaynagar kingdom)

(3) कृष्णदेव राय की प्रमुख उपलब्धियों पर प्रकाश डालें।

(Highlight on the main achievements of Krishnadeva Raya)

भाग (ग) संक्षिप्त उत्तर वाले प्रश्न (Short Answer type Questions)

(1) बहमनी साम्राज्य के पतन के कारण बताएं।

(Explain the cause of downfall of Bahmani kingdom)

(2) संक्षिप्त नोट लिखें। (Write short notes) :-

(i) नायंकार व्यवस्था (Nayankar System)

(ii) आयुगांर व्यवस्था (Ayangar System)

(iii) महमूद गवाँ (Mahmud Ganwa)

(iv) तालीकोटा की लड़ाई (Battle of Talikota)

5-9- प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answers to check your Progress)

5-5 ¼d½ dk mÙkj ½&

(1) 1336 ई. में (2) तुलुव (3) गुलबर्गा

(4) महमूद गवाँ (5) फिरोजशाह (6) रायचूर दोआब

(7) हरिहर और बुक्का (8) कृष्णदेव राय

(9) मंडलम् (10) वराह

5-5 ¼[k½ dk mÙkj ½&

(1) सत्य (2) सत्य (3) सत्य (4) असत्य

(5) सत्य (6) असत्य (7) सत्य (8) सत्य

(9) सत्य (10) सत्य

5-10- lanHkZ xzUFk ,oa lgk;d iqLrdsa@lgk;d v/;;u lkexzh

(References/Suggested Readings)

¼1½ e/;dkyhu Hkkjr ¼[kM &1 ¼750&1540½ & **हरिश्चन्द्र वर्मा – हिन्दी माध्यम, कार्यान्वय निदेशालय,** fnYyh

वि□वविद्यालय, द्वितीय , संस्करण : 20 फरवरी 1985

¼2½ **Modern's abc of themes in Indian History Prfo. Manjeet Singh Sodhi- Modern Publishers, Railway Road, Jalandhar**

(3) भारतीय इतिहास एवं राश्ट्रीय आंदोलन – द्वितीय संस्करण : जून, 2018, दृश्टि पब्लिके□ान्स, डॉ- e[kth uxj]

fnYyh & 50009

(4) यूनीक सामान्य अध्ययन – प्रयाग पुस्तक भवन – 20–ए यूनिवर्सिटी रोड़, इलाहाबाद (उत्तर प्रदे□ा)

¼5½ lf{klr bfrgkl **NCERT** lkj d{kk **VI-XII,** महे□ा कुमार वर्णवाल **Cosmos Publication,** iFke laLdj.k ½ 2019] Mk- e[kth uxj] fnYyh

B.A. HISTORY PART-1, SEMESTER-II	
COURSE CODE :HIST 103	**AUTHOR AND UPDATED : MOHAN SINGH BALODA**
LESSON NO. 06	
xqIr lkezkT; **(Gupta Empire)**	

v/;k; lajpuk **(Lesson Structure)**

6-1- अधिगम उद्देश्य **(Learning Objectives)**

6-2- ifjp; **(Introduction)**

6-3- vk/;k; dk eq[; fcUnq **(Main Body of Text)**

- 6.3.1. गुप्तकालीन ऐतिहासिक स्त्रोत (History Source of the Guptas)
- 6.3.2. गुप्तकालीन राज्य (Guptas State: Establishment and Expansion)
- 6.3.3. गुप्तकालीन प्रशासन (Administration of the Guptas)

6-4- vk/;k; dk vkxs dk eq[; Hkkx **(Further Main Body of the Text)**

- 6-4-1 xqIrdkyhu lekt **(Society of the Guptas)**
- 6-4-2- xqIrdkyhu vkfFkZd fLFkfr **(Economic condition of the Guptas)**
- 6-4-3- xqIrdkyhu dyk ,oa LFkkiR; ¼okLrqdyk½ **(Art and Architecture of the Guptas)**
- 6-4-4- xqIr lkezkT; dk iru **(Decline of the Guptas empire)**

6-5- izxfr leh{kk **(Check your progress)**

6-6- सारांश **(Summary)**

6-7- ladsr&lwpd **(Key-Words)**

6-8- Lo&ewY;kadu ijh{kk **(Self Assessment Test)(SAT)**

6-9- प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर **(Answers to check your Progress)**

6-10- lanHkZ xzUFk ,oa lgk;d v/;;u lkexzh **(References/Suggested Reading)**

6-1- अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात्, आप निम्न योग्य gksaxs tk,axs ¼&

- गुप्त साम्राज्य की वंशावली को आप जान जाएगें।
- गुप्तकालीन ऐतिहासिक स्त्रोतों पर आप अपने साथी पाठकों के साथ परिचर्चा कर सकेगें।
- गुप्तकालीन राज्य व प्रशासन प्रणाली की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- गुप्तकालीन आर्थिक व समाजिक स्थिति से अवगत कराना।
- गुप्तकालीन नगर केन्द्रों के विकास की जानकारी देना।
- गुप्तकालीन कला व स्थापत्य प्राचीन भारत के इतिहास में विशिष्ट स्थान रखते है से पाठक को अवगत कराना। और एक स्वतंत्र शासक के रूप में गुप्त संवत् (319–20 ई.) चलाया।
- गुप्तकालीन साहित्य, ज्ञान–विज्ञान व कला–संस्कृति के उच्च विकास के कारण इसे प्राचीन भारत का स्वर्ण युग क्लासिक युग/पैराक्लीन युग की संज्ञा से संबोधन के कारणों की समीक्षा कर सकेंगे।
- गुप्तकाल के पतन के कारणों पर प्रकाश डाल सकेंगे।

6-2 ifjp; (Introduction) :- प्राचीन भारत के इतिहास में मोंर्यो के बाद कुषाण साम्राज्य के अवशेष पर तीसरी सदी के अन्त मे जिस विशाल नवीन साम्राज्य का उद्य हुआ वह गुप्त साम्राज्य था। गुप्तों के उत्थान से प्राचीन कालीन इतिहास में एक नवीन युग का आरंभ हुआ। गुप्त वंश के प्रारंभिक दो शासकों –संस्थापक श्रीगुप्त व इनके पुत्र घटोत्कच ने महाराज की उपाधि धारण की जो उस समय सांमत शासकों की होती थी। इससे पता चलता है कि गुप्त कुषाणों के सांमत थे । कुषाणकालीन साहित्य, ज्ञान–विज्ञान, कला–संस्कृति दर्शन व व्यापार–वाणिज्य के विस्तार पर आधारित आर्थिक नीति व मजबूत प्रशासनिक नीति को गुप्त वंश के शासकों ने चरमोत्कर्ष पर पहुंचा दिया। गुप्तकाल में भारतीय राजनीति और संस्कृति चरमोत्कर्ष पर पहुंच गई थी। इसीलिए भारतीय इतिहास में गुप्तकाल को स्वर्ण युग या क्लासिकल युग कहा जाता है। गुप्त वंश के प्रसिद्ध शासकों ने अपने विस्तारवादी व सुदृढ़ प्रशासनिक नीतियों के द्वारा इसे भारत के चारों कोनों तक फैला दिया। चन्द्रगुप्त प्रथम गुप्त वंश के प्रथम शासक थे जिन्होनें महाराजधिराज की उपाधि धारण की। प्रसिद्ध विस्तारवादी गुप्त शासक समुन्द्रगुप्त के समय इस साम्राज्य का विस्तार – उत्तर भारत में गंगा–जमुना, दो–आव व दक्षिण भारत में कावेरी नदी क्षेत्र तक तथा पूर्व में नेपाल, असम, बंगाल व पश्चिम में वल्लभी (गुजरात) तक विस्तृत हो गया। समुन्द्रगुप्त के बाद सांस्कृतिक विकास के लिए प्रसिद्ध गुप्तवंशीय शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपने सुदृढ़ नीतियों के द्वारा शकों पर विजय प्राप्त करके इस साम्राज्य को अत्यंत मजबूत आधार प्रदान किया। भारत के प्राचीन इतिहास में विक्रमादित्य की उपाधि धारण करने वाले चन्द्रगुप्त द्वितीय का काल साहित्य, संस्कृति, कला, दर्शन, खगोल विज्ञान, गणित, चिकित्सा विज्ञान आदि को शिखर पर पहुंचाने वाले ज्ञानी, विज्ञानी, विद्वतजनों को आश्रय देने वालों के रूप में अग्रगण्य रहे है। विक्रमादित्य चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपने शासनकाल में उत्पन्न कई चुनौतियों का साहसपूर्ण तरीके से सामना करते हुए गुप्त साम्राज्य को जो मजबूत आधार प्रदान किया इसका पूरा फायदा उठाते हुए कुमारगुप्त ने विश्वविख्यात नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना की। जिसमें देश–विदेश से जिज्ञासु पाठक शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे। जिसका विवरण हमें चीनी यात्री फाहियान के वर्णन से मिलता है। यह विश्वविद्यालय इतना प्रसिद्ध था कि गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद भी 1193 ई. में बख्तियार खिलजी द्वारा नष्ट किये जाने तक अपने अस्तित्व को बनाये रखा। गुप्तवंश का अंतिम प्रतापी शासक स्कंदगुप्त ने विदेशी शासक हुणों के आक्रमण का सफलतापूर्वक सामना किया और इन्हे परास्त किया। स्कंदगुप्त ने नालंदा विश्वविद्यालय को पर्याप्त संरक्षण प्रदान करके गुप्त वंश की दर्शन, ज्ञान–विज्ञान, साहित्य रचना व अन्य सांस्कृतिक विकास की परंपरा को बनाये रखा।

स्कन्दगुप्त ने चीन के साथ मित्रतापूर्ण सम्पर्क बनाए रखा तथा व्यापार व वाणिज्य को बढ़ावा देने के लिए 466 ई. में एक राजदूत को चीन के सांग सम्राट के दरबार में भेजा। स्कंदगुप्त के बाद के शासक कमजोर हुए जिन्हे प्राचीन भारत के इतिहास में परवर्ती गुप्त शासक के रूप में जानते है। परवर्ती गुप्त शासकों के कमजोर होते हुए भी पूर्ववर्तो गुप्त शासकों की मजबूती के कारण यह साम्राज्य समाप्त होते–होते भी 550 ई. तक अपने अस्तित्व को बनाये रखा। मौर्य काल में आज के बिहार राज्य में जो नगर उत्थान का केन्द्र बिन्दु था जिसमें पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना) प्रसिद्ध था गुप्त साम्राज्य में नगर का यह केन्द्र अपना प्रभाव खोने लगा और गुप्तकाल के अन्तिम दिनों में तो पाटलिपुत्र नगर का अंत ही हो गया। गुप्त अभिलेखों से पता चलता है कि इस वंश के शासकों ने नगर केन्द्र के रूप में आज के उत्तर प्रदेश में कौशाम्बी, प्रयाग, साकेत (आधुनिक अयोध्या), कन्नौज तथा आज के मध्य प्रदेश में स्थित विदिशा व उज्जैन को अत्यधिक विकसित किया । ये नगर केन्द्र कला, संस्कृति व व्यापार–वाणिज्य के दृष्टिकोण से गुप्त काल में शिखर पर थे।

गुप्तकालीन प्रशासन–पद्धति के अर्न्तगत प्रशासनिक इकाइयों का विभाजन, अधिकारियों के विभागीय दायित्व व राजकाज चलाने के लिए राजस्व संग्रह की प्रणाली की एक सुनिश्चित व्यवस्था थी। गुप्तकाल में मुद्राप्रणाली के अन्तर्गत चांदी व सोने के सिक्के प्रसिद्ध थे। प्राचीन भारत में स्वर्णमुद्रा की बहुतायत के लिए गुप्तकाल प्रसिद्ध था। नगर में अलग–अलग व्यवसाय को चलाने वाले व्यवसायियों, शिल्पियों व कामगारों के सुसंगठित श्रेणियां थी। गुप्तकालीन व्यापार व कृषिमूलक अर्थव्यवस्था की जानकारी हमें चीनी बौद्ध यात्री फाहियान के विवरण से मिलता है।

पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर आधारित गुप्तकालीन समाज वर्ण, जातियों व उपजातियों मे बंटा था। फाहियान के विवरण से पता चलता है कि गुप्त काल में ब्राह्मणों की श्रेष्ठता बनी रही। जिससे समाज में धार्मिक स्तर पर भागवत् संप्रदाय का उद्भव और विकास शिखर पर था। बौद्ध धर्म का जो उत्कर्ष अशोक और कनिष्क के समय में था गुप्तकाल में राज्य का संरक्षण नही मिलने के कारण वह समाप्त हो गया।

ब्राह्मण धर्म की उत्कृष्टता के कारण इस काल में पुराणों स्मृतियों व षड्दर्शन के संकलन का महत्वपूर्ण कार्य हुआ। ये संकलन आज भी महत्वपूर्ण धरोहर के रूप में सुरक्षित हैं। इस काल में विष्णु और शिव आराध्य देव के रूप में समाज में अधिक प्रसिद्ध हुए। मन्दिर निर्माण की कला का आरंभ गुप्त काल में हुआ।

कला की इन उत्कृष्टताओं के बावजूद गुप्तकालीन ऐतिहासिक साक्ष्य से पता चलता है कि एक और जहां शुद्रो को, स्त्रियों को रामायण, महाभारत, पुराण व दर्शन के पठन–पठान का अधिकार था वही दूसरी और पर्दाप्रथा, सतीप्रथा, नियोगप्रथा, चाण्डाल को अस्पृश्य मानने की प्रथा आदि स्त्रियों व शूद्रों के दयनीय स्थिति का सूचक था।

6-3- vk/;k; dk eq[; fcUnq (Main body of Text)

6-3-1- xqIrdkyhu ,sfrgkfld L=ksr (Historical sources of the Guptas) :- प्राचीन भारत के इतिहास को जानने के लिए इसके समुचित अध्ययन के लिए शुद्ध ऐतिहासिक साहित्यिक सामग्री अन्य देशों की तुलना में हमारे यहां कम उपलब्ध हैं। ऐसे में अतीत का सही चित्रण प्रस्तुत करने के लिए इतिहासकार एक वैज्ञानिक की भांति उपलब्ध पुरातत्विक सामग्री को विशेष महत्व देते हैं। गुप्त काल के संदर्भ में भी इसका अत्यधिक महत्व है। यद्पि गुप्त काल के अध्ययन के लिए पर्याप्त साहित्यिक साधन व विदेशी

यात्रियों के वृतांत भी उपलब्ध हैं फिर भी रचनाकारों में दृष्टिकोण की भिन्नता व भारतीय ग्रन्थों का रचना–काल ठीक से ज्ञात नहीं होने के कारण यह सही चित्र प्रस्तुत करने में बाधक हो जाता है। पुरातत्विक सामग्री का वैज्ञानिक महत्व है। प्राचीन भारत के इतिहास को जानने में अधिक योगदान है अतः गुप्तकालीन ऐतिहासिक स्त्रोत के अध्ययन से पूर्व पाठक के लिए यह जानना आवश्यक है कि पुरातत्विक स्त्रोत के अन्तर्गत किन–किन साधनों को शामिल किया जाता है।

¼d½ i|jkrfRod j=krk **(Archaeological Sources)**%& इन्हें हम निम्न रेखाचित्र के माध्यम से सुविधाजनक तरीके से समझ सकते है :–

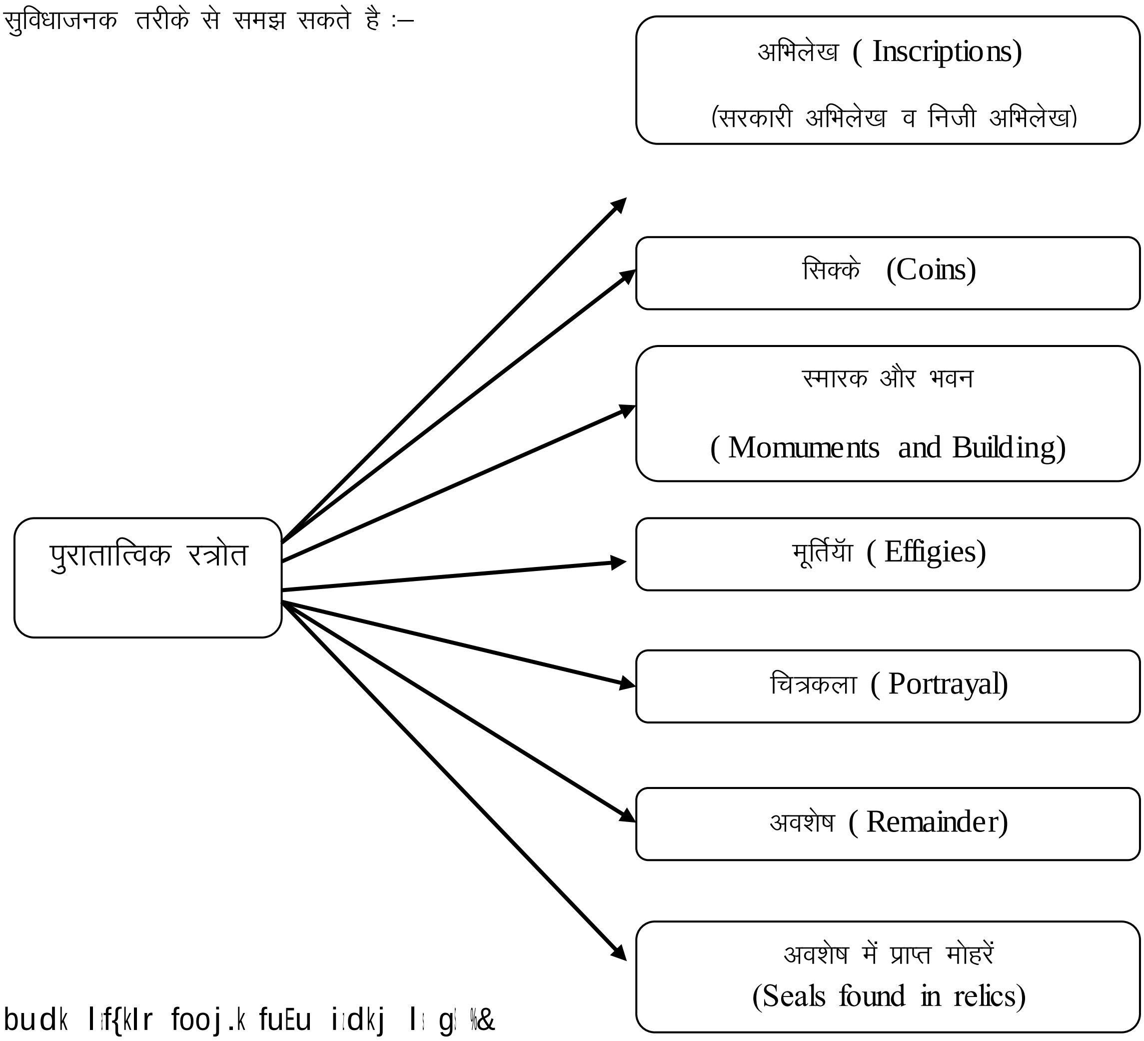

budk lf{klr fooj.k fuEu idkj ls g %&

¼1½ vfHkys[k **(Record) :-** गुप्तकालीन इतिहास को जानने के लिए अनेक स्त्रोत उपलब्ध है। इनमें पुरातात्विक स्त्रोत के रूप में अभिलेख एक अति महत्वपूर्ण त्रोत है। हमें गुप्त काल के अलग–अलग शासकों के अभिलेख अत्यधिक संख्या में प्राप्त हुए है। ये अभिलेख शिलाओं, स्तंभों एवं ताम्रपत्रों पर खुदे मिलते है। गुप्तकालीन इन अभिलेखों की भाषा संस्कृत है। इन अभिलेखों से हमें गुप्ताकालीन अतीत के विभिन्न प्रश्नों–राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आदि की बहुमूल्य जानकारी प्राप्त होती है। उदाहरणार्थ समुन्द्रगुप्त का इलाहबाद स्तंभ अभिलेख जिसे प्रयाग प्रशस्ति के नाम से भी जाना जाता है से हमें समुन्द्रगुप्त को भरी सभा में चन्द्रगुप्त प्रथम द्वारा राज्य प्रदान करने तथा समुद्रगुप्त की राज्य विस्तार व राज्य को मजबूत करने की नीति का पता चलता है। इसे समुन्द्रगुप्त के राजकवि हरिषेण द्वारा लिखा गया था। यह

अभिलेख समुद्रगुप्त के पिता व गुप्त साम्राज्य को एक स्वतंत्र राज्य के रूप में स्थापना करने वाले चन्द्रगुप्त प्रथम के ऊपर भी प्रकाश डालता है। चन्द्रगुप्त प्रथम ने 319–20 ई. में गुप्त संवत् चलाया इसका सर्वप्रथम प्रयोग चन्द्रगुप्त द्वितीय के मथुरा अभिलेख में हुआ है। यह चन्द्रगुप्त द्वितीय का पहला अभिलेख है। उद्यगिरी गुहा लेख चन्द्रगुप्त द्वितीय के संधिविग्रहक कवि वीरसेन शैव का है। इस अभिलेख से चन्द्रगुप्त द्वितीय के दिग्विजय करने का पता चलता है। गुप्त वंश के इस शासक का सबसे महत्वपूर्ण अभिलेख है – मेहरोली लौह स्तम्भ लेख (दिल्ली में)। यह अभिलेख आज भी मौजूद है। इससे चन्द्रगुप्त के विजित क्षेत्र व उत्कृष्ट तकनीकी विकास का पता चलता है। कदम्ब वंश– तालगुन्ड अभिलेख से यह पता चलता है कि किस प्रकार चन्द्रगुप्त द्वितीय वैवाहिक संबन्धों द्वारा अपने राज्य को मजबूत आधार प्रदान किया।

कुमारगुप्त के बिलसद, गढ़वा (उत्तर प्रदेश), मन्दसौर (मालवा मध्य प्रदेश) अभिलेखों से इसके काल के शासनकाल की जानकारी प्राप्त होती है। स्कंदगुप्त के जूनागढ़ (सौराष्ट गुजरात) एवं भीतरी स्तम्भलेख (गाजीपुर उत्तर प्रदेश) से हमें स्कंदगुप्त द्वारा हूणों की पराजय संबन्धी पता चलता है। गुप्तकाल के अनेक भूमिदान अभिलेख गुप्त शासकों की दानशीलता को दर्शाते हैं। भानुगुप्त का एरण अभिलेख (510 ई.) प्रसिद्ध हैं । इसमें हुण आक्रमण का उल्लेख है जिनसे लड़ते हुए भानुगुप्त का सेनापति गोपराज मर गया था। गोपराज की पत्नी सती हो गयी। यह सती प्रथा का प्रथम अभिलेखीय साक्ष्य है।

¼2½ flDd **(Coins) :-** गुप्तकाल के इतिहास के लिए सिक्कों का बड़ा महत्व है। कयोंकि गुप्त शासकों ने बड़ी मात्रा में सिक्कें जारी किए। इन सिक्कों मे सर्वाधिक मात्रा सोने के सिक्कों की है। इसके अलावा कुछ सिक्के चांदी व तांबे के भी जारी किए। इन सिक्कों में गुप्त शासकों के नाम उपाधियां, शासनकाल, चरित्र, सफलताएं, कलां, भाषा, धार्मिक तथा आर्थिक स्थिति की प्रामाणिक जानकारी मिलती है। उदाहरणार्थ चन्द्रगुप्त प्रथम के राजा–रानी नामक सिक्कों पर उसकी तथा रानी कुमार देवी की प्रतिमा खदी हुई है। इसी सिक्के के दूसरी तरफ लिच्छवय शब्द खुदा हुआ है। इससे चन्द्रगुप्त के लिच्छवियों के साथ वैवाहिक संबन्ध की जानकारी उपलब्ध होती है। समुन्द्रगुप्त संगीत प्रेमी थे। इस बात की जानकारी उनके द्वारा जारी किए गए सिक्कों पर उत्कीर्ण वीणा के चित्रों से पता चलता है। इस प्रकार पता चलता है कि गुप्त वंश की आर्थक स्थिति सुदृढ़ थी।

¼3½ Lekjd **(Monuments) :-** गुप्तकाल के स्मारकों से तत्कालीन गुप्त वंश के कला के क्षेत्र में हुए विकास एवं गुप्तकालीन शासकों की धार्मिक नीति का ज्ञान प्राप्त होता है। ये स्मारक गुप्तकाल के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालने वाले है। गुप्तकाल में निर्मित मंदिरों में देवगढ़ का दशावतार मंदिर, भूमरा का शिव मंदिर, नचना का पार्वती मंदिर, भीतरगांव मंदिर, लिंगवा का विष्णु मंदिर आदि मंदिर उल्लेखनीय है। ये मंदिर अपनी उत्कृष्ट कला के लिए जाने जाते है। गुप्तकाल मे मथुरा एवं सारनाथ में बनी मूर्तिया गुप्त वंश के शासकों की धार्मिक सहिष्णुता की प्रतीक है। अंजता एलोरा एवं बाघ की गुफाओं में बने चित्र तत्कालीन जन–जीवन की झांकी प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार से पुरातात्विक रत्रोत की अह्म भूमिका है।

¼[k½ lkfgfR;d j=kr **(Literary Sources) :-**

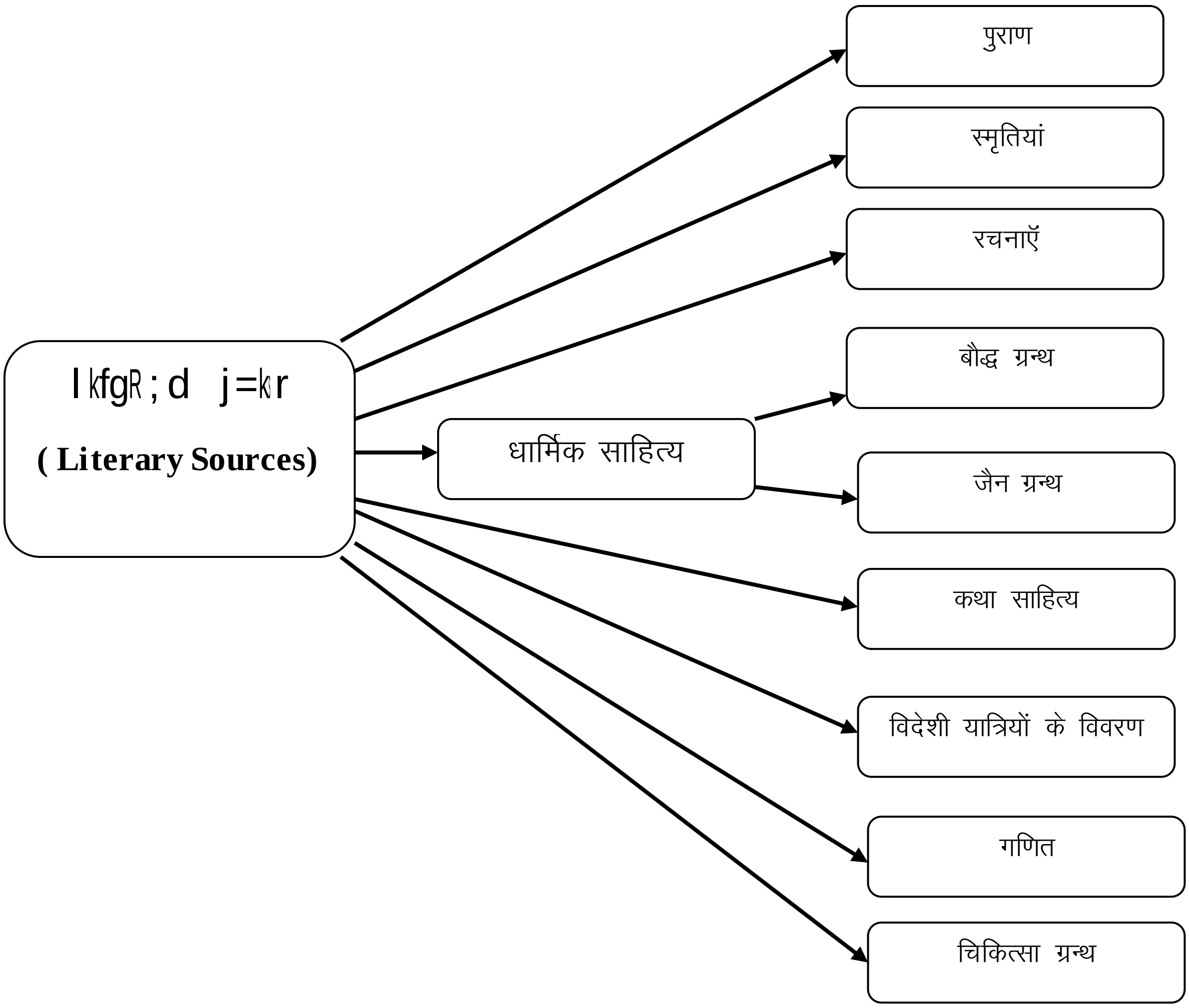

budh lf{kIr tkudkjh bl idkj g %&

¼1½ ijk.k **(Purans) :-** गुप्त वंश के इतिहास को जानने के लिए पुराणों का अध्ययन आवश्यक है। पुराणों का अन्तिम रूप से संपादन गुप्त काल में ही हुआ था। भारत के दो प्रसिद्ध ग्रंथ रामायण एवं महाभारत गुप्त काल में पूरे हो चुके थे। वायु पुराण, मत्स्यपुराण, ब्राह्मण, विष्णु, भागवत आदि पुराणों के ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्व है इनमें गुप्तकाल की ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है।

¼2½ Lefr;k **(Smritiyans) :-** गुप्तवंशीय शासकों के बारे में जानकारी स्मृतियों से भी मिलती है। गुप्तकाल में याज्ञवल्क्य, नारद, कात्यायन, एवं बृहस्पति आदि स्मृतियों की रचना की गई इनमें याज्ञवल्क्य स्मृति सबसे महत्वपूर्ण है। इन स्मृति ग्रन्थों ने आचार, व्यवहार, प्रायश्चित आदि का विस्तार से वर्णन मिलता है। इसी काल में हीनयान शाखा के प्रसिद्ध विद्वान बुद्धघोष ने त्रिपिटकों पर भाष्य लिखा। जैन आचार्य सिद्धसेन ने इसी काल में न्यायदर्शन पर 'न्यायावताम' ग्रन्थ की रचना की।

¼3½ jpuk, **(Compositions) :-** गुप्तकाल को साहित्यिक दृष्टि से भी सुदृढ़ बनाया गया काव्य रचनाओं के साथ नाटकों की भी रचना हुई। साहित्यिक दृष्टि से bl dky dk le) cuku e fuEu jpukdkjk dk ljkguh; ;kxnku vfoLej.kh; jgk dkfynkl – मालविकाग्निमित्रम्, अभिज्ञान शाकुन्तलम् मेघदूतम्,

कुमारसम्भवम्, रघुवंशम्, ऋतुसंहारम्, विक्रमोर्वशीयम् **वि□ाखादत्त**–मुद्राराक्षस, देवीचन्द्रगुप्तम्, nf.Mu–दशकुमारचरित, काव्यदर्शन, fl)lu –न्यायावताम्, Hkkl – स्वप्नवासवदत्ता, चारूदत्ता, **विश्णु□ार्मा**–पंचतंत्र, चरक–सरकसंहिता, **बुद्धघोश**– विशुद्धिमग्ग vlx–योगाचार, Hkkjfo–किरातार्जुनीयम, vejflg–अमरकोष, oRlHkêh–रावणवध, pUnxkfeu–चन्द्रव्याकरण, ojkgfefgj–वृहत संहिता, पंचसिद्धान्तिका। vk;HkV–आर्यभट्टीयम्। **भाुद्रक**–मृच्छकटिकम्

¼4½ /kkfed lkfgR; **(Religious Literature) :-** गुप्तकाल में बौद्ध, जैन एवं हिन्दू धर्म के ग्रन्थों की रचना हुई। रामायण, महाभारत, बुद्धघोष, जैनग्रन्थ–तत्वसारिणीत्वार्थ आदि। पाणिनि और पंतजलि के ग्रन्थों के आधार पर संस्कृत व्याकरण की रचना।

¼5½ dFkk&lkfgR; **(Fiction)** :– गुप्तकाल में कथा साहित्य का विकास हुआ। विष्णुशर्मा ने 'पंचतंत्र' एवं 'दितोपदेश' कथा साहित्य की रचना की थी।

¼6½ xf.kr ,oa foKku **(Mathematics & Science) :-** आर्यभट्ट गुप्त काल के प्रसिद्ध गणितज्ञ थे उन्होनें आर्य भट्टीय, ज्योतिष, आर्यभट्टीय में यह प्रमाणित किया कि पृथ्वी गोल है जो अपनी धुरी के चारों और परिभ्रमण करती है इसी के कारण ग्रहण लगता है। विज्ञान के क्षेत्र में शून्य के सिद्धान्त एवं दशमलव प्रणाली।

¼7½ fpfdRlk xzUFk **(Medical Texts):-** चिकित्सा का विकास भी गुप्तकाल में हुआ वाग्यभट्ट ने आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ 'अष्टांग हृदय' की रचना की थी। शल्य चिकित्सा शास्त्र के प्रवर्तक सुश्रत और नागार्जुन थे। गुप्त काल में अणु सिद्धांत का प्रतिपादन किया गया। नक्षत्र–विद्या, वनस्पति शास्त्र भौतिक भूगोल आदि।

इस प्रकार से गुप्तकाल के बारे में जानकारी उसके पुरातात्विक एवं साहित्यिक स्त्रोत का अध्ययन करने से प्राप्त होती है।

6-3-2 fnYyh lYrur% 'kkld oxZ **(Delhi Sultanate : Rulling Classes)**

दिल्ली सल्तनत के शासक वर्ग में 5 शासक वर्ग शामिल है। जो निम्न प्रकार से थे –

(1) गुलाम वंश (Gulam Vansh) (2) खिलजी वंश (Khilji Vansh) (3) तुगलक वंश (Tuglaq Vansh) (4) सैय्यद वंश (Sayyid Vansh) (5) लोदी वंश (Lodi Vansh)

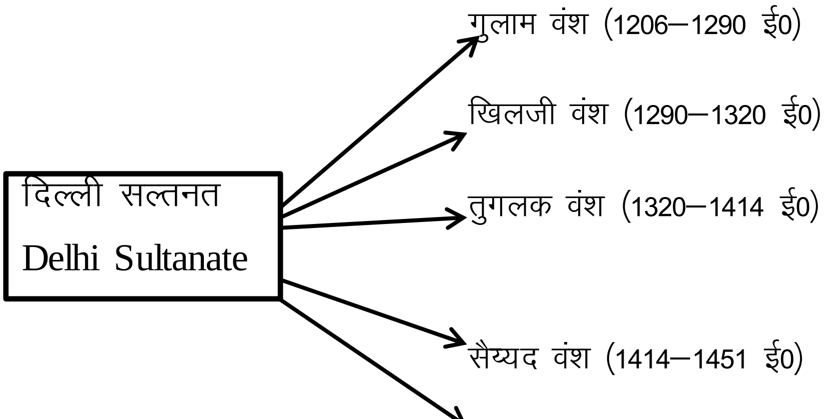

अफगान लोदी वंश (1451—1526 ई0)

गुलाम वंश/मशलुक वर्ग
Gulam Vansh
1206-1290 A.D.

- कुतुबद्दीन ऐबक (Qutubddin Aebak 1206-1210 A.D.)
- आसमशाह (Asamshah 1210 A.D.)
- इल्तुतमिश (Iltutmish 1210-1236 A.D.)
- रुकुनुद्दीन फिरोजशाह (Rukunuddin Ferozshah 1236 A.D.)
- रजिया सुलतान (Razia Sultan 1236-1239 A.D.)
- महजुद्दीन बहममशाह (Meizuddin Bahramshah 1240-1242 A.D.)
- अलाउद्दीन मसूदशाह (Alauddin Masood Shah 1246-1265 A.D.)
- ग्यासुद्दीन बलबन (Ghiyasuddin Balban 1266-1287 A.D.)
- मोइनुद्दीन कैकुबाद (Mainuddin Kaiqubad 1287-1294 A.D.)
- क्यूमर्स (Cummers 1290 A.D.)

गुलाम वंश दिल्ली सल्तनत का प्रथम राजवंश था।

गुलाम वंश/मामलुक वंश (Gulam Vansh/ Mamluk Vansh) में कुल 11 शासक हुए। तीन राजवंश थे – कुतबी राजवंश (Kutubee Raajavansh), शम्सी राजवंश (Shemshi Raajavansh), बलबनी राजवंश (Balabanbee Raajavansh)

खिलजी वंश

- जलालुद्दीन फिरोज खिलजी (Jalaluddin Firoz Khilji 1290-1296 A.D.)
- अलाउद्दीन खिलजी (Alauddin Khilji) 1290-1316 A.D.)
- शिहाबुद्दीन उमर (Shihabuddin Umar 1316 A.D.)

(Khilji Vansh)
1290-1320 A.D.

→ कुतुबद्दीन मुबारक शाह खिलजी(Qutubuddin Mubarak Shah Khilji 1316-1320 A.D.)

→ नासिरूद्दीन खुसरो खाँ (Nasiruddin Khusero Khan 15 April 1320 – 7 September 1320 A.D.)

खिलजी राजवंश दिल्ली सल्तनत का दूसरा राजवंश था, जिसमें तीन मुख्य शासक थे। अलालुद्दीन खिलजी, अलाउद्दी खिलजी एवं कुतुबुद्दीन खिलजी।

तुगलक वंश के मुख्य शासक
(Chief ruler of Tughlaq Vansh) 1298-1420 A.D.

→ गयासुद्दीन तुगलक (Ghiyasuddin Tughlaq 1320-1395 A.D.)

→ मुहम्मद बिल तुगलक (Muhammad Bin Tughlaq) 1325-1351 A.D.)

→ फिरोजशाह तुगलक (Firoz Shah Tughlaq 1351-1388 A.D.)

दिल्ली सल्तनत का तीसरा राजवंश तुगलक वंश है जिसमें कुल 9 शासक हुए जिनमें से ये तीन प्रमुख है इसके अलावा 6 शासक हुए – फिरोजशाह तुगलक (1351–1388 ई0), ग्यासुद्दीन तुगलक शाह द्वितीय (1388–1389 ई0), अबुबुक्र शाह (1389–90 ई0), मुहम्मद शाह तृतीय (1390–94 ई0), अलाउद्दीन सिंकदर शाह–प्रथम जनवरी (1344– मार्च 1394 ई0), नसिरूद्दीन महमूद शाह (1394–1413 ई0), नुसरत शाह (1396–1398 ई0)

सैयद वंश
(Sayyid Vansh)
1414-1415 A.D.

→ खिप्न खाँ (Khigr Kha 1414-1421 A.D.)

→ मुबारक शाह (Mubarak Shah) 1421-1434 A.D.)

→ मुहम्मद शाह (Mahammad Shah 1434-1445 A.D.)

→ अलाउद्दीन आलम शाह (Alauddin Alam Shah 1405-1451 A.D.)

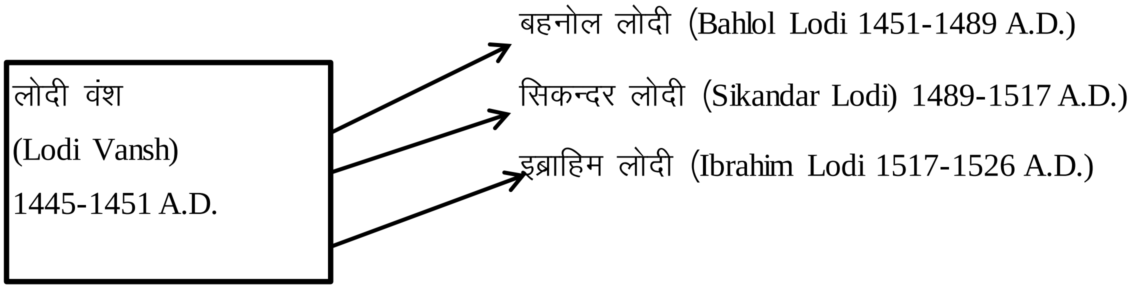
लोदी वंश
(Lodi Vansh)
1445-1451 A.D.
बहनोल लोदी (Bahlol Lodi 1451-1489 A.D.)
सिकन्दर लोदी (Sikandar Lodi) 1489-1517 A.D.)
इब्राहिम लोदी (Ibrahim Lodi 1517-1526 A.D.)

6-3-3- गुप्तकालीन भासन (Administration of the Guptas) :- गुप्त सम्राटों द्वारा शासन को सुदृढ़ एवं मजबूत बनाने के लिए अनेकों तरीके अपनाए गए। गुप्त शासकों ने विशाल साम्राज्य के संचालन के लिए उच्चकोटि की शासन व्यवस्था का प्रबन्ध किया क्योंकि गुप्त शासकों के प्रशासन का प्रमुख उद्देश्य एवं लक्ष्य जनता की भलाई करना था। गुप्तकालीन शासन की विशेषताएं निम्नलिखित थी :–

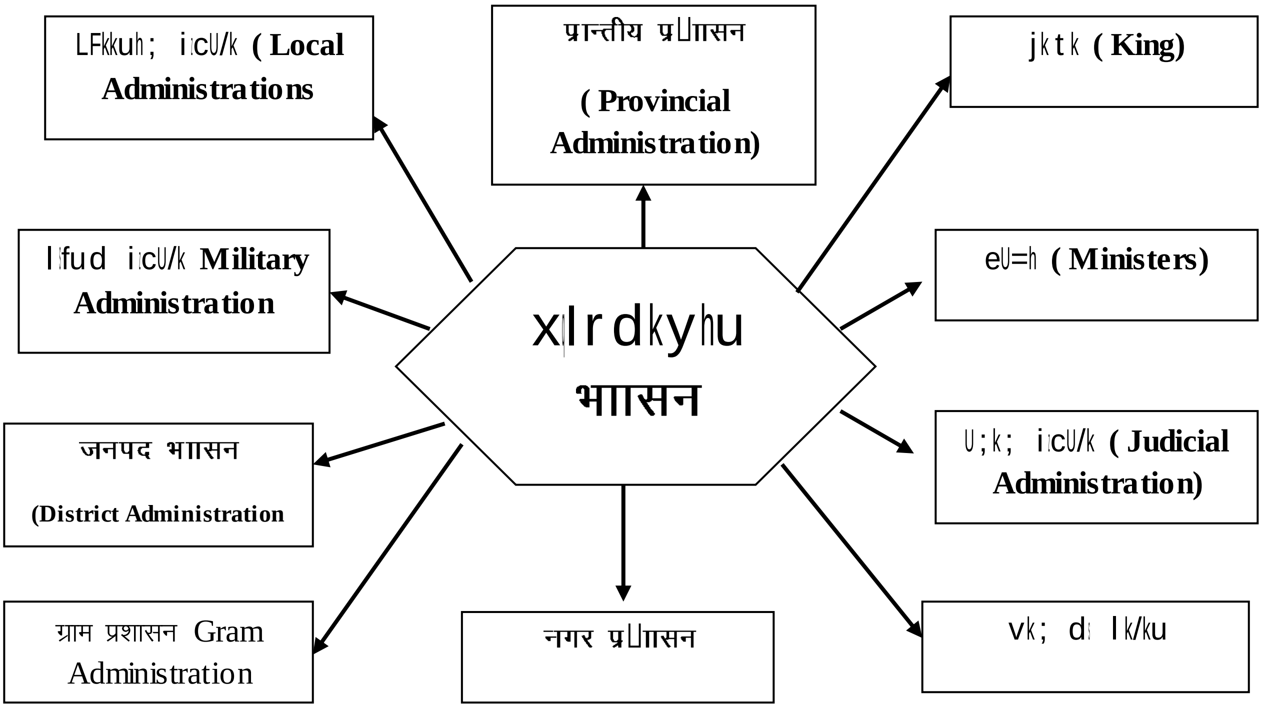

कुशल प्रशासन के लिए विशाल गुप्त साम्राज्य को कई प्रान्तों मे बांटा गया। प्रान्तों को देश भुक्ति कहा जाता था।

budk l:f{kIr fooj.k fuEu i:dkj l: g: ½&

½1½ jktk **(King) :-** राजा का पद गुप्तकाल में पैतृक होता था। पिता की मृत्यु के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र सिंहासन का उत्तराधिकारी होता था। योग्य न होने पर किसी अन्य पुत्र को सत्ता सौंप दी जाती थी। जैसे समुद्रगुप्त चन्द्रगुप्त ज्येष्ठ पुत्र नहीं था। समस्त शक्तियां अधिकार राजा के पास होते थे। ये उपाधियां धारण करके इनके नाम सिक्कों पर उत्कीर्ण करवाते थे। प्रजा का कल्याण राजा का धर्म होता था इसलिए प्रजा राजा की देवता की तरह पूजा करती और सम्मान देती थी।

(2) जनपद भासन (District Administration) :- प्रान्तों (भुक्ति) का विभाजन जनपदों में किया गया। जिसका प्रधान अधिकारी विषयपति होता था। क्योंकि जनपदों को विषय कहा जाता था।

विषयपति एक समिति गठित करता था। जिसमें निम्नवर्ग के सदस्य शामिल होते थे – (1) नगर श्रेष्ठ (2) सार्थवाह (3) प्रथम कुलिक (4) कायस्थ।

(3) नगर प्र□ासन :- नगर प्रशासन नगर महापालिकाओं द्वारा चलाया जाता था। नगर का मुख्य अधिकारी दुर्गपाल होता था। नगर प्रशासन के लिए बनाई गई समिति पौर कहलाती थी।

(4) ग्राम प्र□ासन (Gram Administration) **:-** यह प्रशासक की सबसे छोटी इकाई थी इसका संचालन ग्राम सभा द्वारा किया जाता था। ग्राम सभा का मुखिया ग्रामिक कहलाता था। इसके सदस्य महत्तर कहा जाता था। गुप्तकालीन अभिलेखों से पता चलता है कि ग्राम सभा को 'ग्राम जनपद' या पन्च मंडली' कहा गया है।

(5) प्रांतीय प्र□ासन (Provincial Administration) **:-** विशाल साम्राज्य होने के कारण गुप्त शासकों ने इसे कई प्रान्तों में बांट दिया था। प्रान्तों को देश भुक्ति अथवा अवनी के नाम से जाना जाता था। भुक्ति के प्रशासक को उपरिक व उपरिक महाराज कहा जाता था। इन शासकों को पांच वर्ष के लिए नियुक्त किया जाता था। उपरिक का कार्य अपने क्षेत्र में शांति स्थापित करना एवं विदेशी आक्रमणों से रक्षा करना। जनता के लिए जनकल्याण के कार्य करना तथा सम्राट के आदेशों को लागू करवाना।

Ø- l-	i kUr	dky	**प्रान्तीय प्र□ासक**
1	तीरभुक्ति	चन्द्रगुप्त द्वितीय	तीरभुक्ति
2	पूर्वी मालवा	कुमारगुप्त	पूर्वी मालवा
3	सौराष्ट्र	स्कन्दगुप्त	सौराष्ट्र
4	उत्तरी बंगाल	कुमारगुप्त	उत्तरी बंगाल

¼6½ e=h **(Ministers) :-** शासन व्यवस्था को अच्छी तरह चलाने के लिए मंत्री नियुक्त किए हुए थे इन मंत्रियों में योग्य व्यक्ति व उसकी योग्यता के आधार पर नियुक्ति की जाती थी। इन मंत्रियों की सभा को मंत्रिपरिषद् कहा जाता था। राजा समय–समय पर इन मंत्रियों के साथ वार्तालाप करके इनके विचार एवं सुझाव लेते थे।

¼7½ LFkkuh; i zcU/k **(Local Administration) :-** स्थानीय शासन को चलाने के लिए उसे विभिन्न इकाइयों में बांटा गया। इन इकाइयों को विभिन्न अधिकारियों की सहायता से चलाया जाता था :–

Øe l [;k	**प्र□ासनिक इकाई**	vf/kdkjh dk uke
1	देश	गोपत्री (गोरना)
2	भुक्ति	उपरिक
3	विषय	विषयपति

4	पेठ	पेठपति
5	ग्राम	ग्रामपति या महन्तर

इस प्रकार प्रत्येक इकाई का अधिकारी होता था। पूर्वी भारत में प्रत्येक विषय को बीथियों में बांटा गया था और वीथियों ग्रामों में बांटी गई थी।

¼8½ U;k; izcU/k **(Judicial Administration) :-** राजा सर्वोच्च न्यायाधीश होता था। इसके अतिरिक्त अन्य न्यायाधीश भी होते थे। गुप्तकाल में पहली बार दीवानी एवं फौजदारी कानूनों को अलग किया गया। राजा का न्यायालय देश का सर्वोच्च न्यायलय होता था। गुप्तकालीन अभिलेखों में न्यायाधीशों का उल्लेख 'महादण्डनायक' सर्वदण्डनायक तथा महासर्वदण्डनायक नामक न्यायाधीश होता था। नास्दस्मृति के अनुसार उस समय न्यायालय के चार वर्ग थे (1) राजा न्यायालय (2) पूग (3) श्रेणी (4) कुल।

चोरी को फौजदारी कानून में शामिल किया गया एवं सम्पति से सम्बन्धित विवाद को दीवानी कानून में शामिल किया गया।

¼9½ lSfud izcU/ku **(Military Administration) :-** गुप्त सम्राटों ने अपने साम्राज्य के विस्तार एवं सुरक्षा के लिए सेना की तरफ विशेष ध्यान दिया और सेना को विभिन्न भागों में बांट दिया था – (1) पदाति सेना (2) गजसेना (3) रथ सेना (4) अश्वारोही सेना (5) जल सेना साधारण सेना को याट कहा जाता था, गजसेना के प्रमुख को 'कटुक' तथा अश्वारोही सेना के प्रमुख को 'भटाश्पति' कहा जाता था।

¼10½ vk; ds lk/ku **(Sources of Income) :-** गुप्तकाल में आय रत्रोत 'कर' थे जो निम्न है – (1) भोग – राजा को प्रतिदिन फूल एवं सब्जियों के रूप में दिया जाने वाला कर। (2) व्यापारिक कर (3) अपराधियों को दंड (4) भूमि, रत्न, खाने, गुप्त धन, नमक आदि। इन पर राजा का सीधा अधिकार होता था। इस प्रकार राज्य के आय के रत्रोत थे।

6-4- विशयवस्तु का पुनः प्रस्तुतीकरण **(Further main body of the text)**

6-4-1- xqIrdkyhu lekt **(Society of the Guptas)**

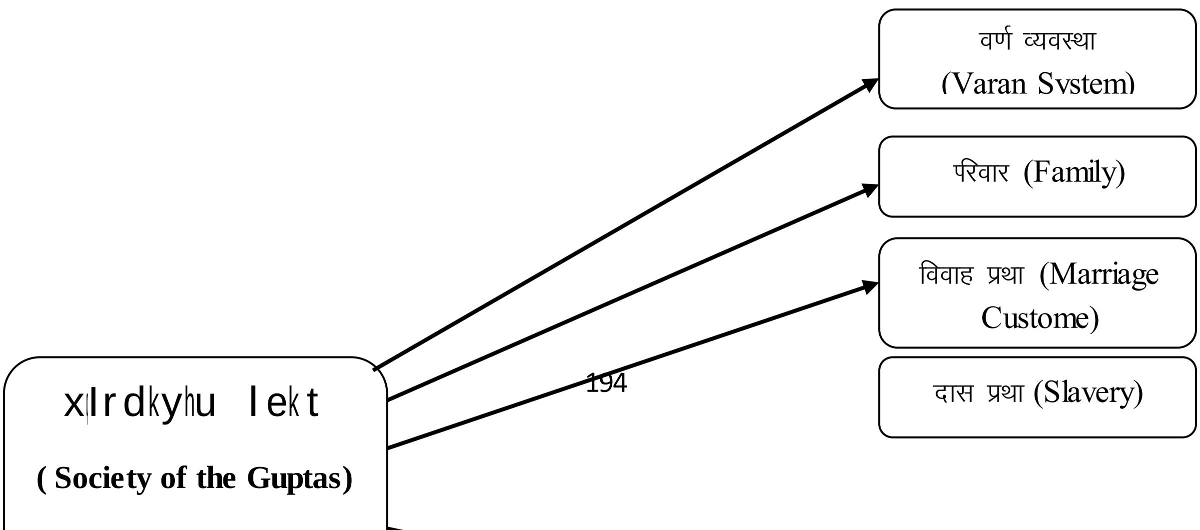

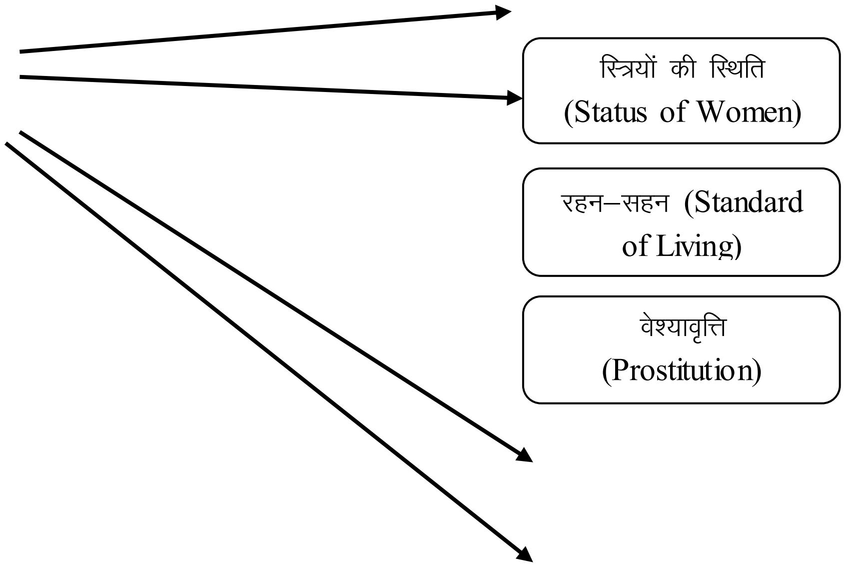

¼1½ o.kZ O;oLFkk ¼& गुप्तकाल का समय परम्परागत रूप से चार वर्णो में बंटा हुआ था – (1) ब्राह्मण (2) क्षत्रिय (3) वैश्य (4) शूद्र। गुप्तकाल में ब्राह्मणों को बड़े पैमाने पर भूमि दी गई जिससे उनके वर्चस्व में वृद्धि हुई। गुप्त मूल रूप से वैश्य थे जिन्हे ब्राह्मणों ने क्षत्रिय कहना शुरू कर दिया था ब्राह्मणों के छः कार्य – अध्ययन, अध्यापन, पूजा–पाठ, यज्ञ करना, दान देना और दान लेना माना जाता था। वर्ण कई जातियों–उपजातियों में बंट गए, जिसके दो कारण थे। बडी संख्या में आए विदेशी लोग भारतीय समाज में ही घुल–मिल गए, जिससे विदेशियों के प्रत्येक समूह अलग–अलग जाति बन गऐ। इस काल में शूद्रों की स्थिति में सुधार हुआ। 17 वीं शताब्दी में इनकी पहचान कृषक के रूप में की गई।

¼2½ ifjokj ¼& संयुक्त परिवार को उच्चतम समझा जाता था जिसमें माता–पिता, भाई बहन, दादा–दादी, ताऊ–ताई, बुआ आदि एक साथ मिलकर रहते थे। संयुक्त परिवार का गुप्त काल में बहुत महत्त्व था।

¼3½ fookg izFkk ¼& गुप्तकाल में अर्न्तजातीय विवाह भी होते थे। विधवा विवाह और सती प्रथा का प्रचलन था। बहु–विवाह प्रथा भी प्रचलित थी। अनुलोम एवं प्रतिलोम विवाह भी प्रचलित थे। जैसे ऊंच जाति का पुरूष नीची जाति की महिला से विवाह करे उसे अनुलोम विवाह एवं ऊंच जाति की स्त्री नीची जाति के पुरूष के साथ विवाह करे तो प्रतिलोम विवाह कहते थे।

¼4½ nkl izFkk ¼& गुप्तकाल में दास प्रथा प्रचलित थी। दास कई प्रकार के होते थे – ऋणीदास, क्रय किए गए दास, दास पुत्र, युद्ध बंदी दास, जुए में हारे हुए दास। दासता में ब्राह्मणों को दास नहीं बनाया जाता था। दासता से मुक्ति के लिए अनुष्ठान का उल्लेख नारद स्मृति में मिलता है। नारद ने 18 प्रकार के दासों का उल्लेख किया। गुप्त काल में दासियों का भी उल्लेख मिलता है।

¼5½ jgu&lgu ¼& आमतौर पर लोग शुद्ध सात्विक भोजन करते थे। जो लोग मांस मदिरा आदि का प्रयोग करते वे चण्डाल कहलाते थे। शारीरिक सौंदर्य की वृति के लिए आभूषण भी धारण करते थे। सामान्यतः लोग ऋंगारप्रिय थे। भोग विलासिता की वस्तुओं का खूब प्रयोग किया जाता था।

¼6½ dk;LFk ¼& कायस्थ एक वर्ग था जिसका पेशा लेखन कार्य का था। कायस्थ के उद्भव से ब्राह्मण प्रभावित हुए। क्योंकि ब्राह्मणों के लेखन कार्य पर प्रभाव पड़ा। गुप्त अभिलेखों में प्रथम कायस्थ शब्द का उल्लेख पहली बार मिलता है। राजतरंगिणी में कायस्थों के अत्याचार का विवरण मिलता है।

¼7½ efgykvksa dh fLFkfr ¼& इतिहासकार रोमिला थापर ने गुप्तकालीन महिलाओं की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि साहित्य और कला में तो नारी का आदर्श रूप झलकता है किन्तु व्यावहारिक दृष्टि से उसका स्थान गौण था। उस समय समाज पितृ प्रधान था और पत्नी को व्यक्तिगत सम्पति समझा जाता था। दुर्भाग्य से यदि पति पहले मर जाय तो पत्नी को सती होने के लिए प्रेरित किया जाता था। अल्पायु में लड़कियों का विवाह कर दिया जाता था।

(8) वेयावृत्ति (Prostitution) ¼& गुप्तकालीन समाज में वेश्यावृत्ति के भी प्रमाण मिलते हैं किन्तु इसे निन्दनीय समझा जाता था। इस काल में वेश्यावृत्ति करने वाली महिला को 'गणिका' कहा जाता था। जो वेश्याएं वृद्ध हो जाती थी उन्हे कुटनी कहा जाता था। कात्यायन ने महिलाओं को अचल सम्पति की स्वामिनी माना है। बृहस्पति ने महिला को पति की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी माना है।

¼9½ tuthou ¼& गुप्तकाल के लोगों का जनजीवन सुखी एवं समृद्ध था जिसका मुख्य कारण भोजन, जीवन, आवास आदि में साधारणतः लोगों का आपसी व्यवहार बहुत था एक दूसरे के साथ लोग प्रेम पूर्वक रहते थे। मांस–मदिरा का सेवन केवल चांडाल लोग ही करते थे। लोग आपस में गरीब असहायों की मदद करते थे। इसके साथ–साथ लोग सामाजिक कार्य भी करते थे जैसे मन्दिर, प्याऊ, धर्मशालाएं आदि का निर्माण करवाते थे। समाज में नैतिकता की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी।

6-4-2- xqIrdkyhu vkfFkZd fLFkfr **(Econimic condition of the Guptas)**

गुप्तकालीन भारत में आर्थिक स्थिति अच्छी थी। उनके साम्राज्य में शान्तिपूर्वक व्यवस्था चल रही थी। जिसके पीछे निम्न पहलुओं की भूमिका रही –

(1) कृशि (Agriculture) ¼& गुप्तकाल के लोगों का व्यवसाय कृषि था। कृषि का विकास तेजी से हो रहा था। उस समय तीन फसलों का उल्लेख मिलता है। रवी, खरीफ़ और जायद। अमरकोष में ऐसी फसलों का भी उल्लेख मिलता है जो बहुत कम समय में तैयार हो जाती थी। गुप्तकाल में गेहूं, जौ, चावल, बाजरा, ज्वार, मक्का, कपास, तिलहन, दाल, सरसों, अलसी, मटर, बाजरा, अदरक, काली मिर्च, इलायची, लौंग, सेब, अंगूर, अनार, कटहल आदि फसल होती थी। गुप्तकाल में छोटे–छोटे कृषक होते थे। खेती का कार्य परमपरागत तरीके से किया जाता था। सिंचाई के लिए वर्षा पर निर्भर थे। इसके अतिरिक्त कुओं, तालाबों, झीलों तथा जलाशयों से भी सिचाई की जाती थी। जो भूमि बेकार पड़ी रहती थी वह राज्य की संपत्ति समझी जाती थी। गुप्तकाल के अभिलेखों मे कई प्रकार की भूमि के बारे में चर्चा मिलती है जैसे–

(i) pjkxkg Hkfe ¼& पशुओं को चराने के लिए निजी या सरकारी भूमि जो खाली छोड़ी गई हो उसे चरागाह या गोचर भूमि कहते थे।

(ii) {k= Hkfe ¼& खेती करने योग्य भूमि को क्षेत्र कहा जाता था। जिस पर किसान आसानी से खेती कर सके।

(iii) vijgr Hkfe ¼& यह जंगली भूमि होती थी जिस पर प्राकृतिक जड़ी बूटियां उत्पन्न होती थी और मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करती थी।

(iv) f[ky Hkfe ¼& यह भूमि उबड–खाबड़ होती थी जो कृषि करने योग्य नहीं होती ये टीले या गड्ढे के रूप में हो सकती है

(v) okLr| Hkfe ¼& इस भूमि पर रहने के लिए मकान आदि बनाए जा सकते है अर्थात जिस भूमि पर लोग निवास करते है जिस पर मकान, चिकित्सालय, विद्यालय, धर्मशालाएं आदि बनाए जाते है।

भूमि मापने की इकाइयों अलग–अलग क्षेत्र में अलग–अलग थी। गुप्तकाल में अनाज का उत्पादन बढ़ाने वाले किसानों को विशेष पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता था।

¼2½ m|kx **(Industries)** ¼& गुप्तकाल में लागों का दूसरा मुख्य व्यवसाय उद्योग था। देश के विभिन्न भागों में सूत की कताई एवं कपड़े की बुनाई के कार्य किए जाते थे। इसी के साथ ऊनी वस्त्र व मलमल वस्त्र भी तैयार किये जाते थे। बढ़ई, लुहार, कुम्हार आदि का कार्य करने वाले लोग भी अपने–अपने व्यवसायों में लगे रहते थे। इस काल में धातु उद्योग भी विकास की गति पर था। तांबे एवं कांसे की मूर्तियां तथा बर्तन बनाए जाते थे। सोना, चांदी, मोती आदि के सुन्दर आभूषण तैयार किए जाते थे। दिल्ली के पास का लौह स्तंभ लोहकला का सर्वोत्तम नमूना था। उस समय लोहा व्यवसाय अपने चरम विकास पर था। लोहे का कार्य करने वाले लोहार अपने कार्य में दक्ष थे। उस समय वस्त्र उद्योग कुछ प्रमुख केन्द्र काफी प्रसिद्ध थे जैसे गुजरात, बंगाल, मथुरा, वाराणसी आदि। मेहरौली का लौहस्तंभ उस समय के धातु शिल्पकला के उत्तम नमूनें का एक उदाहरण है। इस काल में रत्न परीक्षा का विज्ञान भी विद्यमान था। इन उद्योगों के अतिरिक्त पोत निर्माण, हाथी दांत तथा चमड़े के उद्योग मुख्य थे।

¼3½ **प□ुपालन (Animal Rearing)** ¼& गुप्तकाल में पशुपालन भी निर्वाह का मुख्य साधन था। 'मन' के अनुसार गोपालन कार्य एवं व्यवसाय वैश्यों का था। अमरकोष में पालतु पशु के रूप में भैंस, ऊंट, भेड़–बकरी, गधा, कुत्ता, घोड़ा आदि थे। इस प्रकार पशु व्यवसाय भी एक आय का अच्छा रत्रोत था।

¼4½ 0;kikj **(Trade)** ¼& गुप्तकाल में व्यापार उन्नत स्तर पर था। देश के विभिन्न भागों में एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थल व जल के माध्यम से व्यापार होता था। प्रयाग, बनारस, वैशाली, कौशाम्बी, मथुरा, पेशावर आदि नगर आपस में एक दूसरे वस्तुओं का व्यापार करते थे। व्यापार के लिए सिंधु, रावी, चैनाब, गंगा, यमुना आदि में नावें चलाते थे। व्यापार के लिए व्यापारिक संघ भी बने हुए थे। सभी को उनके नियमों का पालन करना पड़ता था। बंदरगाहों के द्वारा श्रीलंका, चीन, अरब, ईरान, यूनान, रोम, जावा, बर्मा, सीरिया आदि देशों के साथ व्यापार किया जाता था।

bl i|dkj ge dg ldr| g| fd x|Ir dky dh vkfFkd fLFkfr etc|r FkhA ykx viuk vPN| <|x l| thou 0;rhr djr| FkA

6-4-3- x|Irdkyhu dyk ,o| LFkkiR; ¼okLr|dyk½ (Art and architecture of the Guptas)

गुप्तकाल को प्राचीन भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग अर्थात् क्लासिकी युग कहा जाता है। स्थापत्य एवं कला के क्षेत्र में विकास की चरम सीमा गुप्त काल में प्राप्त होती है लेकिन यह नहीं कहा जा सकता है कि वास्तुकला सर्वोच्तम रूप गुप्त काल में ही था। दुःख कि यह बात है कि गुप्त काल में कला के क्षेत्र में उपलब्धियों के अवशेष बहुत कम प्राप्त हुए हैं। गुप्तकाल में कला की विभिन्न विधाओं के उदाहरण देखने को मिलते है जैसे– भवन निमार्ण कला, चित्रकला, मन्दिर निर्माण कला का उदय, वास्तु, स्थापत्य, मूर्तिकला, धातुकला, मुद्राकला, संगीत, नृत्य, अभिनय कला, मृदभांड कला आदि के सर्वोच्च उदाहरण तत्कालीन मंदिर थे।

¼1½ Hkou fuek.k dyk ¼& गुप्तकाल में भवन निर्माण कला में ईंटों और पत्थरों का प्रयोग किया जाता था। इससे पहले भवनों का निर्माण लकड़ियों से किया जाता था। उपलब्ध अभिलेखों से पता चलता है कि गुप्त शासकों ने अनेक नगरों तथा उन नगरों में विशाल भवनों के निर्माण करवाए थे। दुर्भाग्य यह रहा कि हूणों से लेकर तुर्कों तक जितने भी आक्रमण भारत पर हुए उनमें गुप्तकालीन स्थापत्यों को भारी क्षति पहुंचाई गई। यद्यपि उन आक्रमणों के कारण गुप्तकाल के अनेक स्थापत्यों का विनाश हो गया तथापि कुछ नमूने आज भी सुरक्षित है जैसे भुमरा का शिव मंदिर, झांसी जिले का देवगढ़ मंदिर, तिगवा का विष्णु मंदिर, नाचना कुठार का पार्वती मंदिर आदि गुप्तकालीन स्थापत्य के अद्‌भुत नमूने है। ये मंदिर आकार में छोटे तथा इनकी छतें चपटी है। गुप्तकाल में मठों व स्तूपों का निर्माण किया गया। सॉची तथा गया के स्तूप अनुपम उदाहरण हैं। गुप्तकाल में गुफा कला का चरम विकास हुआ। अजंता की गुफाएं भिलसा के निकट उद्‌यगिरी का गुफा मंदिर गुफा कला का सर्वोत्तम नमूना है।

¼2½ fp=dyk ¼& कामसूत्रकार वात्स्यायन के अनुसार चित्रकला की गणना चौसठ कलाओं में की जाती है। गुप्तकालीन साहित्यों से ज्ञात होता है कि कुलीन तथा सुशिक्षित वर्ग स्त्री–पुरूष सभी इस कला को ग्रहण करते थे। चित्रकला का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन–अध्यापन होता था। गुप्तकालीन चित्रकला का सर्वोत्तम उदाहरण अजंता से प्राप्त भित्तिचित्र है। अंजता के भित्ति चित्रों को सर्वोत्कृष्ट कलाकृतियों का रूप प्रदान किया गया है। अजंता के चित्रों के तीन विषय है।

(i) छतों और कोनों को सजाने हेतु नैसर्गिक सौन्दर्य :– नदी–झरने, पशु–पक्षी, फूल–वृक्ष खाली स्थानों को सजाने के लिए गन्धर्वों, अपसराओं, यक्षों के चित्रों का प्रयोग किया गया है।

(ii) तथागत तथा बोधिसत्व के चित्र

(iii) जातक कथाओं के वर्णन योग्य दृश्य।

भय, लज्जा, करूणा, मैत्री, चिन्ता, उल्लास, हर्ष, घृणा आदि मानवीय संवेगों को चित्रकला के माध्यम से उत्कीर्ण किया गया है। तकनीकी दृष्टि से ये भितिचित्र संसार में सर्वोत्तम स्थान पर आते है। इनमें विविध रंगों, प्राकृतिक दृश्यों, मनुष्य, देवी–देवताओं का चित्रण किया गया है। अजंता की चित्रकला सर्वोत्तम उदाहरण है पद्‌मपाणि अवलोकितेश्वर, बालक श्रवण के साथ उनके अंधे माता–पिता, मरणासन्न राजकुमारी, ज्ञान प्राप्ति के बाद यशोधरा–राहुल का मिलन तथागत द्वारा सन्यास की घोषणा , बुद्ध के स्वागत के लिए इन्द्र की उड़ान। छतों के खम्भों, खिड़कियों, दरवाजों तथा चौखटों

की सजावट आदि देखते ही बनते हैं। बाघ की गुफाओं के भित्ति चित्रों को भी गुप्तकालीन माना गया है। अजंता की चित्र आकृतियां धार्मिक विषयों पर आश्रित है परन्तु बाघ के चित्रों में लौकिक जीवन को दर्शाया गया है। बाघ गुफा के चित्रों मे केश–विन्यास, अलंकार–प्रसाधन की शिक्षा प्राप्त होती है। बाघ की गुफाओं में विहार, चैत्य, स्तूप तथा सभागृह हैं परन्तु अधिकांश चित्र धर्म निरपेक्ष है जैसे नाचगाना, भव्य राजकीय जुलूस, शोकसंतप्त, अंगक्षाएं और हाथियों की दौड़ आदि दृश्य है।

(3) शिल्पकला :– गुप्तकाल में शिल्पकला अपने चरम विकास पर आरूढ़ थी। विशेषतः मूर्ति निर्माण कला अद्वितीय थी। गुप्तकाल से पहले पशुओं की ही मूर्तियां बनाई जाती थी किन्तु गुप्त काल में मूर्तियों के निर्माण पर विशेष ध्यान दिया गया। मूर्तियों में नग्नता के चित्रण में कमी आई। इस काल में ज्यादातर मूर्तियां बुद्ध तथा बौद्धिसत्व की बनाई गई। इन मूर्तियों में घुंघराले बाल, अनेक प्रकार के अलंकार तथा आध्यात्मिक भावों की अभिव्यक्ति हुई। विष्णु, सूर्य, शिव आदि की मूर्तियों का भी निर्माण हुआ। गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद भी शिल्प कला का अस्तित्व कायम रहा। इस प्रकार भारत के बाहर बाली, जावा , सुमात्रा, कम्बोडिया, बोनिर्यो, आदि देशों में भी हुआ।

¼4½ efr! dyk ¼& मूर्तिकला की दृष्टि से गुप्तकाल में बहुत विकास हुआ। गुप्तकाल की मूर्तियां संयमित और नैतिक थी। कुषाणकाल में मूर्तियों में शरीर के सौन्दर्य का जो चित्रण किया गया उस नग्नता का गुप्तकाल की मूर्तियों में कोई स्थान नहीं था। गुप्तकाल की मूर्तियों में मोटे दुपट्टे का प्रदर्शन किया गया। सारनाथ की मूर्तियों पर गांधार कला का कोई प्रभाव नहीं था। गुप्तकाल की मूर्तियों में प्रभावमण्डल दर्शाया जाता था। वैष्णव धर्म के विकास के कारण वैष्णव मूर्तियों का बड़ी मात्रा में निर्माण हुआ। गुप्तकाल की शिल्पकला का जन्म मथुरा शैली के मानकों पर आधारित था। प्रमुख रूप से विष्णु के अवतारों की मूर्तियां बनाई गई । शिव संप्रदाय में लिंग पूजा के कारण मूर्तिकला के विकास की कम संभावनाएं थी। विष्णु की प्रसिद्ध मूर्ति देवगढ़ के दशावतार मंदिर में है। जिसमें विष्णु को शेषनाग की शैया पर दर्शाया गया है। उदयगिरि में एक मूर्ति मिली है जिसमें शरीर तो मनुष्य का है पर मुख वराह का। यह मूर्ति गुप्ताकालीन प्रतिमा निर्माताओं का स्मारक है। गुप्तकाल की बौद्ध मूर्तियों में संजीवता और मौलिकता मिलती है।

¼5½ /kkrq dyk ¼& धातुकला के अन्तर्गत अनेक धातुओं को पिंघलाकर उन्हें मिलाकर अनके वस्तुएं एवं मूर्तियां बनाई जाती थी। तांबे की प्रतिमाएं बहुतायत मात्रा में बनाई जाती थी। नालंदा की 80 फीट ऊंची कांसे की बुद्ध प्रतिमा और महरौली का लौह स्तंभ गुप्त काल की धातु कला का अनुपम उदाहरण है।

¼6½ eqnzk dyk ¼& गुप्तकाल में भारतीय ढंग से सोने और चांदी के सिक्के ढालने का काम तीव्र गति से हुए। इन सिक्कों के ऊपर गुप्तवंशीय नरेशों की मूर्तियां, लक्ष्मी गरूड़ध्वज और सिंह की आकृतियां अंकित की गई है। इन पर गुप्त सम्राटों का गौरव गाथाएं दर्शायी गई हैं। इस प्रकार गुप्तकाल में भारतीय समाज कला, साहित्य, दर्शन, विज्ञान ललित कला आदि के क्षेत्र में अवर्णनीय उन्नति हुई इसी कारण से गुप्तकाल को स्वर्ण युग की संज्ञा दी गई।

¼7½ laxhr dyk ¼& गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त स्वयं संगीत प्रेमी और इस कला के संरक्षक थे। प्रयाग प्रशस्ति से पता चलता है कि समुद्रगुप्त नारद और तुम्बारू से भी सुन्दर वीणावादन करते थे। महिला और पुरूष दोनों गाते व नृत्य करते थे। इस युग में भेरी, झांझ, टिपरी बांसुरी आदि यंत्रों का बहुतायत मात्रा में प्रयोग किया जाता था। रंग मंच और नाट्यकला का विकास भी इस युग में हो चुका था। गुप्तकाल में सम्राट के साथ–साथ साधारण जन–मानस की संगीत में अभिरूचि थी। गुप्तकाल की

अनेक ऐसी मुद्राएं मिली है जिसमें सम्राट समुद्रगुप्त को विविध मुद्राओं में वीणावादन करते दर्शाया गया है। सम्राट स्कन्द गुप्त को भी विशिष्ट संगीतज्ञ माना जाता है।

इस प्रकार उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि चन्द्रगुप्त द्वितीय, कुमार गुप्त प्रथम के सिक्के पूर्ण रूप से भारतीय समाज में सिक्कों की सजावट मनोहरी ढंग से की गई। सिक्कों पर चित्रों तथा अक्षरों का सुस्पष्ट उत्कीर्णन होता है।

6-4-4- xqIr lkezkT; dk iru ¼& गुप्त साम्राज्य के काल को भारतीय इतिहास की अधिकतर पुस्तकों में हिन्दू नवजागरण का युग कहा जाता है परन्तु यह पूरी तरह सत्य नहीं है। समुद्रगुप्त एवं चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपने अपरिमित पुरूषार्थ से गौरवशाली राज्य की स्थापना की थी। इसीलिए उनके शासनकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग अर्थात क्लासिकल युग कहा जाता है। इस विशाल साम्राज्य का पतन पांचवी शताब्दी में आरंभ हुआ तथा छठी शताब्दी में अंत हो गया। इस शक्तिशाली साम्राज्य के पतन में अनेक प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष कारणों की भूमिका रही है। जो निम्न प्रकार से है :–

¼1½ v;kX; mÙkjkf/kdkjh ¼& महान गुप्त साम्राज्य के पतन का प्रमुख कारण स्कन्दगुप्त के कमजोर व अयोग्य शासक थे। जिन्हे शासन प्रबन्ध का सम्यक ज्ञान नही था और जो सुख सुविधाओं में ही उलझे रहते थे। वे अपने साम्राज्य में न तो सुख–शांति स्थापित कर सके और न ही बाह्य आक्रमणों से रक्षा कर सके। शनैः–शनैः महान गुप्त साम्राज्य दिन–प्रतिदिन पतन की और अग्रसर होता चला गया।

(2) उत्तराधिकारी के संबन्ध में निश्चित नियम न होना :– गुप्तकाल में उत्तराधिकारियों के लिए कोई निश्चित नियम या कानून कायदे नहीं थे इसलिए राजा के स्वर्ग सिधार जाने पर सिंहासनरूढ़ होने के लिए आपस में लड़ते रहते थे। ये परस्पर लड़ना राज्य के पतन का मुख्य कारण रहा क्योंकि बाह्य शासकों ने इस अन्तर्द्वन्द्व का लाभ उठाया।

¼3½ foLr`r lkezkT; ¼& महान सम्राट समुद्रगुप्त एवं चन्द्रगुप्त द्वितीय जैसे शासकों ने एक विशाल गुप्त साम्राज्य की स्थापना की थी। इतने विस्तृत साम्राज्य को चलाना कुशल शासक के बिना संभालने की कल्पना उसी प्रकार जिस प्रकार मजबूत नींव के बिना विशाल भवन। इस कारण गुप्त साम्राज्य का पतन होना स्वाभाविक था।

¼4½ vkUrfjd fonzksg **(Internal Revolts)** ¼& गुप्तशासकों के आन्तरिक विद्रोह के कारण चारों तरफ अशान्ति फैल गई। जिससे जगह–जगह पर विद्रोह को बढ़ावा मिला इसके तहत आने वाले दूसरे शासकों ने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी परिणामस्वरूप मालवा, कन्नौज तथा वल्लभी आदि अधीनस्थ राज्य गुप्त साम्राज्य की मुख्य धारा से विलग हो गए। जिसका प्रभाव गुप्त साम्राज्य की शक्ति पर पड़ा और गुप्त साम्राज्य पतन की ओर बढ़ गया।

¼5½ lhek lqj{kk ykijokgh ¼& गुप्त शासकों ने सीमा सुरक्षा के कार्य में लापरवाही की जिसके कारण उन्होनें उत्तर–पश्चिमी सुरक्षा सीमा का नुकसान भोगना पड़ा। बाद में अवसर मिलते ही हूणों ने गुप्त साम्राज्य पर हमला किया।

¼6½ ckS) /keZ dk izHkko **(Effect of Buddhism)** ¼& प्रारंभ गुप्त शासक हिन्दू धर्म में विश्वास रखते थे लेकिन बाद में वे बौद्ध धर्म अनुयायी बन गए। तब उन्होंने अहिंसा का पालन किया। जिसके कारण उनकी

सेना ने युद्ध मे भाग लेना कम कर दिया और शान्तप्रिय रहना शुरू कर दिया। यह भी गुप्त साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण रहा है।

¼7½ luk dk detkj gkuk ¼& लम्बे समय तक गुप्त काल में शान्ति स्थापित होने के कारण सेना ने युद्ध अभ्यास नहीं किया और न ही किसी युद्ध में भाग लिया जिसके फलस्वरूप सेना शिथिल पड़ गई। बाद मे सेना को विदेशी आक्रमणों का सामना करना पड़ा तो सेना उनके सामने डटकर सामना नही कर पाई। जिससे पतन होना स्वाभाविक था।

¼8½ cqudjk dk iyk;u ¼& विदेशी व्यापार के ह्रास से गुप्त साम्राज्य के आय के रत्रोत काफी कम हो गए। इस कारण रेशम बुनकर अर्थात व्यवसायी संघ (रेशम का) ने 473 ई. प्लायन कर लिया और गुजरात से मालवा चले गए वहां जाकर कोई कार्य करना प्रारंभ कर दिया।

¼9½ foÙkh; ladV **(Financial crisis)** ¼& प्रारंभ में गुप्त साम्राज्य काफी समृद्ध था। लेकिन गुप्त काल के शासकों ने कलाओं व साहित्य पर अनावश्यक खर्च किया। सेना के विस्तार एवं मजबूत बनाने में कम खर्च किया और इसी के साथ अपने साम्राज्य में छोटे–छोटे व्यवसाय थे उनकी तरफ भी काई विशेष ध्यान नहीं दिया। जिसके कारण वस्तुओं का उत्पादन हो कम गया और विदेशों में जो वस्तुएं निर्यात करते थे वो कार्य भी प्रभावित हुआ। परिणामस्वरूप आर्थिक व्यवस्था गड़बड़ा गई। जो पतन को रोकने में असफल रही।

¼10½ gq.kk dk vkØe.k **(Invasion of Hunas)** ¼& चन्द्रगुप्त द्वितीय के उत्तराधिकारियों को ईसा की पांचवी सदी के उतरार्द्ध में मध्य एशिया के हूणों का सामना करना पड़ा। हूण एशिया की एक बहुत बड़ी अत्याचारी जाति थी। गुप्त सम्राट स्कन्दगुप्त हूणों को भारत में आगे बढ़ने से रोकने में असफल रहा। क्योंकि हूणों की सेना घुडसवारी में पूर्णतः कुशल थी और वे धातु से बने रकाबों का प्रयोग करते थे। 485 ई. में हूणों ने पूर्वी मालवा को और मध्य भारत के बड़े हिस्से को अपने कब्जे में ले लिया। इस प्रकार से छठी शताब्दी में गुप्त साम्राज्य बहुत छोटा हो गया।

Mk- ch-ih- flUgk d vuqlkj] ^^ gq.kk d vkØe.kk u lkekT; dh uho dk fgyk dj j[k fn;k Fkk** **(The Huna invasions shook the empire to its roats, " Dr. B.P. Sinha, dynastic History of Magadha, New Delhi, 1977 (P69)**

इस प्रकार से विशाल गुप्त साम्राज्य का पतन हुआ। उपरोक्त सभी कारणों को गुप्त साम्राज्य के पतन के लिए उत्तरदायी माना जा सकता है। जिन सभी का योगदान प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रहा। जिसका परिणाम गुप्त साम्राज्य का पतन रहा।

6-5 iqxfr leh{kk (Check Your Progress)

Hkkx ¼d½ fjDr LFkkuk dh ifr dhft, (Fill in the blanks)

I. गुप्त वंश का वास्तविक संस्थापक .... था।

II. चीनी यात्री फाहियान ने .... के शासन काल में भारत का भ्रमण किया।

III. चन्द्रगुप्त द्वितीय ने .... को द्वितीय राजधानी बनाया।

IV. .... के शासनकाल में नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी।

V. भीतरी मुद्रालेख में नरसिहं गुप्त की माता का नाम .... मिलता है।

VI. हल पर लगने वाले कर .... कहा जाता था।

VII. गुप्तकाल में बनी दो मीटर से भी ऊंची बुद्ध की कांस्यमूर्ति .... के निकट .... में प्राप्त हुई।

VIII. गुप्तवंश का अंतिम सफल शासक .... था।

Hkkx (Part) ¼[k½ fuEu dFkuk d mÙkj ¼gk@ugh½ (Yes/No) e fnft , ¼&

I.	ग्राम प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी।	(हां/नहीं)
II.	खेती करने योग्य भूमि क्षेत्र को अरहत भूमि कहा जाता था।	(हां/नहीं)
III.	गुप्तकाल के लोगों का प्रथम व्यवसाय उद्योग था।	(हां/नहीं)
IV.	गुप्तकाल में पाटलिपुत्र, मथुरा, बनारस, नासिक, बल्लभी, साकेत आदि शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे।	(हां/नहीं)
V.	नालंदा से प्राप्त एक मुद्रालेख में विष्णुगुप्त का लेख प्राप्त हुआ।	(हां/नहीं)
VI.	मन के अनुसार गोपालन कार्य वैश्यों का था।	(हां/नहीं)
VII.	मृच्छकटिकम् रचना कालिदास की है।	(हां/नहीं)
VIII.	अभिज्ञानशाकुन्तलम नाटक विशाखादत्त की रचना है।	(हां/नहीं)
IX.	गुप्तवंशीय शासकों के बारे में जानकारी स्मृतियों से मिलती है।	(हां/नहीं)
X.	गुप्तकाल में भारतीय ढंग से सोने और चांदी के सिक्कों को ढालने का कार्य तीव्रगति से हुआ।	(हां/नहीं)
XI.	घटोत्कच का शासनकाल 319–335 ई. तक था।	(हां/नहीं)
XII.	गुप्त साम्राज्य का संस्थापक रामगुप्त को माना गया है।	(हां/नहीं)

6-6 lkjka'k (Summary)

- गुलाम वंश की स्थापना कुतुबुद्दीन ऐबक ने की। कुतुबद्दीन ऐबक महमूद गौरी की मृत्यु के बाद 1206 ई0 में दिल्ली के सिंहासन पर बैठा और भारत में गुलाम वंश की स्थापना हुई। दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक इल्तुतमिश था।
- गुलाम वंश का अन्य नाम – मामलुक वंश था। दास वंश के नाम से भी जाना जाता है। इसका शासनकाल 1206–1290 ई0 तक था।
- गुलाम वंश में कुल 11 शासक हुए जिनमें से 3 शासक दास थे – कुतुबद्दीन इल्तुतमिश एवं बलबन।
- कुतुबद्दीन ऐबक सिंहासन (राज्याभिषेक) पर कब बैठा– 25 जून, 1206 ई0 को लाहौर में और इससे अपनी राजधानी भी लाहौर को बताया।

- भारत में तुर्की राज्य का संस्थापक भी कुतुबद्दीन ऐबक को माना जाता है जिसने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की उसने केवल मलिक एवं सिपहसातार की पदवियाँ धारण की थी। भारत में तुर्की शासन का वास्तविक संस्थापक इल्तुतमिश था।
- इल्तुतमिश को गुलाम का गुलाम कहा जाता है क्योंकि यह मुहम्मद गोरी का गुलाम था। मुहम्मद गौरी से कुतुबद्दीन ऐबक ने खरीदा था।
- रजिया सुल्तान का शासन काल 1236–1240 ई0 था। जो दिल्ली सल्तनत की प्रथम एवं अन्तिम मुस्लिम महिला शासक थी। इसका जन्म 1205 ई0 में बदायूँ एवं मृत्यु 14 अक्टूबर, 1240 ई0 में कैथल (हरियाणा)।
- दिल्ली सल्तनत खिलजी वंश का शासनकाल 1290–1320 ई. तक था जिसके कुल 5 व प्रमुख सुल्तान 3 थे – जलालुद्दीन सल्तनत का पहला शासक था। जिसका हिन्दू जनता के प्रति उदार दृष्टिकोण था। इसको भारत में खिलजी वंश का संस्थापक भी कहा जाता है। यह 13 जून, 1290 ई. में कैकूबाद द्वारा निर्मित किनोखरी (किलूगढ़ी) महल में सिंहासन पर बैठा।

(2) अलाऊद्दीन खिलजी का जन्म 1266 ई. में हुआ था। इसका शासन काल 1296–1316 ई. तक इसका राज्याभिषेक दिल्ली में बलबन के लालमहल में किया गया। इसने अपने शासन काल नशीले पदार्थों एवं शराब पर रोक लगाई और एक गुप्तचर प्रणाली को स्थापित किया।

अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में दो प्रसिद्ध कवि थे – अमीर खुसरो एवं हसन देहनवी। अमीर खुसरो ने सितार का आविष्कार किया व वीणा को संशोधित किया।

(3) कुतुबद्दीन मुबारक शाह खिलजी प्रथम दिल्ली का सुलतान जिसने खुद को खलीफा घोषित किया था। इसका शासन काल 1316–1320 ई. तक था।

- तुगलक या गुलाम वंश की स्थापना गयासुद्दीन मुहम्मद तुगलक ने की थी। जिसका शासन काल 1320–1325 ई. तक था। यह 8 सितम्बर 1320 ई. को सिंहासन पर बैठा। इसके अन्य गाजी मलिक

या तुगलक गाजी। दिल्ली सल्तनत पर तुर्क राजवंशों में शासन करने वाला अंतिम तुगलक वंश था।

- मुहम्मद–बिन–तुगलक का शासन काल 1325–1351 ई. था। इसका मूल नाम 'उलूग खाँ' था अपने पित ग्यासुद्दीन मुहम्मद तुगलक की मृत्यु के बाद 1325 ई. में सिंहासन पर बैठा। राजामुंदरी के एक अभिलेख में मुहम्मद तुगलक को दुनिया का खान कहा गया है।
- फिरोज शाह तुगलक का शासन काल 1351–1388 ई. तक था। फिरोजशाह का जन्म 1309 ई. में हुआ था और 23 मार्च 1351 को गद्दी पर बैठा।
- सैयद वंश में (1414–1451 ई.) में चार शासक हुए – (1) खिज खाँ (1414–1421 ई.) (2) मुबारक शाह (1421–1434 ई.) (3) मुहम्मद शाह (1434–1445 ई.) (4) अलाउद्दीन आलम शाह (1445–1451 ई.)। सैयद वंश का संस्थापक खिज खाँ था जो शिया वंश का था।
- लोदी वंश (1451–1526 ई.) इस वंश के तीन शासक हुए – (1) बहलोल लोदी (1451–1489 ई.) (2) सिकन्दर लोदी (1489–1517 ई.) (3) इब्राहिम लोदी (1517–1521 ई.) इन सभी शासकों में बलोल लोदी ने सबसे अधिक समय तक यानी 38 वर्षों तक शासन किया और इसने ही लोदी वंश की स्थापना 1951 ई. में की थी।

6-7 l¦d¦r l¦pd (Key Words)

भाब्द (Words)	vFk (Meaning)
• अभिहित	संबोधित
• उत्कीर्ण	खुदा हुआ
• संपादन	संकलन
• सिहासनारूढ़	राजगद्दी पर बैठना
• नगर श्रेष्ठ	पूंजीपति वर्ग का नेता
• सार्थवाद	विषय के व्यापारियों के नेता
• कुलिक	शिल्पियों व व्यवसायियों के मुखिया को
• कायस्थ	लेखक का कार्य करने वाले

6-8- Lo&eVY;kadu ijh{kk (Self assessment Test)(SAT)

Hkkx ¼d½ (Part –A) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer types Question) (LAQS)

प्रश्न 1- xqIrdky dh ,d ^Lo.kZ;qx* ds :Ik esa foospuk djsaA

(Discuss Gupta period as a 'Goldenage) (M.D. Univ. Rohtak, 2014 , Bhagalpur Univ, 2014, 2016, 2018)

प्रश्न 2- xqIrdkyhu lekt] vkfFkZd fLFkfr] uxj dsUnzksa dh O;k[;k dhft,A

(Explain the Society of the Guptas, Economic conditions, Urban centres.)

प्रश्न 3- गुप्त साम्राज्य का पतन, प्रशासन, स्त्रोत पर laf{kIr fVIi.kh fyf[k,A

(Write a short notes on decline of the Gupta Empire, Administration, Sources)

भाग (ख) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Question)(SAQS)

(I) न्याय प्रबन्धन (Judicial Administration) (II) नरसिंह गुप्त (Narsingh Gupta)

(III) रामगुप्त (Ram Gupta) (IV) अभिलेख (Record)

(V) समुद्रगुप्त (Samudra Gupta) (VI) सिक्के (Coins)

6-9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to check your Progress)

Hkkx ¼d½& (I) चन्द्रगुप्त (II) चन्द्रगुप्त द्वितीय (III) उज्जैन (IV) कुमार गुप्त प्रथम (महेन्द्रादित्य) (V) महादेवी चन्द्रदेवी (VI) हलदण्ड (VII) भागलपुर, सुल्तानगंज (VIII) स्कन्दगुप्त (Skand Gupta)

Hkkx ¼[k½& (I) हां (II) नहीं (III) नहीं (IV) हां (V) हां (VI) हां (VII) नहीं (VIII) नहीं (IX) हां (X) हां (XI) नहीं (XII) नहीं

6-10- lanHkZ xzUFk ,oa lgk;d v/;;u lkexzh (References /Suggested Reading):-

- द्विजेन्द्र नारयण झा एवं कृश्ण मोहन श्रीमाली : प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, नवम्बर, 2018
- महेश कुमार वर्णमाल % laf{kIr bfrgkl &,u-lh-vkj-Vh- सार, कॉसमोस, पब्लिकेशन, मुखर्जी नगर, दिल्ली, tuojh] 2019
- स्पेक्ट्रम पब्लिकेशन – सामान्य अध्ययन, राजीव अहिर नगर, नई दिल्ली
- Mk- विनय कुमार सिंह, कार्यकारी सम्पादक, यूनीक सामान्य अध्ययन, यूनीक पब्लिकेशन्स नई दिल्ली।
- रामशरण भार्मा : भारत का प्राचीन इतिहास, ऑक्सबोर्ड युनिवर्सिटी प्रैस द्वारा भारत प्रकाशित – 2/11 Hkkry] valkjh jksM] nfj;kxat] ubZ fnYyh] pkSFkk fgUnh laLdj.k] 2019

- **Manjeet Singh Sodhi : Themes in Indian History, Modern's Publishers, Railway Road, Jalandhar, first Edition : 2009**

SUBJECT : PART-1,SEMESTER- II	
COURSE CODE :B.A. 103	**AUTHOR AND UPDATED : MOHAN SINGH BALODA**
LESSON NO. 07	
HkfDr o lQh vknkyu **(Bhakti & Sufi Movement)**	

v/;k; lajpuk **(Lesson Structure)**

7-1- अधिगम उद्देश्य **(Learning Objectives)**

7-2- ifjp; **(Introduction)**

7-3- विशय वस्तु के मुख्य बिन्दु **(Main Body of Text)**

7-3-1- HkfDr vknkyu iHkkoh lkekftd o lkLdfrd dkjd % vo/kkj.kkRed le>A **(Bhakti Movement Conceptual understanding) Effective social & cultural factors)**

7-3-2- /kkfed vkLFkk dk Lo:i **(Nature of Religious belief or Faith)**

7-3-3- HkfDr vknkyu % ijijk,i **(Bhakti Movements : Traditions)**

7-3-4- HkfDr vknkyu d mn; d dkj.k **(Causes of origin of Bhakti Movements)**

7-3-5- भक्ति आंदोलन की महत्वपूर्ण विशेशताएं **(Important Characteristics of Bhakti Movement)**

7-4- विशय वस्तु का पुनः प्रस्तुतीकरण **(Further Main body of the text)**

7-4-1 HkfDr vknkyu dk egÙo o iHkko **(Important and effect of Bhakti movement)**

7-4-2- lQh vknkyu % vko/kkj.kkRed le> **(Sufi Movement : Conceptual understanding)**

7-4-3- lQh vknkyu % lkekftd&lkLdfrd vk/kkj **(Sufi Movement : Social-Cultural Bases)**

7-4-4- सूफी मत की शिक्षाएं **(Teachings of Sufism)**

7-4-5- lQh vknkyu dk egRo ,o iHkko **(Importance & effect of suffi movement)**

7-5- ixfr leh{kk **(Check your progress)**

7-6- **सारांा (Summary)**

7-7- ldr&lpd **(Key-Words)**

7-8- Lo&eY;kdu ijh{kk **(Self Assessment Test)(SAT)**

7-9- **प्रगति समीक्षा हेतु प्रनोत्तर (Answers to check your Progress)**

7-10- lnHk xFk ,o lgk;d v/;;u lkexh **(References/Suggested Reading)**

7-1- **अधिगम उद्देय (Learning Objectives)**

इस अध्याय के अध्ययन के उपरांत्, आप निम्न विशय वस्तुओं (contents) dk le>u ;kX; gk tk,x %&

- भक्ति से हम क्या समझते है।
- भक्ति आंदोलन के इतिहास की समझ विकसित कर पाएगें।
- भक्ति आंदोलन की परंपराओं की व्याख्या कर सकेंगे।
- भक्ति आंदोलन के कारण व प्रभाव की सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में समीक्षा कर पाएगें।
- भक्ति आंदोलन की विशेषताओं पर परिचर्चा कर सकेगें।
- सूफी मत की अवधारणा को जान सकेंगे।
- सूफी आंदोलन की शिक्षाओं को आत्मसात कर सकेंगे।
- विभिन्न सूफी सिलसिलों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगें।
- भारत के प्रसिद्ध सूफी संतों के बारे में जान सकेंगे।

7-2- ifjp; **(Introduction) :-** मध्यकालीन भारत में मुस्लिम सत्ता की स्थापना के साथ ही सामाजिक व सांस्कृतिक स्तर पर दो परस्पर विरोधी आस्थाओं एवं विश्वासों के खिलाफ धार्मिक सुधार अति आवश्यक हो गया था। इस समय का समाज एक तरफ जहां ब्राह्मण धर्म के कर्मकाण्ड से ग्रस्त था तो दूसरी और मुस्लिम सत्ता पर उलेमा के प्रभाव के कारण इस्लामिक कट्टर पंथियों के प्रभाव से भी ग्रस्त था। इस परिस्थिति में 8वीं सदी से 18वीं सदी के दौरान इन परम्परागत रूढ़िवादी प्रवृतियों पर अंकुश लगाने के लिए इस्लाम एवं हिन्दू धर्म में दो महत्वपूर्ण आंदोलनों – सूफी एवं भक्ति आंदोलन का शुभारंभ हुआ। इन आंदोलनों ने निरर्थक कर्मकाण्ड, आडम्बर एवं कट्टरपंथ के स्थान पर सत्य, प्रेम व करूणा आधारित भक्ति–भावना को

अपना आदर्श बनाया। यद्दपि आंदोलन के प्रणेताओं की परंपरा अलग–अलग रही किन्तु फिर भी सरलता, सहयोग, दया, उदारता, सद्भावना व प्रेम–प्यार, आदर–भाव सबके लिए केन्द्र बिन्दु रहा। सबों ने मानव धर्म व मानवता को समान रूप से महत्व दिया। दक्षिण भारत में वैष्णव संत अलवार व शैव संत नयनार को भक्ति आंदोलन का संस्थापक माना जाता है। इन दोनों परंपराओं के संतों ने जनसामान्य की भाषा तमिल मं साहित्य व भक्ति–भाव से युक्त गीतों की रचना कर सामाजिक धार्मिक कुरीतियों का जोरदार शब्दों में खण्डन किया। इनमें पुरूष व स्त्री दोनों संत शामिल थे। अलवार की अंडाल एवं नयनार की कराइक्काल अम्मइयार स्त्री संतों ने समाज को नवीन दिशा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। दक्षिण भारत के शासकों–पल्लव, पांड्य, चोल, चालुक्य एवं राष्ट्रकूट ने इन संतों व इनके मतों को अपना संरक्षण प्रदान किया तथा अनेक भव्य मंदिरों का निर्माण करवाया। ये मंदिर शिक्षा के केन्द्र के रूप में भक्ति–भावना के प्रचार में सहायक होते थे। नयनारों की संख्या 63 जबकि अलवारों की संख्या 12 थी और इनमें अनेक जातियों व भिन्न–भिन्न पृष्ठभूमि तथा पेशों के लोग शामिल थे। नयनारों में सर्वाधिक प्रसिद्ध थे – अप्पार, संबंदर, सुंदरार और मणिक्कवसागार। प्रसिद्ध तमिल ग्रंथ – तेवरम् और तिरूवाचकम् में हमें इनके गीतों के संकलन प्राप्त होते है। अलवार संतों में सर्वाधिक प्रसिद्ध थे – पेरियअलवार उनकी पुत्री अंडाल, तोंडरडिप्पोडी अलवार और नम्मालवार। प्रसिद्ध ग्रंथ दिव्य प्रबंधम् में इनके गीत संकलित हैं। अद्वैतवाद के प्रवर्तक आदिगुरू शंकराचार्य का जन्म केरल के कलादी गांव में आठवीं शताब्दी में हुआ था। इन्होनें एक मात्र निर्गुण और निराकार ब्रह्म को ही सव्य माना तथा जीवात्मा और परमात्मा दोनों एक ही हैं का ज्ञान दिया। यह संसार मिथ्या या माया है और यह ब्रह्म का ही विस्तार है। गाविंदाचार्य के शिष्य आदिगुरू शंकराचार्य ने उस समय की परिस्थिति के अनुसार जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति के लिए ज्ञान के मार्ग को अपनाने का उपदेश दिया। यह रहस्य की बात है कि ज्ञानमार्गी होते हुए भी शंकराचार्य ने प्रबल भक्ति भावना के वशीभूत होकर देवी शक्ति और कृष्ण के भक्तिपरम गीत की रचना किया तथा भारत के चारों कोनो में चार मठ स्थापित किये जो भक्ति आंदोलन के दौरान और आज भी उत्तर व दक्षिण भारत को एक सूत्र में जोड़ने का कार्य करते हैं। आदिगुरू शंकराचार्य के प्रस्थानत्रयी भाष्य ज्ञान और भक्ति को बढ़ावा देने के रूप में उत्तर–दक्षिण सम्पूर्ण भारत में लोकप्रिय है।

विशिष्टाद्वैत के प्रवर्तक रामानुज ग्यारहवीं शताब्दी में तमिलनाडू में पैदा हुए थे। उन्होनें मोक्ष प्राप्ति का साधन भगवान विष्णु के प्रति अनन्य भक्ति को बताया। इन्होनें अपने विशिष्टाद्वैत सिद्धांत में बतलाया कि जीवात्मा, परमात्मा के साथ एकाकार होने पर भी अपना अलग अस्तित्व बनाए रखती है। तमिल भक्ति आंदोलन और मंदिर पूजा से प्रभावित होकर बारहवीं शताब्दी के मध्य में कर्नाटक में बसवन्ना और उनके सहयोगियों अल्लमा प्रभु तथा अक्कमहादेवी द्वारा वीरशैव अथवा लिंगायत मत की स्थापना किया गया। वासवन्ना द्वारा कन्नड़ में रचे गये पद जिन्हे वचन कहा जाता है लिंगयात मत पर काफी प्रकाश डालते हैं। इन्होनें धार्मिक व सामाजिक कुरीतियों का खंडन किया और स्त्री, पुरूष व जातिवाद से ऊपर उठकर सभी व्यक्तियों की समानता पर बल दिया।

वसवन्ना ने अपनी रचनाओं के माध्यम से कर्मकांड व मूर्तिपूजा का विरोध करते हुए मानव शरीर को ही तीर्थ व मंदिर के रूप में प्रस्तुत किया। यही कारण है कि यह मत आज भी दक्षिण भारत में बहुत लोकप्रिय है और समाज की दिशा तय करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

तेरहवीं से सत्रहवीं शताब्दी के मध्य महाराष्ट्र में अनेकानेक संत कवियों ने अपने सरल मराठी भाषा में लिखे अभंग गीतों के माध्यम से जन–सामान्य के बीच भक्ति–भावना का प्रचार–प्रसार किया। ये अभंग गीत आज भी

जन–जन को प्रेरित कर रहे हैं। इनमें प्रमुख थे – ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम, रामदास, तथा सक्कूबाई जैसी स्त्री संत तथा चोखमेला का परिवार। इन सभी संतों ने एक स्वर से सामाजिक व धार्मिक कुरीतियों, कट्टरपन जातिभेद का खंडन किया और गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए दूसरों के दुःखों को समझना और उसे बांट लेना असली भक्ति बतलाया। इन संतों की भक्ति भावना के प्रचार–प्रसार से एक नवीन मानवतावादी विचार का उद्‌भव हुआ। जैसा कि सुप्रसिद्ध गुजराती संत नरसी मेहता ने कहा था –"वैष्णव जन तो तेने कहिए पीर पराई जाने रे।" बाद में नरसी मेहता का यहीं भजन गांधीजी का प्रिय भजन बन गया।

उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन का प्रारंभ और इसके प्रचार–प्रसार भारत के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इस आंदोलन को दक्षिण से उत्तर भारत में लाने का श्रेय रामोपासक गुरू रामानंद को जाता है। इनके शिष्य समाज के भिन्न–भिन्न पृष्ठभूमि व पेशे से थे जिन्होनें समाज के निम्न से उच्च हर वर्ग के बीच भक्ति आंदोलन को अत्यंत लोकप्रिय बना दिया। इनके शिष्यों में रहस्यवादी कबीर 'जुलाहा' संत रैदास 'चर्मकार', भक्त धन्ना 'जाट किसान', भक्त सेना 'नाई' व भक्त पीपा 'राजपूत' अत्यंत प्रसिद्ध हुए।

इस काल में अनके धार्मिक समूह जिनमें नाथपंथी, सिद्ध व योगी महत्त्वपूर्ण स्थान रखते है ने अपने साहित्य रचना व योगासन, प्राणायाम व चिंतन–मनन जैसे क्रिया–कलापों के प्रचार–प्रसार द्वारा समाज में व्याप्त रूढ़िवादी धर्म की आलोचना किया और भक्ति मार्गीय धर्म के लिए आधार तैयार किया जो आगे चलकर उत्तरी भारत में लोकप्रिय शक्ति बना।

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में 13वीं शताब्दी के बाद भक्ति आंदोलन को इस्लाम की राजसत्ता तथा उसके प्रति भारतीय जनमानस की प्रतिक्रिया ने सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से काफी प्रभावित किया। इस इस्लाम की स्थापना सातवीं शताब्दी में पैगंबर मुहम्मद ने अरब में की और इसके माध्यम से उन्होंने लोगों को एक अल्लाह, आपसी भाई–चारे, सादा एवं पवित्र जीवन व्यतीत करने एवं स्त्रियों का सम्मान करने का संदेश दिया। मुहम्मद साहब के कथनों का संकलन 650 ई. में अरबी में किया गया था। पवित्र ग्रंथ कुरान से हमें पता चलता है कि इस्लाम को मानने वालों के लिए पांच सिद्धांतों का पालन करना अनिवार्य है। मुहम्मद बिन कासिम द्वारा 711–12 ई. में सिंध विजय के फलस्वरूप इस्लाम की भारत में नींव पड़ी। 1206 ई. में दिल्ली सल्तनत की स्थापना एवं 1526 ई. में मुगल साम्राज्य की स्थापना के कारण भारत में इस्लाम का तीव्रता से प्रसार हुआ।

भारत में अधिकांश लोग गैर–मुस्लमान थे जबकि मुस्लिम शासकों पर मुस्लिम धर्मगुरू उलमा का प्रभाव था जिसके फलस्वरूप दो आस्थाओं के बीच टकराव हुआ जिससे भक्ति आंदोलन को काफी बढ़ावा मिला। मध्यकाल में इस्लाम के अंतर्गत प्रकृति के रहस्यों को जानने के लिए उत्सुक लोगों द्वारा एक रहस्यवादी आंदोलन के रूप में सूफीमत का विकास हुआ। यह सूफीमत तात्कालिक भारतीय सामाजिक–सांस्कृतिक परंपराओं से बहुत प्रभावित था इस कारण इसकी सफलता और लोकप्रियता का इतिहास बहुत दिलचस्प है।

सूफियों ने भारत की गुरू शिष्य परंपरा के अनुरूप एक अल्लाह की शक्ति में विश्वास रखते हुए प्रेम को बढ़ाने के लिए सौन्दर्य एवं संगीत को अधिक महत्त्व दिया। उन्होंने अपने जीवन से भौतिक भोग विलास से दूर रहने का संदेश देते हुए मानव सेवा व अन्य धर्मों के आदर को सूफीमत में महत्वपूर्ण स्थान दिया। इसीलिए आज भी सर्वशक्तिमान के प्रति लौ लगाने के सूफियों की महत्त्वपूर्ण संगीत विधा कव्वाली गायन भारतीय समाज में लोकप्रिय है।

सूफी संत पीर कहलाते थे और उनके शिष्य मुरीद कहे जाते थे और वे जिस आश्रम या मठ में रहते थे उन्हें खनकाह कहा जाता था। सूफी मत के इस पीर–मुरीद पंरपरा में दाता गंज बख्श, ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती, शेख कुतुबुद्दीन बख्तियार काफी, शेख फरीद, शेख निजामुद्दीन औलिया तथा बहाउद्दीन जकारिया प्रसिद्ध सूफी संत हुए। यह सूफीमत कई सिलसिलों में विभाजित था। इनमें चिश्ती तथा सुहरावर्दी सिलसिले बहुत प्रसिद्ध हैं। भारत में चिश्ती सिलसिला अधिक लोकप्रिय हुआ। सूफीसन्तों ने भारत की योग पद्वति को भी अपनाया तथा जनसामान्य की भाषा में धार्मिक सहिष्णुता, लोक बंधुत्व की भावना का संदेश देते हुए हिन्दू–मुस्लिम के बीच भेद–भाव का कड़ा विरोध किया। जिसका भारतीय समाज पर व्यापक और दूरगामी प्रभाव पड़ा।

इस प्रकार संतों तथा सूफियों के प्रयासों से यह भक्ति–भावना मध्य भारत के सामाजिक एवं धार्मिक जीवन में एक नवीन एवं गतिशीलता का संचार किया और यह एक आंदोलन का रूप ले लिया जिसे भारतीय इतिहास में भक्ति आंदोलन के नाम से जाना जाता है। इसे भक्ति आंदोलन इसलिए कहा जाता था क्योंकि इस आंदोलन के सभी प्रचारक अंतिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति के लिए निष्काम व अनन्य भाव युक्त मन, बुद्धि के समर्पण आधारित भक्ति पर बल देते थे।

भक्ति आंदोलन का उदय हिन्दू धर्म एवं समाज में सुधार करके इनमें प्रचलित कुप्रथाओं को दूर करने तथा इसे इस्लाम से उत्पन्न हुए खतरे से सुरक्षित रखने के लिए हुआ। इस आंदोलन से इस्लाम एवं हिन्दू धर्म के समन्वय द्वारा सामाजिक सद्भावना का मार्ग प्रशस्त हुआ। शंकराचार्य, रामानुज, रामानंद, ज्ञानेश्वर या ज्ञानदेव, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम, वल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभु, संत रविदास, मीराबाई, कबीर, गुरूनानक देव जी, शंकर देव, तुलसीदास, सूरदास आदि भक्ति आंदोलन के प्रमुख प्रचारक थे। इन सभी संतों ने सर्वशक्तिमान तथा सर्वव्यापक एक सच्चिदानंद परमात्मा की उपासना पर बल दिया। इन सभी संतों ने भारत के सनातक संस्कृति की उपनिषदीय परंपरा के अंतर्गत गुरू–शिष्य परंपरा पर आधारित भक्ति–भावना के द्वारा परम लक्ष्य की प्राप्ति पर बल दिया। वे परमात्मा तक पहुंचने के लिए गुरू का होना आवश्यक समझते थे। उन्होनें भारत के कोने–कोने में यात्रा करके अपने प्रवचनों व उपदेशों के द्वारा लोगों को पवित्र जीवन व्यतीत करने तथा आपसी भाईचारे का संदेश दिया। गुरूनानक देव जी ने तो भारत के बाहर दूर देशों तक यात्रा करके जन सामान्य को परस्पर सहयोग आधारित साद्गीपूर्ण जीवन जीने के लिए प्ररित किया। इन संतों ने लोकभाषा में साहित्य रचना द्वारा अपने प्रवचनों व उपदेशों को स्थायी रूप दिया जो आज भी न केवल भारतवासियों के लिए अपितु सम्पूर्ण मानव जाति के लिए एक अनमोल धरोहर है। उन्होंने समाज एवं धर्म में प्रचलित अंध–विश्वासों जैसे जाति–प्रथा, पर्दा–प्रथा, सती–प्रथा, मूर्ति–पूजा, निरर्थक यज्ञीय कर्मकांड, बलि आदि का जोरदार शब्दों में खंडन किया। इस कारण भक्ति आंदोलन के दूरगामी परिणाम निकले। निश्चित रूप से भक्ति भावना का यह आंदोलन हिन्दू धर्म एवं समाज को एक नई दिशा प्रदान की। प्रो. रानाडे के अनुसार, लोकभाषाओं में साहित्य रचना का आरंभ, इस्लाम के साथ सहयोग के परिणामस्वरूप सहिष्णुता की भावना का विकास जिसकी वजह से जाति व्यवस्था के बंधनों में शिथिलता आई और विचार तथा कर्म दोनों स्तरों पर समाज का उन्नयन हुआ। भक्ति आंदोलन की जानकारी के हमारे प्रमुख स्त्रोत इस आंदोलन के प्रचारकों या उनके शिष्यों द्वारा लिखित व संकलित रचनाएं है। इनमें से प्रमुख है – कबीर की साखी, शबद व रमैनी का संग्रह 'बीजक' सिखों का आदि ग्रंथ साहिब, चैतन्य महाप्रभु के शिष्यों द्वारा संकलित शिक्षाष्टक, मीराबाई के भक्ति गीत पदावली, बल्लभाचार्य के भक्तिगीत मधुराष्टक, गोस्वामी तुलसीदास जी की रामचरित मानस, सूरदास की सूरसागर, सूरसारावली व साहित्य लहरी, गुजरात के संत नरसी मेहता रचित कृष्ण भक्तिपदक गीत, तथा महाराष्ट्र के संतों के भक्तिपरक

मराठी गीत जिन्हे अभंग के नाम से जानते है। ये सभी रचनाएं आज भी जनसामान्य के बीच भक्ति भावना की लौ जगाने के लिए लोकप्रिय हैं। इन रचनाओं से न केवल भक्ति भावना का विकास होता है बल्कि सामाजिक सांस्कृतिक स्तर पर सद्भावनापूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। इन संतों की रचनाएं, परम्पराएं स्थानों व भाषाओं में भिन्नता होते हुए भी इन सबमें मूलमंत्र व बीजमंत्र अपने इष्ट के प्रति सर्व सर्म्पण प्रेम कूट–कूट कर भरा है। भक्ति आंदोलन का यह प्रेम उत्तर–दक्षिण से लेकर पूरब–पश्चिम तक सम्पूर्ण भारत के अनेकता में एकता का मूल मंत्र है और इसीलिए दुनिया भर के लोग ज्ञान, दर्शन, भक्ति व अध्यात्क की शिक्षा के लिए आज भी वसुधैव कुटुंबकम् के रूप में भारत को जानते मानते और प्यार करते हैं। अंततः सार रूप में हम कह सकते है कि मध्यकालीन भारतीय इतिहास में भक्ति आंदोलन मनुष्य की आंतरिक शक्तियों को बढ़ाने वाले खान के रूप में सामाजिक और सांस्कृतिक क्रान्ति के वाहक के रूप में उभरकर सामने आए।

7-3-1 HkfDr vkUnksyu] iHkkoh lkekftd o lkLd`fr dkjd ¼ vo/kkj.kkRed le> (**Bhakti Movement Conceptual understanding) Effective social & cultural factors)** ½& मध्यकालीन भारतीय इतिहास में प्रभावी सामाजिक व सांस्कृतिक उत्थानो–कारक के रूप में आंदोलन का बहुत ही विशिष्ट स्थान है। ईश्वर से विशेष अनुरक्ति लगाव या अनुराग को भक्ति कहते है। यह अनुराग ईश्वर के प्रति अनन्य, निष्काम व लगातार हो ऐसी अपेक्षा भक्ति में की जाती है। संसार के वस्तु व व्यक्ति से परे जब परम शक्ति के लिए तड़प होती है, व्याकुलता होती है और हम इतने भाव–विभोर हो जाते है कि हमारी आंखों में आंसू भर आते है, रोम–रोम खड़े हो जाते है तो ईश्वर के प्रति इस प्रेम भाव को ही भक्ति की संज्ञा देते है। ईश्वर के प्रति ऐसा प्रेम–भाव या गहरी भक्ति को 8वीं सदीं से 18 वीं सदी के दौरान संतों व प्रचारकों ने जन–मानस को उन्ही की भाषा में सरल शब्दों में अपने उपदेशों, प्रवचनों, गीतों व साहित्य रचनाओं के माध्यम से एक आंदोलन के रूप में तीव्रता से उपलब्ध कराया। इसीलिए इसे भक्ति आंदोलन कहा जाता है। यह दक्षिण भारत से आरंभ होकर उत्तर भारत सहित सम्पूर्ण भारत में व्याप्त हो गया। भारत का कोई भी भाग इससे अछूता नहीं रहा। विभिन्न आस्थाओं व धर्मों को लेकर जो टकराव था उसमें कमी आई और इसके स्थान पर सामाजिक सद्भावना का माहौल बना। मुस्लिम शासकों और उन पर उलेमा के प्रभाव के कारण जो कट्टरतापन देश के जनजीवन में घुटन का जहर घोल रहा था तब भक्ति आंदोलन के संतों व प्रचारकों ने सामाजिक संदेश फैलाने एवं सुधारवारी राजनीति का ज्वार पैदा करने का काम किया।

ऐतिहासिक दृष्टि से भक्ति आंदोलन के प्रथम चरण में दक्षिण भारत में वैष्णव संत अलवार और शैव संत नयनार के द्वारा इसका प्रादुर्भाव होता है। अलवार और नयनार संत जनसामान्य की भाषा तमिल मे अपने रचनाओं, उपदेशों, प्रवचनों व गीतों के द्वारा इसको फैलाते हैं। दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य में ही वीर शैव अथवा लिंगायत मत के प्रचारकों ने भक्ति आंदोलन को स्थानीय भाषा कन्नड़ में आगे बढ़ाया। यह समय लगभग 8वीं से 12वी. सदी के बीच का है।

भक्ति आंदोलन के दूसरे चरण में 12वी. या 13वीं सदी के लगभग इसे दक्षिण भारत से उत्तर भारत में लाने का श्रेय गुरू रामानंद को जाता है। उत्तरी भारत में यह आंदोलन इसी समय इस्लाम के संपर्क में आया और इसकी चुनौतियों को स्वीकार करता हुआ इससे प्रभावित, उत्तेजित और आंदोलित हुआ। भारतीय जीवन शैली में हमारे आध्यात्मिक और भौतिक कर्म के आदर्श, विचार व दर्शन का केन्द्र बिन्दु सदियों से वेद व वैदिक ग्रन्थों की मान्यता पर आधारित रहे हैं। अतः भारत में जो चिंतक–विचारक, ऋषि–मुनि और संत हुए उन पर वेद का प्रभाव स्पष्ट रूप से झलकता है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में वैदिक कर्मकांड के विरूद्ध बौद्ध व जैन धर्म

आंदोलन का रूप लिया था। लेकिन समय के साथ जैसे–जैसे बौद्ध धर्म प्राचीन होता गया वैसे–वैसे उसमें वैदिक कर्मकांड का प्रवेश होता गया और उसका प्रभाव भारत में कम होते–होते लगभग समाप्त हो गया। भक्ति आंदोलन के दौरान आठवीं–नौवीं शताब्दी में दक्षिण भारत के केरल के कलादी गांव में जन्में आदि गुरू शंकराचार्य ने बौद्धों के प्रभाव को घटाने तथा वेदों–ब्राह्मणों की महत्ता को स्थापित करने के लिए अद्वैतवाद मत की स्थापना की। अपने इस सिद्धान्त में इन्होंने एकमात्र ब्रह्म को ही सत्य माना और जगत को मिथ्या बतलाया है। आत्मा परमात्मा ही है वह इससे भिन्न या पृथक नहीं है। सांसारिक माया रूपी अविद्या के कारण मानव आत्मा–परमात्मा की अभिन्नता को पहचानने की भूल करता है। इन्होनें अपने सिद्धान्त में ज्ञान पर विशेष बल दिया और ब्रह्म के स्वरूप को निर्गुण, निर्विशेष व निराकार बतलाया। इस प्रकार ज्ञानमार्गी शंकराचार्य ने चिदानंदरूपः शिवोअहम शिवोअहम के प्रचार के द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से सगुणोपासना का विरोध किया। उनका यह सिद्धान्त लोगों की निराशा को दूर करने में असफल रहा। उनके बाद के जगतगुरूओं ने थोड़े बहुत अंतर के साथ सगुण भक्ति की प्रवृति को स्वीकार किया और शंकराचार्य के अद्वैत और ज्ञान–मार्ग का विरोध किया। इनके बाद चारों वैष्णव संप्रदायों के आचार्यो ने ब्रह्म और जीव की पूर्ण एकता को अस्वीकार किया।

अद्वैतवाद के विरोध में वैशणव संतों द्वारा जिन चार मतों की स्थापना हुई वे fuEufyf[kr g &

	er	lLFkkid	dky
1.	विशिष्टाद्वैतवाद	रामानुजाचार्य	12वी. शताब्दी
2.	द्वैतवाद	मध्वाचार्य	13वीं शताब्दी
3.	शुद्धाद्वैतवाद	विष्णुस्वामी	13वीं शताब्दी
4.	द्वैताद्वैतवाद	निम्बार्काचार्य	13वी. शताब्दी

शंकर के ज्ञानमार्ग की गूढ़ता जनसामान्य के समझ से परे था। इस परिस्थिति में वैष्णवों की सगुण भक्ति का साधारण जनता पर व्यापक प्रभाव पड़ा। इन वैष्णवों के प्रचार–प्रसार से भगवद्गीता के अवतारवाद व भगवान के साकार रूप प्रतिमा पूजन के माध्यम से ब्राह्मण व उच्च वर्ग के अधिकार कायम रहा। वहीं निम्न वर्ग को भी पूजा के अधिकार ने उनको निराश नहीं किया। इतना होने के बावजूद भी तात्कालीन सामाजिक तथा धार्मिक असमानता समाज में मौजूद रहे तथा दूसरी और इस्लाम सत्ता का भारत में आगमन ने धार्मिक आस्था के टकराव को और बढ़ा लिया।

इन विपरीत परिस्थितियों में 14वीं तथा 15वीं सदी के लगभग जनसाधारण की विश्वास और भक्ति के भीतर से एक व्यापक आंदोलन उठ खड़ा हुआ और यह देखते ही देखते सम्पूर्ण भारतवर्ष में फैल गया। भारतीय इतिहास और सांस्कृतिक जीवन में यहीं आंदोलन भक्ति आंदोलन के नाम से जाना जाता है। इस आंदोलन ने तात्कालिक समाज की आवश्यकता के अनुरूप संतों के एक ऐसे वर्ग को जन्म दिया जिन्होनें भक्ति के आधारभूत तत्वों के बीच सामंजस्य तथा सद्भाव स्थापित किया और दूसरी ओर भारतीय रहस्यवादी धारणाओं और सूफी मत की धारणाओं के बीच सामंजस्य की सृष्टि की। जिसके फलस्वरूप समाज में व्याप्त उच्च व निम्न

जातियों तथा हिन्दू व मुस्लिम के भेदभाव को समाप्त कर दिया। इनमें रामानंद, नामदेव, कबीर, नानक, दादू, रविदास, तुलसीदास चैतन्य महाप्रभु के नाम प्रमुख हैं।

वैष्णव संत आचार्य रामानुज की परंपरा में स्वामी रामनंद राम की उपासना के द्वारा जन–जन को भक्ति का नया मार्ग दिखाया। स्वामी रामानंद के शिष्यों में अलग–अलग जाति व व्यवसाय के थे जिनमें कबीर 'जुलाहा' संत रविदास 'चर्मकार', भक्त धन्ना 'जाट किसान', भक्त सेना 'नाई' व भक्त पीपा 'राजपूत' अत्यंत प्रसिद्ध थे। इस प्रकार स्वामी रामानंद ने उच्च वर्ग की श्रेष्ठता का खंडन करते हुए भक्ति का द्वार सबके लिए खोल दिया। इस प्रकार गुरू रामानंद ने भक्ति आंदोलन के अर्न्तगत नवीन विचारधारा को जन्म दिया। उसे ऊंचाई तक पहुंचाने का कार्य कबीर, नानक, दादू आदि संतों ने किया।

मध्यकालीन इतिहास में भक्ति काल के अंतर्गत निर्गुण भक्ति धारा में प्रगतिशील तथा क्रान्तिकारी विचारधारा के कबीर ने एक ओर जहां बौद्धो, सिद्धों व नाथों की साधना तथा सुधार परंपरा के साथ वैष्णव संप्रदायों की भक्ति भावना को ग्रहण किया वहां दूसरी और सामान्य गृहस्थ जीवन जीते हुए श्रम की प्रतिष्ठा को जीवन की सफलता का आधार बताया। कबीर ने निर्भयतापूर्वक तात्कालिक राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक असमानता तथा धर्म के क्षेत्र में व्याप्त बाह्य आडंबर के विरूद्ध प्रतिक्रिया व्यक्त की व सच्ची भक्ति का संदेश देते हुए कहा कि राम घट–घट व्यापी हैं इनकी प्राप्ति के लिए मन्दिर–मस्जिद की आवश्यकता नहीं है। इसे किसी भी नाम से पुकार सकते हैं। इसको प्राप्त करने में जाति–पाति तथा कुल–धर्म का कोई महत्व नहीं है। इस प्रकार वर्ण व्यवस्था पर कुठाराघात, सांप्रदायिक तत्वों के बहिष्कार और भक्ति की सादगी एवं व्यापकता के प्रचलन द्वारा कबीर ने भक्ति आंदोलन को एक नवीन दिशा प्रदान की।

निर्गुणमार्गी संतों में कबीर की तरह नानकदेव ने तात्कालिक सामाजिक, राजनीतिक व धार्मिक बुराईयों पर प्रहार किया और उसके सुधार के उपाय बताते हुए स्वयं के परिश्रम से सरल व सादा जीवन जीते हुए भक्ति का मार्ग दिखाया। इसका प्रभाव पंजाब के साथ–साथ देश के अन्य भागों पर भी पड़ा और भक्ति आंदोलन को नई दिशा मिली तथा समानता, बंधुता, ईमानदारी तथा परिश्रम के द्वारा जीविकोपार्जन पर आधारित नवीन समाज–व्यवस्था स्थापित हुई। इसी प्रकार मध्यकालीन भक्ति–आंदोलनों के विकास तथा लोकप्रियता में महाराष्ट्र के संतों–ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम आदि का महत्वपूर्ण योगदान है। इन संतों ने भक्ति आंदोलन के अन्य संतों की तरह सामान्य गृहस्थ जीवन जीते हुए भक्ति भावना पर बल दिया तथा एक भगवान की संतान होने के नाते सबकी समानता के सिद्धान्त को प्रतिष्ठित किया। इन संतों ने जनसामान्य की भाषा मराठी में अपने संदेश, उपदेश व प्रवचन का प्रचार–प्रसार किया। महाराष्ट्र के इन सन्तों के भक्तिपरक मराठी गीत जिन्हें अभंग के नाम से जानते हैं के द्वारा भक्ति–भावना एक आंदोलन के रूप में घर–घर व जन–जन तक पहुंच गया। इन अभंगों का प्रभाव आज भी वहां के समाजों में व्याप्त है। इन संतों ने समाज में व्याप्त बुराईयों का खंडन करते हुए आध्यात्मिक क्षेत्र में आचरण की शुद्धता, भक्ति की पवित्रता तथा सरसता और चरित्र की निर्मलता पर बल दिया। इस प्रकार महाराष्ट्र के इन संतों के प्रयासों के द्वारा यह भक्ति–भावना वहां आंदोलन का रूप ले लिया जिसका समारात्मक प्रमाण न केवल धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति पर बल्कि राजनीतिक उत्थान पर भी पड़ा।

इन समस्त विवरणों से स्पष्ट है कि मध्यकाल में एक प्रभावशाली, सामाजिक–सांस्कृतिक परिर्वतनकारी कारक के रूप में भक्ति आंदोलन एक अत्यन्त व्यापक आंदोलन का रूप ले लिया। इस व्यापक आंदोलन ने सम्पूर्ण देश को सांस्कृतिक एकता के सूत्र में बांधने का कार्य किया। देश के अलग–अलग भागों में निर्गुण व सगुण दोनों ही परंपरा वाले संतों ने ईश्वर के प्रति प्रेम व समर्पण की व्यापक भावना के द्वारा जन सामान्य को आंदोलित कर दिया।

दोनों ही परंपरा वाले संतों ने समन्वय पर बल देते हुए जाति–पाति, कुल–धर्म की श्रेष्ठता जैसे समस्त सामाजिक बुराईयों की निंदा की और प्रेम व समर्पण युक्त भक्ति भावना पर बल दिया। निर्गुण संतों, कबीर, नानक, दादू, रविदास आदि ने प्रभु की भक्ति निराकार रूप में करने पर बल दिया, जबकि बल्लभ, तुलसी, सूर, मीरा, चैतन्य आदि ने राम या कृष्ण की पूजा सगुण रूप में करने पर बल दिया। निर्गुण संतों में कबीर व नानक के क्रांतिकारी विचारों ने ईश्वर की एकता के बल पर हिंदूओं और मुसलमानों के बीच समानता का प्रतिपादन करते हुए पारस्परिक विरोध को कम करने का प्रयास किया।

सगुण संतों में राजस्थान में जन्मी मीराबाई का विशिष्ट स्थान है। मीराबाई ने निंदा व प्रहार की प्रवृति को परिष्कृत करते हुए अपने पदावली के माध्यम से सरल गीतों द्वारा भक्ति–भावना की जो लहर पैदा की उसमें सभी जाति–धर्मो के लोग द्वेष भाव को छोड़कर रम गए और इसका राजनीति पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

जन–जन में लोकप्रिय सगुण परंपरा के विख्यात संत तुलसीदास ने पूर्ण समर्पण की भावना के माध्यम से अपने प्रसिद्ध ग्रंथ रामचरितमानस के द्वारा एक ओर जहां विभिन्न परंपराओं के बीच समन्वय स्थापित करने पर बल दिया तो दूसरी ओर भक्ति के लिए जाति–पाति, कुल–धर्म, सम्मान श्रेष्ठता को कोई महत्व नही दिया तथा लोकमंगल की भावना को प्रतिष्ठित किया। यही कारण है कि आज भी तुलसी की रामचरितमानस जन–जन में लोकप्रिय है और रामायण के नाम से प्रसिद्ध है।

इस प्रकार उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि भक्ति आन्दोलन मध्यकालीन भारत में एक परिर्वतन का आन्दोलन था। इसका स्वरूप सरल एवं पवित्र था। ईश्वर के प्रति सच्चे हृदय से भक्ति ही इसका मुख्य आधार था। इस आन्दोलन ने मूर्तिपूजा बहुदेववाद आदि का विरोध किया तथा ईश्वर की एकता के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। इस आन्दोलन ने ऊंच–नीच, छुआ–छूत की भावना का त्याग कर समानता के भाव का प्रतिपादन किया।

7-3-2- /kkfe:d vkLFkk dk Lo:Ik **(Nature of Religious belief or faith)**

%& प्राचीन भारत के इतिहास में ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर धार्मिक आस्था पर आधारित भक्ति भावना के अंकुर सिंधु सभ्यता में उपलब्ध हो जाते है। सिंधु सभ्यता के प्राप्त अवशेषों से पता चलता है कि उस युग के लोग मूर्तिपूजक थे। वैदिक युग के आर्य विविध प्राकृतिक शक्तियों की पूजा करते थे। पौराणिक युग से लेकर गुप्त काल तक समाज में व्याप्त भिन्न–भिन्न परम्पराओं पर आधारित धार्मिक आस्था के कारण भक्ति भावना का अलग–अलग स्वरूप सामने आने लगा। महान धर्म सुधारक शंकराचार्य ने तर्क और बुद्धि के आधार पर हिन्दू अद्वैतवाद की श्रेष्ठता स्थापित की और बौद्ध धर्म का विरोध किया। इन्होनें ज्ञान मार्ग को प्राथमिकता दी। ज्ञानमार्गी शंकराचार्य से अलग अन्य आचार्यो ने

जिनमें विशिष्टाद्वैतवारी रामानुज, द्वैतवादी मध्वाचार्य व द्वैताद्वैतवादी निम्बार्काचार्य प्रसिद्ध हैं आदि ने थोड़े बहुत अंतर के साथ अद्वैतवाद का खण्डन करते हुए सगुण आस्था पर आधारित भक्ति पर बल दिया। इसी समय मध्यकालीन भारत में इस्लाम का प्रवेश हुआ और मुस्लिम सत्ता की स्थापना हुई जो भारतीय धर्म और संस्कृति के बहुत से मूल्यों और मान्याताओं क लिये बड़ी चुनौती साबित हुआ। तमाम चुनौतियों के बावजूद समकालीन साहित्य एवं मूर्तिकला से इसके स्पष्ट उदाहरण मिलते है कि 8वीं से 18वीं शताब्दी के दौरान भारत में विष्णु, शिव एवं देवी उपासना की परंपरा न केवल जारी रही अपितु इसका अधिक विकास भी हुआ। भक्ति आन्दोलन के संतों व सुधारकों के कारण यह काल विभिन्न धार्मिक आस्था व पूजा प्रणालियों के समन्वय एवं भेद तथा संघर्ष के लिए भी जाना जाता है।

budk lf{kIr o.ku ge fuEufyf[kr :Ik e: dj ldr: g%&

1- /kkfe:d vkLFkk vk/kkfjr i:tk i:.kkfy;k: dk leUo; %& इस काल में भी पौराणिक ग्रंथों की रचना, संकलन तथा परिरक्षण द्वारा गुप्तकाल से चली आ रही ब्राह्मणीय विचारधारा का प्रचार–प्रसार जोरों पर था। इन ग्रंथों का संकलन अब सरल संस्कृत छंदों में किया जाने लगा था। युगीन परिस्थितियों के अनुरूप इन्हे सर्वसुलभ बनाने की परंपरा पर बल दिया जा रहा था। अब इन्हें उन स्त्रियों एवं शुद्रों द्वारा भी पढ़ा जा सकता था जिन्हे वैदिक विद्या से दूर रखा गया था। इस प्रकार एक तरफ वर्ण व्यवस्था की श्रेष्ठता से परे धार्मिक आस्था व विश्वास में ब्राह्मण वर्ग ने ज्ञान व भक्ति को महत्व दिया जो कहीं भी किसी में प्रकट हो सकता है। वहीं दूसरी और ब्राह्मण व अन्य उच्च वर्गो के द्वारा स्त्रियों, शुद्रों एवं अन्य सामाजिक वर्गो के विश्वासों एवं प्रथाओं को स्वीकार किया जाना एवं उसे एक नया समाजोपयोगी रूप प्रदान करना। सम्पूर्ण भक्ति आंदोलन इस प्रकार के उदाहरणों से भरे पड़े हैं गुरू रामानंद के शिष्य अलग–अलग जाति एवं अलग–अलग व्यवसाय से हुये। इनकी परंपरा को बिना भेदभाव के समाज के सभी वर्गो में अपनाया गया। दक्षिण भारत में अलवार वैष्णव संत थे तो नयनार शैव संत थे। एक ही स्थान पर एक ही भाषा में जनसामान्य ने दोनों परंपराओं के विश्वासों का स्वागत किया।

   उधर मुस्लिम धर्म में एक नवीन मत सूफी मत प्रचलन में आया जिसने हिन्दूओं के गुरू शिष्य परंपरा पर आधारित आस्था व विश्वास को अपनाया, योग साधना व ईश्वर की भक्ति के लिए संगीत को अपनाया। इन सभी प्रवृतियों ने इस काल में हिन्दू समाज में विभिन्न विश्वासों के बीच व हिन्दू व मुस्लमानों के मध्य समन्वय को जन्म दिया। जिसे 20वीं शताब्दी के समाजशास्त्री राबर्ट रेडफील्ड ने महान् पंरपरा की संज्ञा दी है।

   इस प्रकार हिन्दू समाज में सभी वर्गो के बीच विष्णु, शिव व देवी की उपासना का प्रचलन रहा।

2- /kkfe:d vkLFkk d: Lo:Ik e: Hkn **एवं संघर्श** :– इस काल में देवी की आराधना तांत्रिक पूजा के रूप में भारत के कई भागों में प्रचलित थी। इसमें स्त्री एवं पुरूष दोनों ही सम्मिलित हो सकते थे। तांत्रिक पद्वति के इस विचार से शैव व बौद्ध मत भी प्रभावित थे। भारतीय समाज में अलग–अलग परंपरा व मान्यताओं के बीच तां्रिक पूजा कुछ भेद के साथ प्रचलित थे। आज भी यह मत पूर्वी, उत्तरी एवं दक्षिणी हिस्सों में स्पष्टतः देखा जा सकता है। इन सभी विश्वासों का वर्गीकरण हिन्दू के रूप में ही किया गया है। इस काल में कर्मकांडों के संदर्भ में वर्ग एवं वर्ण के

भेद की अवहेलना की जाती थी। वैदिक काल के प्रसिद्ध देवताओं इंद्र अग्नि एवं सोम का महत्व हमें इस काल में देखने को नहीं मिलता है। इसके बावजूद वैदिक कला के विष्णु, शिव एवं देवी की पूजा का प्रचलन इस काल में भी जारी रहा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि साधना पद्धति की भिन्नता के कारण कभी–कभी वैदिक परंपरा के प्रशंसक तथा इसके विपरीत तांत्रिक साधना वालो के बीच संघर्ष की स्थिति बन जाती थी। इसके अतिरिक्त ईश्वर की भक्ति–भावना में तल्लीन कुछ विष्णु को तो कुछ शिव को सर्वोच्च मानते थे। अन्य परंपराओं में बौद्ध अथवा जैन के संबंध भी कभी–कभी विचारधारा भेद के कारण तनावपूर्ण हो जाते थे। इसके बावजूद स्पष्ट संघर्ष के उदाहरण न के बराबर थे।

इस काल में भक्ति गीतों के माध्यम से मंदिरों में देवी–देवताओं की उपासना से लेकर उपासकों का प्रेम–भाव में तल्लीन हो जाना दिखाई पड़ता है।

7-3-3 HkfDr vkanksyu % ijaijk,a **(bhakti Movement : Traditions)**

%& जीवन के परम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भक्ति, ज्ञान, कर्म, धर्म आदि के आचार्यो या गुरूओं के द्वारा अपने अनुयायियों के लिए साधना का जो सैद्धांतिक व व्यावहारिक तौर–तरीका आस्था, विश्वास व मान्यता के रूप में प्रचलन में आ जाता है उसे परंपरा के नाम से जानते है। भक्ति आंदोलन के दौरान मध्यकालीन भारतीय इतिहास में ऐसे कई परंपराएं प्रचलन में रही। प्रांरभिक भक्ति पंरपराओं का उदय दक्षिण भारत में अलवारों एवं नयनारों की परंपराओं के द्वारा हुआ ftldk fooj.k fuEufyf[kr gS %&

¼1½ vyokj ijaijk %& अलवार संतों ने दक्षिण भारत में वैष्णव मत को लोकप्रिय बनाया। अलवार संतों में विष्णु भक्त के रूप में 12 संत बहुत प्रसिद्ध थे। इसमें दक्षिण भारत की मीरा के रूप में प्रसिद्ध स्त्री संत अंडाल भी एक प्रसिद्ध संत थी। इन संतों ने अपनी शिक्षाओं का प्रचार लोगों की जनभाषा तमिल में किया। दसवीं शताब्दी तक अलवार संतों की रचनाओं का एक काव्य संकलन तमिल भाषा में नलयिरादिव्यप्रबंधम नामक भक्तिगीत रचना में किया गया। इसमें चार हजार भक्ति गीत दिए गए है। अलवार पंरपरा की यह भक्ति रचना तमिल वेद के रूप में आज भी लोकप्रिय है। इन संतों ने बिना किसी भेद–भाव के स्त्री–पुरूष सब को सादा जीवन जीने की प्रेरणा देते हुए मोक्ष प्राप्ति के लिए भक्ति गीतों के माध्यम से भजन कीर्तन द्वारा भक्ति का सरल मार्ग बताया। उनका कथन था कि कोई भी व्यक्ति अपने कर्मो के आधार पर छोटा अथवा बड़ा बनता हे। अलवार संतों ने वैष्णव मंदिरों के द्वार सभी जातियों के लिए खोल दिए। इन संतों ने ब्राह्मणों की प्रभुता व श्रेष्ठता को नकारते हुए सभी जातियों के लोगों को एक समान समझने की शिक्षा दी। अलवार संतो ंके इस क्रान्तिकारी कदम का समाज के हर वर्ग पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। इन संतो ंके प्रभाव में आकर अनेक पल्लव तथा चालुक्य शासकों ने वैष्णव मत को ग्रहण किया। उन्होनें अनेक विशाल मंदिरों एवं भव्य मूर्तियों का निर्माण करवाया। इनमें पल्लव शासक सिंह विष्णु द्वारा महाबलीपुरम में बनाया गया आदिवराह मंदिर, नरसिंहवर्मन द्वितीय द्वारा कांची में बनाया गया बैकुंठ पेरूमल मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है। चालुक्य शासकों ने वादामी में अनेक विष्णु मंदिरों का निर्माण करवाया।

¼2½ u;ukj ijaijk %& नयनार संतों ने दक्षिण भारत में शैव मत को लोकप्रिय बनाया। शैव भक्त नयनार संतों की कुल संख्या 63 बताई गई है। इनमें से अप्पार, संबंदर तथा सुंदरार के नाम प्रसिद्ध है। इन संतो ंके भक्ति गीतों को दसवीं शताब्दी में तमिल ग्रंथ 'तवरम्' में संकलित किया गया है। अनके भक्ति गीतों की रचना करने वाली कराईक्काल अम्मइयार नामक स्त्री संत नयनार संतों में बहुत प्रसिद्ध थीं। ये सभी संत शिव को सर्वोच्च मानते थे। इन सभी संतों ने अपनी शिक्षाओं का प्रचार जनसामान्य की भाषा तमिल में किया। इन्होनें अपने भक्ति गीतों के माध्यम से शिव की उपासना द्वारा भवसागर से पार उतरने का सरल मार्ग लोगों को बतलाया। वेदों के समान पवित्र तमिल ग्रंथ 'आगम' में नयनार संतो ंके भक्ति गीत संकलित किये गये है। शिव देवता को समर्पित ये गीत आज भी दक्षिण भारत में लोकप्रिय है। इन संतों ने समाज में व्याप्त स्त्री व पुरूष असमानता वर्णो की श्रेष्ठता, दोषपूर्ण जाति प्रथा, बाल–विवाह जैसी बुराईयों का विरोध किया और इसके स्थान पर सबों के समानता, सामाजिक सद्भाव, विधवा विवाह, अहिंसा में विश्वास जैसे सामाजिक गुणों को बढ़ावा दिया। किसी भी जाति के लोग बिना किसी भेदभाव के शैव मत में आ सकते थे। इन संतों के प्रभाव में आकर दक्षिण भारत के चोल एवं राष्ट्रकूट शासकों ने शैव मत को अपनाया। चोल काल में कांस्य से बनी शिव की मूर्ती जिसे नटराज के नाम से जाना जाता है आज भी सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध है। नयनार संतों को दक्षिण भारत के समाज में काफी सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त थी। अतः ये शासक सामाजिक लोकप्रियता पाने के उद्देश्य से शैव मत को अपने राज्य में बढ़ावा दिया। इस उद्देश्य से उन्होनें चिदंबरम, तंजावुर तथा गंगैकोण्डचोलपुरम में विशाल शिव मंदिरों का निर्माण करवाया। चोल शासक परांतक ने नयनार संतों के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते हुए प्रसिद्ध नयनार संतों अप्पार, संबंदर एवं सुंदरार की धातु प्रतिमाएं चिंदबरम के नटराज मंदिर में स्थापित की। राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम ने एलौरा (महाराष्ट्र) में एक ही चट्टान को काटकर विशाल कैलाश मंदिर का निर्माण करवाया था। इन शासकों ने मंदिरों के निर्माण व इसके रख–रखाव के लिए भूमि अनुदान दिए।

(3) कर्नाटक की वीरशैव परंपरा :– 12वीं शताब्दी में भगवान शिव के लिंग रूप के उपासक बासवन्ना ने कर्नाटक में वीर शैव परंपरा को लोकप्रिय बनाया जो लिंगायत के नाम से आज भी कर्नाटक में लोकप्रिय है। स्वयं ब्राह्मण होते हुए भी उन्होंने ब्राह्मण की श्रेष्ठता को अस्वीकार किया और सामाजिक बुराईयों जाति–प्रथा, स्त्री–पुरूष भेदभाव, बाल–विवाह, झूठ, चोरी, नशीले पदार्थो का सेवन निम्न जातियों का शोषण आदि का विरोध किया तथा स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह, सामाजिक सद्भावना, कर्म की श्रेष्ठता का प्रचार किया। इस प्रकार वासवन्ना ने अपने विचारों द्वारा सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में एक नवीन परिवर्तन ला दी थी। वासवन्ना ने पूर्व के अलवार व नयनार संतों की भांति अपने विचारों का प्रचार जनसामान्य की भाषा कन्नड़ में किया। उनके द्वारा रचे गए पदों को 'वचन' कहा जाता है जो आज भी कर्नाटक के लिंगायत समुदाय में बहुत लोकप्रिय है।

(4) आठवीं–नौवीं भाताब्दी :– 8वीं–7वीं शताब्दी में दक्षिण भारत के केरल में जन्में आदि गुरू शंकराचार्य ने अपने अद्वैतवाद मत के द्वारा ब्रह्म और जीव की अभिन्नता पर बल देते हुए ज्ञानमार्ग की परंपरा को बढ़ावा दिया। इन्होंने ब्रह्म के निर्गुण, निविशेष, निराकार स्वरूप की पंरपरा को अपने ज्ञान व उपदेश का मुख्य हिस्सा बनाया। इसके बावजूद इन्होंने भारत के चारों कोनों में भगवान शिव की मूर्ति की स्थापना की जो आज भी सम्पूर्ण भारत के हिन्दू समाज में अत्यंत लोकप्रिय है। इनके

बाद के आचार्यो ने थोड़े बहुत अंतर के साथ वैष्णव मत के प्रचार–प्रसार के साथ जनसामान्य के लिए सरल भगवान के सगुण रूप की भक्ति परंपरा को बढ़ावा दिया।

¼5½ jkekikLkd x|: jkekuun dh ijijk ¼& दक्षिण भारत से भक्ति आंदोलन को उत्तर भारत में लाने वाले व यहां के समाज में इसे लोकप्रिय बनाने वाले गुरू रामानंद ने बिना किसी भेदभाव के भक्ति का मार्ग सबके लिए खोल दिया। इनके शिष्यों में अलग–अलग जाति व व्यवसाय ही नही बल्कि भगवान के साकार व निराकार स्वरूप को मानने वाले भी शामिल थे। इस प्रकार गुरू रामानंद ने समन्व के द्वारा सर्वथा एक नवीन व क्रांतिकारी परंपरा को जन्म दिया।

¼6½ fuxq.kkikl d ijijk ¼& भक्तिकालीन निर्गुण परंपरा में कबीर, नानक, दादू, रविदास आदि बहुत प्रसिद्ध हुए। इन संतों ने भगवान को घर–घर का वासी बताया और इसे कोई भी सरल, शुद्ध जीवन के द्वारा कहीं भी प्राप्त कर सकता है। इन संतों ने तमाम सामाजिक बुराईयों पर प्रहार करते हुए सामाजिक सद्भावना व समन्वय के द्वारा जनसामान्य की भाषा में उपदेश देते हुए भक्ति आंदोलन को शिखर पर पहुंचा दिया।

¼7½ lxq.kkikl d ijijk ¼& भक्तिकालीन सगुण परंपरा में चेतन्य, बल्लभ, सूर, तुलसी, मीरा, नरसी मेहता, नामदेव, ज्ञानेश्वर, तुकाराम आदि प्रसिद्ध हुए। इन्होंने भगवान के साकार रूप प्रतिमा पूजन व भजन कीर्तन, नृत्य के द्वारा अत्यंत सरल तरीके से जो किसी को भी समझ में आ जाये के द्वारा भक्ति के लिए प्रेरित किया। प्रसिद्ध संत तुलसी ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'रामचरितमानस' द्वारा सगुण–निर्गुण व शैव–वैश्णव मतों के बीच समन्वय स्थापित किया। यही कारण है कि तुलसी का रामचरितमानस आज भी समाज के हर वर्ग, धर्म व भक्ति की हर परंपरा के बीच लोकप्रिय है।

7-3-4 ¼& HkfDr vkUnksyu ds mn; ds dkj.k **(Causes of origin of Bhakti-Movement)** ¼&

iwHkkoh lkekftd o lkaLd`frd dkjd ds :Ik esa HkfDr vkanksyu e/;dkyhu Hkkjrh; bfrgkl dh ,d

ØkfUrdkjh ?kVuk FkhA ;g vkanksyu dbZ dkj.kksa dk ifj.kke Fkk tks bl izdkj gS &

¼1½ lkekftd dkj.k **(Social Cause)** ¼& भारत में इस्लाम के आगमन के साथ निरंकुश मुस्लिम शासक ने हिन्दूओं को राजनीतिक, धार्मिक एवं सामाजिक प्रत्येक सुविधाओं से वंचित कर दिया। हिन्दुओं के साथ बदसलूकी का व्यवहार किया जाता और वे अपने ही देश में विदेशी बनकर रह गये। इधर समाज में जातीय कट्टरता व ऊँच–नीच की भावना ने निम्न वर्ग की स्थिति को और अधिक दयनीय बना दिया था। उनके लिए मन्दिर, शिक्षा, ऊँचें पद, सम्मान सभी की प्राप्ति के मार्ग बन्द थे। ऐसे में ये निराश हिन्दू जनता ने सही मार्ग खोजने के लिए सर्वशक्तिमान ईश्वर व इनके प्रति भक्ति भावना जगाने वाले तथा समाज सुधारक आचार्य गुरू की शरण लेना ही उचित समझा तथा भक्ति को इसका माध्यम बनाया जिसने सम्पूर्ण समाज को परिवर्तन के लिए आंदोलित कर दिया जिसे भक्ति आंदोलन के नाम से जाना जाता है।

¼2½ /kkfeZd dkj.k **(Religious Cause)** %& भक्ति आंदोलन के उदय के धार्मिक कारण में एक ओर जहां हिन्दू धर्म की जटिलता था वहीं दूसरी ओर मुस्लिम आक्रमणकारियों का हिन्दू जनता पर अत्याचार था। हिन्दू धर्म मे बाह्य आडम्बर ब्राह्मणों की श्रेष्ठता, निरर्थक कर्मकाण्ड से गरीब जनता पिस रही थी ऐसे में उन्हें एक परिवर्तन की आवश्यकता महसूस हुई जो सरल, स्वाभाविक और सद्भावना को बढ़ाने वाला हो और ऐसी परिस्थिति में प्रेम मिश्रित भक्ति आंदोलन को प्रोत्साहन मिला। कट्टर मुस्लिम शासकों ने अनेक मन्दिरों एवं देव मूर्तियों को नष्ट कर दिया। जिससे हिन्दूओं की आस्था व विश्वास को चोट पहुंची। इस भावना के विरूद्ध भक्ति आंदोलन को बल मिला।

¼3½ bLyke /keZ ls [krjk **(Danger from Islam)** %& शासक वर्ग से संबन्धित मुस्लमान हिन्दूओं को बलपूर्वक मुस्लमान बनाना आरंभ कर दिया था। तो दूसरी ओर हिन्दू समाज के निम्न जाति अपने ही समाज के लोगों से घृणा का शिकार होकर इस्लाम को स्वीकार करने लगे थे। इससे हिन्दू धर्म के अस्तित्व को एक बहुत बड़ा खतरा उत्पन्न हो गया था। इस खतरे के विरूद्ध तथा हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए भक्ति आंदोलन आरंभ हुआ।

¼4½ lwQh er dk izHkko **(Impact of Sufism)** %& सूफी मत ने भक्ति आंदोलन की उत्पत्ति में बहुत सहयोग दिया। उनके सूफी संतों ने उदारता तथा प्रेम के साथ एकेश्वरवादी इस्लाम का प्रचार किया तो हिन्दूओं पर इसका बहुत प्रभाव पड़ा। ये सूफी संत उदारता, सहिष्णुता तथा प्रेम से अपने धर्म का प्रचार करते थे। अतः हिन्दूओं में अपने धर्म में बाह्य आडम्बरों तथा निरर्थक कर्मकाण्डों को दूर करने की इच्छा बलवती हुई जिसने भक्ति आंदोलन को प्रोत्साहित किया।

¼5½ egku lq/kkjdksa dk tUe **(Birth of Great Reformers)** :— मध्य काल में भारत के अलग—अगल प्रदेशों में कई महान् सुधारकों ने जन्म लिया। इनमें रामानुज, रामानंद, आचार्य शंकर, चैतन्य महाप्रभु, नामदेव, शंकर देव, तुलसी, कबीर, नानक, रविदास, दादू दयाल आदि के नाम विशेष रूप से प्रसिद्ध है। उन्होनें हिन्दू धर्म में प्रचलित बुराईयों का डटकर विरोध किया तथा लोगों को सामाजिक सद्भावना व प्रेम आधारित एक नया मार्ग दिखलाया। जिससे इन महान् सुधारकों के प्रयास के फलस्वरूप भक्ति आंदोलन का उदय हुआ।

7-3-5 भक्ति आंदोलन की महत्वपूर्ण विशेशताएं (Important Chacteristics of Bhakti Movement):-

(1) एक परम सत्ता अर्थात् ईश्वर में विश्वास (Faith in one God) %& भक्ति आंदोलन के सभी संतों, प्रचारकों व सुधारकों ने एक परमात्मा की भक्ति पर बल दिया। सर्वव्यापक व सर्वशक्तिमान् परमात्मा ही संसार का रचियता, इसका पालकर्त्ता व संहारकर्त्ता है। इस परमात्मा की तुलना किसी अन्य देवी देवताओं से नहीं की जा सकती है। इसे हम किसी भी नाम से राम, कृष्ण, अल्लाह, खुदा आदि से पुकार सकते है। इसलिए भक्ति आंदोलन के संतों ने बहुत से देवी—देवताओं के चक्कर से परे एक ही ईश्वर की प्रेम भावना के साथ भक्ति पर बल दिया।

(2) गुरू सत्ता में वि□वास (Faith in Guru) :– आदिगुरू शंकराचार्य, रामानुज, रामानंद, तुलसी, कबीर, गुरू नानक देव जी, नामदेव आदि सभी संतों ने एक मत से स्वीकार किया कि गुरू के द्वारा बताये साधना पथ पर चलकर ही हम भक्ति के द्वारा ईश्वर को प्राप्त कर सकते हैं। प्रभु की कृपा से प्राप्त सच्चा गुरू ही हमें अंधकार रूपी भवसागर से पार उतारता है। यह गुरू दिखता तो सामान्य व्यक्ति की ही तरह परंतु वास्तव में उसके अंदर प्रभु की सत्ता ही सब कार्य करती है।

¼3½ vkRe&leil.k **(Self –Surrender)** :– भक्ति के मार्ग पर चलने के लिए व्यक्ति को पंच विकार काम, क्रोध, लोह, मोह तथा अंहकार को छोड़कर हरि व गुरू के प्रति मन व बुद्धि का समर्पण करना पड़ता है। मन–बुद्धि सदैव हरि–गुरू में ही रहे और संसार में हम अपना केवल कर्तव्य निभायें। भक्ति आंदोलन के संतों ने इसे ही आत्म–समर्पण बतलाया है। इस प्रकार के आत्म–समर्पण से ही हम उसकी कृपा से उसकी भक्ति को प्राप्त कर सकते है।

¼4½ lknk&lPpk thou ij cy **(Stress on pure life)** :– भक्ति आंदोलन के प्रचारकों ने ईमानदारी से परिश्रमपूर्वक अर्जित धन से गृहस्थ जीवन जीते हुए दया व प्रेम की भावना से भरकर ईश्वर की भक्ति करने पर बल दिया। उन्होंने सत्य बोलने, निर्धनों व दुःखियों की सहायता करने, व्यावहारिक जीवन में पवित्रता पर आधारित गृहस्थ आश्रम को सर्वोत्तम बताया। वे सामाजिक कर्त्तव्य के पालन को मोक्ष प्राप्ति का साधन मानते थे।

¼5½ fgUnvk vkj eLyekuk d leUo; ij cy **(Attempts to synthesise Hinduism and Islam)** :– मुस्लमानों द्वारा हिन्दूओं को बलपूर्वक मुस्लमान बनाए जाने के कारण दोनों एक दूसरे को घृणा की दृष्टि से देखते थे। इन दोनों धर्मों के परस्पर मतभेदों को दूर करने के लिए कबीर और गुरू नानक देव जी ने उन सभी विचारों का जोरदार शब्दों में खण्डन किया जो हिन्दूओं और मुस्लमानों में परस्पर भेद की भावना को उत्साहित करते थे। उन्होंने राम और रहीम को एक ही परमात्मा के दो नाम बताया। उन्होंने बताया कि हिन्दू और मुस्लमान दोनों ही एक ही परमात्मा की रचना है।

(6) जाति–प्रथा में अवि□वास (Disbelief in caste system) :– हिन्दू समाज में जाति–प्रथा की बुराई के कारण निम्न जातियों के साथ बडा दुर्व्यवहार किया जाता था। भक्ति आंदोलन के संत प्रचारकों ने इसका जोरदार शब्दों में खंडन किया तथा बताया कि प्रत्येक मनुष्य में एक ही परमात्मा का प्रकाश विद्यमान है। इसलिए सभी मनुष्य समान हैं। मनुष्य को मुक्ति उसके कर्मो के अनुसार मिलेगी न कि जाति के अनुसार। गुरू रामानंद जी का कहना थ ^^ tkfr&ikfr iN ufg dk; gfj dk Hkt lk gfj dk gk;A **

गुरू नानक देव जी ने जाति–प्रथा को समाप्त करने के उद्देश्य से लंगर प्रथा को आरंभ किया। इसमें सभी जातियों के लोग एक साथ मिलकर लंगर पकाते और खाते थे।

(7) जन–सामान्य की भाशा में प्रचार (Preaching in the Language of the People) :– भक्ति आंदोलन के संतों प्रचारकों ने जन–सामान्य की भाषा में अपना प्रचार किया।

उन्होंने यह बतलाया कि हम परमात्मा की भक्ति किसी भी भाषा में कर सकते हैं। वे केवल संस्कृत भाषा की पवित्रता में विश्वास नहीं रखते थे। उन्होंने अपने उपदेशों के लिए तमिल, हिन्दी, पंजाबी, मराठी, बंगाली, गुजराती, राजस्थानी इत्यादि प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग किया। यही कारण है कि यह आंदोलन जन–सामान्य के बीच बड़ी तेजी से लोकप्रिय हुआ।

(8) मूर्ति–पूजा में अवि□वास (Disbelief in Idol Worship) :– भक्ति आंदोलन के प्रचारकों ने मूर्ति–पूजा का जोरदार शब्दों में खण्डन किया। कबीर व गुरू नानक देव जी ने लोगों को केवल मूर्ति पूजा जैसे बाह्य साधन को ही भक्ति मानने के अंधविश्वास से बचाने के लिए और वास्तविक भक्ति का ज्ञान कराने के लिए मूर्ति–पूजा का खण्डन किया। वस्तुतः उनका उद्देश्य मूर्ति के पीछे कण–कण में व्याप्त परम सत्ता की उपस्थिति से लोगों को अवगत कराना था।

¼9) खोखले रीति–रिवाजों में अवि□वास (Disbelief in Empty Rituals) :– भक्ति आंदोलन के संतों ने जन–सामान्य को अपने उपदेशों प्रवचनों, शिक्षाओं व भक्ति–गीतों के द्वारा मन व बृद्धि के समर्पण युक्त ईश्वर की भक्ति पाने के लिए समस्त बाह्य आडंबरों को छोड़कर आंतरिक पवित्रता वाले जीवन जीने पर बल दिया। समाज में व्याप्त निरर्थक रीति–रिवाजों को उन्होंने सिरे से खारिज कर दिया। सच्चे और सरल मन वाले को ही परमात्मा प्राप्त होते है।

7-4-1- HkfDr vkanksyu dk iHkko ,oa egRo (Impact and importance of Bhakti Movement) :– भक्ति आंदोलन मध्यकालीन भारतीय इतिहास की एक युग परिवर्तनकारी घटना है। भक्ति आंदोलन ने सम्पूर्ण भारत को सामाजिक व सांस्कृतिक उत्थान सहित जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया तथा इसका प्रभाव सदियों तक कायम रहा।

blds fuEufyf[kr iHkko iM+s %& (1) भक्ति आंदोलन ने हिन्दू धर्म में व्याप्त कमियों को दूर करने में महत्वपूर्ण भमिका निभाई। इसने हिन्दू धर्म की कठोरता, विषमता, जटिलता और कर्मकाण्ड के महत्व को कम कर दिया।

(2) इस आन्दोलन ने लोगों को जाति–पाति के बंधन से ऊपर उठकर सोचने के लिए अवसर प्रदान किया। इससे मोक्ष प्राप्ति में, भक्ति में सभी सम्प्रदाय, ऊँच–नीच सभी जाति को समान हकदार माना।

(3) मुस्लमान भी इस आंदोलन से प्रभावित हुये। उनकी कट्टरता मे कमी आई। वे अब हिन्दू धर्म के सिद्धांतों का सम्मान एवं आदर करने लगे। अनेक मुस्लमान कवियों ने राम एवं कृष्ण की भक्ति कविता की रचना की।

(4) हिन्दू और इस्लाम के समन्वय को बल मिला। भारत में ऐसे पन्थ भी निकले जिनमें हिन्दू और मुस्लमान दोनों ही थे, जैसे सत्यपीर, नारायणी, सतनामी आदि। ये पन्थ हिन्दू और मुस्लमानों में कोई भेदभाव नहीं मानते थे।

(5) हिन्दूओं ने उदारतापूर्वक मुस्लमान के पीरों और कब्रों की पूजा आरंभ की जिसका प्रभाव आज भी देखने को मिलता है।

(6) इसका प्रभाव राजनीति व शासन पर भी पड़ा। मुस्लमान शासकों ने हिन्दूओं को ऊँचे पदों पर नियुक्त करना आरम्भ किया दूसरी ओर हिन्दू शासक भी मुस्लमान को अपने राज्य में महत्वपूर्ण पद पर नियुक्त करने लगे।

(7) हिन्दू और मुस्लमानों का यह सम्मिश्रण धर्म और समाज व राजनीति तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि कलां, संगीत और वास्तुकला पर भी इसका प्रभाव पड़ा।

इस प्रकार उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि भक्ति आंदोलन मध्यकालीन भारत की एक महत्वपूर्ण घटना थी। इस आंदोलन का सामाजिक–सांस्कृतिक उत्थान सहित हर क्षेत्र में अत्यधिक महत्व रहा। इस आन्दोलन ने हिन्दू समाज में एक प्रकार से नये प्राणों का संचार किया तथा उनमें आत्म विश्वास की भावना उत्पन्न की। इससे जनसाधारण का नैतिक स्तर ऊँचा उठा और लोगों में व्याप्त अंधविश्वास की भावना दूर होने लगी। हिन्दू धर्म में आई जटिलताओं को कम करते हुए सभी सन्तों ने जाति–पाति, वर्ग–भेद और ऊँच–नीच की भावनाओं का खण्डन करते हुये सामाजिक सामानता पर विशेष बल दिया। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि समूचे देश पर इस आंदोलन का व्यापक प्रभाव पड़ा और यह प्रभाव शताब्दियों तक कायम रहा। भक्ति आंदोलन ने समूचे देश में एक नये वातावरण का सृजन किया। भक्ति आंदोलन ने सामाजिक कुरीतियों का नाश कर समाज को संगठित और दृढ़ बनाया। इस आंदोलन ने हिन्दू और मुस्लमानों में आपसी एकता, सद्भावना एवं मैत्री को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। जिससे राजनीतिक जागरण का भी मार्ग प्रशस्त हुआ।

7-4-2 lwQh vkanksyu **(Sufi Movement)** % vo/kkj.kkRed le> **(Conceptual Understanding)** %&

इस्लाम धर्म और समाज को परिवर्तित परिस्थितियों के अनुकूल बनाने के लिये मध्यकालीन भारत में सूफी मत एक प्रभावशाली आंदोलन के रूप में उभरा। यद्यपि सूफी मत इस्लाम से ही संबन्धित था किन्तु यह इस्लाम में आई कट्टरता के विरूद्ध था। सूफी चिंतक इस्लाम का अनुसरण करते थे परन्तु वे कर्मकाण्ड का विरोध करते थे। उस समय मुस्लिम शासकों पर उलेमा (मुस्लिम धर्मनेता) का प्रभाव अधिक था। उलेमा वर्ग में लोगों के कट्टरपंथी दृष्टिकोण की प्रधानता थी। सल्तनतकालीन सुल्तान सुन्नी मुस्लमान होने के कारण सुन्नी धर्मनेताओं के आदेशों का पालन करते थे और साथ ही शिया सम्प्रदाय के लोगों को महत्व नहीं देते थे। सूफियों ने इनकी प्रधानता को चुनौती दी तथा उलेमाओं के महत्व को नकारा। उन्होंने रूढिवादी विचारधारा, निरर्थक, कर्मकाण्ड, आडम्बर एवं कट्टरपंथ के स्थान पर सामाजिक सद्भावना, समन्वय, प्रेम, उदारवाद एवं गहन भक्ति के आदर्श द्वारा जन सामान्य को सुधार के लिए प्रेरित किया। फलस्वरूप यह एक आंदोलन का रूप ले लिया जिसका व्यापक प्रभाव इस्लाम धर्म के साथ–साथ हिन्दू समाज पर भी पड़ा।

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में इस्लाम के रहस्यवाद के रूप में इसी आंदोलन को सूफी आंदोलन के नाम से जाना जाता है। भक्ति आंदोलन के संतों की तरह सूफियों ने मुक्ति की प्राप्ति के लिए एक परमात्मा की प्रेमपूर्ण भक्ति पर बल दिया। उन्होंने पैंगबर मुहम्मद को इंसान–ए–कामिल (Perfect human being) बताया तथा उनकी पवित्र शिक्षाओं पर चलने की अपील की।

सूफी शब्द के अर्थ एवं उत्पत्ति के विषय में अलग–अलग विद्वानों में अलग–अलग मत है। अबू नसर अल सराज की पुस्तक 'किताब अल लुमा'' में किये गये उल्लेख के आधार पर माना जाता है कि सूफी शब्द की उत्पत्ति अरबी शब्द 'सूफ' (ऊन) से हुई जो एक प्रकार से ऊनी वस्त्र पवित्रता का सूचक था, जिसे प्रारंभिक सूफी लोग पहना करते थे। यह ऊनी वरत्र पवित्रता का सूचक था जिसका प्रभाव आज भी भारतीय समाज में हिन्दू और मुसलमान दोनों में विश्वास के रूप में प्रचलित है। अतः ऊनी वरत्र को पहनने वाले आचार–व्यवहार से पवित्र लोग सूफी कहलाये। 'सफा' शब्द से भी सूफी की उत्पत्ति मानी जाती है। सफा का अर्थ पवित्रता या विशुद्धता से है। एक अन्य मत के अनुसार हजरत मुहम्मद साहब द्वारा मदीना में निर्मित मस्जिद के बाहर सफा अर्थात मक्का की एक पहाड़ी पर कुछ लोगों ने शरण लेकर अपने को खुदा की आराधना में लीन कर लिया इसलिए वे सूफी कहलाये। प्रारंभिक सूफियों में रबिया (8वीं सदी) एवं मंसूर हल्लाज (10वीं सदी) का नाम महत्वपूर्ण है। मंसूर हल्लाज ऐसे पहले सूफी साधक थे जो स्वयं को अनलहक घोषित कर सूफी विचारधारा के प्रतीक बने। अनलहक वैदिक मंत्र 'अहम् ब्रह्मास्मि' ¼e gh cge gw½ का अरबी रूपांतरण है। सूफी संत इब्नुल अरबी ने उलेमाओं के ब्रह्म तथा जीव के मध्य मालिक एवं गुलाम के रिश्ते की अवहेलना करते हुए यह कहा कि ईश्वर एक है और व संसार की सभी वस्तुओं का निमित्त है। सूफी संत ईश्वर को प्रियतमा एवं स्वयं को प्रियतम मानते थे। सूफियों ने ईश्वर की प्राप्ति में हिन्दूओं की भक्ति की तरह सौन्दर्य एवं संगीत को अधिक महत्व दिया। भारत के उपनिषदीय परंपरा की तरह सूफी गुरू को अधिक महत्व देते थे क्योंकि वे गुरू को ईश्वर प्राप्ति के मार्ग का पथ प्रदर्शक मानते थे। सूफी परंपरा में गुरू को 'पीर' तथा शिष्य को 'मुरीद' कहा जाता था। सूफी जिन आश्रमों में निवास करते थे, उन्हें 'खनकाह' (मठ) कहा जाता था। सूफी संत भौतिक एवं भोग विलास से दूर सरल, सादे, संयमपूर्ण जीवन मे आस्था रखते थे। इन्ही विशेषताओं से प्रभावित होकर हिन्दू व मुसलमान दोनों उनकी ओर आकर्षित हुए फलस्वरूप सूफी मत मध्यकालीन इतिहास में सामाजिक–सांस्कृतिक उत्थान का एक आंदोलन बन गया। सूफी आंदोलन का ही यह प्रभाव रहा कि भक्ति व प्रेम के रूप में कव्वाली संगीत भारतीय सहित विश्व भर आज भी लोकप्रिय है। भारत में सूफियों का प्रवेश अरबों की सिन्ध विजय के बाद से ही होने लगा था। परन्तु दिल्ली सल्तनत की स्थापना के बाद सूफियों का प्रवेश भारत मे बड़े पैमाने पर होने लगा। सूफी संत सिलसिलों में संगठित थे। सूफियों के 14 सिलसिलों में भारत में कुल 12 सूफी सिलसिले स्थापित हुए। इनमें से चिश्ती, सुहरावर्दी, कादरी, नक्शबंदी सिलसिले भारत में अधिक लोकप्रिय रहे।

भारत में चिश्ती सिलसिला ही सर्वाधिक लोकप्रिय हुआ जिसका भारतीय समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा। इस सिलसिला के सूफी संतों ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती, कुतुबद्दीन वख्तियार काकी, बाबा फरीद निजामुद्दीन औलिया (अमीर खुशरो के गुरू), शेख नसीरूदीन चिराग, शेख सलीम चिश्ती आदि भारतीय समाज में अत्यधिक लोकप्रिय रहे। इन सूफी संतों ने सामाजिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक रूप से भारतीय जनमानस को आंदोलित किया। इसलिए मध्यकालीन भारतीय इतिहास में भक्ति आंदोलन की तरह हिन्दू–मुस्लिम के समन्वय द्वारा सामाजिक सद्भावना की स्थापना में सूफी आंदोलन का अपना विशिष्ट महत्व रहा है।

7-4-3- lwQh vkanksyu **(Sufi Movement)** % lkekftd lkaLd`frd vk/kkj **(Social**

Cultural Bases) :–

भारत में इतिहास के मध्यकाल में मुस्लिम शासकवर्ग के अत्याचारों व भेदभावपूर्ण नीति के कारण भारतीयों को इस्लाम के प्रति जो घृणा सी हो गई थी उसे सूफियों ने अपनी प्रेमपूर्ण वाणी और जनकल्याणकारी गतिविधियों से कम कर दो संस्कृतियों के समन्वय में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मध्यकालीन भारतीय इतिहास के संक्रमण व अव्यवस्था के उस दौर में सूफियों ने सामाजिक विघटन को बचाया और सुलह कुल अर्थात विश्वबंधुत्व का सिद्धांत प्रस्तुत किया। उन्होंने सामान्य जीवन जीते हुए जन सामान्य को उच्च नैतिकता का पाठ पढ़ाया। सूफी आंदोलन से मुस्लिम शासकवर्ग की धर्माधता में कमी आई। इससे सामाजिक सद्भावना का माहौल बना। हिन्दू व इस्लाम दोनों संस्कृतियों का मेलजोल बढ़ा। सूफियों ने भारतीय दर्शन से अपनी साधना प्रणाली में योग व भक्ति भावना को बढ़ाने के लिए संगीत को अपनाया। भारतीयों की भी सूफियों में रूचि बढ़ी।

एक और जहां जनसाधारण के स्तर पर भक्त कवियों ने धार्मिक सहिष्णुता की बातें प्रसारित की वहीं दूसरी ओर शासक वर्ग के स्तर पर सूफियों ने धार्मिक सहिष्णुता के अनुकूल नीतिगत परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इससे मध्यकालीन इतिहास के इस दौर में मजबूत प्रेम व सद्भावना आधारित सामाजिक–सांस्कृतिक आधार कायम हुआ। वास्तव में भारत में इस्लाम की लोकप्रियता सूफी–संतो ंके वजह से ही संभव हुई थी न कि शासकवर्ग के प्रभाव से। सूफियों ने इस्लाम और मुस्लमानों का भारतीयकरण कर भारत में उनकी स्थिरता सुनिश्चित की। महत्वपूर्ण सामाजिक–सांस्कृतिक उत्थान के अन्तर्गत भक्ति आंदोलन ओर सूफी आंदोलन ने परस्पर एक दूसरे को प्रभावित किया व सहयोग दिया।

मध्यकालीन भारत में सूफी आंदोलन का सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सूफी खानकाह, शिक्षा व संगीत के प्रमुख केन्द्र थे। क्षेत्रीय भाषाओं और उनके साहित्य के विकास में भी सूफियों की प्रमुख भूमिका रही । उर्दू भाषा का विकास खानकाहों में ही हुआ। पंजाबी भाषा के विकास में भी सूफी आंदोलन का उल्लेखनीय योगदान रहा। इस प्रकार भक्ति आंदोलन की तरह सूफी आंदोलन भी भारत में सकारात्मक सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण कारक साबित हुआ।

7-4-4- सूफी मत की शिक्षाएं (Teachings of Sufism)

इस्लाम में सूफीमत का विकास एक रहस्यवादी आंदोलन की तरह सफलता तथा लोकप्रियता का महत्वपूर्ण और दिलचस्प इतिहास है। सूफी संतों ने जीवन के परम चरम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जो सिद्धान्त व दर्शन दिए उसके आधार पर सूफी मत की शिक्षाओं का सार निम्नलिखित है :–

(1) एक अल्लाह में विश्वास (Faith in one Allah) :– सूफियों के अनुसार सृष्टि के सर्जक, पालक व संहारक के रूप में एक ही परमात्मा है जिसको अल्लाह के नाम से जानते हैं। वह सर्वशक्तिमान तथा सर्वव्यापक है। अतः हमें एक अल्लाह की ही पूजा करनी चाहिये।

¼2½ i.k vkRe R;kx (Complete self-Surrender) :– सूफियों के अनुसार अल्लाह की दया प्राप्त करने व अपनी बिगड़ी बनाने के लिए सांसारिक मोह–माया व अपनी इच्छाओं से परे अल्लाह के समक्ष पूर्ण आत्म त्याग सबसे जरूरी शिक्षा है।

(3) पीर में विश्वास (Faith in Pir) ½& भारत की गुरू–शिष्य परंपरा की तरह सूफी मत की शिक्षा में पीर अर्थात गुरू को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। पीर ही अपने मुरीदों अर्थात शिष्यों की रूहानी अर्थात आध्यात्मिक उन्नति पर पूर्ण दृष्टि रखते हुए साधना का उचित मार्ग बताता है और उसे भवसागर से पार उतारता है अर्थात अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है।

¼4½ bcknr (Worship) ½& सूफियों के अनुसार शुद्ध हृदय से एकमात्र अल्लाह की इबादत करने से ही मनुष्य इस संसार से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। उनके अनुसार अल्लाह ही इबादत अर्थात पूजा नमाज़ द्वारा रोजे रखकर, दान करके तथा मक्का की यात्रा करके की जा सकती है। इसके लिए उन्होंने आचरण की पवित्रता पर अत्यधिक बल दिया।

¼5½ uekt (Prayer) ½& अपनी आत्मा की आवाज परमात्मा तक पहुंचाने के लिए सूफियों ने प्रतिदिन नमाज को अपने आचरण का हिस्सा बनाना सर्वोत्तम कर्तव्य बताया है। इसके लिए उन्होने हृदय की सच्चाई पर बहुत अधिक बल दिया।

¼6½ jkt: j[kuk (Fasting) ½& सुफियों की रोजे रखना शिक्षा का अभिप्राय केवल खाने–पीने की वस्तुओं से परहेज करना ही नही था, बल्कि इसका मुख्य उद्देश्य एकमात्र अल्लाह से लौ लगाने के लिए मन की बुराईयों को समाप्त करना था। उनका पक्का विश्वास था कि ऐसा करने वाले व्यक्ति की आत्मा शुद्ध होती है।

¼7½ nku (Charity) ½& अपने व अपने परिवारों के नितांत आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद हमारे पास जो कुछ भी बचता है या उसमें से बचाकर कुछ धन निर्धनों तथा जरूरतमंदों में बॉटने की शिक्षा सभी धर्मो में है। कुरान में भी निर्धनों की सेवा करने तथा गुलामों को आजाद करने को बहुत अच्छा बताया गया है। मनुष्यों से प्रेम व सहानुभूति करने का भाव भी धन के अतिरिक्त दान का ही एक भाग समझा गया है। सूफियों ने प्रत्येक व्यक्ति व परिवार के लिए इसे आवश्यक माना है।

¼8½ eDdk dh ;k=k (Pilgrimage of Mecca) ½& सभी धर्मो में किसी न किसी रूप में भक्ति, ज्ञान व वैराग्य को बढ़ाकर भवसागर से पार उतरने के लिए तीर्थ यात्रा का वर्णन मिलता है। अल्लाह से एकरूप होने के लिए मन की एकाग्रता, हृदय की पवित्रता तथा विचारों की श्रेष्ठता हेतु सूफियों ने मक्का की यात्रा को अपनी शिक्षा में विशिष्ट स्थान दिया है।

¼9½ rjd&,&nqfu;k (Rejection of the world) ½& अल्लाह से एकाकार होने के लिए यह आवश्यक है कि हम सिर्फ नितांत आवश्यकताओं के अर्थ में ही संसार का उपयोग करें व संबन्ध रखें अन्यथा अनावश्यक रूप से हम अपने मन को सांसारिक भोग–विलास से सदैव दूर रखें। प्रत्येक सूफी के लिए यह अति आवश्यक शिक्षा रही है।

¼10½ HkfDr laxhr **(Devotinal Music)** %& मानवीय ह्रदय में अल्लाह के प्रति प्रेम उत्पन्न करने के लिए सूफियों ने भक्ति संगीत पर बहुत जोर दिया। सूफियों की धार्मिक संगीत सभाओं को सभा कहा जाता है। सूफियों द्वारा प्रचलित भक्ति संगीत कव्वाली गायन आज भी बहुत लोकप्रिय है।

(11) मनुश्य जाति से प्रेम (Love of Mankind) :– जाति–पाति, रंग या नस्ल, ऊँच–नीच, स्त्री–पुरूष समस्त भेदभावों से ऊपर उठकर सभी मनुष्य अल्लाह के संतान है की भावना से भरकर मानव मात्र से प्रेम की शिक्षा सूफियों की सर्वप्रमुख शिक्षा है।

सार रूप में सूफी यह मानते थे कि अल्लाह से एकरूप हो हो जाना सभी शिक्षाओं की शिक्षा है। इस एकाकार होने के दस चरण बताए गए है – तौबा (अफसोस), वंश (संयम), जुहद (निष्ठा), फक्कर (दीनता), सब्र (धैर्य), शुक्र (कृतज्ञता), खौफ (भय), रजा (आशा), तवक्कुल (संतोष) और रिजा (दैवी लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पण)

7-4-5- lwQh vkUnksyu dk egRo ,o a iHkko :– (Importance and impact of Sufi Movement)

मध्यकाल में हिन्दू धर्म में जिस प्रकार का महत्त्व भक्ति आंदोलन का है ठीक उसी प्रकार इस्लाम में सूफी आंदोलन का है। सूफियों ने अपने प्रेम व सदाचार के आदर्श से इस्लाम को गतिशील एवं उदार बनाकर हिन्दू–मुस्लिम एकता को प्रोत्साहित किया। सूफी आंदोलन का भारतीय समाज व संस्कृति पर व्यापक प्रभाव पडा जो इस प्रकार है:–

¼1½ fgUnw ,oa bLyke esa leUo; LFkkfir djuk %& सूफियों ने अपनी साधना प्रणाली में अनेक हिन्दू सिद्धान्तों को अपनाया। उन्होनें सामाजिक सेवा को परमात्मा की सेवा का एकमात्र साधन बताया। सूफियों के प्रेम, सदाचरण व सादगीपूर्ण जीवन से हिन्दू व मस्लिम दोनों प्रभावित हुए। इससे दोनों संस्कृतियों के बीच मेलजौल बढ़ा और सामाजिक सद्भावना की स्थापना में बल मिला।

¼2½ ikjLifjd ize vkSj lekt lsok dh Hkkouk ij cy %& सूफी मत की शिक्षा में प्रेम पर बहुत बल दिया गया। उन्होंने अपनी उदारता की भावना के द्वारा मानव मात्र की सेवा व एक दूसरे के प्रति आदर भाव के आदर्श के लिए लोगों को प्रेरित किया। सूफियों ने परमात्मा की प्राप्ति के लिए निर्धनों व जरूरतमंदों की सहायता करना अर्थात समाज सेवा को अति आवश्यक माना। सूफी संतों ने अपने शिष्यों को समाज सेवा, सद्व्यवहार, क्षमा आदि गुणों की शिक्षा दी।

¼3½ uSfrd vkpj.k dks c<kuk %& सूफी संत किसी भी प्रकार के भोग–विलास से अपने आप को दूर रखते हुए संयम व सादगीपूर्ण जीवन जीने में विश्वास रखते थे। उनका पूर्ण विश्वास था कि नैतिकता के मार्ग पर ही चलकर हम परमात्मा को प्राप्त कर सकते है। उनकी इस शिक्षा का प्रभाव हिन्दू व मुसलमान दोनों पर पड़ा।

¼4½ vk/;kfRed rk ij cy :– सूफी संतों ने ईश्वर की प्राप्ति के लिए आध्यात्मिक उन्नति को आवश्यक बताया। आध्यात्मिक उन्नति का अर्थ आन्तरिक विकास से है अर्थात् मन में विकार को

समाप्त करना, हृदय को पवित्र करना और अपने आपको प्रेम, सद्भावना व समाज सेवा की भावना से भरकर सादगीपूर्ण जीवन जीते हुए एकमात्र परमात्मा (अल्लाह) से एकाकार होने का प्रयास करना। सूफियों के इस आदर्श से प्रभावित होकर लोगों ने धार्मिक आडम्बरों के बजाय अपने जीवन को शाश्वत सत्ता की ओर उन्मुख किया।

(5) एके□वरवाद पर बल :– सूफी संतों ने एकेश्वरवाद के सिद्धान्त के द्वारा हिन्दू–मुस्लिम सम्प्रदायों में एकता की भावना उत्पन्न की। इससे सामाजिक सद्भावना को बढ़ावा मिला।

(6) भाशा व lkfgR; dk fodkl :– सूफी संतो के उपदेश की भाषा जन–सामान्य की भाषा थी। सूफी खानकाह, शिक्षा व संगीत के प्रमुख केंद्र थे। क्षेत्रीय भाषाओं और उनके साहित्य के विकास में सूफियों की प्रमुख भूमिका रही। उर्दू भाषा का विकास खानकाहों में ही हुआ। सूफियों ने अपने उपदेश, संगीत व रचना में हिन्दुस्तानी शब्दों का खूब प्रयोग किया। जिसके फलस्वरूप उर्दू के अतिरिक्त पंजाबी, गुजराती, सिंधी व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं और उनके साहित्य के विकास को बल मिला।

(7) राजनीति व भाासन में भाामिल लोगों को जनकल्याण की प्रेरणा :– यद्दपि सूफी सन्त स्वयं सदैव राजनीति से अलग रहे तथापि उन्होंने अपने सादगीपूर्ण जीवन से जन–सामान्य को समाज सेवा के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अपने प्रेम व उदारता के द्वारा शासक वर्ग को जनकल्याण के लिए प्रेरित किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि उन गरीब लोगों की सेवा करे जो प्रशासकीय लोगों के अत्याचारों से पीड़ित है। इन संतों ने शासकों को प्रजा की सेवा करने को कहा।

इस प्रकार हम कह सकते है कि सूफी आंदोलन का भारतीय संस्कृति को उन्नत व सम्पन्न बनाने में प्रशंसनीय योगदान रहा।

7-5 izxfr leh{kk **(Check your progress)**

(क) निम्नलिखित प्र□नों के खाली स्थान में सही उत्तर लिखें :–

(1) भक्ति आंदोलन का विकास सर्वप्रथम भारत के .... भाग में हुआ था।

(2) .... सूफी संत का शिष्य अमीर खुसरो था।

(3) अद्वैत सम्प्रदाय की स्थापना का श्रेय .... को है।

(4) दक्षिण में अण्डाल नाम की महिला संत का सम्बन्ध .... संप्रदाय से था।

(5) कबीरदास की रचनाओं के संकलन को .... नाम से जानते है।

(6) तुलसीदास द्वारा विरचित रामचरितमानस .... भाषा में लिखा गया है।

(7) भक्ति आंदोलन के .... संत के विभिन्न जातियों से सम्बन्धित 12 शिष्य थे।

(8) बासवन्ना ने अपना प्रचार .... भाषा में किया।

(9) सूफी संतो के निवास स्थान को .... कहते थे।

(10) .... वंश के शासकों ने शिव की नटराज प्रतिमा का निर्माण करवाया।

¼[k½ निम्नलिखित प्र□नों के सही कथन के लिए 'सत्य' व गलत कथन के लिए 'असत्य' भाब्द लिखकर प्रतिक्रिया दें :–

1. भक्ति आंदोलन को दक्षिण भारत से उत्तर भारत तक प्रचारित करने का श्रेय गुरू रामानंद को दिया जाता है। ( )
2. सूफियों ने उलेमा को चुनौती देते हुए उसके महत्त्व को नकारा। ( )
3. महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन को लोकप्रिय बनाने में संत ज्ञानेश्वर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। ( )
4. संत रैदास निर्गुण भक्ति–परम्परा का प्रतिनिधित्व करते थे। ( )
5. रामानुज ने कृष्ण को आराध्य बनाकर विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त की स्थापना की। ( )
6. कर्नाटक वीरशैवों को लिंगायत नाम से भी जाना जाता था। ( )
7. भारत में स्थित सूफी सम्प्रदायों में सर्वाधिक लोकप्रिय सम्प्रदाय चिश्ती था।( )
8. भक्ति आंदोलन की प्रसिद्ध महिला संत मीराबाई निम्न जाति में जन्मी थी। ( )
9. संत एकनाथ का जन्म गुजरात में हुआ था। ( )
10. सूफी संतों का विश्वास था कि ईश्वर की प्राप्ति प्रेम और संगीत से की जा सकती है। ( )

¼x½ lwph I dk lwph II ls lqefyr dhft,A

1-

lwph I	lwph II
(A) विशिष्टाद्वैतवाद	(i) रामनुजाचार्य
(B) द्वैतवाद	(ii) मध्यवाचार्य
(C) शुद्वाद्वैतवाद	(iii) विष्णु स्वामी
(D) द्वैताद्वैतवाद	(iv) निम्बार्काचार्य

	A	B	C	D
(क)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(ख)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(ग)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(घ)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)

7-6- सारां□ा/संक्षिप्तिका (Summary)

भारत में भक्ति आंदोलन सारां□ा रूप में प्रस्तुतीकरण :–

- **भांकराचार्य (Shankaracharya)** ¼788& 820 bZ-½
  - ➢ जन्म स्थल – 788 ई. को केरल के अलवर नदी के तटवर्ती ग्राम कलादी में।
  - ➢ पिता – शिव गुरू   माता – आर्यम्बा (सुभद्रा)
  - ➢ दीक्षा गुरू – गोविन्द योगी या गोविंदाचार्य
  - ➢ दीक्षा के उपरान्त उपाधि – परमहंस
- **दा□िनिक मत :–** ज्ञानमार्गी शंकराचार्य ने अद्वैतवाद मत की स्थापना की। शंकराचार्य जगत को मिथ्या तथा ब्रह्म (ईश्वर) को सत्य मानते थे। ब्रह्म प्राप्ति के लिए ज्ञान मार्ग पर बल दिया। शंकराचार्य शैव तथा बौद्ध दर्शन से भी प्रभावित थे। बौद्ध धर्म के महायान शाखा से प्रभावित होने के कारण उन्हें प्रच्छन्न बौद्ध कहा गया है।
- jpuk,¡ %& शंकराचार्य ने उपनिषदों, भगवद्गीता एवं ब्रह्मसूत्र पर भाष्य लिखे हैं। उपनिषद, ब्रह्मसूत्र एवं गीता पर लिखे गये शंकराचार्य के भाष्य को 'प्रस्थानत्रयी ' के अंतर्गत रखते हैं।
- **भांकराचार्य द्वारा स्थापित चार मठ/पीठ**

	eB@ihB		LFkku	jkT;
1.	ज्योतिर्मठ	(विष्णु)	बद्रीनाथ	उत्तराखण्ड
2.	गोवर्धनपीठ	(बलभद्र व सुभद्रा)	पुरी	उड़ीसा
3.	शारदापीठ	(कृष्ण)	द्वारिका	गुजरात
4.	श्रृंगेरीपीठ	(शिव)	मैसूर	कर्नाटक

- हिंदू धर्म को सुव्यस्थित करने के लिए शंकराचार्य ने स्मृति संप्रदाय की स्थापना की जिसमें पंचदेवोपासना का विधान है
- jkekuqtkpk;Z ¼1017&1137 bZ-½
  - ➢ सगुण ईश्वर में विश्वास रखने वाले रामानुज को दक्षिण भारत में विष्णु का अवतार मानते है।
  - ➢ विशिष्टाद्वैत दर्शन की स्थापना करके वैष्णव धर्म को एक दार्शनिक आधार प्रदान किया।
  - ➢ वर्ण भेद से ऊपर उठकर सभी जाति के लोगों को भक्ति का उपदेश दिया।
  - ➢ दक्षिण भारत मे भक्ति आंदोलन को फैलाया।
  - ➢ इनके शिष्य व अनुगामी प्रयाग में जन्में रामोपासक गुरू रामनंद ने भक्ति आंदोलन को दक्षिण भारत से उत्तर भारत में लोकप्रिय बनाया।
- jkekuUn ¼14&15 oha lnh ½
  - ➢ सगुण परंपरा के संत।
  - ➢ राम की उपासना करने वाले।

- ➢ व्यावहारिक जीवन में जाति की समानता पर विश्वास।
- ➢ जनसामान्य की भाषा हिन्दी में उपदेश दिया।
- ➢ दक्षिण भारत से भक्ति आंदोलन को उत्तर भारत मे लाने वाले।
- ➢ इन्होंने जाति धर्म व व्यवसाय से ऊपर उठकर शिष्य बनाये।

गुरू ग्राम रामानंद के 12 प्रमुख शिष्य :–

1. कबीर (जुलाहा)	2. रैदास (चर्मकार)	3. धन्ना (जाट किसान)
4 सेना (नाई)	5 पीपा (राजपूत)	6 सदना (कसाई)
7 नर हरि	8 अनंतनंद	9 भनंतनंद
10 भवानंद	11 सुरसर	12 पद्मावती एवं सुरसीर

♦ dchj ¼1378&1510 bZ- ½(Kabir 1378-1510 A.D.)

- ➢ निर्गुण परंपरा के संत।
- ➢ जीवन काल सामान्यतः पंद्रहवीं सदी। काशी (वाराणसी) में
- ➢ इनका पालन पोषण नीमा और नीरू दम्पत्ति ने किया।
- ➢ पत्नी –लोई पुत्र– कमाल पुत्री– कमाली
- ➢ दिल्ली सल्तनत के शासक सिकंदर लोदी के समकालीन।
- ➢ समस्त धार्मिक बाह्य आडंबरों व सामाजिक भेदभावों पर तीव्र प्रहार।
- ➢ सच्चे गृहस्थ जीवन द्वारा ईश्वर की प्राप्ति को संभव बताया।
- ➢ कबीर की प्रमुख रचनाएँ – साखी, सबद, रमैनी, दोहा, मंगल, होली, बसंत, रेखताल आदि हैं।
- ➢ कबीर दास की रचनाओं के संग्रह को 'बीजक' के नाम से जानते हैं।
- ➢ कबीरदास की भाषा – सधुक्कड़ी अथवा खिचड़ी अर्थात् मिली–जुली भाषा है।
- ➢ कबीरदास की बीजक में अधिकांशतः 'अवधी' भाषा का प्रयोग हुआ है।

♦ l¡r j¡nkl ¼jfonkl ½ (Ravidas)

- ➢ निर्गुण परंपरा के संत।
- ➢ कबीर के समकालीन थे।
- ➢ कबीर ने इन्हें संतों का संत कहा है।
- ➢ मीराबाई इन्हे अपना गुरू मानती थीं।
- ➢ 15वीं–16वीं सदी में वाराणसी (काशी) मे जन्में संत रैदास का विश्वास था कि सभी में हरि है और सभी हरि में है।
- ➢ इनके अनुयायियों द्वारा रैदासी सम्प्रदाय की स्थापना हुई थी।

- nkn n;ky ¼1544&1603 bZ- ½
    - निर्गुण भक्ति परंपरा के दादू दयाल कबीर पंथी थे।
    - गुजरात में जन्मे दादू दयाल का अधिकांश जीवन राजस्थान में बीता।
    - दादू के द्वारा चलाया संप्रदाय दादू पंथी कहलाया।
    - दादू की शिक्षा – 'विनयशील बनो और अहम से मुक्त रहो' थी।
    - उनके द्वारा रचित ग्रन्थ को 'दादू दयाल जी की वाणी' कहा जाता है।
    - दादू दयाल के प्रसिद्ध शिष्य रज्जब हुए।
- xq: ukud nso th ¼1467&1537 bZ- ½**(Guru Nanak Dev 1467-1537 A.D.)** ½&
    - गुरू नानक का जन्म 15 अप्रैल 1467 ई. मे रावी नदी के तट पर तलवंडी (अब ननकाना) नामक गांव जो अब पाकिस्तान में स्थित है में एक खत्री परिवार में हुआ था।
    - सिक्ख धर्म के प्रवर्तक।
    - नानक ने लंगर प्रथा को प्रारम्भ किया।
    - जीवन में 'सच्चा सौदा' की शिक्षा गुरू नानक ने ही थी।
    - इनके द्वारा आरंभ किये गये सिक्ख धर्म में दस गुरू हुए।
    - सिक्खों के दसवें व अन्तिम गुरू– गुरू गोविन्द सिंह जी हुये जिन्होंने खालसा पथ की स्थापना 1677 ई. में की।
    - सिक्खों के दूसरे गुरू – गुरू अंगद पंजाबी भाषा की लिपि गुरूमुखी लिपि के जनक माने जाते है।
    - चौथे गुरू – गुरू रामदास ने अमृतसर नगर की स्थापना की।
    - पांचवे गुरू – गुरू अर्जुनदेव ने अमृतसर में स्वर्ण मंदिर की स्थापना की तथा सिक्खों के पवित्र ग्रंथ गुरूग्रंथ साहिब का संकलन किया।
- pSrU; egkiHkq ¼1486 & 1533 bZ- ½
    - सगुण कृष्णोपासक।
    - जन्म स्थान –नवद्वीप (नदिया) पं. बंगाल।
    - वास्तविक नाम – विश्वम्भर।
    - बचपन का नाम – निमाई।
    - दीक्षा गुरू – ईश्वरपुरी।
    - दीक्षा के बाद नाम – चैतन्य।
    - स्थापित सम्प्रदाय – गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय।
    - दार्शनिक सिद्धान्त – अचिन्त्यभेदाभेद दर्शन।
    - बंगाल व उड़ीसा में वैष्णव धर्म को लोकप्रिय बनाया।
    - कृष्ण भक्ति को बढ़ावा देने के लिए इन्होंने 'कीर्तन' परंपरा की नींव रखी।
    - कीर्तन परंपरा – इनके अनुयायी नाचते–गाते हुए कृष्ण भक्ति का प्रचार करते थे।

- 16वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कविराज कृष्णदास द्वारा रचित 'चैतन्य चरित' में उनके जीवन चरित्र का वर्णन है।
- डनके समय में बंगाल का शासक – अलाउद्दीन हुसैन शाह था।

♦ fuEckdf चार्य (12वीं भाताब्दी)

- कृष्ण को शंकर का अवतार मानने वाले निम्बार्काचार्य सगुण भक्ति के समर्थक थे।
- द्वैताद्वैतवाद दर्शन के संस्थापक।
- इनका सम्प्रदाय सनक या सनकादी सम्प्रदाय के नाम से विख्यात है। जिसमें राधाकृष्ण युगल सरकार की उपासना की जाती है।
- निम्बार्काचार्य को सुदर्शन चक्र का अवतार माना जाता है।

♦ ek?okpk;l ¼1177 &1278 bl-½

- सगुण परंपरा के विष्णु उपासक संत।
- स्थापित दर्शन – द्वैतवाद दर्शन
- उन्होंने मोक्ष के तीनों मार्ग – कर्म, ज्ञान व भक्ति को अपने में पूर्ण न होकर एक दूसरे के पूरक है ऐसा बताया।
- ईश्वर का एक ही रूप माना। इनका सम्प्रदाय 'ब्रह्म सम्प्रदाय' के नाम से प्रसिद्ध है।

♦ l|jnkl ¼1478&1583 bl- ½ (Surdas 1478&1583 A.D.)

- सगुण परंपरा के कृष्णोपासक संत।
- गुरू – बल्लभाचार्य।
- गुरू से प्रेरणा पाकर कृष्ण लीला को अपनी रचनाओं का आधार बनाया।
- रचनाएँ – सूरसारावली, साहित्य लहरी तथा सूरसागर प्रमुख है।
- इनकी भाषा ब्रज भाषा थी।
- सूरदास को ' पुष्टिमार्ग' का जहाज कहा गया है।

♦ cYyHkkpk;l ¼1477&1531 bl- ½

- शुद्धाद्वैतवाद में विश्वास रखने वाले सगुणोपासक वल्लभाचार्य श्रीनाथ जी के नाम से भगवान कृष्ण की उपासना करते थे।
- पुष्टिमार्ग संप्रदाय के संस्थापक।
- पुष्टि का अर्थ – कृपा व मार्ग का अर्थ –पथ या पन्थ है।
- कृष्ण की कृपा पर आश्रित होने के कारण वल्लभ और इनके अनुयायी पुष्टिमार्गी कहलाये।

♦ r|ylhnkl ¼1532&1623 bl- ½ (Tulsidas 1532-1623 A.D.)

- सगुण भक्ति के समर्थक रामोपासक संत।
- जन्म स्थान – उत्तर प्रदेश में प्रयाग के पास चित्रकुट जिले में राजापुर नामक ग्राम।
- पिता – आत्माराम दूबे   माता – हुलसी
- बचपन का नाम – रामबोला   गुरू – नर हरिदास
- पत्नी – रत्नावली

- तुलसीदास को शैव और वैष्णव संप्रदायों के बीच एकता स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है।
- इन्होंने मुगलशासक अकबर के समय में 1575 ई. में रामचरितमानस की रचना की।
- इसकी भाषा अवधी है।
- इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ है – विनय पत्रिका, श्रीकृष्ण गीतावली, गीतावली, कवितावली, दोहावली, रामाज्ञा प्रश्न, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, बरवै रामायण, वैराग्य संदीपनी, रामललानहछू व हनुमान चालीसा आदि।

♦ ehjk ckbZ ¼1478&1546 ½ (Mirabai 1478-1546 A.D.)

- जन्म स्थान – कुड़की ग्राम मेड़ता, राजस्थान
- पिता – रत्नसिंह राठौर   माता – वीर कुमारी/वीर कुंवरी
- विवाह – 1516ई. में मेवाड़ के सिसोदिया वंशीय महाराणा सांगा के बड़े पुत्र युवराज भोजराज से।
- कृष्ण के सगुण रूप की उपासिका।
- मीरा बाई ने कृष्ण की भक्ति में अनेक पद और गीतों की रचना राजस्थानी और ब्रजभाषा में की। मीराबाई के भक्ति गीत को पदावली कहा जाता है।
- मीरा ने अपने काव्य में कृष्ण को प्रेमी, सहचर और पति मानकर चित्रित किया है।

♦ भांकरदेव (1477&1567 bZ- ½ (Shankaradev 1477-1567 A.D.)

- कृष्ण के सगुण रूप के उपासक संत।
- शंकरदेव ने निष्काम भक्ति पर बल देते हुए – एकशरण सम्प्रदाय की स्थापना की।
- एकमात्र कृष्ण की भक्ति में लीन होने के कारण इन्हें – 'असम के चैतन्य' के नाम से जाना जाता है।

♦ Ukjlh egrk ¼15oha lnh ½

- राधा कृष्ण के सगुण रूप के उपासक संत नरसी मेहता गुजरात के प्रमुख संत थे।
- इनके भक्ति गीत ' सूरत–संग्राम' में संकलित है।
- वैष्णव जन तो तेनो कहिये, पीर पराई जाने रे इनका प्रसिद्ध भजन है।
- नरसी मेहता द्वारा रचित यह भजन गांधी जी को बहुत प्रिय था

♦ महाराश्ट्र के भक्तिकालीन संत

मध्यकालीन भक्ति आंदोलन में महाराष्ट्र में वैष्णववादी भक्ति परंपरा में मुख्य देवता विठोवा थे व इसका मुख्य केन्द्र पण्ठरपुर था। भक्ति आंदोलन के दौरान महाराष्ट्र में मुख्यतः दो संप्रदायों – धरकरी व बारकरी प्रमुख था। इसके अंतर्गत प्रमुख संत थे – संत ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम और रामदास।

♦ ज्ञाने□वर (1211 – 1276 bZ- ½

- महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन को आरंभ करने वाले ज्ञानेश्वर या ज्ञानदेव ने मराठी भाषा में गीता पर ज्ञानेश्वरी टीका लिखी।

♦ **Ukkenso ¼1270 & 1350 bZ- ½**

- दर्जी परिवार में जन्म।
- बारकरी संप्रदाय की स्थापना में प्रमुख भूमिका।
- नामदेव के भक्तिपदक मराठी गीत को 'अभंग' के नाम से जानते है।
- इनमें कुछ गीत गुरूग्रंथ साहिब में संगृहीत है।
- इनके गुरू बिसोबा खेचड़ थे।

♦ **,dukFk ¼1538 & 1577 bZ- ½ %&**

- इनका जन्म पैठन (औरगाबाद) में हुआ था।
- भगवद्‌गीता पर टीका लिखी।
- इन्होंने महाराष्ट्र में भक्ति के लिए कीर्तन, गायन को लोकप्रिय बनाया।

♦ **rqdkjke ¼1578 & 1650 bZ- ½ %&**

- शिवाजी के समकालीन तुकाराम जन्म से शूद्र थे।
- हिन्दू – मुस्लिम एकता पर बल दिया।
- बारकरी संप्रदाय को लोकप्रिय बनाया।
- अनेक अभंगों की रचना की।

♦ **jkenkl ¼1608&1681 bZ-½ %&**

- शिवाजी के आध्यात्मिक गुरू।
- धरकरी संप्रदाय के प्रमुख संत।
- इनकी रचनाएं – दासबोध, आनंद भुवन इत्यादि है।
- मराठा शक्ति (17वीं शताब्दी) को नैतिक और आध्यात्मिक बल प्रदान करने के लिए प्रसिद्ध संत माने जाते है।
- इनकी स्तुतियां गुरूग्रंथ साहिब में संकलित है।

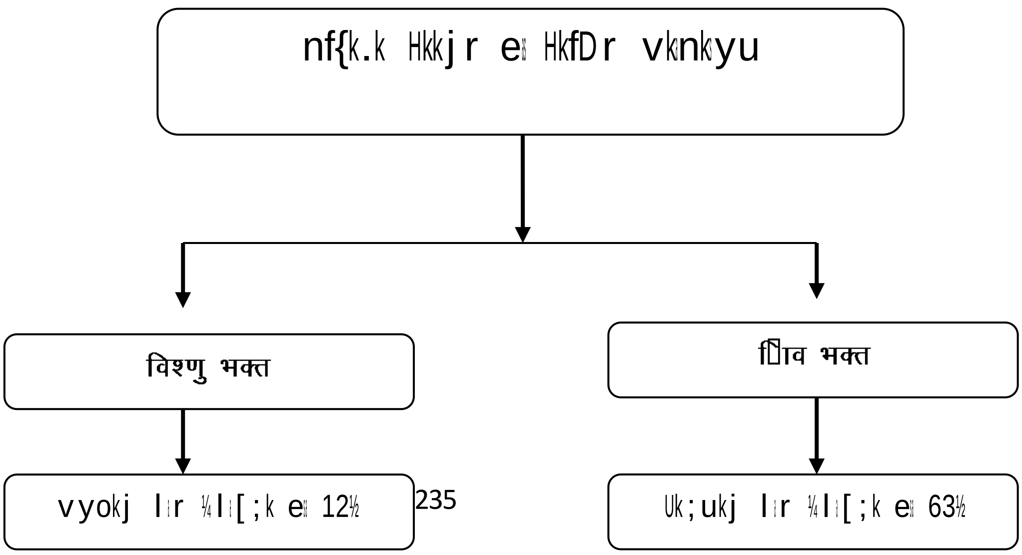

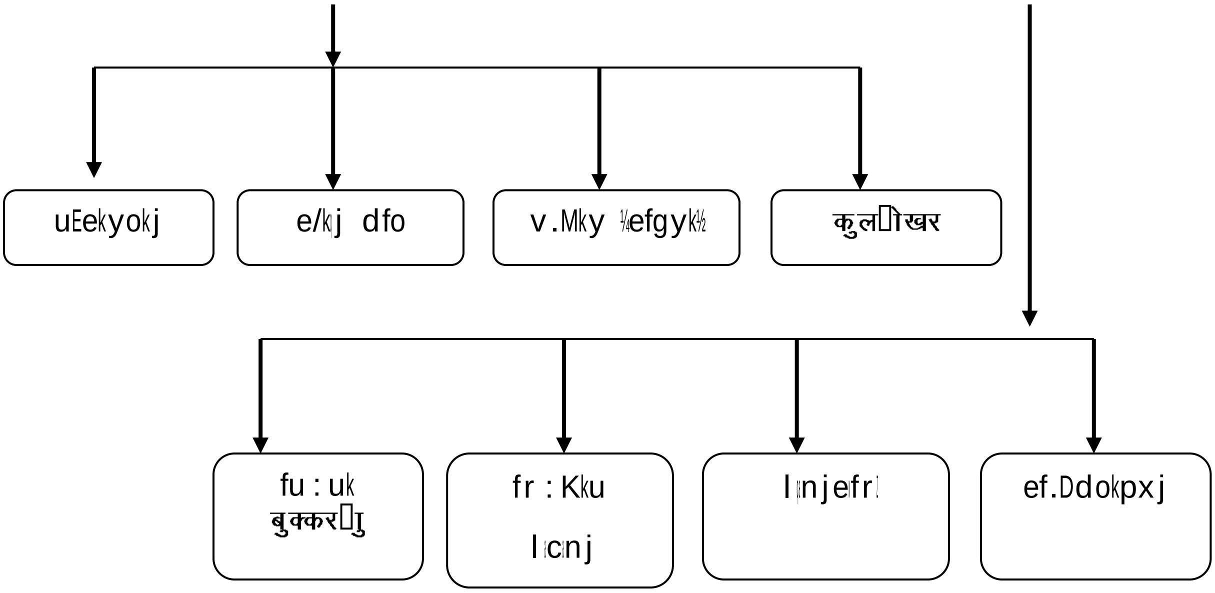

- अलवार का अर्थ ज्ञानी व्यक्ति होता है।
- अलवार संत एकेश्वरवादी थे।
- शिव भक्त नयनार के भक्ति गीत तिरूपाडुयम कहे जाते है। इनकी संख्या 11 है।

❖ lQh vkinkyu ¼ lf{kIr fooj.k ½&

- इस्लाम धर्म के अंतर्गत एक रहस्यवादी आंदोलन के रूप में सूफी आंदोलन का जन्म हुआ।
- सातवी शताब्दी मे अरब में पैगंबर मुहम्मद द्वारा इस्लाम की स्थापना की गयी।
- भारत में सर्वप्रथम अरब के मुहम्मद बिन कासिम ने 712 ई. में सिंध पर आक्रमण कर इस्लामी सत्ता की स्थापना का प्रयास किया।
- तुर्क मूल के महमूद गजनी ने 1000 से 1026 ई. के बीच भारत पर 17 बार आक्रमण किया।
- मुहम्मद गोरी के गुलाम कुतुबद्दीन ऐबक द्वारा दिल्ली सल्तनत के नाम से 1206 में इस्लामी सत्ता की स्थापना के बाद सूफियों का प्रवेश भारत में बड़े पैमाने पर हुआ।
- इस्लामी कानून के समर्थक सूफी सम्प्रदाय को बा–शरा के नाम से जानते है।
- इस्लामी कानून से मुक्त सूफी सम्प्रदाय को बे–शरा कहते है।
- इस्लामी कानून के चार महत्वपूर्ण रत्रोत है – कुरान, हदीस, इजमा और कयास।
- कुरान इस्लाम की पवित्र पुस्तक है। इसे सम्मान से कुरान शरीफ कहा जाता है इसकी रचना अरबी भाषा में की गई है।
- हदीस में पैगम्बर के कार्यो एवं कथनों का उल्लेख है।
- इजमा में मुस्लिम विधिशास्त्रियों द्वारा व्याख्यायित कानून है।
- कयास में तर्क के आधार पर विश्लेषित कानून है।
- दिल्ली सल्तनत काल के आस–पास सूफी बारह पंथों या सिलसिलों में संगठित थे।

- प्रत्येक सिलसिले का नेतृत्त्व सामान्य रूप से एक प्रसिद्ध सूफी संत करता था, जो पीर कहलाता था और अपने मुरीदों अर्थात् शिष्यों के साथ खानकाह अर्थात् आश्रम में रहता था।
- पीर और मुरीदों का सम्बन्ध सूफी धर्मव्यवस्था का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग था।
- ईश्वर, आत्मा एवं भौतिक तत्व के पारस्परिक संबन्धों के विषय में सूफियों और हिन्दू योगियों व रहस्यवादियों के विचारों में बहुत सी समानताऍं थी।
- सूफी संतों ने भारतीय भक्ति दर्शन से तप, उपवास, प्राणायाम, संगीत व सौन्र्दय को अपनाया।
- भारत मे कुल 12 सूफी सिलसिले स्थापित हुए।
- भारत में चिश्ती सिलसिला सर्वाधिक लोकप्रिय हुआ।
- भारत में चिश्ती सिलसिले की स्थापना ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने की थी।
- चिश्ती संप्रदाय के प्रमुख सूफी संत है – कुतुबदीन बख्तियार काकी, हमीदुद्दीन नागौरी, फरीदुद्दीन गज–ए–शकर, निजामुद्दीन औलिया, नासिरूद्दीन चिराग–ए–देहलवी, शेख बुरहानुद्दीन गरीब, बंदा नवाज, शेख सलीम चिश्ती आदि।
- कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी इल्तुतमिश के शासनकाल में भारत आए। इन्होंने दिल्ली को अपना केन्द्र बनाया।
- हमीदुद्दीन नागौरी को सन्यासियों का सुल्तान के नाम से जाना जाता है। उनका केन्द्र राजस्थान के नागौर में था।
- फरीदुद्दीन गज–ए–शकर, बाबा फरीद के नाम से प्रसिद्ध थे। इनकी गतिविधियों का केन्द्र हांसी (हरियाणा) व अजोधन (पंजाब) था।
- गुरू अर्जुन देव ने गुरू ग्रंथ साहिब (आदि ग्रंथ) में बाबा फरीद के कथनों को संकलित किया है।
- बाबा फरीद ने अपने उपदेशों के लिए पंजाबी भाषा का प्रयोग किया।
- चिश्ती संतों में सबसे प्रसिद्ध निजामुद्दीन औलिया ने दिल्ली सल्तन्त के सात सुल्तानों का कार्य काल देखा, परन्तु कभी किसी के दरबार में नहीं गए।
- उन्हें महबूब–ए– इलाही (ईश्वर का प्रिय) व सुलतान–उल–औलिया (संतों का राजा) भी कहा जाता है।
- निजामुद्दीन औलिया ने सुलह–ए–कुल का सिद्धान्त प्रतिपादित किया था।
- अमीर खुशरों निजामुद्दीन औलिया का प्रिय शिष्य था।
- निजामुद्दीन औलिया का दरगाह दिल्ली स्थित निजामुद्दीन में है।
- दक्षिण भारत में चिश्तिया संप्रदाय की नींव सूफी संत शेख बुरहानुद्दीन ने रखी थी।
- सूफी संत बंदा नवाज ने बहमनी साम्राज्य के अंतर्गत कर्नाटक में गुलबर्गा को अपना प्रमुख केन्द्र बनाया।
- अकबर के समकालीन सूफी संत शेख सलीम चिश्ती ने आगरा में सीकरी नामक स्थान पर अपनी खानकाह स्थापित की।
- इन्ही के आर्शीवाद से अकबर के पुत्र सलीम का जन्म हुआ था। इनका मकबरा फतेहपुर सीकरी में स्थित है।
- चिश्ती संप्रदाय के बाद भारत में दूसरा सर्वाधिक लोकप्रिय संप्रदाय सुहरावर्दी सम्प्रदाय था। इसका सम्बन्ध समाज के उच्च वर्ग से ही था। इसका प्रभाव भारत में उत्तर–पश्चिमी सीमा प्रांत क्षेत्र में था। भारत में इसके संस्थापक मुलतान के संत शेख बहाउद्दीन जकारिया थे।

- फिरदौसिया सिलसिला सुहरावर्दी सिलसिले की एक शाखा थी। इसकी स्थापना शेख बदरूद्दीन समरकंदी ने बिहार के राजगीर में की थी। फिरदौसी का प्रमुख केन्द्र बिहार ही था।
- कादिरिया सिलसिला भी भारत में लोकप्रिय रहा। भारत में इसके संस्थापक अब्दुल कादिर जिलानी थे। मुगल शासक शाहजहॉ का पुत्र द्वारा शिकोह इसी सिलसिले का अनुयायी था।
- इस सिलसिला का मुख्य केन्द्र मध्य भारत थां
- अब्दुल्ला शत्तारी द्वारा स्थापित शत्तारी सिलसिला का केन्द्र भी मध्य भारत में ही था पर यह उतना लोकप्रिय नही हो सका।
- बहाउद्दीन नक्शबंद द्वारा स्थापित नक्श बंदी सिलसिला मुगलकाल में बहुत प्रसिद्ध था। बाबर ने इसे लोकप्रिय बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस सिलसिले के संत संगीत के विरोधी थे। मुगल वंश के अन्य शासकों से भी इसका सम्बन्ध रहा। औरंगजेब के समय में इस सम्प्रदाय का प्रभाव बहुत बढ़ गया। इसका मुख्य प्रभाव क्षेत्र पंजाब व दिल्ली के आस–पास का इलाका था।
- 'मसनवी' सूफियों द्वारा अल्लाह के प्रति मानवीय प्रेम को प्रकट करने वाली लंबी कविताएँ थी।
- 'मक्तुबात' सूफी संतों द्वारा अपने अनुयायियों एवं सहयोगियों को लिखे गए पत्र थे। इन पंत्रों से धार्मिक सत्य के बारे में सूफी संतो ंके अनुभवों के बारे में जानकारी मिलती है।
- सूफियों की धार्मिक संगीत सभा को 'समा' कहते थें।

7-7- l|d|r l|pd (Key Words)

भाब्द (Words)	vFk (Meaning)
• उलेमा –	मुस्लिम धर्मनेत्ता
• कर्मकाण्ड –	धर्म के क्षेत्र में किये जाने वाले बाहरी क्रिया–कर्म।
• आडम्बर –	दिखावा/वास्तविकता से परे।
• प्रणेता –	संस्थापक/प्रधान/मुख्य प्रचारक।
• आलवार –	दक्षिण भारत में वैष्णव संत।
• नयनार –	दक्षिण भारत में शैव संत।
• निराकार –	कोई निश्चित आकार नही होना।
• अभंग –	भक्तिपरक मराठी गीत।
• रहस्यवाद –	किसी विषय वस्तु के अंदर की बात या भेद को प्रकट करने से संबन्धित विचारधारा।
• पैगंबर – संप्रदाय	ईश्वर/अल्लाह का संदेश सुनाने वाला/किसी नए धर्म, का प्रवर्तक।
• रूढ़िवाद –	बंधे–बंधाये पुराने विचारों से जकड़े रहने की विचारधारा।
• सल्तनत –	बादशाही/राज्य

- पीर – सूफी संत के लिए
- मुरीद– शिष्य
- खनकाह – आश्रम या मठ
- सिलसिला – संप्रदाय/परंपरा
- समन्वय – मेलजोल
- सहिष्णुता – सहनशील आचारण।
- निष्काम – कामना/इच्छा से परे।
- अनन्य – न अन्य अर्थात दूसरा कोई नहीं।
- उपनिषदीय – उपनिषद काल से सम्बन्धित।
- उपनिषद – वेद के अंतिम भाग जिसका शाब्दिक अर्थ है – गुरू के समीप बैठकर विद्या ग्रहण करना।
- खंडन – किसी मत, विचार या तर्क का भेद खोलना अर्थात अच्छे–बुरे, पक्ष का विवेचन करना।
- साखी – आंखों देखी कबीर की वाणी।
- शब्द – कबीर द्वारा प्रवचन के रूप में प्रकट किए गए शब्द।
- रमैनी – कबीर द्वारा अनुभव या महसूस किये गये उपदेश।
- बीजक – साखी, शब्द व रमैनी के रूप में दोहों व चौपाइयों का कबीर की वाणी का संग्रह।
- अवधारणा – सुनियोजित विचार/चिंतन
- लिंगायत – दक्षिण भारत कर्नाटक में एक संप्रदाय वीर शैव संप्रदाय को लिंगायत संप्रदाय भी कहते थे, क्योकि व लिंग धारण करते थे।
- चिदानंदरूप – चेतन युक्त आनंद रूप/जीवंत आनंद
- चिदानन्दरूपः शिवोअहम् शिवोअहम् – चैतन्य और आनन्द स्वरूप मै शिव (कल्याणमय तत्व) हूं, मैं शिव हूँ।
- सगुणोपासना – ईश्वर के साकार रूप अर्थात मूर्ति की उपासना आराधना या पूजा।
- निर्गुण – ईश्वर के निराकार स्वरूप अर्थात आकृति विशेष की मान्यता नहीं।
- सम्प्रदाय – परंपरा से चला आया हुआ सिद्धान्त या मत।
- आदिगुरू – प्रथम गुरू।
- आदिगुरू शंकराचार्य :– शंकराचार्य की परंपरा में प्रथम गुरू होने के कारण इन्हें सम्मान से

आदिगुरू शंकराचार्य कहा जाता है।

7-8 Lo eY;kdu ijh{kk **(Self Assessment Test)(SAT)**

1- HkfDr vkUnksyu dh mRifÙk ,oa fodkl dk laf{kIr bfrgkl izLrqr dhft,\

(Give a brief History of the Origin and development of the Bhakti Movement)

2- HkfDr vkUnksyu us yksxksa ds jktuhfrd] lkekftd] /kkfeZd rFkk lkaLd`frd thou dks dSls izHkkfor fd;k\

(How does the Bhakti Movement effect the political, Social, Cultural and religious life of Indians?)

3- lwQh vkUnksyu ls vki D;k le>rs gSa bldh f'k{kkvksa ,oa izHkkoksa dk foospu dhft,\

(What do you know about Sufism ? Give an analysis of the teaching and effects of Suffism.)

----

4 fuEufyf[kr ij ukV fy[ks \ **(Write note on Following) :-**

कबीर, नानक, चैतन्य, रामानंद, चिश्ती सम्प्रदाय, lqgjkonhZ सम्प्रदाय, नक्शबंदी एवं dknjh lEiznk; A

(Kabir, Nanak, Chaitanya, Ramanand, Chisti Silsila, Suharavardi Silsila, Nakshbandi and Kadri Silsila)

7-9 प्रगति समीक्षा हेतु प्र□नोत्तर

7-5 ¼d½ (1) दक्षिण भाग में (2) निजामुद्दीन औलिया (3) आदिगुरू शंकराचार्य (4) अलवार

(5) बीजक (6) अवधी (7) रामानंद (8) कन्नड़ (7) खनकाह (10) चोल

7-5 ¼[k½ (1) सत्य (2) सत्य (3) सत्य (4) सत्य (5) असत्य

(6) सत्य (7) सत्य (8) असत्य (7) असत्य (10) सत्य

7-5 ¼x½ 1 (क)

7-10 lnHkZ xzFk ,o lgk;d v/;;u lkexzh (Refrences/Suggested Readings):-

1. मध्यकालीन भारत खंड 1 (750–1540 ई.) संपादक–हरिशचन्द्र वर्मा हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय : 1785
2. सामन्य अध्ययन – यूनिक प्रकाशन, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)
3. संक्षिप्त इतिहास एन.सी.ई.आर.टी सार (कक्षा छठी – सातवीं) लेखन व संपादन – महेश कुमार वर्णवाल कॉसमोस पब्लिकेशन मुखर्जी नगर, दिल्ली, जनवरी, 2017
4. सामान्य अध्ययन – Specturm पब्लिकेशन दिल्ली

5- Prof. Manjeet Singh Sodhi : Modern Publication, Railway Road Jalandhar First Edition : 2007

B.A. HISTORY PART-1, SEMESTER-II	
COURSE CODE :HIST 103	**AUTHOR AND UPDATED : MOHAN SINGH BALODA**
LESSON NO. 08	
g"k dk lkezkT; foLrkj **(Harsha's Empire)**	

v/;k; lajpuk (Lesson Structure)

8.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objective)

8.2 परिचय (Introduction)

8.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

8.3.1 हर्ष की विजय व साम्राज्य का विस्तार (Harsha's Conquest and expansion of the empire)

8.3.2 भारत के मानचित्र पर हर्ष की विजय एवं उसके साम्राज्य विस्तार (Harsha's Conquest and expansion of his empire on the map of India)

8.3.3 हर्ष की शासन प्रणाली (Harsha's System of governance)

8.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of Text)

8.4.1 हर्ष के धार्मिक विश्वास एवं नीति (Harsha's religious belief and ethics)

8.4.2 हर्षकालीन सामाजिक–आर्थिक स्थिति (Harsh period Socio economics Status)

8.4.3 हर्षकालीन साहित्य तथा शिक्षा (Harsh period literature and education)

8.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

8.6 सारांश/सक्षिप्तिका (Summary)

8.7 संकेत–सूचक (Key-words)

8.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT)

8.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

8.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

8-1 vf/kxe mnn' ; (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी योग्य होंगे :–

- हर्ष की विजय व साम्राज्य–विस्तार का विद्यार्थी वर्णन कर सकेगे।
- शिक्षार्थी भारत के मानचित्र पर हर्ष की विजय एवं उसके साम्राज्य विस्तार को अंकित करने मे समर्थ हो सकेंगे।
- हर्ष की शासन–प्रणाली को विद्यार्थी समझ सकेंगे।
- हर्षकालीन सामाजिक–आर्थिक नीति का वर्णन कर सकेंगे।
- हर्ष के धार्मिक विश्वास एवं नीति पर समूह में चर्चा कर सकेंगे।
- हर्षकालीन साहित्य तथा शिक्षा की प्रगति का उल्लेख कर सकेंगे।

8-2 ifjp ; (Introduction)

गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद उत्तरी भारत में फैले राजनीतिक अव्यवस्था के बीच स्थापित छोटे–छोटे राज्यों की प्रमुख स्थापना को लेकर आपस में झगड़ा होने गली। इन परस्पर झगड़ों की अराजक परिस्थितियों के बीच हूणो के आक्रमण ने स्थिति को और भी विकट कर दिया। इस दौरान भारतीय राजनीतिक एवं समाज की स्थिति विश्वराव के कारण दयनीय स्थिति के दौर से गुजर रही थी। इन परिस्थितियों के बीच स्थापित बहुत से छोटे–छोटे राज्यों में एक महत्त्वपूर्ण राज्य वर्धन राज्य का उदय हुआ। इस राज्य की नींव आज के हरियाणा के थानेश्वर में पुष्पभूति ने रखी। इसलिए पुष्पभूति के नाम पर प्रारंभ में स्थापित इस राज्य के वंश को पुष्पभूति वंश के नाम से जाना गया। ऐतिहासिक साक्ष्यों से इस वंश के प्रारंभिक शासकों के विषय में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं होती है। पुष्पभूमि के उत्तराधिकारियों के नामों में नरवर्धन, आदित्यवर्धन, राज्यवर्धन आदि के नाम मिलते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि पुष्पभूति के बाद के शासको के नामों में वर्धन शब्द जुड़ा हुआ है। इस कारण आगे

चलकर पुष्यभूति वंश वर्धन वंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस वर्धन वंश में सबसे प्रसिद्ध महान शासक हर्षवर्धन हुआ। हर्षवर्धन का राज्यकाल 606 ई. से लेकर 647 ई. तक रहा। यात्रियों का राजकुमार तथा नीति का पंडित व आधुनिक शाक्य मुनि के नाम से प्रसिद्ध चीनी यात्री हवेनसांग की रचना 'सी–यू–की' (Si-Yu-Ki) से हमें हर्ष के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। बाणभट्ट के हर्षचरित से हर्ष के प्रारंभिक जीवन व राज सिंहासन की प्राप्ति से लेकर साम्राज्य–विस्तार, कुशल–प्रबंधन, तत्कालीन सामाजिक–आर्थिक स्थिति, धर्म–सभा का आयोजन तथा शिक्षा–साहित्य व कला–संस्कृति आदि के बारे में विस्तार से पता चलता है। इस प्रकार ऐतिहासिक साक्ष्यों से पता चलता है कि हर्षवर्धन ने उत्तरी भारत के अधिकतर भाग पर विजय प्राप्त करके एक शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना की और अपनी राजधानी थानेश्वर से बदलकर कन्नौज में स्थापित की थी। उसके कुशल शासन–प्रबंध के कारण राज्य में शिक्षा और साहित्य के विकास के लिए उत्साहपूर्ण वातावरण तैयार हुआ और इस क्षेत्र में असाधारण कार्य हुये। हर्षवर्धन ने अपने शासन काल में बौद्ध धर्म की उन्नति के लिए प्रशंसनीय कार्य किये और यह धर्म एक बार फिर सर्वप्रिय धर्म के रूप में प्रचलित हो गया। चीनी यात्री हेनसांग गुप्त काल में स्थापित नालंदा विश्वविद्यालय को उस समय का सबसे बड़ा तथा प्रसिद्ध विश्वविद्यालय बताया है। महान बौद्ध शिक्षा केन्द्र नालंदा विश्वविद्यालय की संपूर्ण व्यवस्था के लिए हर्षवर्धन ने 100 गांव अनुदान में दे रखे थे। शिक्षा केंद्र के सुंदर व्यवस्था का पता इसी से चलता है कि यहाँ चीन, कोरिया, तिब्बत, लंका, मंगोलिया व दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों के विद्यार्थी पढ़ने आते थे। यहां बौद्ध धर्म की शिक्षा के अतिरिक्त चिकित्सा, रस–रसायन विद्या, शब्द विद्या अथर्ववेद, सांख्य एवं योग शास्त्र का भी अध्ययन होता था। विद्याप्रेमी हर्ष ने नागानन्द, प्रियदर्शिका तथा रत्नावली नाटको की रचना की थी। हर्षवर्धन ने अपनी राजधानी कन्नौज तथा प्रयोग में विशाल धार्मिक सम्मेलन आयोजित किए। ये सम्मेलन हर्ष के शासनकाल की एक महत्त्वपूर्ण घटना के रूप में इतिहास में दर्ज है। इस प्रकार इन तमाम सफलताओं के कारण उसे प्राचीन भारतीय इतिहास के सबसे महान शासकों में से एक माना जाता है।

8-3 v/;k; d e[; fcUn **(Main body of Text)**

8-3-1 g"k dh fot; o lkezkT;&foLrkj (Harsha's Conquest and Expansion of the Empire)

गुप्त साम्राज्य के समाप्ति के बाद भारत की विलुप्त हुई राजनैतिक ऐकता को फिर से स्थापित करने का प्रयास वर्धन वंश के महान् शासक हर्षवर्धन ने किया। अपने इस अभियान में हर्षवर्धन ने सर्वप्रथम अपनी राजधानी को थानेश्वर से कन्नौज में स्थापित किया। कन्नौज उस समय के भारत में राजनीति का महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। इस कारण थानेश्वर व कन्नौज का राज्य प्राप्त हो जाने के बाद हर्षवर्धन की गिनती उत्तर भारत के शक्तिशाली व महत्त्वपूर्ण शासको में होने लगी। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने विवरण हर्ष की विजयों के बारे में लिखा है। यद्पि ह्वेनसांग के विवरण में विजित राज्यों व उनके समयों का क्रमवर विवरण प्राप्त नहीं होता है। फिर भी उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर हर्ष की विजयों तथा उनके साम्राज्य विस्तार का विवरण निम्न प्रकार है –

1- xkM dh fot; **(Conquest of Gour)** & गौड राज्य आज के भारत के बंगाल राज्य में स्थित था। गौड के शासक शशांक ने हर्षवर्धन के भाई राज्यवर्धन की हत्या कर दी थी। इसलिए हर्षवर्धन ने सर्वप्रथम अपने विजय अभियान में शशांक को परास्त करने के लिए कामरूप अर्थात् आज के असम के राजा भास्करवर्मा के साथ संधि करके दोनों ने मिलकर शशांक पर आक्रमण किया। इससे घबराकर शशांक उड़ीसा की तरफ भाग गया। अंजाम अभिलेख (619 ई.) से पता चलता है कि उस समय बंगाल व उड़ीसा पर शशांक का शासन था। शशांक मजबूत शासक था। बाद के अभिलेखो से पता चलता है कि शशांक की मृत्यु के बाद ही लगभग 634 ई. में बंगाल पर हर्ष का विजय संभव हो सका। इतिहासकार डॉ आर. सी. मजूमदार अपने विवरण में इस बात की पुष्टि करते हैं। इसके अलावा हर्ष की गौड विजय की सूचना हमें बाणभट्ट व ह्वेनसांग के विवरण में भी यत्र–तत्र प्राप्त होता है।

2- **पांच प्रदेशों की विजय (Conquest of Five States)** & ह्वेनसांग के विवरण से पता चलता है कि हर्षवर्धन एक बड़ी सेना के साथ पांच प्रदेशों– पंजाब, कन्नौज, बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा के साथ लगातार 6 वर्षों तक युद्ध करता रहा। उसने अपने कुशल सैन्य प्रबंधन के द्वारा इन पांच प्रदेशों को विजित करके इनका स्वामी बन गया। जिसके फलस्वरूप उत्तर भारत के राजनैतिक ताकतों के बीच हर्ष की प्रतिष्ठा बढ़ गई।

3- cYyHkh dh fot; **(Conqeust of Valabhi)** & उत्तर में हर्ष के साम्राज्य तथा दक्षिण में वातापि के चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के साम्राज्य के मध्य स्थित वल्लभी राज्य आज के भारत के गुजरात प्रांत में स्थित था। इस प्रकार हर्षवर्धन के लिए भौगोलिक दृष्टिकोण से इस राज्य का काफी महत्त्व था। इसलिए हर्ष वल्लभी को जीतकर इसे अपने राज्य का दक्षिण भागों में विस्तार का आधार बनाने को उत्सुक था। उस समय वल्लभी पर ध्रुवसेन द्वितीय का शासन था। गुर्जर नरेश दद्दा के नौसारी दान–पात्र अभिलेख से पता चलता है कि हर्ष ने 630–640 ई. के बीच वल्लभी पर आक्रमण किया और वहाँ के शासक ध्रुवसेन द्वितीय को राज्य छोड़कर गुर्जर नरेश के पास शरण लेने के लिए मजबूर कर दिया था। इस प्रकार हर्ष ने अपनी कूटनीतिज्ञ सफलता का परिचय देते हुए वल्लभी पर अधिकार कर लिया।

4- **पुलकेशिन द्वित**h; ls ;q) **(War with Pulkesin II)** & आज के दक्षिण भारत के कर्नाटक प्रांत में स्थित वातापि या बादामी के चालुक्य वंश का पुलकेशिन **II** एक शक्तिशाली शासक था। हर्षवर्धन अपने विजय अभियान को आगे बढ़ाते हुए साम्राज्य की सीमा को नर्मदा नदी तक पहुँचा दिया था। दूसरी ओर शक्तिशाली शासक पुलकेशिन **II** भी उत्तर की ओर अपने राज्य का विस्तार करने को उत्सुक था। ऐसे में दोनों के बीच युद्ध अवश्यम्भावी हो गया। चालुक्य शासक के ऐहोल अभिलेख तथा ह्वेनसांग के विवरण से नर्मदा नदी के तट पर हर्ष व पुलकेशिन द्वितीय के बीच हुए युद्ध का पता चलता है। इस युद्ध में पुलकेशिन ने हर्ष को पराजित कर दिया था और दक्षिण की ओर हर्ष के साम्राज्य–विस्तार को रोक दिया।

5- dke:i ds jktk dh v/khurk **(Subjugation of the King of Kamprup)** & आधुनिक भारत के असम राज्य का ही प्राचीन नाम कामरूप था। गौड़ शासक शशांक के ऊपर विजय प्राप्ति के दौरान हर्षवर्धन ने कामरूप के शासक भास्कर वर्मा के साथ संधि की थी। यद्यपि कामरूप के शासक की अधीनता के संबंध में इतिहासकारों के अलग–अलग मत हैं, परंतु फिर भी ह्वेनसांग के विवरण से पता चलता है कि हर्ष अपने राज्य विस्तार के प्रभाव को ब्रह्मपुत्र घाटी तक फैलाने में सफल रहा। साथ ही ऐतिहासिक विवरण से पता चलता है कि कामरूप के शासक भास्कर वर्मा उपहारों सहित कन्नौज की सभा में उपस्थित हुआ था। इससे यह पता चलता है कि कामरूप के राजा ने हर्ष की अधीनता स्वीकार की थी।

6- fla/k dh fot; **(Conquest of Sind)** ½& चीनी यात्री ह्वेनसांग व कुछ इतिहासकारों के विवरण से यह पता चलता है कि सिंध पर हर्ष की विजय संभव नहीं हो सका तथा यह एक स्वतंत्र राज्य बना

रहा। फिर भी बाणभट्ट के हर्षचरित में इस बात का उल्लेख मिलता है कि हर्ष ने सिंध के शासक को पराजित कर उसके प्रदेश को जीत लिया तथा उसकी संपति पर अपना अधिकार कर लिया।

7- **नेपाल तथा कश्मीर पर विजय (Conquest of Nepal Kashmir)** & यद्यपि नेपाल तथा कश्मीर विजय को लेकर इतिहासकारों में एक मत नहीं है तथापि इतिहासकार फ्लीट, स्मिथ तथा बाणभट्ट के हर्षचरित हर्षवर्धन के नेपाल व कश्मीर विजय की पुष्टि करते हैं। कश्मीर के इतिहास पर प्रसिद्ध रचना कल्हण की राजतरंगिणी भी हर्षवर्धन के कश्मीर विजय की पुष्टि करती है।

8- x:tke fot ; **(Conquest of Ganjam)** & आधुनिक भारत के उड़ीसा राज्य में स्थित गंजाम पर हर्ष ने 643 ई. में आक्रमण करके इस पर अपना अधिकार कर लिया। चीनी यात्री ह्वेनसांग के विवरण से हर्षवर्धन के गंजाम विजय की पुष्टि होती है।

8-3-2 Hkkjr d: ekufp= ij g"k: dh fot ; ,o: mld: lkekT; foLrkj **(Harsha's Conquest and expansion of his empire on the map of India)**

हर्ष ने अपने विजित क्षेत्रों में कुशल शासन–प्रबंध की स्थापना किया। अपने राज्य की तरक्की उन्नति के लिए एशिया के कई देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध भी स्थापित किये जिनमें ईरान तथा चीन उल्लेखनीय है। ऐतिहासिक विवरणों से पता चलता है कि हर्ष तथा ईरान के शासके के बीच उपहारों के भेजने की परंपरा स्थापित थी। हर्ष व चीन के शासक के बीच दूतो के भेजने के स्तर तक का मैत्रीपूर्ण संबंध था। इससे हर्ष को अपने साम्राज्य के विस्तार में भी सहायता मिली।

चूँकि इतिहासकारों के बीच हर्ष की विजयें अतिसंदिग्ध रूप मे है, इसलिए हर्ष के साम्राज्य–विस्तार को निर्धारित करना इतिहास में एक कठिन कार्य के रूप में माना जाता है। ऐतिहासिक साक्ष्य हर्ष के पैतृक राज्य को दक्षिण पंजाब जिसके अधिकांश भाग आज हरियाणा में शामिल है व राजपूताना को सम्मिलित मानते रहे है। बाद में वर्धन वंश के महान शासक के रूप में हर्षवर्धन ने अपनी विजयों के द्वारा साम्राज्य का विस्तार किया और अपनी राजधानी थानेश्वर से कन्नौज के मौखरी राज्य को अपने साम्राज्य में मिलाकर कन्नौज में स्थापित किया। जिसमें उत्तर प्रदेश व मगध का कुछ भाग भी सम्मिलित था। बाद में शंशाक की मृत्यु के बाद हर्ष ने बंगाल तथा उड़ीसा पर अपना अधिकार कर लिया था। पश्चिमोत्तर में सिंध का राज्य उसके प्रभाव क्षेत्र में था। पूर्वी मालवा तथा बल्लभी राज्य को विजित कर हर्ष ने गुजरात तक अपने राज्य का विस्तार कर लिया। इस प्रकार पश्चिम भारत में

यमुना तथा नर्मदा के बीच का सम्पूर्ण क्षेत्र को हर्ष ने विजित करके अपने साम्राज्य का विस्तार किया था। उत्तर में हर्ष का साम्राज्य नेपाल की सीमा तक फैला हुआ था।

(Source-https://www.google.com/imgres?imgurl=https%3A%2F%2Fwww.mapsofindia.com%2Fhistory%2Fharsha-empire-map.jpg)

8-3-3 g"kZ dh 'kklu&Á.kkyh (Harsha's System of governance)

बाणभट्ट के हर्षचरित तथा ह्वेनसांग के यात्रा विवरण से यह पता चलता है कि हर्षवर्धन ने अपनी विजयों के द्वारा जो साम्राज्य का विस्तार किया उसमें उसने एक कुशल प्रशासक के रूप में सुंदर शासन–प्रणाली की स्थापना की। अतः हर्षवर्धन विजेता तथा साम्राज्य निर्माता के साथ–साथ एक कुशल प्रशासक भी था। गुप्तकालीन शासन–प्रणाली की तरह हर्षवर्धन के काल में भी शासन–व्यवस्था का स्वरूप राजतंत्रात्मक ही था। राजा को महाराजाधिराज, परमभट्टारक, चक्रवर्ती तथा परमेश्वर जैसे महान् उपाधियां दी जाती थी। हर्षवर्धन के शासन–प्रणाली की मुख्य विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं –

jktk (King) %& शासन का स्वरूप राजतंत्रात्मक इस समय राजतंत्रात्मक था। राजा या सम्राट प्रशासनिक व्यवस्था में सर्वोच्च अधिकारी होता था। समस्त कार्यपालिका शक्ति राजा में ही निहित होता था। न्याय व्यवस्था में प्रधान न्यायाधीश के रूप में राजा का निर्णय ही अंतिम निर्णय होता था। वह सेना का सबसे बड़ा सेनापति हुआ करता था। प्रजा के रक्षण व पालन का सम्पूर्ण दायित्व हर्षवर्धन ने एक राजा के रूप में सफलतापूर्वक निभाया। परमभट्टारक, महाराजाधिराज, परमेश्वर, परमदेवता जैसी राजा की उपाधियों से पता चलता है कि इस काल में राजा दैवी उत्पत्ति में विश्वास रखता था। राज्य के

महत्त्वपूर्ण पदों पर नियुक्ति स्वयं राजा करता था। ऐतिहासिक साक्ष्यों से पता चलता है कि सभी शक्तियों से सम्पन्न होने के बावजूद हर्षवर्धन निरकुंश नहीं था। ह्वेनसांग हमें बताता है कि, 'राजा केक लिए दिन बहुत छोटा होता था, उसने दिन को तीन भागों में बांट रखा था जिसमें एक भाग वह प्रशासनिक कार्यों में तथा शेष दो भाग धार्मिक एवं प्रजा के कार्यों में लगाता था। वह कभी–कभी तो इतना इन कार्यों में व्यवस्त हो जाता था कि खाना–पीना व सोना भूल जाता था।' बाणभट्ट ने हर्षचरित में उसकी तुलना विष्णु, पशुपति, इन्द्र व कुबेर से की है। इतिहासकार डॉ. बी. एन. शर्मा के अनुसार, "उसके प्रशासन का मुख्य आधार प्रजा को सुखी बनाना था।"

lkear rFkk eaf=ifj"kn~ (Feudal Lord and The Council of Ministers) %& प्राचीन भारत में सातवाहन वंश के शासको ने सामंतवादी प्रथा को आरंभ किया था। उसके बाद लगभग सभी शासको के काल में सामंतवादी प्रथा का विस्तार होता रहा। एक मजबूत शासक के काल में उसके अधीनस्थ शासकों को सामंत की संज्ञा दी जाती थी। हर्षकालीन साहित्य विभिन्न प्रकार के सामंतो की सूचना देते है। हर्ष के शासनकाल में अधीनस्थ शासकों को महाराज तथा महासामंत कहा जाता था। इसके अलावा अधीनस्थ शासको को सामंत के रूप में आप्तसामंत शत्रु सामंत, प्रतिसामंत तथा प्रधान सामंत आदि नामों से भी पुकारते थे। बसखेड़ा तथा मधुबन के लेखों से हमें ज्ञात होता है कि हर्षवर्धन ने स्कंदगुप्त और ईश्वरगुप्त को करदीकृत महासांमत बनाया था।

राज–काज चलाने में राजा को सहायता देने के लिए एक मंत्रिपरिषद् का गठन किया जाता था। हर्षवर्धन के काल में इस प्रकार के मंत्रिपरिषद् व्यवस्था का उल्लेख बाणभट्ट व ह्वेनसांग दोनो के विवरण से प्राप्त होता है। उस काल में मंत्रिपरिषद के मंत्रियों को सचिव या अमात्य कहा जाता था। मंत्रिपरिषद् राजा को सभी शासन–सम्बन्धी मामलों में सलाह देती थी। उत्तराधिकार जैसे महत्त्वपूर्ण पदों पर नियुक्ति के समय मंत्रिपरिषद् की राय लेना आवश्यक समझा जाता था। हर्ष के समय में उसका ममेरा भाई भाण्डी प्रधान सचिव था प्रधानमंत्री था। विदेश सचिव या विदेश मंत्री के पद पर अमनी सुशोभित था जबकि उसका प्रधान सेनापति सिंह्नाद था। हर्षकालीन शासन–प्रणाली में 'महासन्धिविग्रहक' विदेश सचिव को कहा जाता था। वायसराज अथवा गवर्नर को राजस्थानीय कहा

जाता था। हर्ष के समय में अश्वारोही सेना का प्रमुख कुंतला तथा गजसेना का प्रधान स्कंदगुप्त था। हर्षवर्धन के शासन–प्रणाली की योजना की सूचना हमें ह्वेनसांग व बाणभट्ट के विवरण से प्राप्त होता है। इनसे पता चलता है कि मंत्रिपरिषद योग्य तथा ईमानदार व्यक्तियों को ही स्थान दिया जाता था। हर्ष के शासन काल में सैनिक अधिकारियों को तो नकद वेतन दिया जाता था किंतु अन्य कर्मचारियों व मंत्रियों को नकद वेतन के स्थान पर भूमि के टुकड़े दे दिए जाते थे।

हर्षवर्धन के अभिलेखों तथा मुद्राओं से हमें कुछ अन्य पदाधिकारियों की सूची प्राप्त होती है। इनमें सेनाध्यक्ष–महाबलाधिकृत, प्रातीय शासक दूत/उपरिक महाराज, आयुक्त–साधारण अधिकारी, मीमांसा–न्यायाधीश, महाप्रतिहार–राजमहल का रक्षक, भोगपति–उपज का राजकीय भाग ग्रहण करने वाला, अक्षपटलिक–लेखा अधिकारी, अध्यक्ष लेखक– क्लर्क, सेवक आदि प्रमुख थे। लेखक को कई स्थानों पर दीवर के नाम से भी संबोधित किया जाता है। चीनी यात्री ह्वेनसांग के विवरण से पता चलता है कि प्रशासनिक कार्यों में इन अधिकारियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। हर्षवर्धन की शासन–प्रणाली में प्रजा के हित के दृष्टिकोण से जनसाामन्य, कर्मचारियों व अधिकारियों के बीच एक कड़ी के रूप में समन्वित व्यवस्था थी जिसका पूरा लेखा–जोखा राजा के समक्ष प्रस्तुत करना होता था। प्रजा को सुखी बनाने के लिए हर्षवर्धन अपने आपको हर समय उपलब्ध रखता था।

अन्य प्रशासनिक इकाईयां (Other Administrative Units) – हर्षवर्धन ने अपने शासन–व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए अपने साम्राज्य को कई प्रांतो में विभाजित कर रखा था, जिन्हें 'भुक्ति' कहा जाता था। प्रत्येक प्रांत में एक मुख्य शासक की नियुक्ति होती है। प्रांतीय शासक को 'गोप्ता' कहा जाता था। गोप्ता को उपरिक महाराज या राजस्थानीय नाम से भी पुकारा जाता था। सामान्यतः प्रमुख व महत्त्वपूर्ण प्रांतों में गोप्ता का पद राजपरिवार से संबंधित व्यक्तियों को ही दिया जाता था। ऐतिहासिक साक्ष्यों–मधुबन तथा बांसखेड़ा के अभिलेखों में श्रावस्ती तथा अहिच्छत्र भुक्तियों का उल्लेख मिलता है।

प्रशासनिक सुविधा के दृष्टिकोण से भुक्ति का विभाजन जिलों में किया जाता था। जिले को विषय कहा जाता था। जिले या विषय के प्रधान को 'विषयपति' कहा जाता था। इनकी नियुक्ति प्रांतपति अथवा सम्राट के द्वारा होती थी। प्रांतों के कुछ प्रमुख नगरों में विषयपतियों की अदालतों की व्यवस्था का

उल्लेख भी मिलता है। इसके अलावा प्रांतों तथा जिलों के अनेक पदाधिकारियों जो शासन–प्रणाली में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते थे उनका पता चलता है। जिनमें पुलिस को 'दंडपाशिक', नगर के पूंजीपतियो के प्रतिनिधि को 'नगरश्रेष्ठी', कारखानों का प्रतिनिधि 'सार्थवाह' व लेखकों को प्रतिनिधि 'कायस्थ' नामों से पुकारे जाते थे।

जिले के अंतर्गत कई तहसील होते थे जिन्हें पाठक के नाम से जाना जाता था। पाठको के अंतर्गत शासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम होती थी। ग्राम शासन को सुचारू तरीके से चलाने के लिए 'ग्रामक्षपरलिक' पदाधिकारी का उल्लेख मिलता है। उसकी सहायता के लिए अनेक करणिक होते थे। हर्षकालीन प्रशासनिक इकाईयों को हम निम्न रेखाचित्र के द्वारा अच्छी तरह से समझ सकते है –

साम्राज्य ———भुक्ति ——— विषय ——— पाठक ——— ग्राम

(राष्ट्र) (प्रांत) (जिला) (तहसील)

हर्षकालीन शासन–प्रणाली में शासक की यह व्यवस्था थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ गुप्तकाल से ही दिये गये थे। इतिहासकार डॉ. नी.सी. पाण्डे के अनुसार "प्रांतीय एवं ग्रामीण शासन पद्धति में जनता के प्रतिनिधियों को सम्मिलित करके राजतंत्र के अंतर्गत स्थानीय शासन को काफी अधिकार दे दिये गये थे। ह्वेनसांग में कर्त्तव्यपरायणता व ईमानदारी का बखूबी पालन होता था जिस कारण राज्य में सुख–शांति व सद्भावना का वातावरण था।

आय और व्यय (Income and Expenditure) – हर्षवर्धन की मजबूत सैन्य–व्यवस्था व शासन प्रणाली को चलाने के लिए राज्य की आय का मुख्य स्त्रोत भूमि कर था। भूमि कर के रूप में उपज का 1/6 भाग लिया जाता था। चीनी यात्री ह्वेनसांग अपने विवरण से बाता है कि हर्ष के समय में कर बहुत हल्के थे। भूमि कर के अतिरिक्त हर्षकालीन ताम्रपत्रो में दो अन्य करों – हिरण्य तथा बलि का भी उल्लेख मिलता है। हिरण्य कर नकद लिया जाता था तथा प्राप्त जानकारी के अनुसार समवतः इसे व्यापारी वर्गों से लिया जाता था। जबकि बलि कर के बारे में ऐतिहासिक साक्ष्यों से कोई निश्चित जानकारी प्राप्त नहीं होती है। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि यह कोई धार्मिक कर होगा। इन करों के अतिरिक्त अन्य करों का भी प्रावधान था जैसे – व्यापारिक मार्गों, घाटों तथा बिक्री की वस्तुओं आदि

पर कर। ह्वेनसांग के विवरण के अनुसार राजकीय आय को चार भागों में विभाजित करके उचित तरीके से खर्च किया जाता था। सरकारी आय का एक भाग सरकारी कार्यों पर, दूसरा भाग राजकीय पदाधिकारियों के वेतन में, तीसरा भाग विद्वानों को पुरस्कार देने में तथा चौथा भाग विभिन्न समुदायों को दान देने में खर्च होता था।

न्याय प्रबंधन (Judicial Administration) – हर्षकालीन न्याय व्यवस्था सुंसगठित थी। राजा का न्याय अंतिम न्याय होता था। चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार, "क्योंकि सरकारी शासन ईमानदारी से होता था और प्रजा का पारस्परिक संबंध अच्छा था। इसलिए अपराधी वर्ग बहुत छोटा था।" फिर भी राज्य में अपराध होते थे तथा उनके लिए कठोर दंड का प्रावधान था। हर्षवर्धन के काल में राज्य दण्ड विधान प्रक्रिया के अनुसार राजद्रोह के लिए आजीवन कारावास के दंड का प्रावधान था। सामाजिक एवं नैतिक नियमों का उल्लंघन करने वालों को अंग–भंग, देश निकाला अथवा वनवास जैसे दण्डों का प्रावधान था। साधारण अपराधो के लिए अपराधी से जुर्माने वसूले जाते थे। राज्य में अपराधी को अपने आपको निरपराध सिद्ध करने के लिए जल, अग्नि तथा विष परीक्षाएं भी देनी पड़ती थी। कुछ विशेष अवसरों पर राजा द्वारा बंदियों को मुक्त करने की प्रथा की सूचना भी हमें हर्षकालीन न्याय–प्रबंधन में देखने को मिलता है। देश में शांति–व्यवस्था कायम रखने के लिए पुलिस विभाग की स्थापना की गई थी। हर्षवर्धन काल में पुलिस कर्मियों 'चाट' या 'भाट' के नाम से पुकारा जाता था। पुलिस विभाग के अधिकारी को दण्डपाशिक तथा दाण्डिक कहते थे । यद्यपि हर्ष के काल में पर्याप्त दण्ड व्यवस्था थी फिर भी ह्वेनसांग के विवरण से पता चलता है कि जल तथा स्थल दोनों ही मार्ग सुरक्षित नहीं थे। चोर, लूटेरों, डाकुओं का भय व्याप्त था।

सैनिक प्रबंध (Military Administration) – बाणभट्ट के हर्षचरित तथा ह्वेनसांग के विवरणों से हर्ष द्वारा अपने साम्राज्य विस्तार व उसकी रक्षा के लिए गठित विशाल सेना की सूचना प्राप्त होती है। ऐहोल अभिलेख व ह्वेनसांग के विवरण से हर्ष के विशाल सेना में सेना के तीन अंगों पैदल, अश्वारोही तथा हाथी को मिलाकर इनकी संख्या सथायी सेना के रूप में 6 लाख तक अनुमान लगायी जाती है। इस समय युद्ध में रथों का महत्त्व कम हो गया था। हर्षकालीन अस्त्रो–शास्त्रो का वर्णन हर्षचरित में

मिलता है। सैनय–सामग्री को सुरक्षित रखने के लिए एक 'रणभण्डागाराधिकरण' नाम से अलग विभाग की स्थापना की गयी थी। इस विभाग का प्रधान 'रणमण्डागारिक' होता था।

'महासधिविग्रहक' सेना का सबसे बड़ा अधिकारी कहलाता था। सैन्य–संचालन का कार्य करने वाले मुख्य अधिकारी को महाबलाधिकृत कहते थे जिनके अधीन अनेक छोटे–छोटे कर्मचारी होते थे।

8-4 v/;k; d: vkx: dk e|[; Hkkx **(Further Main body of the text)**

8-4-1 g"k: d: /kkfe:d fo'okl ,o: uhfr **(Harsha's Religious belief and Ethics)**

अपने पूर्वजों की भांति हर्ष आरंभ में हिंदू धर्म में या ब्राह्मण धर्म में विश्वास रखता था। वह ब्राहमण धर्म की रीति–रिवाजों व पंरपराओं में विश्वास रखते हुए उनकी नीति के अनुसार शिव एवं सूर्य की उपासना करता था। किंतु अपने बाद के जीवन में उसका झुकाव बौद्ध धर्म की हीनयान शाखा की ओर हो गया। फिर चीनी यात्री ह्वेनसांग के प्रभाव में आकर हर्षवर्धन महायान शाखा का अनुयायी हो गया। यद्यपि हर्षवर्धन का झुकाव बौद्ध धर्म की ओर बढ़ा फिर भी हर्ष के धार्मिक विश्वास व नीति में सहनशीलता व उदारता का दर्शन होता है। जिससे बौद्ध धर्म के साथ–साथ अन्य धर्मों को भी फलने–फूलने व आगे बैठने का अवसर मिला। हर्षवर्धन के धार्मिक विश्वास व नीति का वर्णन इस प्रकार है –

ck) /ke: dk lj{k.k & बौद्ध भिक्षु दिवाकर मित्र के संपर्क में आकर हर्षवर्धन बौद्ध धर्म की ओर प्रवृत्त हो गया तथा बाद में ह्वेनसांग के प्रभाव से वह बौद्ध धर्म की महायान शाखा को अपना लिया। उसने अशोक तथा कनिष्क की तरह बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए कई कार्य किए जिसका वर्णन इस प्रकार है–

- सर्वप्रथम हर्ष ने राज्यादेश द्वारा अपने साम्राजय में पशु वध तथा मांस–भक्षण पर रोक लगा दी।
- राजकोष से बौद्ध भिक्षुओं को मुक्त हृदय से अनुदान दिये।
- बड़ी संख्या में स्तूपो तथा विहारों का निर्माण करवाया।
- बौद्ध धर्म में उत्पन्न मतभेदों को दूर करने के लिए प्रतिवर्ष बौद्ध भिक्षुओ की सभाओ का आयोजन करने आरंभ किये। धार्मिक एकता के लिए कठोर नियम बनवाए।

- अशोक और कनिष्क की भांति बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए विदेशों में धर्म प्रचारक भेजन की व्यवस्था की।
- उस समय के प्रसिद्ध बौद्ध विश्वविद्यालय नालंदा बिहार को 200 गांवों की लगान मुक्त जमीन अनुदान के रूप में दी।

इस प्रकार हर्ष ने बौद्ध धर्म की उन्नति के प्रयास किए थे। डॉ. राधाकुमुद मुखर्जी ने लिखा है कि, "ह्वेनसांग ने हर्ष को पूरी तरह से महायान धर्म में दीक्षित किया था। इसी से उत्साहित होकर हर्ष ने कन्नौज में एक धर्म सभा का आयोजन किया ताकि ह्वेनसांग सब धर्मों पर महायान धर्म की श्रेष्ठता प्रमाणित कर सके।

धार्मिक सहिष्णुता (Religious Tolerance) – यद्यपि बौद्ध धर्म के प्रति पूरी आस्था जताते हुए हर्ष ने उत्सुकता के साथ इसका प्रचार–प्रसार किया परंतु ऐतिहासिक साक्ष्य यह बताते है कि फिर भी हर्ष ने अन्य धर्मों के प्रति अपने उदार हृदय व सहिष्णुता का व्यवहार अपनाया। वह बौद्ध भिक्षुओं के साथ–साथ ब्राह्मणों को भी अनुदान देने का कार्य पूर्ण उत्साह के साथ अपने राज्य में करते रहे। हर्षवर्धन ने कभी भी अपने राज्य में कवियो व विद्वानों के संरक्षण व सम्मान में धार्मिक भेद–भाव को नहीं आने दिया। बौद्ध धर्म के प्रति गहरी आस्था के बावजूद हिन्दू देवताओं का सम्मान भी उसने उसी उत्साह से किया। उसके द्वारा कन्नौज व प्रयाग के धार्मिक सम्मेलनों में बुद्ध की मूर्ति की पूजा के साथ–साथ शिव तथा सूर्य की पूजा उसकी धार्मिक सहनशीलता का परिचायक है। इतिहासकार आर.सी. मजूमदार का कथन इस संबंध प्रासंगिक है कि, "यद्यपि हर्ष का बाद में बौद्ध धर्म की ओर झुकाव हो गया था, परंतु शायद उसने अपना प्राचीन धर्म पूर्णतया छोड़ा नहीं और न ही अन्य धर्मों को छोड़कर बौद्ध धर्म को सरंक्षण प्रदान किया।"

धार्मिक सभाएं (Religious Assemblies) – इतिहासकार डॉ. आर. के. मुखर्जी के अनुसार, "इतिहास में हर्ष ही एक ऐसा सम्राट हुआ जिसे समय–समय पर नियमानुसार आर्थिक और सांस्कृतिक लक्ष्यों से जन सभाओं के आयोजन के आविष्कार का श्रेय प्राप्त है। उसने अपनी राजधानी कन्नौज तथा प्रयाग में धार्मिक सम्मेलन आयोजित किए।" इनका विवरण निम्न प्रकार है –

कन्नौज सभा (Kanauj Assembly) – हर्ष ने चीनी यात्री ह्वेनसांग के सभापतित्व में कन्नौज में बौद्ध धर्म की महायान शाखा का प्रचार करने के उद्देश्य से एक विशाल धार्मिक सभा का आयोजन किया। यद्यपि कुछ इतिहासकार उसके इस सम्मेलन में महायान संप्रदाय के प्रति पक्षपात दर्शाने तथा अन्य धर्मों के प्रति उसकी असहिष्णुता व्यक्त करने वाला आयोजन बताते है। फिर भी ऐतिहासिक साक्ष्यों से पता चलता है कि हर्ष ने अपने इस धार्मिक सभा में 18 देशो के राजा, 3000 ब्राह्मणों व जेनियों 3000 बौद्ध भिक्षुओं तथा नालंदा बिहार के 1000 भिक्षुओं ने भाग लिया। 18 दिनों तक चलने वाली इस सभा में धार्मिक वाद–विवाद के बीच अंततः ह्वेनसांग ने महायान की श्रेष्ठता को प्रमाणित किया तथा हर्षवर्धन ने उसे 'महायान देव' तथा मोक्षदेव की उपाधियों से अलंकृत किया।

प्रयाग सभा (Prayag Assembly) – ह्वेनसांग के विवरण के अनुसार हर्षवर्धन अपने शासनकाल में प्रत्येक पांचवे वर्ष में प्रयाग अथवा इलाहाबाद में एक सभा का आयोजन करता था। इतिहास में इसे 'महामोक्षपरिषद' नाम से हम लोग जानते है। ह्वेनसांग स्वयं 643 ई. में इस प्रकार की छठी सभा में भाग लेने की बात अपने विवरण में करता है। ह्वेनसांग ने इसका विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। यह सम्मेलन सभी के लिए पूरी तरह से खुला था। इसमें बौद्ध भिक्षु, ब्राहमण, विद्वान, निर्धन अन्य किसी भी धर्म–संप्रदाय के लोग क्यों न हो सभी आमंत्रित होते थे। इस सम्मेलन में ऐतिहासिक साक्ष्य यह सूचना देते है कि हर्ष दिल खोलकर अपना सब कुछ दान में अर्पित कर देता था। यह सभा हर्ष के दानशीलता का परिचायक के रूप में इतिहास प्रसिद्ध है।

इस प्रकार बौद्ध धर्म का विशेष संरक्षण, धार्मिक सहिष्णुता, कन्नौज की धार्मिक सभा व प्रयाग की सभा के प्रंसगो से हर्ष के धार्मिक विश्वास व नीति का पता चलता है।

8-4-2 g"kdkyhu lkekftd&vkfFkd fLFkfr **(Harsh period Socioeconomic Status)**

ह्वेनसांग के विवरण से हमें हर्षकालीन सामाजिक अवस्था के बारे में पता चलता है। इसके विवरण बताते हैं कि उस समय के समाज में पूर्व की भांति वर्ण व्यवस्था मौजूद थी। चारों वर्णों–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र के अतिरिक्त ह्वेनसांग पांचवी मिश्रित जाति की चर्चा भी अपने विवरण में किया है। इतिहासकार ऐसा अनुमान लगाते है कि संभवतः ह्वेनसांग जातियों एवं उपजातियों को ही मिश्रित जाति

के रूप में बताया है। ब्राह्मण अपने सदाचार व धर्म के लिए समाज में उच्च स्थान रखते थे। इतिहासकारों में पुष्पभूति व हर्षवर्धन के वंश को लेकर एक मत नहीं है। कुछ इतिहासकार उसके वश को क्षत्रिय बताते है तो कुछ उसका संबंध वैश्य से बताते है। इसलिए शासन करने वाले वर्ग के रूप में क्षत्रिय व वैश्य दोनों का उल्लेख ऐतिहासिक विवरणों से पता चलता है। फिर भी इस बात का प्रमाण मिलता है कि सत्ता की शक्ति शूद्रो एवं वैश्यो के हाथों में आ गई थी। देश–विदेश में व्यापार का कार्य वैश्य बढ़–चढ़कर करते थे। शूद्र खेती के कार्य में संलग्न थे। मिश्रित जातियों में निषाद, पुक्कास आदि का नाम देखने को मिलता है। हर्षकालीन समाज में कई जातियां अछूत समझी जाती थी तथा उन्हें नगरों एवं गांवो से बाहर रहने की व्यवस्था थी। ह्वेनसांग ऐसे अछूत समझे जाने वाली जातियों में कसाई, मछुए, भंगी आदि जातियों के नाम अपने विवरण में बताये है।

वैवाहिक संबंध प्रायः सवर्ण में ही होता था फिर भी समाज में अंतर्जातीय विवाह का प्रचलन था। अंतर्जातीय विवाह के अंतर्गत अनुलोम व प्रतिलोम दोनों प्रकार के विवाहो की चर्चा मिलती है। उच्च वर्गों में पुनर्विवाह देखने को नहीं मिलता है, परन्तु शूद्रो व वैश्यो में पुनर्विवाह होता था। सती प्रथा प्रचलित थी। हर्ष की माता यशोमति के सती होने का प्रयास इतिहास में मिलता है। विधवाएं श्वेत वस्त्र धारण करती थी। स्त्री तथा पुरूष दोनों के लिए समाज में शिक्षा का प्रावधान व प्रबंध था। ह्वेनसांग हर्षकालीन समाज में उच्च नैतिक जीवन स्वच्छता प्रेम लोग, सादगीपूर्ण भोजन में विश्वास करने वाले लोग, निश्चित योजनानुसार बने उनके आवास, उनके द्वारा धारण किये जाने वाले वस्त्र तथा आभूषण तथा अंत में उसके अंतिम संस्कार करने के तौर–तरीकों इन सब बातों का विवरण प्रस्तुत करता है। ह्वेनसांग लिखता है कि समाज में अधिकांश लोग ईमानदार तथा कर्त्तव्यपरायण थे। घरों के निर्माण में वे पत्थरों तथा पकाई गई ईंटों का प्रयोग करते थे। साधारण लोगों के घर कच्चे तथा बांसो के बने होते थे। दीवारें पर चूने, मिट्टी व गोबर का प्लास्टर किया जाता था। नगरों में कई मंजिलों के भवन होते थे। सड़के कम चौड़ी व गलियां घुमावदार होती थी।

सामान्यतः भोजन में गेहूँ, चावल का ही उपयोग होता था। घी, दूध, दही, चीनी, सरसों का तेल, मिश्री, रोटी आदि भोजन के मुख्य अंग थे। समाज में बहुत से लोग प्याज व लहसुन का भी प्रयोग नहीं करते

थे। मांस का भक्षण करने वाले लोग नगर के बाहर रहते थे। ब्राहमण मदिरा का सेवन नहीं करते थे। हर्षकालीन समाज में जन–सामान्य रंगीन व कामदार तड़क–भड़क वाले परिधान पसंद नहीं करते थे। वे प्रायः श्वेत वस्त्र धारण करते थे। वस्त्र सूती, रेशमी तथा ऊनी सभी प्रकार के होते थे। उच्च वर्ण के लोग बहुमूल्य वस्त्र पहनते थे। पुरूष एवं स्त्रियां दोनों ही आभूषण धारण करते थे।

उस समय के समाज में अंतिम संस्कार की क्रिया में दाह संस्कार, जल प्रवाह, जंगलों में शव त्याग, दफनाने की प्रथा आदि प्रचलित थी। तर्पण व पिण्ड दान में भी लोगो का विश्वास था।

बाणभट्ट का हर्षचरित तथा ह्वेनसांग की जीवनी हमें हर्षकालीन आर्थिक स्थिति के संबंध में सूचना प्रदान करते है। ह्वेनसांग के अनुसार भूमि के अधिकतर भागों पर सामंतो का अधिकार था। कुछ भूमि ब्राह्मणो को दान के रूप में दे दी गई थी। हर्ष के काल में जीवन–यापन का मुख्य आधार कृषि ही था। ह्वेनसांग अपने विवरण में ऋतुओं के अनुसार फलों, फूलो व अनाजों के उपजाने का ब्यौरा प्रस्तुत करता है। मगध में सुंगधित चावलों के उपजाने की सूचना भी प्राप्त होती है। पंजाब से लेकर मथुरा तक की भूमि को अत्यधिक उपजाऊ बताया है। इन क्षेत्रो में बड़े पैमाने पर गेहूँ जो, सरसों, फलों एवं दालो के उत्पादन होने की सूचना प्राप्त होती है।

कृषि के अतिरिक्त आर्थिक व्यवस्था में वाणिज्य, व्यापार, व्यवसाय व उद्योग–धंधों का प्रमुख स्थान था। ह्वेनसांग ने अपने विवरण में वस्त्र उद्योग को हर्षकाल में सबसे महत्त्वपूर्ण उद्योग के रूप में चित्रित किया है। इसके अलावा लकड़ी के कार्य प्रस्तर कला, धातु के कार्य, मूति–निर्माण उद्योग, आभूषण बनाने का कार्य, घरेलू वस्तुओं को बनाने वाला उद्योग पर्याप्त मात्रा में प्रचलन में थे। व्यवसायियो के लिए श्रेणियों की अलग–अलग व्यवस्था थी। वस्तुओं के क्रय–विक्रय के लिए बाजार की उत्तम व्यवस्था थी। ह्वेनसांग सम्पूर्ण देश के व्यापार को वैश्य वर्ग के हाथों में होने की बात करता है। थानेश्वर व्यापार प्रधान केन्द्र के रूप में समृद्धि के शिखर पर था। उज्जयिनी तथा कन्नौज के क्षेत्र हर्ष काल में व्यावसायिक दृष्टि से काफी उन्नत अवस्था में थे तथा इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। आंतरिक व बाह्य दोनों प्रकार के व्यापार प्रचलन में थे। देश में बड़ी–बड़ी व्यापारिक मंडियों तथा पूर्वी व पश्चिमी तट पर स्थित कई प्रसिद्ध बंदरगाहों से दूर–दूर तक विदेशी व्यापार होता था। पूर्वी भारत में ताम्रलिप्ति

तथा पश्चिमी भारत में भड़ौच प्रमुख बंदरगाह थे। भारत से विदेशों को चंदन की लकड़ी, जड़ी–बूटियां, गर्म मसाले, कपड़े तथा अन्य वस्तुएं निर्यात होती थी तथा भारत घोड़े, हीरा व हाथीदांत का आयात करता था।

8-4-3 हर्षकालीन साहित्य तथा शिक्षा (Harsha period Literature and Education)

महान विजेता, साम्राज्य निर्माता व कुशल शासन प्रबंधक के साथ–साथ हर्ष महान विद्याप्रेमी भी था। राजा के साथ–साथ वह स्वयं साहित्य के स्वाध्याय व लेखन में रूचि रखने वाला था। साहित्य प्रेमी के रूप में उसकी रचनाएं संस्कृत साहित्य की अमूल्य विधियां है। उसने नागानन्द, प्रियदर्शिका तथा रत्नावली जैसे प्रसिद्ध नाटक लिखे। चंद्रगुप्त विक्रमादित्य की तरह विद्वानों के आश्रपदाता के रूप में हर्षवर्धन को इतिहास में स्मरण किया जाता है। हर्षचरित के रचनाकार बाणभट्ट हर्ष के प्रसिद्ध दरबारी कवि थे। इसके अलावा बौद्ध भिक्षु दिवाकर, मयूंर, जयसेन, भर्तृहरि एवं भास जैस विद्वान हर्ष के दरबार की शोभा बढ़ाते थे। हर्ष को विद्वानों से इतना लगाव था कि वह अपने राज्य की आय का एक बडा हिस्सा इनको पुरस्कार के रूप में वितरित करता था।

हर्षकालीन विद्वानो में बाणभट्ट की हर्षचरित तथा कादम्बरी रचना प्रसिद्ध है। मयूर ने 'सूर्यशतक' नामक श्लोक संग्रह लिखा। गणितीय सिद्धांतो पर प्रसिद्ध पुस्तक ब्रह्म सिद्धांत के रचनाकार ब्रह्मगुप्त का जन्म हर्ष के काल में ही हुआ था। हर्ष के दरबार का प्रसिद्ध विद्वान जयसेन था जो योगशास्त्र, वेद, ज्योतिष, भूगोल गणित, चिकित्सक आदि विभिन्न विषयों में ज्ञाता के रूप में प्रसिद्ध थे।

हर्ष ने अपने राज्य में शिक्षा के विकास के लिए कुशल प्रबंध कर रखा था। उसने इसके लिए बहुत सा धन खर्च किया। उसने कई विद्यालयो विशेषकर विश्व–विख्यात् नालंदा विश्वविद्यालय को मुक्त हृदय से अनुदान दिये। उसके काल में नालंदा महाविहार महायान बौद्धधर्म की शिक्षा के लिए अति प्रसिद्ध था। यहाँ बौद्ध दर्शन के अलावा वैदिक साहित्य, चिकित्सा, रस–रसायन, धातुकर्म आदि विषयों की पढ़ाई भी होती थी। नालंदा विश्वविद्यालय के उचित प्रबंधन के लिए सम्राट हर्ष ने 200 गांवो की लगान मुक्त जमीन दी थी। उस समय इस विश्वविद्यालय में भारत तथा विदेशों के लगभग 10,000

विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे। उन्हें पढ़ाने वाले शिक्षकों की संख्या 1000–1500 तक थी। वल्लभी भी हर्ष के समय का एक अन्य विश्वविद्यालय था।

इस प्रकार इन समस्त विवरणों से पता चलता है कि हर्ष न केवल स्वयं तक प्रकाण्ड पंडित, उच्च कोटि का रचनाकार तथा कवि था वरन् अनेक विद्वानों तथा शिक्षण संस्थाओं का आध्रपदाता भी था। उसने भारत में शिक्षा एवं साहित्य के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किए।

8-5 Áxfr leh{kk **(Check Your Progess)**

(क) रिक्त स्थानों की पूर्ति करे **(Fill in the blanks)**

(i) प्रत्येक पांच वर्ष पर प्रयोग में जिसे दान क्षेत्र कहा जाता था, एक .... का आयोजन होता था।

(ii) वर्धन वंश के .... शासक की उपाधि शिलादिव्य थी।

(iii) बाणभट्ट .... के दरबारी कवि थे।

(iv) प्रियदर्शिका, रत्नावली और नागानंद संस्कृत में ये तीन नाटक .... ने लिखे थे।

(v) हर्षवर्धन का शासन काल .... था।

(vi) चीनी यात्री ह्वेनसांग .... के काल में भारत आया था।

(vii) हर्षवर्धन .... का पुत्र था।

(viii) हर्षकाल में विदेश सचिव को .... कहा जाता था।

(ix) चीनी यात्री ह्वेनसांग की रचना का नाम .... है।

(x) हर्ष के प्रांतो को .... कहा जाता था।

(ख) सत्य–असत्य कथन पर आधारित प्रश्न **(True-False based Questions)**

(i) प्रभाकर वर्धन थानेश्वर का प्रथम शक्तिशाली राजा था जिसने पदमभट्टारक की उपाधियाँ धारण की। (   )

(ii) चीनी यात्री इत्सिंग को यात्रियों का राजकुमार, नीति का पंडित व आधुनिक शाक्य मुणि के नाम से संबोधित किया गया है। ( )

(iii) हर्षकाल में पूर्वी भारत में ताम्रलिप्ति तथा पश्चिमी भारत में भड़ौच प्रमुख बंदरगाह थे । ( )

(iv) हर्षचरित तथा कादम्बरी बाणभट्ट की रचना है। ( )

(v) चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय ने हर्षवर्धन को गंगा नदी के तट पर पराजित किया था। ( )

(vi) कन्नौज के मौखरी वंश का अंतिम शासक ग्रह वर्मन था। ( )

(vii) हर्षवर्धन का अंतिम अभियान कश्मीर के विरूद्ध था। ( )

(viii) हर्षवर्धन बौद्ध धर्म के महायान शाखा का अनुयायी था। ( )

(ix) हर्ष की राजधानी थानेश्वर से कन्नौज स्थानांतरित हो गई। ( )

(x) हर्षवर्धन का शासनकाल 606–647 ई. तक रहा । ( )

8-6 lkjk'k@ lf{kflrdk **(Summary)**

- गुप्त वंश के पतन के बाद भारत में जिन नए राजवंशो का उदय हुआ उनमें प्रमुख राजवंश है –
    - वल्लभी (गुजरात) में मैत्रक राजवंश।
    - कन्नौज (उत्तर प्रदेश) में भौखरि राजवंश।
    - थानेश्वर (हरियाणा) में पुष्पभूति राजवंश।
    - बंगाल में गौड वंश।
- गौड वंश का सबसे प्रतापी शासक शशांक हर्षवर्धन का समकालीन था।
- एक ऐतिहासिक मान्यता के अनुसार ब्राह्मण धर्म के शैव संप्रदाय के अनुयायी और वंश के शासक शंशाक ने बौद्ध धर्म से अपने कट्टर शत्रुता के कारण बोधि वृक्ष को कटवाकर उसकी जडो में आग लगवा दी।

- ध्यातव्य है कि बिहार प्रांत के गया जिले में स्थित बोधिवृक्ष अर्थात् पीपल वृक्ष वह स्थान है जिसके नीचे सिद्धार्थ को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी।
- मैत्रक वंश की स्थापना भट्सरक ने की थी।
- मैत्रक वंश वाले गुप्तों के अधीन सामंत थे।
- मैत्रक वंश वालों ने गुजरात स्थित वल्लभी को अपनी राजधानी बनाया।
- मैत्रक वंश के शासक ध्रुवसेन द्वितीय से हर्ष ने अपनी पुत्री का विवाह किया था।
- हर्ष के काल में वल्लभी बौद्ध धर्म एवं शिक्षा का प्रसिद्ध केंद्र था।
- पुष्पभूति वंश वाले गुप्तों के सामंत थे।
- पुष्पभूति वंश के शासको ने हुणो के आक्रमण के बाद एक स्वतंत्र राज्य की घोषणा कर दी थी।
- पुष्पभूति वंश के शासको ने हरियाणा के थानेश्वर में अपनी सत्ता की स्थापना की थी।
- पुष्पभूति वंश में नरवर्धन, आदित्यवर्धन तथा प्रभाकरवर्धन जैसे शासक हुए।
- पुष्पभूति वंश बाद में वर्धन वंश के नाम से विख्यात हुआ।
- प्रभाकरवर्धन के दो पुत्र राज्यवर्धन एवं हर्षवर्धन तथा पुत्री राज्यश्री थी।
- राज्यश्री का विवाह कन्नौज के भौखरि वंश के शासक गृहवर्मन के साथ हुआ था।
- गौड़ शासक शशांक द्वारा राज्यवर्धन की हत्या कर दिये जाने के बाद हर्षवर्धन शासक बना।
- हर्षवर्धन 606 ई. में 16 वर्ष की अवस्था में थानेश्वर की गद्दी पर बैठा।
- हर्षवर्धन का कार्यकाल 606 से 647 ई. तक रहा।
- हर्षवर्धन के काल में भारत की यात्रा पर आये चीनी यात्री ने हर्षवर्धन को 'शिलादिव्य' के नाम से संबोधित किया है।

- चीनी यात्री ह्वेनसांग 629 ई. में चीन से चला और आज के अफगानिस्तान, पाकिस्तान से होते हुये भारत पहुँचा और लंबे समय तक भारत में यात्रा करके 645 ई. में चीन लौट गया।
- ह्वेनसांग को यात्रियों का राजकुमार, 'नीति का पंडित' तथा वर्तमान शाक्यमुनि कहा गया।
- ह्वेनसांग नालंदा महाबिहार के बौद्ध विश्वविद्यालय में अध्ययन करने व बौद्ध ग्रंथ संग्रह करने के उद्देश्य से आया था।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग की रचना का नाम सी–यू–की है।
- सी–यू–की का अर्थ है – पश्चिमी देशों का विवरण।
- हर्ष का साम्राज्य सामंती संगठन पर आधारित था, जो हर्ष की उपाधियों परमभट्टारक, महाराजाचिराज, सकलोत्तरा पथेश्वर, चक्रवर्ती, सार्वभौम, परमेश्वर, परममाहेश्वर आदि से स्पष्ट हो जाता है।
- हर्ष बंगाल के गौड़ शासक शंशाक को पराजित कर कन्नौज पर अधिकार कर लिया और इसे अपनी राजधानी बनाया।
- पुलकेशिन द्वितीय ने हर्षवर्धन को नर्मदा नदी के तट पर हुये युद्ध में पराजित किया था।
- इस युद्ध का विवरण ऐहोता प्रशस्ति अभिलेख से प्राप्त होता है।
- पुलकेशिन द्वितीय वातापि/बादामी के चालुक्य वंश का प्रतापी शासक था।
- हर्षवर्धन ने नागानन्द, प्रियदर्शिका तथा रत्नावली नाटकों की रचना की थी।
- हर्षवर्धन के दरबारी कवि व बाणभट्ट ने हर्षचरित व कादम्बरी की रचना की थी।
- भपूर, दिवाकर, जयसेन, बाणभट्ट, धर्मपाल हर्षकालीन प्रसिद्ध विद्वान थे।
- प्रसिद्ध विद्वान मयूर ने मयूरशतक, सूर्यशतक, खण्डप्रशस्ति नामक ग्रंथों की रचना की थी।

- ऐहोल अभिलेख चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय का है।
- 643 ई. में उड़ीसा के विरूद्ध गंजाम का अभियान हर्ष का अंतिम अभियान था।
- प्रत्येक पांच वर्ष पर प्रयाग के जिले दान–क्षेत्र कहा जाता था। एक महामोक्षपरिषद् का आयोजन करता था।
- प्रशासनिक सुविधा की दृष्टिकोण से राज्य को ग्राम, विषय, मुक्ति, राष्ट्र में विभाजित था।
- शासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी।
- ग्राम शासन के प्रधान को ग्रामक्षपटलिक कहा जाता था।
- हर्ष के काल में प्रांतो को मुक्ति कहा जाता था।
- प्रांतीय शासक को उपरिक महाराज या राजस्थानीय अथवा गोप्ता कहा जाता था।
- हर्ष के काल में विषय जिले के समान था।
- विषय के प्रधान को विषयपति कहा जाता था।
- विषयपति की नियुक्ति प्रातपति अथवा सम्राट के द्वारा होती थी।
- हर्ष के काल में पुलिस को दंडपाशिक कहा जाता था।
- नगर के पूंजीपतियों का प्रतिनिधि नगरश्रेष्ठी कहलाता था।
- कारखानों का प्रतिनिधि सार्थवाह कहलाता था।
- लेखकों का प्रतिनिधि कायस्थ कहलाता था।
- हर्ष के काल में राज्य की आय का मुख्य साधन भूमिकर था।
- भूमि कर उपज का 1/6 भाग वसूला जाता था।

- हर्ष के काल में भूमिकर के अतिरिक्त नकद के रूप में व्यापारियों से हिरण्य कर भी लिया जाता था।
- भौगिक कर वसूलने वाला को कहते थे।
- पुस्तपाल जमीन का हिसाब रखने वाला पदाधिकारी था।
- हर्ष के काल में मंत्री को सचिव या अमात्य कहा जाता था।
- हर्ष का ममेरा भाई भाण्डी उसका प्रधान सचिव था।
- विदेश सचिव को महासंधिविग्रह कहा जाता था।
- अवंति हर्ष का विदेश सचिव था।
- सिंहनाद हर्षवर्धन का प्रधान सेनापति था।
- कुतल अश्वारोही सेना का सर्वोच्च अधिकारी था।
- स्कंदगुपत हरित सेना का प्रधान था।
- न्याय व्यवस्था का सर्वोच्च अधिकारी सम्राट था।
- हर्ष के पूर्वज भगवान शिव व सूर्य की उपासना करते थे।
- प्रारंभ में हर्ष भी अपने पूर्वजों की भांति शिव का परम भक्त था।
- परंतु चीनी यात्री ह्वेनसांग के प्रभाव में आकर उसने बौद्ध धर्म की महायान शाखा का उपासक बन गया।
- हर्ष के काल में नालंदा महाविहार बौद्ध धर्म की शिक्षा का विश्व–विख्यात केन्द्र था।
- हर्ष ने कन्नौज तथा प्रयाग में दो विशाल धार्मिक सभाओं का आयोजन किया था।
- ह्वेनसांग के बाद नालंदा विश्वविद्यालय आने वाला चीनी यात्री इत्सिंग था।

- नालंदा विश्वविद्यालय का कुलपति शीलभद्र योगशास्त्र का विशेषज्ञ था।
- हर्षचरित में सिंचाई के साधन के रूप में तुलायंत्र (जनपंथ) का उल्लेख मिलता है।

8-7 ldr&lpd **(Key-words)**

- शाक्य = महात्मा बुद्ध शाक्य क्षत्रिय वंश से थे।
- अभिलेख = शिलाओं, स्तंभो, ताम्रपत्रों तथा प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेख को अभिलेख के नाम से जानते है।
- वातापि/बादामी = वातिप/बादामी कर्नाटक में स्थित है।
- कामरूप = प्राचीन काल में असोम को कामरूप के नाम से जानते थे।
- बसरवेड़ा = यह उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर जिले में स्थित एक स्थान है।
- मधुबन = उत्तर प्रदेश के मऊ जिले में स्थित एक स्थान है।

8-8 Lo&eY;kdu d fy, ijh{kk **(Self Assessment Test SAT)**

भाग (क) (Part-A) बहुविकल्पी प्रश्न (Multiple Choice Questions MCQS)

(i) थानेश्वर में वर्धन वंश की स्थापना किसने की ?

(क) राज्यवर्धन (ख) आदित्यवर्धन (ग) पुष्पभूतिवर्धन (घ) नरवर्धन

(ii) हर्षवर्धन प्रत्येक पांच वर्ष बाद कहां पर धार्मिक सम्मेलन का आयोजन करता था ?

(क) कन्नौज (ख) वल्लभि (ग) प्रयाग (घ) थानेश्वर

(iii) चालुक्यवंशी शासक पुलकेशिन II ने हर्षवर्धन के दक्षिण विजय अभियान को किस नदी के किनारे पर रोका ?

(क) नर्मदा (ख) ताप्ती (ग) कावेरी (घ) कृष्णा

(iv) हर्ष एवं पुलकेशिन II के मध्य हुए संघर्ष की जानकारी कहां से मिलती है ?

(क) ऐहोल अभिलेख (ख) वंशखेरा अभिलेख

(ग) हाथीगुफा अभिलेख (घ) ह्वेनसांग के विवरण से

(v) हर्षवर्धन के समय में किस चीनी यात्री ने भारत की यात्रा की ?

(क) फाह्यान (ख) इत्सिंग (ग) सुंगयून (घ) ह्वेनसांग

(vi) पराक्रमी एवं कुशल प्रशासक होने के साथ–साथ हर्ष लेखक भी था। निम्न में से कौन सा ग्रंथ हर्षवर्धन द्वारा रचित नहीं है ?

(क) प्रियदर्शिका (ख) रत्नावली (ग) नागानन्द (घ) हर्षचरित

(vii) हर्ष के दरबारी लेखक बाणभट्ट की कृतियों में कौन उनसे सम्बद्ध नहीं है ?

(क) हर्षचरित् (ख) कादम्बरी (ग) रामचरित् (घ) मालविकालिनमित्रम्

(viii) हर्षवर्धन और चालुक्य शासक पुलकेशिन II के बीच किस वर्ष युद्ध हुआ ?

(क) 634 ई. (ख) 643 ई. (ग) 647 ई. (घ) 670 ई.

(ix) हर्षवर्धन की उपाधि इनमें से कौन सी नहीं थी ?

(क) परममाहेश्वर (ख) कुमार (ग) शिलादित्य (घ) दक्षिणापथेश्वर

(x) हर्षवर्धन के काल में रणभाण्डागाराधिकरण क्या था ?

(क) पुलिस विभाग (ख) कर विभाग (ग) धार्मिक विभाग (घ) इनमें से कोई नहीं

भाग (ख) निबंधात्मक / दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Essay/Long Answer Type Questions)

(i) हर्ष की विजयों तथा शासन–प्रबंध का वर्णन करें।

(Describe conquest of Harsha and his administration.)

(ii) हर्षकालीन सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन का विवरण दीजिए।

(Give details of Socio-cultural life of Harsha's period.)

(iii) भारत के मानचित्र पर हर्ष की विजयें तथा उसके साम्राज्य विस्तार को दिखाइए।

भाग (ग) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त नोट लिखिए। (Write Short notes on the following):-

(i) ह्वेनसांग

(ii) नालंदा विश्वविद्यालय

(iii) बाणभट्ट

(iv) हर्षकालीन शिक्षा एवं साहित्य

(v) पुष्पभूति वंश

(vi) महामोक्षपरिषद

(vii) हर्षवर्धन की धार्मिक सभाएं

(viii) हर्ष का धर्म

(ix) हर्ष की धार्मिक सहिष्णुता की नीति

(x) हर्ष का मूल्यांकन

8.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answers to Check your progress)

8.5 भाग (क) उत्तर :– (i) महामोक्षपरिषद (ii) हर्षवर्धन (iii) हर्षवर्धन (iv) हर्षवर्धन (v) 606–647 ई. (vi) हर्षवर्धन (vii) प्रभाकर वर्धन (viii) महासंधिविग्रहक (ix) सी–यू–की (x) भुक्ति

8.5 भाग (ख) का उत्तरः–(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) सत्य (v) असत्य (vi) सत्य (vii) असत्य (viii) सत्य (ix) सत्य (x) सत्य

8.8 भाग (क) उत्तर :– (i) ग (ii) ग (iii) क (iv) क (v) घ (vi) घ (vii) घ (viii) क (ix) घ (x) घ

<table>
<tr><td>COURSE CODE: HIST 103
LESSON NO. 09</td><td>SUBJECT – HISTORY PART-1
SEMESTER - II
AUTOR – MOHAN SINGH BALODA</td></tr>
<tr><td colspan="2">vykmn~nhu f[kyth o eqgEen rqxyd dk lkezkT;
(Empire of Alauddin Khilji and Mohammad Tughlaq)</td></tr>
</table>

v/;k; lajpuk **(Lesson Structure)**

9.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objective)

9.2 परिचय (Introduction)

9.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

9.3.1 अलाउद्दीन खिलजी की विजय (Conquest or victory of Alauddin Khilji)

9.3.2 अलाउद्दीन खिलजी के दक्षिण–अभियान व उसके उद्देश्य (Southern Compaigns of Alauddin Khilji and its Objectives)

9.3.3 अलाउद्दीन खिलजी के साम्राज्य का मानचित्र। (Map of Alauddin Khilji's Empire)

9.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of Text)

9.4.1 अलाउद्दीन खिलजी के प्रशासनिक, सैनिक तथा आर्थिक सुधार (Administration, Military & Economic Reforms of Alauddin Khilji)

9.4.2 मुहम्मद बिन तुगलक की मुख्य योजनायें (Major plans of Muhammad bin Tughlaq)

9.4.3 मुहम्मद बिन तुगलक की असफलता के कारण (Causes of failure of Muhammad bin Tughlaq)

9.4.4 मुहम्मद बिन तुगलक के साम्राज्य का मानचित्र (Map of the Empire of Muhammad-bin Tuglaq)

9.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

9.6 सारांश (Summary)

9.7 संकेत–सूचक (Key-words)

9.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT)

9.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

9.10 सहायक ग्रंथ/सहायक अध्ययन सामग्री (References/Suggested Readings)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात आप निम्न योग्य होंगे :–

9-1 vf/kxe mnn' ; (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययनोपरांत विद्यार्थी इस योग्य हो जाएंगे :–

- शिक्षार्थी दिल्ली सल्तनत के प्रसिद्ध शासक अलाउद्दीन खिलजी के बारे में बता सकेंगे।
- अलाउद्दीन खिलजी के उत्तर व दक्षिण भारत में विजित राज्यों को गिना सकेंगे।
- अलाउद्दीन खिलजी के विजित राज्यों/क्षेत्रों को भारत के मानचित्र पर अंकित कर सकेंगे।
- दिल्ली सल्तनत के विस्तारवादी महान सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के प्रशासनिक, सैनिक व आर्थिक सुधारों का वर्णन कर सकेंगे।
- दिल्ली–सल्तनत के विरोधी गुणों के मिश्रण वाला तुगलक वंश के शासक मुहम्मद–बिन–तुगलक की मुख्य योजनाओं को बता सकेंगे।
- मुहम्मद–बिन–तुगलक की असफलता के कारणों को समझा।

9-2 ifjp; (Introduction)

भारत पर प्रथम सफल मुस्लिम आक्रमण अरबी मुहम्मद बिन–कासिम द्वारा 712 ई. में हुआ। उसने यह प्रथम आक्रमण सिंध पर किया था। उस समय सिंध का राजा दाहिर था। मुहम्मद–बिन–कासिम ने सिंध के विजित क्षेत्रों से जजिया कर भी वसूला। इसके बावजूद भी अरब आक्रामणकारी भारत में कोई मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना करने में सफल नहीं हो सके। इसके आक्रमण के कोई 300 वर्षों के बाद

तुर्कों ने महमूद गजनवी के नेतृत्व में 1000 से 1027 ई. तक 17 बार भारत पर आक्रमण किया। महमूद गजनवी का 1025–26 ई. का सोनाथ मंदिर का आक्रमण सर्वाधिक प्रसिद्ध है। परंतु बुतशिकन या मूर्तिमंजक के नाम से प्रसिद्ध गजनवी ने लूट–पाट मचाया और काफी धन–संपति लूटकर वापस लौट गया।

यह भी भारत पर मुस्लिम सत्ता की स्थापना में असफल रहा। महमूद गजनवी के बाद उसके अधीनस्थ शासक मुहम्मद गौरी ने मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना के उददे्श्य से 1175 ई. से 1205 ई. के बीच कई बार भारत पर आक्रमण किये।

मुहम्मद गौरी का भारत पर प्रथम आक्रमण 1175 ई. में मुल्तान का आक्रमण था। यद्यपि गौरी को 1178 ई. में गुजरात के चालुक्य वंशीय शासक भीम द्वितीय द्वारा 1178 ई. में और पृथ्वीराज चौहान के द्वारा तराईन के प्रथम युद्ध 1191 ई. में पराजित होना पड़ा। फिर भी उसे हार नहीं माना और अंततः 1192 ई. में तराईन के द्वितीय युद्ध में उसने पृथ्वीराज चौहान को पराजित करके दिल्ली में मुस्लिम सत्ता की स्थापना का रास्ता साफ कर दिया। मुहम्मद गौरी के भारत से वापस लौटने और 1206 ई. में इसकी मृत्यु के बाद भारत में तुर्की साम्राज्यों का शासन उसके तीन गुलामों – यल्दोज, कुबाचा और कुतुबुद्दीन ऐबक के हाथों में आ गया। इन तीनों में से कुतुबुद्दीन ऐबक ने भारत में दिल्ली सल्तनत के नाम से मुस्लिम सत्ता की स्थापना की। इसके द्वारा स्थापति वंश का नाम ममलूक वंश या दास वंश था। इसका राज्याभिषेक लाहौर में हुआ था। बाद में इसी वंश का प्रसिद्ध शासक इल्तुतमिश ने सल्तनत की राजधानी को लाहौर से दिल्ली में स्थापित किया और फिर दिल्ली सल्तनत की राजनीति का केंद्र बिंदु बन गया। इस दिल्ली सल्तनत पर 1206 ई. से लेकर 1526 ई. तक 5 राजवंशों – ममलूक/दास/गुलाम वंश खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैयद वंश व लोदी वंश ने राज किया। इन राजवंशों में एक–से–बढ़कर एक सुल्तान हुये। परंतु इनमें खिलजी वंश का अलाउद्दीन खिलजी सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक हुआ जिसके काल में सल्तनत का सर्वाधिक विस्तार उत्तर से लेकर दक्षिण तक हुआ। उसने 'सिंकदर–ए–सानी' या 'सिंकदर द्वितीय सानी' की उपाधि धारण की थी। सिकंदर की भांति साम्राज्यवादी प्रवृति का शासक अलाउद्दीन खिलजी का काल मध्यकालीन भारत के इतिहास में बाजार

नियंत्रण प्रणाली के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध रहा। इसी प्रकार दिल्ली सल्नत के तुगलक वंश का शासक मुहम्मद–बिन–तुगलक भी मध्यकालीन भारत के इतिहास में शिक्षित, विद्वान, योग्य, सनकी, पागल, दार्शनिक, कला प्रेमी जैसे विरोधी गुणों के लिए प्रसिद्ध रहा। मुहम्मद–बिन–तुगलक 1325 से 1351 ई. तक तुगलक वंश का शासक रहा। दिल्ली सल्तनत की सीमा का एक ओर जहां सर्वाधिक विस्तार इसी के शासनकाल में हुआ तो दूसरी ओर उसकी क्रूर नीतियों के कारण सल्तनत का विघटन भी इसके काल में हुआ। जिसके फलस्वरूप दिल्ली सल्तन से पृथक् दक्षिण भारत में नये स्वतंत्र राज्य की स्थापना हुई व बंगाल भी स्वतंत्र हो गया। उसने अपने शासनकाल में राजस्व, कृषि, धर्म व शासन–व्यवस्था संबंधी अनेक प्रकार की योजनाएं आरंभ किये परंतु वे सब असफल रहे। इस कारण मुहम्मद–बिन–तुगलक का शासनकाल अनेक दृष्टियों से सल्तनत कालीन इतिहास में अपना अलग महत्त्च रखता है।

9-3-1 vykmnnhu f[kyth dh fot ; **(Conquest or Victory of Alaudin Khilji)**

खिलजी वंश का प्रसिद्ध शासक अलाउद्दीन खिलजी 1296 से 1316 ई. तक दिल्ली सल्तनत पर राज किया। वह खिलजी वंश की नहीं अपितु दिल्ली सल्तनत का सबसे प्रसिद्ध शासक था। वह खिलजी वंश का संस्थापक जलालुद्दीन फिरोज खिलजी का भतीजा था। उसने 1296 ई. में जलालुद्दीन फिरोज खिलजी की हत्या करके गद्दी हथिया ली थी। इसके बचपन का नाम अली तथा गुरशास्प था। अलाउद्दीन खिलजी प्रारंभ से ही महत्त्वाकांक्षी, साम्राज्यवादी व विस्तारवादी प्रवृत्ति का था। उसने सल्तनत के विस्तार के लिए उत्तर से लेकर दक्षिण तक कई सैन्य अभियान चलाये। उसने अपनी प्रारंभिक सफलता से प्रोत्साहित होकर 'सिकंदर ए सानी' या 'सिकंदर द्वितीय सानी' की उपाधि धारण की तथा इसका उल्लेख अपने सिक्कों पर करवाया। साम्राज्यवादी प्रवृत्ति के अलाउद्दीन खिलजी ने अने विजय अभियान के द्वारा उत्तर भारत के राज्यों को विजित कर उस पर प्रत्यक्ष शासन किया व दक्षिण भारत के राज्यों को अपने अधीन कर उनसे वार्षिक कर वसूला।

अलाउद्दीन खिलजी ने गद्दी पर बैठने के बाद एक बड़ी सेना का गठन किया और दिल्ली सल्तनत के विस्तार के लिए कई अभियान शुरू किए। अपने प्रथम अभियान में उसने 1298–99 ई. में गुजरात पर

आक्रमण किया था। उस समय गुजरात का शासक रायकर्ण था। गुजरात आक्रमण का नेतृत्व सल्तनत की ओर से अलाउद्दीन खिलती का भाई उलूग खां और वजीर नुसरत खां ने किया था। गुजरात का शासक रायकर्ण को सल्तनत की सेना ने राज्य को छोड़कर भागने के लिए विवश कर दिया। रायकर्ण ने दक्षिण की ओर भागकर देवगिरी के शासक रामचंद्र देव के यहाँ शरण ली। सल्तनत की सेना ने गुजरात विजय के बाद सूरत सहित कई नगरों व सोमनाथ मंदिर को लूटकर काफी धन–संपति के साथ दिल्ली लौटी। गुजरात विजय के दौरान ही नुसरत खाँ ने एक हिन्दू किन्नर (हिजड़ा) मलिक काफूर को एक हजार दीनार में खरीदा था जो बाद में अलाउद्दीन के दक्षिण अभियानों का प्रमुख सेनापति बना। चूँकि मलिक काफूर को हजार किनार में खरीदा था अतः इसे 'हजार दीनारी' के नाम से भी जाना जाता है।

1298–99 ई. में गुजरात विजय के बाद अलाउद्दीन खिलजी की सेना ने 1301 ई. में रणथंभौर पर आक्रमण किया। राजपूताना का सबसे शक्तिशाली राज्य रणथंभौर का शासक इस समय हम्मीरदेव था। हम्मीरदेव अपनी योग्यता एवं साहस के लिए प्रसिद्ध था। इसको जीते बिना राजस्थान में सल्तनत का विस्तार संभव नहीं था। इसके साथ ही हम्मीरदेव ने मंगोल नेता मुहम्मद शाह एवं केहब को अपने यहां शरण दे रखी थी। इस कारण अलाउद्दीन खिलजी ने 1301 ई. में उबूग खाँ एवं नुसरत खाँ को रणथंभौर पर आक्रमण के लिए भेजा। हम्मीरदेव ने बहुत बहादुरी के साथ सामना किया। परंतु अंततः अलाउद्दीन को सफलता मिली। राणा हम्मीरदेव वीरगति को प्राप्त हुये। रानी रंग देवी के साथ अनेक राजपूत महिलाओं के जौहर द्वारा वीरगति प्राप्त होने का विवरण भी प्राप्त होता है। इस युद्ध में सुल्तान की तरफ से नुसरत खाँ मारा गया। इस प्रकार 1301 इ. में अलाउद्दीन ने रणथंभौर के किले को अपने कब्जे में कर लिया।

रणथंभौर के विजयोपरांत अलाउद्दीन की सेना ने 1303 ई. में चित्तौड़ पर आक्रमण करके मेवाड़ विजय का अभियान चलाया। इस समय मेवाड़ का शासक राणा रतन सिंह था जिसकी राजधानी चित्तौड़ थी। मलिक मुहम्मद जायसी की रचना 'पद्मावत' में प्राप्त विवरण के अनुसार चित्तौड़ की रानी पद्मिनी की सुंदरता से प्रभावित होकर अलाउद्दीन ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया था। यद्यपि राणा रतन सिंह

बहादुरी के साथ लड़े फिर भी अंततः अलाउद्दीन की सेना ने राणा रतन सिंह को आत्मसमर्पण के लिए विवश कर दिया। इस प्रकार चित्तौड़ विजय के बाद अपने बेटे खिज्र खाँ को यहाँ का शासक नियुक्त किया और चित्तौड़ का नाम बदलकर खिज्राबाद कर दिया था। चित्तौड़ विजय के बाद अलाउद्दीन का प्रभाव अत्यधिक बढ़ गया और इसके खौफ से राजपूतों की रियासत ने उसकी अधीनता स्वीकार करना प्रारंभ कर दिया। परंतु मालवा के पराक्रमी व स्वाभिमानी शासक महलकदेव ने अधीनता स्वीकार करने सम ना कर दिया। इसके प्रतिक्रियास्वरूप 1305 ई. में अलाउद्दीन ने मुल्तान के सुबेदार आईन–उल–मुल्क के नेतृत्व में मालवा पर आक्रमण कर दिया और दोनों पक्षों के संघर्ष के बाद महलकदेव व उसका सेनापति हरनन्द मारा गया। इस प्रकार 1305 ई. में मालवा पर अधिकार के साथ ही उज्जैन, धारानगरी, चंदेरी, मांडू आदि को जीत कर दिल्ली सल्तनत में मिला लिया गया। 1308 ई. में अलाउद्दीन ने मारवाड़ के परमार राजपूत शासक शीतलदेव को कड़े संघर्ष के उपरांत विजित किया। भीषण संघर्ष के बाद शीतलदेव मारा गया और सिवाना के किले पर अब सुल्तान का अधिकार हो गया। सुल्तान की ओर से कमालुद्दीन गुर्ग को सिवाना (मारवाड़) का शासक नियुक्त किया गया।

मारवाड़ विजय के बाद अलाउद्दीन खिलजी ने 1311 ई. में 1311 ई. में जालौट के शासक कान्हदेव को पराजित करके उस पर अपना अधिकार कर लिया। जालौर की विजय के साथ ही अलाउद्दीन खिलजी की राजस्थान की विजय पूरी हो गयी। इस प्रकार अलाउद्दीन खिलजी ने अपने उत्तर भारत के विजय अभियान के अंतर्गत 1298–99 ई. में गुजरात, 1301 ई. में रणथंभौर, 1303 ई. में चित्तौड़, 1305 ई. में मालवा, उज्जैन, मांडू, धार, चंदेरी आदि को, 1308 ई. में मारवाड़ तथा 1311 ई. में जालौट को जीतकर दिल्ली सल्तनत में अलाउद्दीन खिलजी के दक्षिण भारत की विजय अभियानों का नेतृत्व मलिक काफूर ने किया था।

मलिक काफूर के नेतृत्व में सुल्तान की सेना ने 1307–08 ई. में देवगिरी के शासक रामचंद्र देव को पराजित करके उस पर अपना अधिकार कर लिया। उसने देवगिरी को सल्तनत की अधीनता स्वीकार करने व वार्षिक कर देने के लिए मजबूर कर दिया। 1309–10 ई. में मलिक काफूर ने वारंगल के शासक प्रताप रूद्रदेव को युद्ध में पराजित कर दिया। प्रताप रूद्रदेव ने सुल्तान की अधीनता स्वीकार

करते हुए वार्षिक कर भेजने का वचन दिया। 1311 ई. में मलिक काफूर के नेतृत्व में सुल्तान की सेना ने पांड्य की राजधानी मदुरै पर अधिकार कर लिया। वहाँ का शासक वीर पांड्य राजधानी को छोड़कर भाग गया। मलिक काफूर ने नगर में लूटपाट की और खूब धन–संपति के साथ दिल्ली लौटा। 1313 ई. में देवगिरी के शासक राजा रामचंद्र देव की मृत्यु के बाद उसका पुत्र शंकरदेव या सिंहनदेव गद्दी पर बैठा। शंकरदेव स्वाभिमानी शासक था। उसने दिल्ली की अधीनता स्वीकार करने तथा वार्षिक कर देना स्वीकार नहीं किया। उसने अपने आपको दिल्ली सल्तनत से स्वतंत्र कर लिया। इसकी प्रतिक्रिया के फलस्वरूप अलाउद्दीन खिलजी ने 1313 ई. में मलिक काफूर को पुनः देवगिरी पर आक्रमण के लिए भेजा। इस युद्ध में शंकरदेव मारा गया और देवगिरी का अधिकांश भाग दिल्ली सल्तनत में मिला लिया गया। इस प्रकार अलाउद्दीन खिलजी ने उत्तर से दक्षिण तक विजय अभियान चलाकर अपने साम्राज्य का विस्तार पश्चिमोत्तर भाग में सिंधु नदी से लेकर दक्षिण में मदुरा तक तथा पूर्व में वाराणसी एवं अवध से लेकर पश्चिम में गुजरात तक फैला दिया था।

9-3-2 अलाउद्दीन खिलजी के दक्षिण–अभियान व उसके उद्देश्य (Southern Compaign of Alaudin Khilji and its objectives)

अलाउद्दीन खिलजी साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का था। उसकी विस्तारवादी नीति थी। वह अपने राज्य का विस्तार को लेकर बहुत ज्यादा उत्साहित था। वह अपने आपको सिकंदर द्वितीय के रूप में मानता था। उसने अपनी विस्तारवादी नीति को आगे बढ़ाने के लिए विशाल स्थायी सेना का गठन किया था। अपनी इसी सैन्य शक्ति के बल पर अलाउद्दीन खिलजी ने उत्तर भारत का सफल विजय अभियान चलाया और उत्तर भारत के अधिकांश क्षेत्रों को सल्तनत में मिला लिया। उत्तर भारत के विजित इन क्षेत्रों पर उसने प्रत्यक्ष शासन किया। उत्तर भारत में उसके सफल साम्राज्य विस्तार ने उसकी विजय की लालसा व साम्राज्य विस्तार की महत्वकांक्षा ने उसे दक्षिण भारत पर आक्रमण के लिए प्रेरित किया। मध्ययुगीन इतिहास का वह पहला शासक था जिसने विंध्य पर्वत को पार करके दक्षिण भारत पर आक्रमण किया था। कुछ इतिहासकारों का यह मानना है कि उसका मुख्य उद्देश्य दक्षिण की अथाह संपदा को हासिल करना था। विशाल सेना के रख–रखाव व विस्तृत साम्राज्य की व्यवस्था के लिए उसे खूब धन

की आवश्यकता थी जिसकी प्राप्ति की उम्मीद से ही उसने दक्षिण भारत के विजय का अभियान चलाया। अलाउद्दीन खिलजी के दक्षिण अभियान का विवरण हमें मध्ययुगीन इतिहासकार बरनी व इसामी की रचना क्रमशः फतह–उस–सलातीन से प्राप्त होता है। इसके अलावा अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में सर्वाधिक समय बिताने वाले फारसी भाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि अमीर खुसरो ने भी अपनी रचना खजायन–उल–फुतूह से भी उसके दक्षिण अभियान का पता चलता है। अलाउद्दीन खिलती ने उत्तर भारत के विजित क्षेत्रों को अपने साम्राज्य का हिस्सा बनाकर उस पर प्रत्यक्ष रूप से शासन किया। परंतु साम्राज्य के स्थायित्व को ध्यान में रखते हुये उसने दक्षिण अभियान द्वारा विजित क्षेत्रों में अप्रत्यक्ष शासन की नीति को अपनाया। उसने अपने समय के दक्षिण भारत के प्रसिद्ध शासक वंशों को सल्तनत की अधीनता स्वीकार करने को मजबूर किया। अप्रत्यक्ष शासक नीति के तहत अधीनस्थ दक्षिण भारत के शासकों को प्रति वर्ष दिल्ली सल्तनत को एक निश्चित वार्षिक कर देना पड़ता था। अपने इन्हीं उद्‌देश्यों की पूर्ति के लिए अलाउद्दीन खिलती ने मलिक काफूर के नेतृत्व में दक्षिण भारत की विजय अभियान को चलाया था।

अलाउद्दीन के समय में दक्षिण भारत की तीन मजबूत शक्तियां थी – देवगिरी के यादव, दक्षिण–पूर्व तेलंगाना के काकतीय और द्वारसमुद्र के होयसल। इसके अलावा मदुरै के पांड्य राज्य का भी दक्षिण में उस समय अपना महत्त्व था। दक्षिण भारत के इन शासकों के पास अकूल धन–संपदा थी। इसीलिए धन की चाह एवं विजय लालसा से प्रेरित होकर अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण–विजय का अभियान चलाया।

अलाउद्दीन खिलजी का दक्षिण भारत अभियान का क्रम इस प्रकार है –

(i) 1307–08 ई. में देवगिरी का आक्रमण।

(ii) 1309–10 ई. में तेलंगाना (वारंगल) की विजय।

(iii) 1310–11 ई. में होयसल पर विजय।

(iv) 1311 ई. में पांड्य राज्य की विजय।

(v) 1313 ई. में देवगिरी पर पुनः आक्रमण।

दिल्ली सल्तनत का सुल्तान बनने से पहले भी वह अपने चाचा जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के काल में देवगिरी के राजा रामचंद्र देव को पराजित कर चुका था। लेकिन बाद में रामचंद्र ने सुल्तान को वार्षिक कर देना भी बंद कर दिया और इसके साथ ही गुजरात के शासक रायकर्ण को शरण दी थी। इसके प्रतिक्रिया स्वरूप अलाउद्दीन ने 1307—08 ई. में मलिक काफूर को देवगिरी पर आक्रमण के लिए भेजा। इस युद्ध में मलिक काफूर ने रामचंद्र देव को पराजित करके उसे दिल्ली भेज दिया। अधीनता स्वीकार कर लेने पर अलाउद्दीन खिलजी ने उसे 'राय रायन' की उपाधि दी तथा उसका राज्य वापस कर दिया। उसके बाद राजा रामचंद्र देव ने कभी भी दिल्ली के खिलाफ विद्रोह नहीं किया। 1307—08 ई. में देवगिरी के विजय अभियान के बाद मलिक काफूर ने 1309—10 ई. में वारंगल के काकतीय शासक प्रताप रूद्रदेव पर आक्रमण किया। इस युद्ध में शीघ्र ही प्रताप रूद्रदेव ने अधीनता स्वीकार कर वार्षिक कर देने का वचन भी दिया। इस युद्ध में मलिक काफूर को काफी धन संपति मिला। इसी अवसर पर प्रताप रूद्रदेव ने मलिक काफूर को प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा दिया था।

1310—11 ई. में मलिक काफूर ने होयसल के शासक वीर बल्लाल तृतीय को विजित किया था। इस युद्ध के साथ होयसल की राजधानी द्वार समुद्र पर सल्तनत का अधिकार हो गया। उसने सुल्तान की अधीनता स्वीकार कर ली और आगे चलकर इसने पाण्ड्य अर्थात् भाबर या मालाबार की विजय में भी काफी सहायता की। पांड्य राज्य को भाबर या मालावार के नाम से भी जाना जाता था। यह पांड्य राज्य दक्षिण भारत के अंतिम छोर पर स्थित था। उस समय यहाँ के शासक सुंदर पांड्य एवं वीर पांड्य थे। सत्ता के लिए दोनों भाईयों के बीच संघर्ष चल रहा था। सुंदरद पांड्य ने अपने भाई के विरूद्ध अलाउद्दीन से सहायता की याचना की। इसका फायदा उठाते हुये मलिक काफूर ने पांड्य राज्य पर आक्रमण कर दिया और जल्द ही पांड्य राज्य की राजधानी मदुरै पर अधिकार कर लिया। मलिक काफूर और उसने लोगों ने मदुरै पर अधिकार के साथ ही नगर में लूटपाट की, अनेक मंदिर नष्ट किये और अपने साथ अपार धन—संपत्ति लेकर दिल्ली लौटे। इस प्रकार मलिक काफूर के नेतृत्व में साम्राज्य का विस्तार दक्षिण भारत के अंतिम छोर तक हो गया था। इधर मलिक काफूर के दिल्ली लौटने के बाद

दक्षिण भारत में देवगिरी के शासक रामचंद्र देव की मृत्यु के बाद गद्दी पर बैठे उसका पुत्र शकरदेव ने दिल्ली से अपने आपको स्वतंत्र कर लिया। उसने सुल्तान की अधीनता को मानने से इन्कार कर दिया और वार्षिक कर देना भी बंद कर दिया। इसके प्रतिक्रिया स्वरूप 1313 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने मलिक काफूर को पुनः देवगिरी पर आक्रमण के लिए भेजा। इस युद्ध में शंकरदेव मारा गया और मलिक काफूर ने विभिन्न नगरों को जमकर लूटा। इस प्रकार अलाउद्दीन खिलजी ने अपने शासनकाल में अपने दक्षिण भारत की विजय अभियान के द्वारा सल्तन का विस्तार उत्तर से दक्षिण तक कर दिया था।

9.3.3 अलाउद्दीन खिलजी के साम्राज्य का मानचित्र। (Map of Alauddin Khilji's Empire)

9-4-1 vykmnnhu f[kyth d i'kklfud] lfud rFkk vkfFkd l/kkj (Administrative, Military & Economic Reform of Alaudin Khilji)

अपने पूर्वकालीन तुर्क सुल्तानों की भांति अलाउद्दीन खिलजी के पास भी शासन, प्रशासन व न्याय की सर्वोच्च शक्तियां मौजूद थी। उसने अपने आपको उलेमा के आदेशों से अलग रखा। वह अपने सम्पूर्ण शासनकाल के दौरान अपने आपको धरती पर ईश्वर का नायक था खलीफा होने का दावा करता था। मध्यकालीन भारतीय इतिहास में एक प्रशासक के रूप में अलाउद्दीन खिलजी महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इतिहासकार डॉ. के. एस. लाल के अनुसार, "अलाउद्दीन एक प्रशासकीय प्रयोगकर्ता था, उसने नवीन विचारों को जन्म दिया और नवीन भूमि पर उन्हें रोपा।"

वह प्रशासन के केन्द्रीकरण पर विश्वास रखने वाला निरंकुश शासक था जिसने उलेमा वर्ग की उपेक्षा करते हुए धर्म पर राज्य का नियंत्रण स्थापित किया। उसने अपने आपको 'यामिन–उल–खिलाफत नासिरी अमीर–उल–मुमनिन' कहा। अपने शासनकाल में अलाउद्दीन खिलजी पूरी सख्ती के साथ अपने विरोधियों का निर्ममतापूर्वक दमन करके पूरी सत्ता अपने हाथ में केंद्रित कर ली थी। उसने प्रांतों के सूबेदार तथा अन्य अधिकारियों को अपने पूर्ण नियंत्रण में रखा। इतिहासकार बरनी के विवरण से पता चलता है कि अलाउद्दीन के साम्राज्य में प्रांतों की संख्या 11 थी। आरंभिक वर्षों में दिल्ली सल्तनत के प्रशासनिक प्रणाली में प्रांत के अतिरिक्त शासन की अन्य कोई व्यवस्था नहीं थी। बाद में शासन की सुविधानुसार प्रांतों को शिकों में, शिकों को परगनों में बांटा गया। परगना अनेक गांवों का समूह होता

था। शासन की सबसे छोटी इकाई गांव थी। शासन–प्रणाली में खलीफा, उलेमा व अमीर की महत्वपूण भूमिका होती थी। लेकिन अलाउद्दीन खिलजी ने इन पर पूर्ण नियंत्रण रखते हुए सत्ता को अपने हाथों में केंद्रित रखा। सुल्तान ने अमीरों का दमन कर साधारण लोगों को उच्च पदों पर नियुक्त किया। पूर्व तुर्क शासकों की भांति शासन कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक मंत्रिपरिषद की व्यवस्था थी, किंतु उन्हें केवल सुल्तान की आज्ञा का पालन करना पड़ता था। अलाउद्दीन के समय में 4 महत्त्वपूर्ण मंत्री थे–

(i) दीवान–ए–वजारत (ii) दीवान–ए–आरिज या अर्ज

(iii) दीवान–ए–इंशा (iv) दीवान–ए–रसालत।

दीवान–ए–वजारत सर्वाधिक शक्तिशाली मंत्रालय होता था। इसका मुखिया वजीर होता था और यह राज्य का मुख्यमंत्री होता था। वजीर को वित्त के अतिरिक्त सैनिक अभियान के समय शाही सेनाओं का नेतृत्व भी करना पड़ता था। अलाउद्दीन के समय ख्वाजा खाति, ताजुद्दीन काफूर, नुसरत खाँ आदि की गिनती महत्त्पूर्ण वजीरों में होती थी। दीवान–ए–आरिज या अर्ज सैन्य विभाग था जिसका मुखिया आरिज–ए–मुमालिक कहलाता था। वजीर के बाद दूसरा महत्त्वपूर्ण मंत्री होता जिसके हाथ में युद्ध के समय सेनापति के साथ युद्ध क्षेत्र में जाने के अतिरिक्त सम्पूर्ण सेना के रख–रखाव का दायित्व भी होता था। अलाउद्दीन के समय में तीसरा महत्त्वपूर्ण विभाग दीवान–ए–इंशा था जिसका प्रधान बरीद–ए–मुमालिक होता था। अपने सहायक सचिव दबीर की सहायता से वह शाही उद्घोषणाओं के प्रारूप पत्र को तैयार करने से लेकर शासन–प्रशासन के प्रत्येक स्तर पत्र–व्यवहार का कार्य करता था। प्रशासन का चौथा महत्त्वपूर्ण विभाग दीवान–ए–रसालत था। इसका संबंध मुख्य विदेश विभाग एवं कूटनीतिज्ञ पत्र व्यवहार से होता था।

साम्राज्य में सुव्यवस्थित शासन प्रणाली व शांति व्यवस्था की स्थापना के लिए सुल्तान ने न्याय व्यवस्था की ओर विशेष ध्यान दिया। न्याय का उच्चतम स्रोत व समस्त शक्तियां स्वयं सुल्तान के हाथों में केंद्रित थी। अलाउद्दीन स्वयं परिस्थितियों के अनुसार जिन नियमों को उचित समझता था, उन्हें ही न्याय का आधार बनाता था। सुल्तान ने अपने राज्य में दंड–विधान को अत्यधिक कठोर बना रखा था।

संदेह की स्थिति में अपराधियों के साथ–साथ सहयोगियों को भी मृत्युदंड तथा अंग–भंग की सजा दी जाती थी। यद्यपि सर्वोच्च न्यायिक शक्ति सुल्तान में निहित थी तथापि न्याय–व्यवस्था में सुल्तान के नीचे 'रूद्र–ए–जहाँ' या काजी–उल–कुजात होता था। काजी–उल–कुजात के नीचे न्याय–व्यवस्था मे नायब काजी या अदल कार्य करता था। अलाउद्दीन खिलजी न्याय–व्यवस्था को लागू करने में अत्यधिक सख्त था। उसकी न्याय व्यवस्था का उल्लेख करते हुए ईश्वरी प्रसाद ने लिखा है कि "वह भाईचारे अथवा पारिवारिक संबंधों की भी चिंता नहीं करता था और बिना किसी भेदभाव के दंड दिया करता था।"

अलाउ□द्दीन ने अपने शासनकाल में पुलिस एवं गुप्तचर विभाग को प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया। पुलिस विभाग का प्रमुख अधिकारी कोतवाल होता था। पुलिस विभाग को और अधिक मजबूत बनाने के लिए अलाउद्दीन ने एक नये पद दीवान–ए–रियासत का गठन किया था। दीवान–ए–रियासत व्यापारी वर्ग पर नियंत्रण रखता था। 'शहना' व दंडाधिकारी भी पुलिस विभाग से संबंधित अधिकारी थे। जन–सामान्य के आचरण की देखभाल व रक्षा के लिए सेंसर अधिकारी के रूप में मुहतसिब नाम का अधिकारी होता था। अलाउद्दीन द्वारा स्थापित गुप्तचर विभाग का प्रमुख अधिकारी 'बरीद–ए–मुमालिक' कहलाता था। गुप्तचर विभाग के कार्य को सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिए संदेश वाहक के रूप में 'बरीद' व सूचना प्रदाता के रूप में 'मुन्ही' जैसे अधिकारी व कर्मचारी की व्यवस्था होती थी। अलाउद्दीन के काल में राज्य द्वारा स्थापित डाक चौकियों पर कुशल घुड़सवारों एवं लिपिकों को नियुक्त किया जाता था, जो राज्य भर का समाचार पहुँचाते थे।

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में अलाउद्दीन पहला ऐसा सुल्तान था, जिसने स्थायी सेना की व्यवस्था की, जो हमेशा राजधानी में सुरक्षा की दृष्टि से तैनात रहती थी। बाहरी आक्रमणों का सफलतापूर्वक सामना करने, आंतरिक विद्रोहों को दबाने एवं साम्राज्य विस्तार हेतु अलाउद्दीन खिलजी ने एक विशाल एवं सुव्यवस्थित सैन्य शक्ति का गठन किया था। सैनिकों को नियुक्ति में योग्यता को महत्त्व दिया जाता थ्ज्ञा। इसमें वंश अथवा जाति की कोई परवाह नहीं किया जाता था। सैनिकों की सीधी भरती एवं नकद वेतन देने की प्रथा आरंभ की थी। उसने घोड़ों को दागने एवं सैनिकों के हुलिया

लिखने की सर्वथा नवीनतम नियम बनाये। 'दीवान–ए–आरिज' सैनिकों की हुलिया रखता था। अलाउद्दीन ने पूर्व के सुल्तानों के काल में सैनिकों को जागीर देने की प्रथा को समाप्त करने राजकोष से सीधे नकद वेतन देने की व्यवस्था की। उसने काल में एक सैनिक का वेतन 234 टंका प्रतिवर्ष होता था। एक अतिरिक्त घोड़र रखने पर 78 टंका वार्षिक मिलते थे। एक घोड़ा रखने वाले सैनिकों को एक–अस्पा तथा दो घोड़ा रखने वाले सैनिकों को द्धि–अस्पा कहा जाता था। राज्य की तरफ से सैनिकों को घोड़े हथियार तथा अन्य सामग्री राज्य की ओर से मिलती थी।

अलाउद्दीन खिलजी की साम्राज्य विस्तार की महत्वकांक्षा की पूर्ति व मंगोल आक्रमण से राज्य की रक्षा हेतु एक विशाल सेना की आवश्यकता ने उसे आर्थिक सुधार के लिए प्रेरित किया। मध्ययुगीन भारतीय इतिहास में अलाउद्दीन खिलती को विशिष्ट रूप से आर्थिक सुधार के लिए जाना जाता है। अपने आर्थिक सुधारों के बल पर अलाउद्दीन खिलजी ने विशाल स्थायी सेना की व्यवस्था के बल पर सल्तनत का विस्तार सफल सैन्य अभियान द्वारा उत्तर से दक्षिण तक कर दिया। अलाउद्दीन खिलजी की आर्थिक नीति के विषय में जानने का महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं – बरनी कृत 'तारीखे–फिरोजशाही' अमीर खुसरो कृत खुताइनुल–फतूह, इब्नबतूता कृत 'रेहला' एवं इसामी कृत फुतूह–उस–सलातीन। अलाउद्दीन ने अपने आर्थिक सुधारों के अंतर्गत जो महत्त्वपूर्ण नीति अपनाये वे निम्नलिखित हैं –

(i) व्यक्तिगत संपत्ति तथा जागीरों की जब्ती

(ii) कर वृद्धि एवं वसूली में कठोरता की नीति

(iii) भूमि–मापन की प्रणाली

(iv) बाजार नियंत्रण प्रणाली के अंतर्गत – वस्तुओं के मूल्य पर नियंत्रण, वितरण की व्यवस्था, शासकीय भंडारण व्यवस्था, बाजार के नियंत्रण के लिए अधिकारी व कर्मचारी की नियुक्ति आदि।

अलाउद्दीन खिलजी ने अपने आर्थिक सुधारों के अंतर्गत दान, उपहार एवं पेंशन के रूप में अमीरों को दी गयी भूमि को जब्त कर लिया। इससे खालसा भूमि का अतिरिक्त विस्तार हुआ और राज्य की संपत्ति में वृद्धि हुई। सल्तनत में पूर्व से चलीआ रही जागीर प्रथा का अंत करके अमीरों के स्वतंत्र अस्तित्व पर सख्ती से नियंत्रण किया।

अलाउद्दीन ने अपने समय में राजस्व को बढ़ाने के लिए करों में अत्यधिक वृद्धि कर दी। हिंदूओं से भूमि कर उपज का 50 प्रतिशत तथा मुसलमानों से एक चौथाई लिया जाता था। इसके समय में गैर–मुसलमानों से चार प्रकार के कर वसूले जाते थे। 'सदर–ए–रियासत' नाम का अधिकारी बाजार–संचालन की पूरी व्यवस्था के लिए उत्तरदायी था। अनाज की खरीद बिक्री के लिए नगर के प्रत्येक मुहल्ले में अनाज मंडी की व्यवस्था की गई थी। मुस्लिम व्यापारियों को व्यापार के लिये विशेष लाइसेंस जारी करने की व्यवस्था की। लाइसेंस धारी ही किसानों से अनाज खरीदने के लिए योग्य समझे जाते थे। आज्ञा पत्र के आधार पर उपभोक्ताओं को वस्तुओं की उपलब्धता होती थी। 'शहना–ए–मंडी' बाजार का दारोगा होता था। मध्ययुगीन भारतीय इतिहास में अलाउद्दीन खिलजी की शासकीय भंडारण व्यवस्था अपने आप में सर्वथा विशिष्ट थी। इसके आधार पर उसे 'सार्वजनिक वितरण प्रणाली' के जनक के रूप में जाना जाता है। आपातकालीन परिस्थितियों में राशनिंग व्यवस्था के जरिये जन–सामान्य को अनाज उपलब्ध कराने की व्यवस्था राज्य के द्वारा की जाती थी। इसके लिए बड़े–बड़े गोदामों में अनाज भंडारण की व्यवस्था होती थी। अलाउद्दीन ने बाजार नियंत्रण प्रणाली को सफल बनाने के लिए योग्य, ईमानदार तथा अनुभवी लोगों को नियुक्त किया। इस प्रणाली के अंतर्गत बाजार के सबसे बड़े अधिकारी 'सदर–ए–रियासत' के अधीन तीन अधिकारी – 1. शहना (निरीक्षक) 2. बरीद (गुप्तचर अधिकारी) 3. मुनहियान (गुप्तचर) के नियुक्ति की व्यवस्था की।

उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि मध्यकालीन भारतीय इतिहास में अलाउद्दीन खिलजी का काल प्रशासनिक, सैनिक व आर्थिक क्षेत्रों में नवीन प्रयोगों व सुधारों के सफलतापूर्वक लागू करने के लिए प्रसिद्ध रहा।

9-4-2 egEen&fcu&rxyd dh e[; ;kstuk; **(Major plans of Muhammad-bin-Tughlaq)**

1325 ई. में गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु के बाद उसका पुत्र जूना खाँ मुहम्मद–बिन–तुगलक के नाम से दिल्ली का सुल्तान बना। उसका शासन काल 1325 से 1351 ई. तक रहा। इसका मूल नाम उलूग खाँ था। एक तरफ जहाँ सल्तनत की सीमा का सर्वाधिक विस्तार इसी के काल में हुआ वहीं दूसरी ओर उसकी क्रूर व अदूरदर्शी नीतियों के कारण विद्रोह का भी आरंभ हो गया। जिसके फलस्वरूप दक्षिण

भारत में दिल्ली सल्तनत से पृथक् नये स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हुई। बंगाल भी स्वतंत्र हो गया। इस प्रकार मुहम्मद–बिन–तुगलक द्वारा विस्तार का चरमोत्कर्ष विघटन के लिए उत्तरदायी साबित हुआ।

मध्यकालीन भारत के इतिहास में सल्तनत काल के अंतर्गत विरोधी गुणों के मिश्रण वाले व्यक्तित्व के रूप में विख्यात मुहम्मद–बिन–तुगलक का शासनकाल कई दृष्टिकोण से अपना अलग महत्त्व रखता है। उसने अपने शासनकाल में राजस्व, कृषि, धर्म और शासन–व्यवस्था में अनेक प्रकार के परिवर्तन किए। इतिहासकार बरनी ने उसके शासन संबंधी 5 प्रमुख योजनाओं का उल्लेख किया है –

1. दोआब में कर वृद्धि (1325–26 ई.) 2. राजधानी परिवर्तन (1327–29 ई.) 3. प्रतीकात्मक या सांकेतिक मुद्रा का चलन (1329–30 ई.) 4. खुरासान पर आक्रमण (1337–39 ई.) 5. कराचिल का सैनिक अभियान

दिल्ली की गद्दी पर बैठते ही मुहम्मद–बिन–तुगलक राजस्व व्यवस्था में सुधार करने के

लिए अध्यादेश लाया। उसने अपने साम्राज्य के सभी राज्यों (23 प्रांतों) में एक समान राजस्व व्यवस्था लागू करने के लिए प्रांतीय आय–व्यय का विवरण तैयार करवाया। राज्य की आय में वृद्धि के लिए उसने अपने अत्यधिक उपजाऊ क्षेत्र दोआब में कर वृद्धि की नीति अपनायी। सुल्तान ने न केवल भूमि कर में वृद्धि की बल्कि इसके साथ–साथ नए करों को भी लागू किया और इसे बलपूर्वक वसूल करने का प्रयास किया। दुर्भाग्य से इसी समय दोआब क्षेत्र में अकाल पड़ जाने के कारण जनता में कर अदा करने की क्षमता नहीं रही। क्रुद्ध जनता ने सुल्तान के कर वृद्धि व नवीन करों के आरोपन की नीति का

विरोध किया और इस प्रकार सुल्तान राजस्व सुधार व कर नीति को लागू करने में पूर्ण रूप से असफल रहा।

मुहम्मद–बिन–तुगलक ने अपने शासनकाल में 'दीवान–ए–कोही' नाम से एक अलग कृषि विभाग का निर्माण करवाया। इसका मुख्य उद्देश्य राज्य की ओर से सीधी आर्थिक सहायता के माध्यम से खेती योग्य भूमि बढ़ाना था। इस पर दो वर्षों के अंदर लगभग 70 लाख खर्च किये गए परंतु कई कारणों से यह योजना असफल हो गयी। मुहम्मद तुगलक ने 1327 ई. में दिल्ली की अपेक्षा दक्षिण में स्थित देवगिरी को राजधानी बनाने का एक सर्वथा नवीन प्रयोग किया। देवगिरी का नाम बदलकर दौलताबाद कर दिया। इसके पीछे सुल्तान का मत यह था कि राजधानी ऐसे सथान पर हो जो विस्तृत साम्राज्य का केंद्र हो, मंगोल आक्रमण से सुरक्षित हो तथा जिसका अपना सामरिक महत्व हो। इसके साथ–साथ विस्तृत साम्राज्य की उन्नति के लिए दक्षिण में धनी प्रदेशों के साधनों का समुचित उपयोग भी एक कारण था। इन सब कारणों से राजधानी का स्थान परिवर्तन कर दिया गया। दिल्ली से देवगिरी तक की 700 मील की लम्बी यात्रा हेतु समुचित प्रबंध भी किये, परंतु फिर भी यात्रा की कठिनाई व जन–असंतोष की भावना के कारण अंत में सुल्तान को विवश होकर फिर दिल्ली को राजधानी बनाना पड़ा। इस प्रकार उसका राजधानी परिवर्तन का प्रयोग पूर्णतः असफल रहा। यद्यपि दोआब में कर वृद्धि, नवीन करों के आरोपन की नीति, कृषि योग्य भूमि बढ़ाने के लिए 'दीवान–ए–कोही' कृषि विभाग की स्थापना, राजधानी परिवर्तन जैसे एक के बाद एक सुल्तान की योजनाएं विफल हो रही थीं फिर भी सुल्तान ने साहसिक कदम उठाते हुए सांकेतिक मुद्रा जारी करने का अध्यादेश सुना दिया। उसने यह आदेश दिया कि क्रय–विक्रय में सांकेतिक या प्रतीकात्मक मुद्रा को सोने तथा चांदी की मुद्रा के समान प्रचलित किया जाए। सांकेतिक मुद्रा के अंतर्गत सुल्तान ने इतिहासकार फरिश्ता के अनुसार पीतल के सिक्के चलाये जबकि इतिहासकार बरनी के अनुसार प्रतीकात्मक सिक्के में तांबा धातु का प्रयोग किया गया था। ऐसा माना जाता है कि मुहम्मद–बिन–तुगलक को सांकेतिक मुद्रा चलाने की प्रेरणा चीन तथा ईरान से मिली। वह अपनी विजय की योजनाओं को पूरा करने के लिए राज्य की आय को बढ़ाने के लिए आतुर था, जिससे एक विशाल सेना का निर्माण किया जा सके। नवीन प्रयोग करने में उसकी रुचि तथा उस समय की परिस्थितियाँ ने भी उसे इसके लिए प्रेरित किया। ऐतिहासिक विवरण से पता

चलता है कि सुल्तान की यह योजना उचित थी, किंतु वह प्रतीकात्मक या सांकेतिक मुद्रा के प्रचलन पर नियंत्रण रखने पर विफल रहा। राज्य में गुप्त तरीके से सिक्कों को ढलाई को रोकने में सुल्तान विफल रहा। एडवर्ड थॉमस के अनुसार, "सुल्तान ने ऐसी कोई विशेष व्यवस्था नहीं की, जिससे राजकीय टकसाल के सिक्कों तथा साधारणतया कुशल कारीगरों द्वारा बनाए हुए निजी सिक्कों का अंतर मालूम किया जा सके।" अतः राज्य में जाली टकसाल की भरमार हो गई और भू–राजस्व का भुगतान भी जाली सिक्कों से किया जाने लगा, जिससे अर्थव्यवस्था कमजोर हुई। विदेशी व्यापारियों पर राज्य का नियंत्रण नहीं रहा। वे व्यापारी भारत में भारतीय वस्तुओं को खरीदते समय सांकेतिक मुद्रा का प्रयोग किया करते थे, परंतु अपनी वस्तुओं को बेचते समय वे सांकेतिक मुद्रा को स्वीकार नहीं करते थे। इसके फलस्वरूप अर्थव्यवस्था को भारी क्षति हुई। सुल्तान को अपनी इस योजना को वापस लेना पड़ा और सांकेतिक मुद्रा को समाप्त करना पड़ा। मुहम्मद–बिन–तुगलक की शासन संबंधी असफल योजनाओं के अंतिम चरण में खुरासान एवं कराचिल विजय अभियान का उल्लेख किया जाता है। इतिहासकारों ने इस अभियान की खूब निंदा की। इन असफल अभियानों के संदर्भ में बरनी वर्णन करता है कि, "वे देश प्राप्त न किये जा सके, जिनका मोह सुल्तान को था और उसका कोष जो राजनीतिक शक्ति का सच्चा स्रोत था, व्यय कर दिया गया।"

मूर्खतापूर्ण व अदूरदर्शितापूर्ण इन अभियानों को देखते हुए ही एलफिंस्टन ने विचार प्रकट किया कि "मुहम्मद–बिन–तुगलक में पागलपन का कुछ अंश था।"

मुहम्मद तुगलक के काल में खुरासान पर अधिकार को लेकर मंगोल नेता तरमाशरीन तथा मिस्र का शासक दोनों योजना बना रहे थे। ऐसे में सुल्तान ने खुरासान को जीतने के लिए 3,70,000 सैनिकों की विशाल सेना को एक साल का अग्रिम वेतन देकर नियुक्त कर दिया, परंतु राजनैतिक परिवर्तन के कारण दोनों के बीच समझौता हो गया तथा सुल्तान की यह योजना असफल रही। राज्य को आर्थिक रूप से बहुत बड़ी हानि उठानी पड़ी। इस योजना के असफल होने के बाद सुल्तान की अगली विजय योजना कराचिल का अभियान थी, किंतु इसका भी विनाशकारी अंत हुआ। प्रारंभिक जीत के बाद ठंड के

मौसम में सैनिकों को काफी क्षति हुई। अफ्रीकी देश मोरक्को के यात्री इब्नबतूता इस अभियान में केवल तीन सैनिकों के बचे रहने की बात करता है तो इतिहासकार बरनी सिर्फ दस।

खुरासान पर आक्रमण व कराचिल का सैनिक अभियान सुल्तान के विश्व विजेता बनने की महत्त्वाकांक्षी को दर्शाता है, लेकिन अभियान से पूर्व परिस्थितियों का सही तरीके से आकलन न करना असफलता का मुख्य कारण रहा। अभियानों से पूर्व भौगोलिक कठिनाईयों का विचार ही नही किया गया। ऐसे में इसका विनाशकारी अंत होना स्वाभाविक था।

इस प्रकार मुहम्मद–बिन–तुगलक ने अपने शासनकाल में कई नवीन योजनाएं बनाईं जो पूर्ण रूप से असफल हुई। यद्यपि इतिहासकारों ने उसकी योजनाओं को काल्पनिक व पागलपन भरे बताबर आलोचना की है। परंतु गहराइ एवं गभीरता से विचार करने पर पता चलता है कि इन योजनाओं में सुल्तान की असाधारण योग्यता तथा नवीन प्रयोगों के प्रति उसकी शक्ति छुपे थे। शासन–प्रबंध को सुधारने तथा राज्य को समृद्ध बनाने को सुल्तान उत्सुक था। परंतु यह बात स्पष्ट है कि इन योजनाओं को कार्यरूप देने में उसने भारी भूलें की। इसलिए लेनपूल ने ठीक ही लिखा है कि – "अपने उत्तम उद्देश्यों और उच्च विचारों के होते हुए भी, संतुलन अथवा धैर्य और यथाचित भावों के अभाव के कारण मुहम्मद तुगलक पूर्णतः असफल हुआ।"

9-4-3 e|gEen&fcu&r|xyd dh vlQyrk d dkj.kA **(Causes of failure of Muhammad-bin-Tughlaq)**

मुहम्मद–बिन–तुगलक ने कुशल शासन–प्रबंध स्थापित करने व साम्राज्य के विस्तार के लिए कई योजनायें बनाई। परंतु उसकी कोई भी योजना सफल नहीं हो पायी। मुहम्मद–बिन–तुगलक की एक शासक के रूप में असफलता के पीछे कई कारण थे। उनमें कुछ कारण तो ऐसे थे जिनके लिए वह स्वयं जिम्मेदार था, परंतु कुछ कारण ऐसे भी थे जिनके लिए परिस्थितियां व अन्य कारक उत्तरदायी थे। उसकी असफलता के निम्नलिखित कारण थे –

1. विरोधी गुणों तथा अवगुणों का मिश्रण **(Mixture of opposites)** वाला सुल्तान का स्वयं का चरित्र – उसकी असफलता का प्रमुख कारण उसका अपना चरित्र था। वह एक उच्च कोटि का विद्वान,

दार्शनिक, आदर्शवादी व प्रतिभाशाली व्यक्ति था। वह अपने समय की परिस्थितियों से बहुत आगे की सोच रखता था। दूसरी ओर अभिमानी, क्रोधी, व्यग्र स्वभाव वाला सुल्तान में योजनाओं को कार्य रूप में परिणत करने वाली व्यवाहारिक बुद्धि का अभाव था। इस कारण वह लोगों को नहीं समझ पा रहा था और जन–सामान्य उसे नही समझ पा रहे थे। इन विरोधी स्वभावों के कारण वह जन–सामान्य के बीच अप्रिय हो गया। शासन–प्रशासन में शामिल लोगों के साथ उसका तालमेल नहीं हो पाया। जन–सामान्य के बीच उसकी अलोकप्रियता की स्थिति में असफलता अनिवार्य हो गई।

2. सुल्तान की अदूरदर्शितापूर्ण व पागलपन भरी असफल योजनाएं – सुल्तान की शासन संबंधी योजनाएं दोआब में कर वृद्धि, राजधानी परिवर्तन, प्रतीकात्मक सिक्कों का प्रचलन आदि प्रयोग पूर्णतः असफल हुए। इनसे धन–जन की अपार क्षति हुई और जन–सामान्य सुल्तान के विरोधी हो गय। इन असफल प्रयोगों के फलस्वरूप साम्राज्य में अव्यवस्था फेल हो गई। इस प्रकार सुल्तान की शासन–संबंधी योजनाएं उसकी असफलता का सबसे बड़ा कारण सिद्ध हुई।

3. सुल्तान की उदार दानवृत्ति – ब्रिटिश इतिहासकार लेनपूल मुहम्मद–बिन–तुगलक की दानशीलता को भी उसकी असफलता का एक कारण मानता था। उसके शाही लंगर में प्रतिदिन 4000 व्यक्ति भोजन किया करते थे। उसने अपना बहुत साधन निर्धनों में बांट दिया था। इसके राज्य के कोष को भारी हानि हुई थी।

4. सुल्तान के कठोर दण्ड की नीति – निर्दयी एवं क्रूर शासक के रूप में विख्यात मुहम्मद–बिन–तुगलक छोटे–छोटे अपराधों पर भी गुस्से में आकर कठोर दण्ड देता था। उसने हजारों व्यक्तियों को मौत के घाट उतार दिया था। अतः उसके अत्याचारों के कारण जन–सामान्य उसके शत्रु बन गए। अतः उसकी कठोर दण्ड–नीति का भी उसकी असफलता में बहुत बड़ा योगदान रहा है।

5. उलेमा के प्रति सुल्तान का उपेक्षापूर्ण व कठोर व्यवहार – मुहम्मद–बिन–तुगलक ने शासन–प्रबंध के मामलों में उलेमा व मुस्लिम धार्मिक वर्ग के अन्य लोगों के हस्तक्षेप को स्वीकार नहीं किया। इनके प्रति सुल्तान ने कठोर व्यवहार की नीति अपनाया। अपराध की स्थिति में उसने उलेमा को न केवल कठोर दण्ड बल्कि आठ अपराधी उलेमा का वध तक करवा दिया था। इससे मुस्लिम धार्मिक वर्ग के लोग

उसके विरूद्ध हो गये और उन्होंने सुल्तान को असफल बनाने में महत्वपूर्ण भाग लिया। इस प्रकार उलेमा के प्रति सुल्तान का कठोर व्यवहार उसकी असफलता का एक महत्वपूर्ण कारण बना।

इसके अलावा मुहम्मद–बिन–तुगलक की असफलता के कुछ कारण ऐसे भी थे जिनके लिए सुल्तान स्वयं जिम्मेदार नहीं था। इनमें उस समय की परिस्थितियां भी जिम्मेदार थी। जब सुल्तान ने राज्य की आय में वृद्धि के लिए दोआब में कर–वृद्धि की तो उसी समय भयानक अकाल की स्थिति बन गई जिससे उसकी यह योजना असफल हो गई। अशिक्षित, पिछड़ी एवं रूढ़िवादी जनता सुल्तान के विचारों तथा उच्च कोटि की योजनाओं को समझने में असमर्थ थी। अतः सुल्तान को अपनी योजनाओं के क्रियान्वयन में प्रजा का सहयोग प्राप्त नहीं हुआ और वह एक सफल शासक नहीं बन सका।

सुल्तान को शासन–प्रबंध में नीति बनाने व उसके सही तरीके से क्रियान्वन के लिए योग्य सलाहकार, मंत्री अथवा परामर्शदाता उपलब्ध नहीं हो सका जैसा कि अलाउद्दीन खिलती के समय में उपलब्ध था। इस प्रकार योग्य सलाहकारों का अभाव भी असफलता में एक कारण साबित हुआ। मुहम्मद–बिन–तुगलक के समय में सल्तनत का विस्तार उत्तर से दक्षिण तक हो गया था। इतने विस्तृत साम्राज्य पर नियंत्रण रखना कठिन हो गया था। अतः साम्राज्य की विशालता भी सुल्तान की असफलता का एक कारण बना। मुहम्मद तुगलक के काल में इसके सूबेदार भी राजद्रोही सिद्ध हुए। सुल्तान की सहायता करने की अपेक्षा वे उसके लिए स्वयं समस्या बने रहे।

इस प्रकार सुल्तान के स्वयं के चारित्रिक गुणों के अलावा अशिक्षित, पिछड़ी व रूढ़िवादी जनता, भयानक अकाल, योग्य परामर्शदाताओं की कमी, विशाल साम्राज्य व राजद्रोही सूबेदार आदि कारणों ने मुहम्मद तुगलक को एक सफल शासक नहीं बनने दिया।

9.4.4 मुहम्मद बिन तुगलक के साम्राज्य का मानचित्र (Map of the Empire of Muhammad-bin Tuglaq)

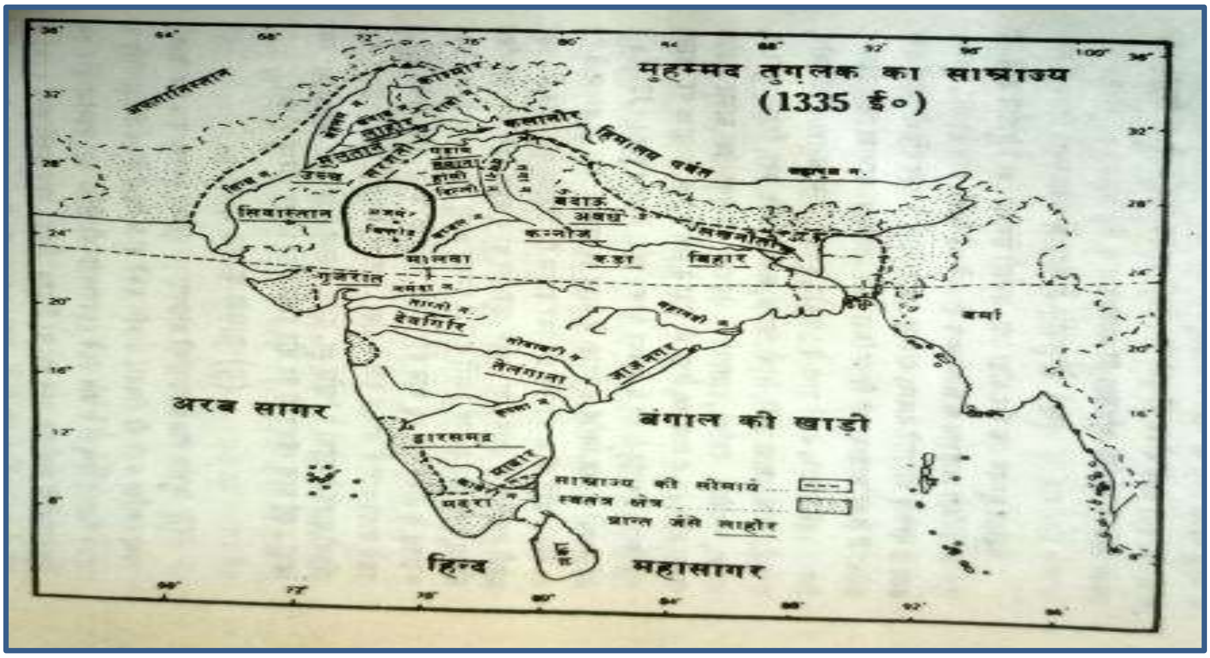

Source:Avinaarh Chandra Arora: Hisrory of ancient & early medieval India (From early to 1526 AD),Pradeep Publications Jalandhar P.459

9-5 iz xfr leh{kk **(Check your Progress)**

¼d½ [kkyh LFkku Hkjus ij vk/kkfjr iz'u **(Fill in the blank based Questions)**

(i) fnYyh lYrur ds lqYrkuksa esa vykmíhu f[kyth us igyh ckj ------------------ lsuk dh uhao j[khA

(ii) fnYyh lYrur ds ------------------ lqYrku us ^nhoku&,&dksgh* uke ls d`f"k foHkkx dh LFkkiuk dhA

(iii) Þeqgeen&fcu&rqxyd esa ikxyiu dk dqN va'k Fkkß ;g er ------------------ us O;Dr fd;k FkkA

(iv) fnYyh lYrur ds ------------------ lqYrku us viuh 'kkludky esa lkadsfrd ;k izrhdkRed flDds tkjh fd;sA

(v) HkkjDdk ;k=h bCucrrk ----------------- d dky e Hkkjr dh ;k=k ij vk;k FkkA

(vi) 'तारीख–ए–फिरोजशाही' ---------------- dh jpuk gA

(vii) vykmíhu f[kyth d dky e ckt kj dk lcl cMk vf/kdkjh ----------------- dgykrk FkkA

(viii) fnYyh lYrur d ----------------- 'kklд dk lkotfud forj.k i.kkyh dk tud dgk tkrk gA

(ix) vykmíhu f[kyth d dky e ljdkjh lgk;rk ikIr ckt kj ----------------- d uke l tkur FkA

(x) vykmíhu f[kyth d nf{k.k Hkkjr dh fot; vfHk;ku dk urRo ----------------- u fd;kA

¼[k½ lR;&vlR; dFku **(True-False Statement based Questions)**

(i) fnYyh lYrur d ifl) 'kklд egEen&fcu&rxyd u ^fldnj&,&lkuh* ;k fldnj f}rh; lkuh dh mikf/k /kkj.k dhA ¼ ½

(ii) lYrur dh jkt/kkuh fnYyh l gVkdj nofxjh egEen&fcu rxyd y x;kA ckn e nofxjh dk nkyrkckn dh lKk nh xbA ¼ ½

(iii) vykmíhu dk nofxjh vfHk;ku l efyd dkQj ikIr gvkA ¼ ½

(iv) lYrur dky e NkV tehnkjk dk ^[kr* dgk tkrk FkkA ¼ ½

(v) lYrur dky e xko d ef[k;k dk edne rFkk ijxu d i/kku dk vfey dgk tkrk FkkA ¼ ½

(vi) egEen rxyd d flgklu ij cBr le; fnYyh lYrur dy 13 ikrk e cVk FkkA ¼ ½

(vii) Qfj'rk ds vuqlkj egEen rqxyd ds lkdsfrd flDds es ihry dk iz;kx fd;k FkkA ¼ ½

(viii) bfrgkldkj cjuh ds vuqlkj egEen rqxyd ds lkadsfrd fIDds rkacs /kkrq ds FksA ¼ ½

(ix) tdkr efLyeksa ls fy;k tkus okyk ,d /kkfeZd dj Fkk tks lEifÙk dk 10 oka fgLlk gksrk FkkA ¼ ½

(x) vykmíhu f[kyth dk cpiu dk uke tkuk [kkq FkkA ¼ ½

9-6 lkjka'k@ laf{kflrdk **(Summary)**

- दिल्ली सल्तनत पर खिलजी वंश का शासन 1290 से 1320 ई. तक रहा।
- खिलजी वंश का संस्थापक जलालुíhu fQjkst f[kyth ¼1290&96 bZ-½ FkkA
- **खिलजी वंश ही नहीं, बल्कि दिल्ली सल्तनत का सबसे प्रसिद्ध शासक अलाउद्दीन खिलजी** ¼1296&1316 bZ-½ FkkA
- vykmíhu dk cpiu dk uke vyh rFkk xqj'kkLi FkkA
- tykyqíhu fQjkst f[kyth us mls viuk 'kkludky esa vehj&,&rqtqd dk in fn;k FkkA
- 1296 bZ- esa fnYyh dh xíh ij cSBus ds ckn vykmíhu f[kyth us ^flduanj&,&lkuh* ;k ^fldanj f}rh; lkuh* dh mikf/k /kkj.k dhA
- **अलाउद्दीन खिलजी ने विश्वविजय एवं एक नवीन धर्म** dks LFkkfir djus ds viuh fopkj dks viuk fe= fnYyh ds dksroky vykmy eqYd ds le>kus ij R;kx fn;kA
- vykmíhu us [kyhQk dh lÙkk dks ekU;rk inku djrs gq, ^;kfeu&mI&f[kykQr& ukflj h&vehj&my&Hkkfeuhu* dh mikf/k xzg.k dhA

- ysfdu fQj Hkh mlus [kyhQk ls u rks viuk in dh Lohd`fr yh vkSj u gh mYyek oxZ dks 'kklu dk;Z esa gLr{ksi djus fn;kA
- viuk 'kkludky esa vykmíhu us bLyke ds fl)kraks dks i`e[krk u nsdj jkT;fgr dks loksZifj ekukA
- LFkk;h lsuk dks xfBr djus okyk fnYyh lYrur dk igyk lqYrku vykmíhu f[kythFkkA
- lsfudks dh lh/kh Hkjrh ,oa udn osru nsus dh iFkk dks ikjEHk fd;kA
- vykmíhu f[kyth us ?kksM+ks dks nkxus ,oa lsfudks ds gqfy;k fy[kus dh iFkk dks Hkh ikjEHk fd;kA
- lsfudks ds gqfy;k fy[kus dk dk;Z nhoku&,&vkfjt djrk FkkA
- veh[k [kqljks ds fooj.k ls irk pyrk gS fd vykmíhu ds le; esa nl gtkj lsfudks dh VqdM+h dks ^rqeu* dgk tkrk FkkA
- **फारसी इतिहासकार फरिश्ता के अनुसार अलाउद्दीन के पास लगभग 4 लाख 75 हजार** lsfud FkkA
- ^eqLrÙkc* lgh rjhds ls tkp&ij[k dj Hkjrh fd;s tkus okys lsfud dks dgk tkrk FkkA
- lYrur dky esa lsfud foHkkx dk eq[; vf/kdkjh nhoku&,&vkfjt vFkok vkfjt&,&eqekfyd dgykrk FkkA
- ,d ?kksM+k j[kus okys lsfudks dks ,d&vLik rFkk nks ?kksM+k j[kus okys lsfudks dks f}&vLik ¼nks vLik½ dgk tkrk FkkA
- ,d lsfud dk osru 234 Vadk ifro"kZ FkkA

- bfrgkl dkj cjuh d vu lkj vykmíhu d dky e lYrur dk lkekT; 11 ¼X;kjg½ ikrk e cVk FkkA
- ikrk d ef[k;k ikrifr d fy, ^cyh* ;k ^eDr* 'kCn dk i ;kx fd;k tkrk FkkA
- vykmíhu d le; e 4 egÙoi.k e=ky; ;k foHkkx Fk & (i) nhoku&,&otkjr (ii) nhoku&,&vkfjt ;k vt (iii) nhoku&,&b'kk (iv) nhoku&,&jlkyr
- e[;e=h dk othj dgk tkrk FkkA
- othj lcl 'kfDr'kkyh e=h gkrk FkkA
- vykmíhu d 'kkludky e egÙoi.k othj Fk & [okt k [kkfrj] rkt íhu dkQj] u lj r [kk vkfnA
- पत्र–व्यवहार करने वाला विभाग दीवान–ए–इंशा था।
- दीवान–ए–इंशा का प्रधान ^cjhn&,&eekfyd* dgykrk FkkA
- nhoku&,&b'kk foHkkx e lgk;d lfpo dk ^nchj* dgk tkrk FkkA
- ^nhoku&,&jlkyr* fon 'k foHkkx FkkA
- vkfFkd ekeyk e lcf/kr egÙoi.k foHkkx nhoku&,&fj;klr dh LFkkiuk vykmíhu f[kyth u dh FkhA
- vykmíhu f[kyth d ckt kj fu;=.k dh iijh 0;oLFkk d lpkyu dk nkf;Ùo nhoku&,&fj;klr d gkFk e FkkA
- बाजार–नियंत्रण प्रणाली अलाउद्दीन खिलजी की आर्थिक सुधारों की सर्वप्रमुख विशेषता FkhA
- ekx rFkk iifr d fu;e l ij tkdj oLrvk d eY; ij fu;=.k j[kr g, lYrku ने आवश्यक वस्तुओं का eY; bruk de dj fn;k Fkk fd ,d lfud de oru e Hkh viuk [kp pyk ldA

- ^Ljk; vny* Ljdkjh Lgk;rk i`kLr cktkj FkkAvykmíhu d dky e Hkfe ekiu i.kkyh dk ^eLkgr* d uke L tkur FkkA
- vykmíhu f[kyth vkj egEen&fcu rxyd d Le; yxku d :i e dy mRiknu dा 1/2 भाग अर्थात् 50 प्रतिशत वसूला जाता था।
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत राशनिंग व्यवस्था द्वारा अनाज उपलब्ध कराने की प्रथा की शुरुआत अलाउíhu f[kyth u gh fd;k FkkA
- dj&O;oLFkk Lpkyu d fy, ^nhoku eLr[kjkt* uke L dj foHkkx dh LFkkiuk fd;kA
- jkT; e LeLr U;k;&O;oLFkk dk dn fcn LYrku gkrk FkkA LYrku d ckn Ln&,&tgk ;k dkth&my&dtkr vkj bLd uhp ^uk;c&dkth* U;k;&O;oLFkk dh ftEenkjh LHkkyr FkkA
- ifyL foHkkx dk vf/kdkjh ^dkroky* gkrk FkkA
- LoiFke nf{k.k&Hkkjr dh fot; dk vfHk;ku vykmíhu f[kyth u gh pyk;k FkkA
- vykmíhu f[kyth dk xtjkr fot; d nkjku efyd dkQj iklr gvkA
- efyd dkQj fgn fdUuj ¼fgtMk½ Fkk] ftL xtjkr fot; d Le; uLjr [kk u gtkj nhukj e [kjhnk FkkA
- efyd dkQj dk ^gtkj nhukjh* Hkh dgk tkrk gA
- edíe & xko d ef[k;k dk dgr FkkA
- vkfey & ijxu d i/kku dk dgr FkkA
- [kr & NkV tehnkjk dk dgr FkkA
- LYrur dky e ikrk dk f'kdk e o f'kdk dk ijxuk e foHkDr fd;k x;k FkkA

- vykmíhu d dky e tu&lkekU; d vkpkjk dh j{kk ,o n[kHkky dk dk;
^egrflc* uke dk vf/kdkjh djrk FkkA
- **दिल्ली सल्तनत के सभी सुल्तानों में सबसे शिक्षित, विद्वान, योग्य, दार्शनिक, सनकी,** ikxy o dykiseh lYrku egEen&fcu&rxyd FkkA
- egEen&fcu&rxyd dk cpiu dk uke tkuk [kk FkkA
- egEen&fcu&rxyd d le; fnYyh lYrur dy 23 ikrk e cVk FkkA
- bld dky e d'ehj ,o vk/kfud cyfpLrku dk NkMdj yxHkx lkjk fgnLrku fnYyh lYrur d fu;=.k e FkkA
- fnYyh lYrur dh xnnh ij cBu d ckn egEen rxyd u dN uohu ;ktukvk & nkvkc {k= e dj of) ¼1326&27 b-½] jktk/kkuh ifjoru ¼1327&29 b-½] irhdkRed ;k lkdfrd enk dk pyu ¼1329&30 b-½] [kjklku ij vkØe.k ¼1337&39 b-½ o djkfpy dk lfud vfHk;ku dk fØ;kfUor dju d i;Ru fd, ijr vlQy jgA
- egEen&fcu&rxyd d dky e gh vÝhdh n'k ekjDdk d ;k=h bCucrrk 1333 b- e Hkkjr vk;kA
- bCucrrk u egEen&fcu&rxyd d le; dh ?kVukvk dk viuh iLrd ^fdrkc&my&jgYe* e o.ku fd;kA
- egEen&fcu&rxyd u bCucrrk dk fnYyh dk dkth fu;Dr fd;k FkkA
- 1342 b- e lYrku egEen&fcu&rxyd }kjk bCucrrk dk jktnr d :i e phu Hktk x;kA
- bfrgkldkj ft;kmíhu cjuh u viuh iLrd ^rkjh[k&,&fQjkt'kkgh* e egEen&fcu&rxyd d 'kkludky d jkpd rF;k dh tkudkjh feyrh gA
- egEen&fcu&rxyd u df"k d fodkl d fy, ,d uohu foHkkx&vehj&, dkgh dh LFkkiuk dhA

- egEen&fcu&rqxyd ds dky esa gh fnYyh lYrur dk fo?kVu vkjEHk gks x;kA
- blds dky esa gh nf{k.k Hkkjr esa 1336 bZ- esa gfjgj ,oa cqDdk uked nks HkkbZ;ksa us Lora= fot;uxj lkezkT; dh LFkkiuk dh FkhA
- egEen&fcu&rqxyd ds dky esa cxky Hkh fnYyh lYrur ls vyx gksdj Lora= jkT; ds :i esa vfLrRo esa vk x;kA

9-7 lwpd&lwpd (Key Words)

- खलीफा – मुस्लिम धर्म गुरू
- उलेमा – मध्यकालीन भारतीय इतिहास में मुस्लिम शासन में महत्त्वपूर्ण स्थान रखने वाले धर्माधिकारी होते थे जो कुरान व हदीस की व्याख्या करते थे।
- कुरान – मुस्लिमों का पवित्र ग्रंथ
- हदीस – पैगम्बर के कार्यो एवं कथनों के उल्लेख से संबंधित ग्रंथ।
- ममलूक – स्वतंत्र माता–पिता से उत्पन्न दास।
- हुलिया – रंग रूप, चेहरे की बनावट, मुखाकृति आदि का विवरण।
- टकसाल – सिक्के ढालने का कारखाना।
- छोआब – दो नदियों के बीच का स्थान।
- काजी – मध्यकाल में सुल्तानों के सहायक के रूप में मुस्लिम कानून के अनुसार न्याय करने वाला।

9-8 Lo&ewY;kadu ds fy, iz'u (Self Assessment Test (SAT)

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Based Questions)

(i) अलाउद्दीन खिलजी की दक्षिण विजय का श्रेय किसे दिया जाता है ?

(क) गाजी मलिक (ख) अल्प खां (ग) मलिक काफूर (घ) उलगू खां

(ii) दिल्ली सल्तनत के किस सुल्तान को 'अंतर्विरोधों का विस्मयकारी मिश्रण' कहा गया ?

(क) मुहम्मद तुगलक (ख) गयासुद्दीन तुगलक (ग) अलाउद्दीन खिलजी (घ) बलबन

(iii) अलाउद्दीन खिलजी ने किस हिंदू शासक को 'रायरायान' की उपाधि एवं एक चंदोबा से सम्मानित किया ?

(क) रामचन्द्र देव (ख) प्रताप रूद्रदेव (ग) वीर बल्लाल (घ) सुंदर पांड्य

(iv) मुहम्मद–बिन–तुगलक के विषय में असत्य है –

(क) दोआब में कर वृद्धि

(ख) सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन

(ग) राजधानी का दिल्ली से दौलताबाद (देवगिरी) स्थानान्तरण

(घ) 'दीवान–ए–मुस्तखराज' विभाग की स्थापना

(v) अलाउद्दीन भारत का पहला मुस्लिम शासक था जिसने भूमि की वास्तविक आय पर राजस्व निर्धारित किया। अलाउद्दीन खिलजी ने उपज के कितने भाग को भूमिकर के रूप में लेना निश्चित किया ?

(क) उपज का 1/2 भाग (ख) उपज का 1/3 भाग

(ग) उपज का 1/5 भाग (घ) उपज का 1/6 भाग

(vi) निम्न से किस सुल्तान ने बाजार–सुधार लागू किया ?

(क) जलालुद्दीन खिलजी (ख) अलाउद्दीन खिलजी (ग) मुहम्मद–बिन–तुगलक (घ) बलबन

(vii) मुहम्मद–बिन–तुगलक गद्दी पर कब बैठा ?

(क) 1296 ई. (ख) 1325 ई. (ग) 1351 ई. (घ) 1320 ई.

(viii) दिल्ली सल्तनत के किस सुल्तान ने सर्वप्रथम मूल्य नियंत्रण प्रणाली को लागू किया ?

(क) इल्तुतमिश (ख) अलाउद्दीन खिलजी (ग) मुहम्मद–बिन–तुगलक (घ) शेरशाह सूरी

(ix) घरी अथवा गृहकर लगाने वाला दिल्ली का प्रथम सुल्तान कौन था ?

(क) बलबन (ख) अलाउद्दीन खिलजी (ग) मुहम्मद–बिन–तुगलक (घ) फिरोज शाह तुगलक

(x) निम्न से किसकी मृत्यु पर बदायुँनी ने कहा था कि "सुल्तान को उसकी प्रजा से और प्रजा को उसकी सुल्तान से मुक्ति मिल गई" ?

(क) सिकंदर लोदी (ख) गयासुद्दीन तुगलक (ग) मुहम्मद–बिन–तुगलक (घ) इल्तुतमिश

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer based Questions)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें। (Write Short Notes on the following)

(i) अमीर–ए–कोही (Deewan-E-Kohi)

(ii) दीवाने मुस्तखराज (Deewan-E-Mustkharaj)

(iii) मुहम्मद–बिन–तुगलक (Muhammad-bin-Tughlaq)

(iv) सिंकदर द्वितीय (सानी) (Sikander II (Sani))

(v) मलिक काफूर (Malik Kaffur)

(vi) सराय–ए–अदल (Sray-E-Adal)

(vii) दीवान–ए–रियासत (Deewan-E-Riyasat)

(viii) मुहम्मद तुगलक की योजनाएँ (Projects of Muhammad Tughlaq)

(ix) मुहम्मद तुगलक की शासक के रूप में असफलता के कारण (Causes of failure of Muhammad Tughlaq as a King)

(x) किताब–उल–रेहला (Kitab-Ul-Rehla)

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer based Questions)

1. अलाउद्दीन खिलजी की विजयों का वर्णन करे।

(Describe the victories of Alauddin Khilji)

2. अलाउद्दीन खिलजी के प्रशासनिक, सैनिक तथा आर्थिक सुधारों का उल्लेख करें।

(Discuss the Administrative, Military and Economic reporms of Alauddin Khilji)

3. मुहम्मद–बिन–तुगलक की मुख्य योजनाओं को बतायें तथा इसके असफल होने के क्या कारण थे।

(Indicate major plans of Muhammad-bib-Tughlaq and What were the caused of its failure)

4. भारत के मानचित्र पर मुहम्मद–बिन–तुगलक व अलाउद्दीन खिलजी के साम्राज्य विस्तार को अंकित करें।

(Point out the Empire of Muhammad Tughlaq and Alauddin Khilji on India's Map.)

9-9 ixfr leh{kk gr i'ukÙkj (Answer to Check your progress)

9.5 (क) उत्तर– (i) स्थायी (ii) मुहम्मद–बिन–तुगलक (iii) एलफिस्टन (iv) मुहम्मद–बिन–तुगलक (v) अलाउद्दीन खिलजी (vi) सराय–ए–अदल (vii) मलिक काफूर

(ख) उत्तर– (i) असत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) सत्य (v) सत्य (vi) असत्य (vii) सत्य (viii) सत्य (ix) असत्य (x) असत्य

9.8 (क) उत्तर – (i) ग (ii) क (iii) क (iv) घ (v) क (vi) ख (vii) ख (viii) ख (ix) ख (x) ग

9-10 lgk;d lnHk xFk (References)

- प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास, प्रारंभ से 1526 ई. तक, लेखक – अविनाश चन्द्र अरोडा, तृतीय संस्करण 1987, प्रदीप पब्लिकेशन्स, जालंधर
- मध्यकालीन भारत – भाग 1 (750–1540 ई. तक) हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, संपादक – हरीशचंद्र वर्मा

- भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन (द्वितीय संस्करण) दृष्टि पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
- सामान्य अध्ययन – यूनिक प्रकाशन, नई दिल्ली, डॉ. विनय कुमार सिंह।
- स्पेक्ट्रम पब्लिकेशन – सामान्य अध्ययन राजीव अहीर, नई दिल्ली।

COURSE CODE: HIST 103 LESSON NO. 10	SUBJECT – HISTORY PART-1 SEMESTER - II AUTOR – MOHAN SINGH BALODA
fot; lkekT; dk foLrkj **(Expansion of Vijay Nagar Empire)**	

v/;k; lajpuk **(Lesson Structure)**

10.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objective)

10.2 परिचय (Introduction)

10.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

10.3.1 विजयनगर साम्राज्य के उत्थान–पृष्ठभूमि (Rise of Vijaynagar Empire-Background)

10.3.2 विजयनगर साम्राज्य के शासक वंश (Ruler Dynasty of Vijaynagar Empire)

10.3.3 विजयनगर साम्राज्य के महान शासक–कृष्णदेव (**Great Ruler of Vijaynagar Empire – Krishandev Roy**)

10.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of Text)

10.4.1 विजयनगर साम्राज्य–विस्तार का मानचित्र (Map of the Vijaynagar Empire)

10.4.2 विजयनगर साम्राज्य का प्रशासन (Administration of Vijaynagar Empire)

10.4.3 विजयनगर साम्राज्य : सामाजिक व्यवस्था (Vijaynagar Empire : Social System)

10.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

10.6 सारांश / संक्षिप्तिका (Summary)

10.7 संकेत–सूचक (Key-words)

10.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT)

10.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

10.10 सहायक ग्रंथ/सहायक अध्ययन सामग्री (References/Suggested Readings)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात आप निम्न योग्य होंगे :–

10-1 vf/kxe mnns' ; **(Learning Objectives)**

शिक्षार्थी इस अध्याय के अध्ययन के बाद इस योग्य हो जाएंगे :–

- विजयनगर साम्राज्य के विस्तार का परिचय दे सकंगे।
- विजयनगर साम्राज्य के उत्थान व विकास की पृष्ठभूमि को बता सकेगे।
- विजयनगर साम्राज्य के शासक–वंशों का वर्णन कर सकेंगे।
- विजयनगर साम्राज्य के महान शासक कृष्णदेव राय के शासनकाल का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- विजयनगर साम्राज्य के प्रशासन व उसकी सामाजिक व्यवस्था पर आपस में चर्चा कर सकेंगे।
- विजयनगर साम्राज्य के विस्तार को भारत के मानचित्र पर चिन्हित कर सकेगे।

10-2 ifjp; **(Introduction) :-**

दिल्ली सल्तनत के शासनकाल में दक्षिण भारत में वारंगल के काकतीयों के सामंत हरिहर और बुक्का दोनों भाइयों ने अपने गुरु विद्यारण्य की सहायता से स्वतंत्र राज्य विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की थी। इन दोनों भाइयों ने अपने पिता संगम के नाम पर संगम वंश की स्थापना की। संगम वंश के अलावा सालुज वंश, तुलुव वंश और अराविदु वंश ने लगभग 300 वर्षों तक शासन किया। हरिहर ने इस अर्थात् विजयनगर को अपनी राजधानी बनाया। तुलुव वंश के कृष्णदेव राय विजयनगर साम्राज्य के सबसे प्रसिद्ध शासक हुए। संगम वंश के शासकों ने जिस विजयनगर साम्राज्य की नींव डाली कृष्णदेव राय ने उसे अपने पराक्रम व कुशल प्रबंधन के द्वारा उन्नति के शिखर पर पहुँचा दिया। कृष्णदेव राय विद्या व कला के महान सरंक्षक के रूप में जाने जाते है। उनके दरबार में तेलुगू साहित्य के 8 कवियों

की मंडली विराजती थीं जो अष्टदिग्गज के नाम से इतिहास में विख्यात है। विजयनगर की यात्रा करने वाले विदेशी यात्री इटली यात्री निकोलो कॉण्टी, फारसी यात्री अर्ब्दुरज्जाक, पुर्तगाली यात्री जूनिज आदि के विवरण से विजयनगर साम्राज्य की महानता का पता चलता है। ऐसे महान विजयनगर साम्राज्य का शासन राजतंत्रात्मक था जिसमें राजा को 'राय' की उपाधि से संबोधित किया जाता था। वर्ण एवं जाति व्यवस्था पर आधारित समाजशास्त्रीय परंपराओं वाला सामाजिक व्यवस्था पूर्व की तरह यहां भी मौजूद था जिसमें ब्राह्मणों को विशेषाधिकार प्राप्त थे। समाज में क्षत्रिय वर्ग की अनुपस्थिति कारण चेट्टियों या शेट्टियों के रूप में व्यापारिक वर्ग का ब्राह्मणों के बाद विशेष महत्व था। इस काल में तुलनात्मक रूप से महिलाओं की स्थिति अच्छी मानी गयी है। भारत की सांस्कृतिक विकास यात्रा में इस साम्राज्य का योगदान सराहनीय रहा। विजयनगर साम्राज्य के शासकों ने न केवल साम्राज्य का विस्तार किया बल्कि सुव्यवस्थित शासन प्रणाली के द्वारा स्थापत्यकला, नाट्यकला, प्रतिमा कला तथा भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में विशेष रूचि दिखाई। इसके काल में दक्षिण भारत के क्षेत्रीय भाषाओं – तेलुगू, कन्नड़ व तमिल के अतिरिक्त संस्कृत को भी काफी प्रोत्साहन मिला। अतः इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि विजयनगर साम्राज्य प्रशासनिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक सभी दृष्टियों से एक समृद्ध व संपन्न राज्य था जिसने उस क्षेत्रों के हिंदुओं को इस्लामी संस्कृति के प्रभाव से सुरक्षित रखने का सफल प्रयत्न किया। अंततः इस महान् साम्राज्य का तालीकोट के युद्ध में 1565 ई. में अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा व बीदर की संयुक्त सेनाओं के द्वारा पराजित करके अंत कर दिया गया।

10-3 v/;k; d! e|[; fcn| **(Main body of the Text)**

10-3-1 fot;uxj lkekT; d! mRFkku&i"BHkfe **(Rise of Vijaynagar Empire- Background)**

1206 ई. में मुहम्मद गौरी के गुलाम के रूप में कुतुबद्दीन ऐबक ने दिल्ली सल्तनत के नाम से जिस मुस्लिम सत्ता की स्थापना की उसमें गुलाम वंश, खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैयद वंश व लोदी वंश के कई शासकों ने राज किये। ऐबक ने लाहोर से ही अपना शासन चलाया। इल्तुतमिश ने लाहौर से दिल्ली सत्ता को हस्तांतरित किया। इसी गुलाम वंश के बलबन को दिल्ली सल्तनत का सबसे प्रभावशाली शासक अलाउद्दीन खिलजी हुआ जिसके शासनकाल में सल्तनत का साम्राज्य उत्तर से

दक्षिण तक सर्वाधिक विस्तृत था। किंतु मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा अपनायी गयी कुछ गलत नीतियों के कारण इसके काल में साम्राज्य का विघटन होने लगा। दिल्ली सल्तनत के बाद के शासक दुर्बल, अयोग्य व अदूरदर्शी निकले इस कारण उत्तर व दक्षिण के क्षेत्रीय राजाओं को अपनी स्वतंत्रता की घोषणा करने का अवसर मिल गया। दक्षिण भारत में स्वतंत्र राज्यों के उदय की श्रृंखला में जब 12वीं शताब्दी के अंत में और 13वीं शताब्दी के अंत में चालुक्य व चोल सत्ता का विघटन हो गया तो इनके अवशेष पर चार स्वतंत्र राज्यों – देवगिरी के याख, वारंगल के काकलीय, द्वारसमुद्र के होयसला व मदुरई के पांडय अस्तित्व में आ गये। स्वतंत्र राज्यों की स्थापना के क्रम में ही दक्षिण भारत में 1325 से 1350 ई. के मध्य जब दिल्ली सल्तनत की केंद्रीय शक्ति कमजोर पड़ गयी तो तो एक बार फिर दक्षिण में चार स्वतंत्र राज्यों – माबर, खानदेश, बहमनी एवं विजयनगर का उत्कर्ष हुआ। इनमें से दक्षिण भारत में बहमनी एवं विजयनगर का विशेष महत्व रहा है। विजयनगर साम्राज्य का चार राजवंशों ने लगभग 300 वर्षों तक राज किया।

1336 ई. में मुहम्मद बिन तुगलक के काल में ही हरिहर और बुक्का ने विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की थी। ये दोनों भाई वारंगल के काकतीय के सामंत थे। प्रारंभ में हरिहर और बुक्का काकतीय शासक प्रातपरूद्र II की सेवा में थे। 1325 ई. में वारंगल की सत्ता पर दिल्ली सल्तनत के अधिकार हो जाने पर इन दोनों भाइयों को दिल्ली ले जाया गया। वहां इन दोनों भाईयों को इस्लाम ग्रहण करवाकर सुल्तान का विश्वासपात्र बना दिया गया। सल्तनत के अधीनस्थ क्षेत्र काम्पिल्य पर जब द्वारसमुद्र के होयल ने आक्रमण कर दिया तो इसके सुरक्षा के लिए हरिहर व बुक्का को सल्तनत की सेना के साथ वहां भेजा गया। किंतु इस दौरान ब्राह्मण विद्वान संत माधव विद्यारण्य तथा वेदों के प्रसिद्ध भाष्यकार सायण की प्रेरणा से इन्होंने पुनः हिंदू धर्म ग्रहण कर लिया। और इन्होंने 1336 ई. में दक्षिण भारत में तुगलक सत्ता के विरूद्ध होने वाले राजनीतिक एवं सांस्कृतिक आंदोलन का फायदा उठाते हुए स्वतंत्र राज्य की घोषणा कर दी। इसके परिणामस्वरूप संगम पुत्र हरिहर एवं बुक्का ने 1336 ई. में आज के कर्नाटक के राज्य में तुगभद्रा के तट पर स्थित अनेगुंडी दुर्ग के सम्मुख विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की थी। विजयनगर साम्राज्य का नाम तुंगभ्रदा नदी के दक्षिण किनारे पर स्थित उसकी राजधानी के नाम पर पड़ा। आज भी यह हम्पी के नाम से विश्वविख्यात है। उसकी राजधानी विजयनगर (हम्पी)

विपुल संपरा व शक्ति की प्रतीक के रूप में प्रसिद्ध थी। विजयनगर का शाब्दिक अर्थ है – 'जीत का शहर'। 14 वीं शताब्दी में अस्तित्व में आये विजयनगर साम्राज्य को मध्ययुग व आधुनिक औपनिवेशिक काल के बीच का संक्राति काल के रूप में जाना जाता है। प्रायः इस नगर को मध्ययुग का प्रथम हिन्दू साम्राज्य के रूप में समझा जाता है। फारसी यात्री अब्दुर्रज्जाक ने अपने विवरण में लिखा है कि 'विजयनगर दुनिया के सबसे भव्य शहरों में से एक लगा, जो उसने देखे या सुने थे।' इस प्रकार 1336 में विजयनगर स्वतंत्र सत्ता की घोषणा के बाद हरिहर I इसका पहला शासक बना। इसके चार भाइयों – बुक्का I, कम्पन, मरप्पा तथा मुडप्पा ने इसमें अच्छी तरह मदद की। इन्होंने अपने पिता संगम के नाम पर संगम वंश की नींव डाली। इस प्रकार विजयनगर साम्राज्य का प्रथम वंश संगम वंश हुआ। इसके अलावा तीन अन्य राजवंशों – सलुव वंश, तुलुव वंश तथा आरविडु वंश ने विजयनगर साम्राजय पर लगभग 300 वर्षों तक राज किया। इन चार राजवंशों में कई प्रसिद्ध शासक हुए किंतु विजयनगर साम्राज्य का सबसे प्रसिद्ध शासक तुलुव वंश के कृष्णदेव राय हुए जिनके काल में इस साम्राज्य की उन्नति शिखर पर पहुंच गई थी।

10-3-2 fot ;uxj lkezkT; dk 'kkld oa'k **(Ruler Dynasty of Vijaynagar Empire)**

1336 ई. में हरिहर और बुक्का ने विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की थी। इन दोनों भाइयों ने मिलकर अपने पिता संगम के नाम संगम वंश की नींव डाली। इस प्रकार विजयनगर साम्राज्य का प्रथम वंश संगम वंश हुआ। विजयनगर साम्राज्य का प्रथम राजवंश संगम राजवंश (1336–1458 ई.) तक लगभग 150 वर्षों तक चला। इस वंश का प्रथम शासक हरिहर प्रथम (1336–1356 ई0) हुआ। इसने अपने शासनकाल में साम्राज्य की सीमा का विस्तार किया। इस क्रम में सर्वप्रथम अपनी राजधानी को आनेगोडी से विजयनगर (हम्पी) में स्थानांतरित किया। 1346 ई. तक हरिहर प्रथम ने सम्पूर्ण होयसल राज्य को विजयनगर साम्राज्य में मिला लिया। 1347 ई. में इसने कंदबों के प्रदेशों को विजित किया तथा 1352–53 ई. में मदुरा पर भी विजय प्राप्त किया। इसके काल में ही विजयनगर – बहमनी का संघर्ष प्रारंभ हुआ, जो अगले 200 वर्षों तक चलता रहा। बहमनी साम्राज्य 1347 ई. में अस्तित्व में आया था।

1356 ई. में हरिहर प्रथम की मृत्यु के बाद बुक्का प्रथम (1356—1377 ई.) संगम वंश का अगला शासक बना। इसने 'वेदमार्ग प्रतिष्ठापक' की उपाधि धारण की। बुक्का प्रथम ने अपने साम्राज्य को सुदृढ़ करते हुए उत्तर में तुंगभ्रदा घाटी से दक्षिण में तमिल तथा चेर राज्य को मिलाते हुए रामेश्वरम् तक विस्तृत कर दिया। इसने पहली बार तोपों का प्रयोग करते हुए तत्कालीन बहमनी शासक मुहम्मद शाह के अधीन मुद्गल किले पर आक्रमण किया। साम्राज्य विस्तार को मजबूती देने के लिए इसने 1374 ई. में एक दूतमंडल चीन भेजा। 1377 ई. में इसकी मृत्यु हो गई। संगम वंश के प्रथम दोनों शासक हरिहर एवं बुक्का ने राजा व महाराजा की उपाधि ग्रहण नहीं की थी।

हरिहर द्वितीय (1377—1404 ई.) विजयनगर साम्राज्य को प्रथम शासक हुआ जिसने 'महाराजाधिराज' की उपाधि ग्रहण की। इसने अपने साम्राज्य का विस्तार करते हुए कनारा, मैसूर, त्रिचिनापल्ली तथा काँची को विजित किया और अपने राज्य में मिला लिया। हरिहर द्वितीय ने अपने साम्राज्य विस्तार की नीति के तहत बहमनी से गोवा व बेलगाँव को छीन लिया तथा श्रीलंका पर भी आक्रमण किया। अपने साम्राज्य विस्तार को मजबूत करने के लिए इसने अपने शासनकाल में व्यापार को बढ़ावा दिया। 1404 ई. में इसकी मृत्यु हो जाने के बाद उसके पुत्रों में सत्ता के लिए संघर्ष छिड़ गया और 1404 से 1406 ई. तक विजयनगर साम्राज्य राजनीतिक अस्थिरता के दौर से गुजरता रहा। इन दो वर्षों में विरूपाक्ष प्रथम एवं बुक्का द्वितीय जो हरिहर II के ही पुत्र थे ने राज किया। इसके बाद देवराय प्रथम (1406—1422) विजयनगर साम्राज्य का शासक बना जिसे बहमनी सुल्तान फिरोजशाह के आक्रमण के अतिरिक्त आंतरिक विद्रोह का भी सामना करना पड़ा, परंतु अंतिम रूप से वह इसमें सफल रहा। इटली यात्री निकोलो डी कॉण्टी देवराय प्रथम के शासनकाल में भारत आया था। उसने देवराय प्रथम को शक्तिशाली राजा कहा। 1422 ई. में देवराय प्रथम की मृत्यु के बाद उसका पुत्र रामचंद्र व उसके भाई विजयराय कुछ महीनों के लिए विजयनगर साम्राज्य के शासक बने। ये दोनों दुर्बल शासक साबित हुये। इन दोनों के बाद देवराय द्वितीय (1422—46 ई.) संगम वंश का सबसे महानतम शासक के रूप में विजयनगर साम्राज्य की गद्दी पर बैठा। इसने 'इम्मादिदेवराय' व गजबेटकर (हाथियों का शिकारी) उपाधियाँ धारण की। देवराय द्वितीय ने साम्राज्य विस्तार के लिए सेना तथा प्रशासन को पुनर्गठित किया और भारी संख्या में अपनी सेना में मुसलमानों को शामिल किया। इसने विजयनगर साम्राज्य का विस्तार

गुलबर्गा से श्रीलंका (सीलोन) तक तथा मालाबार से ओडिशा तक किया। इसके काल में विजयनगर की यात्रा करने वाले फारसी यात्री अब्दुर्रज्जाक ने विजयनगर की विशालता, भव्यता व सुदंरता का विशेष रूप से वर्णन किया है। शासन की व कुशलता के साथ साथ देवराय द्वितीय विद्या व विद्वानों का भी संरक्षक था। 'हरविलासम्' पुस्तक के लेखक तेलुगू विद्वान श्रीनाथ इसके दरबारी कवि थे। देवराय द्वितीय ने इस विद्वान कवि को 'कवि सार्वभौम' (कवियों का राजा) उपाधि से सम्मानित किया था।

1446 ई. में देवराय की मृत्यु के बाद संगम वंश पतन की ओर अग्रसर हो गया। इसके बाद प्रौढ़ देवराय के नाम से प्रसिद्ध मल्लिकार्जुन (1446—1465 ई.) तथा विरूपाक्ष द्वितीय (1465—1485 ई.) तक विजयनगर साम्राजय के शासक रहे। ये दोनों दुर्बल शासक साबित हुए। पुर्तगाली यात्री नुनिज के विवरण के अनुसार इस समय विजयनगर में चारों ओर अशांति व अराजकता का माहौल था। इन्हीं परिस्थितियों का फायदा उठाकर चंद्रगिरी गवर्नर सालुव नरसिंह ने गद्दी पर अधिकार कर लिया और संगम वंश के बाद एक नये वंश सालुव वंश की स्थापना की। इस प्रकार अब विजयनगर साम्राज्य पर सालुव वंश (1485—1505 ई.) का राज हो गया।

विजयनगर साम्राज्य के दूसरे वंश सालुव वंश की स्थापना सालुव नरसिंह ने की थी। सालुव नरसिंह संगम वंश के अंतिम शासक के अधीन मंत्री व सेनापति था उसने अपने ही राजा की करके गद्दी पर अधिकार कर लिया और सालुव वंश का प्रथम शासक बना। विजयनगर के इतिहास में इसे 'प्रथम बलापहार' कहा गया। सालु व नरसिंह ने 1485 ई. तक राज किया। अपने 6 वर्षों के शासनकाल में उसने शांति की स्थापना की तथा संगम वंश के समय में बहमनी, उड़ीसा द्वारा हड़पे गये क्षेत्र को पुनः प्राप्त कर लिया। 1491 ई. में सालुव नरसिंह की मृत्यु के बाद उसका अल्प व्यस्क पुत्र इम्माही नरहसंह (1491—1505 ई.) शासक बना। जिसका संरक्षक नरसा नायक था। नरसा नायक ने इम्माहि नरसिंह को पेनुकोड़ा के किले में कैद कर दिया और स्वयं सम्पूर्ण सत्ता पर अधिकार कर लिया। उसने अपने 12—13 वर्षों के शासनकाल में कई सफल अभियान किये। इस दौरान उसने रायपुर दोआब के कई किलों पर अधिकार कर लिया। इसके अलावा बीजापुर, बीदर, मदुरा, श्रीरंगपट्रम के शासकों के विरूद्ध चलाया गया इसका अभियान सफल रहा। उसने बीजापुर व उड़ीसा के शासको को परास्त

किया तथा चोल, पाण्ड्रू व चेर शासकों को भी विजयनगर की अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश कर दिया। 1505 ई. में नरसा नायक का पुत्र वीर नरसिंह ने इम्मादि नरसिंह की हत्या करके सालुव वंश का अंत कर दिया और एक नये वंश तुलुव वंश की नींव डाली।

तुलुव वंश (1505–1565 ई.) के संस्थापक वीर नरसिंह का वर्णन पुर्तगाली यात्री नूनिज एक धार्मिक राजा के रूप में किया है। इसका अल्पकालीन शासनकाल आंतरिक अशांति व सामंतवादी सरदारों के विरोध के कारण युद्वों में ही बीता। फिर भी सेना को सुसंगठित करके इसने अपने साम्राज्य को बचाने का भरसक प्रयास किया। सालुव वंश से इसके सत्ता जबरदस्ती हथियाने को इतिहासकारों ने विजयनगर साम्राज्य में द्वितीय बलापहार की संज्ञा दी है। तुलुव वंश के 1505 से 1565 ई. के शासनकाल में वीर नरसिंह ने 1509 ई. तक राज किया। 1509 ई. में इसकी मृत्यु के बाद कृष्णदेव राय विजयनगर का शासक बना।

1509 से 1529 ई. तक तुलुव वंश के शासक के रूप में कृष्णदेव राय ने विजयनगर साम्राज्य पर राज किया। महानतम शासक कृष्णदेव राय ने राज्य में व्याप्त अव्यवस्था व अशांति को अपने कठोर कानून व्यवस्था द्वारा नियंत्रित किया। आंध्रभोज के नाम से विख्यात कृष्णदेव राय ने उम्मत्तूर, उड़ीसा, बीदर, रायचूर, गुलबर्गा, बीजापुर आदि को विजित करके अपने साम्राज्य की प्रतिष्ठा में वृद्धि किया। पुर्तगालियों के साथ सहयोग पूर्ण संबंध स्थापना के द्वारा अपने साम्राज्य को सुरक्षित रखा। शिक्षा, साहित्य व स्थापत्य कला के दृष्टिकोण से भी कृष्णदेव राय का काल उन्नति का काल रहा। बाबर ने अपनी आत्मकथा तुजूके बाबही में कृष्णदेव राय को भारत का सर्वाध्णिक शाक्तिशाली शासक बताया है।

1529 ई. में कृष्णदेव राय की मृत्यु के बाद सत्ता के लिए छिड़े संघर्ष में उसके पुत्रों के अल्पव्यस्क होने के कारण उसका सौतेला भाई अच्युत देवराय शासक बना। 1529 से 1542 ई. तक अच्युतदेव राय का शासनकाल में कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं हुआ। फिर भी उसने साम्राज्य को बचाये रखा। 1542 ईत्र में इसकी मृत्यु के बाद कुछ महीनों के लिए अच्युतदेव का अल्पायु पुत्र वेंकट प्रथम गद्दी पर बैठा। इसके बाद विजयनगर की सत्ता पर अच्युतदेव के भतीजे सदाशिव का अधिकार हो गया। परंतु 1542–1570 ई. के अपने शासनकाल में सदाशिव नाममात्र का ही शासक बना रहा

वास्तविक शासन कार्य उसका मंत्री रामराय कर रहा था। यद्यपि रामराय एक योग्य शासक था परंतु फिर भी उसे उस समय की परिस्थिति का ज्ञान नहीं था। उसने विजयनगर की परंपरा के विपरीत बहमनी राज्य के विभाजन से बने पाँच मुस्लिम राज्यों (अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुंडा, बीदर, व बरार) में परस्पर फूट डालने और एक दूसरे के विरूद्ध सहायता देने की नीति अपनाई। उसकी यह नीति असफल रही। कालांतर में अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुंडा व बीदर के मुस्लिम राज्यों ने मुस्लिम महासंघ का निर्माण कर विजयनगर साम्राज्य के विरूद्ध एक साथ युद्ध की घोषणा कर दी। इतिहास में यह युद्ध राक्षसी–तंगड़ी अथवा तालीकोटा का युद्ध (1565 ई.) के नाम से प्रसिद्ध है। इस युद्ध को बन्नी हट्टी के युद्ध के नाम से भी जाना जाता है। 1565 ई. के तालीकोटा के इस युद्ध में मुस्लिम महासंघ ने रामराय को बुरी तरह से परास्त करके उसकी हत्या कर दी और विजयनगर को लूट कर ध्वस्त कर दिया। वर्तमान में कर्नाटक के हंपी नामक स्थान पर इसके अवशेष मिलते हैं जिसे यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल की सूची में शामिल किया गया है।

यद्यपि इस युद्ध के परिणाम पूरी तरह से विजयनगर साम्राज्य के विपरीत रहे फिर भी यह साम्राज्य जैसे–तैसे आगे लगभग सौ वर्षों तक एक सीमित क्षेत्र में अपने अस्तित्व को बनाये रखा। इस युद्ध के बाद तिरुमल के सहयोग से सदाशिव ने पेनुकोडा को राजधानी बनाकर शासन करना प्रारंभ किया यहीं पर विजयनगर के चौथे वंश अरावीडु वंश की स्थापना की गई। 1570 ई. में तिरुमल ने सदाशिव को गद्दी से हटाकर पेनुकोडा में अरावीडु वंश की स्थापना की। पेनुकोंडा का उत्तराधिकारी रंग द्वितीय हुआ। रंग द्वितीय बाद शासक बने वेंकट द्वितीय चंद्रगिरी को अपनी राजधानी बनाया। श्रीरंग तृतीय इस वंश का अंतिम शासक हुआ जिसके राज्य में तंजौर, मैसूर, मदुरा आदि स्वतंत्र राज्यों का निर्माण हुआ और अंततः विजयनगर साम्राज्य का पतन हो गया।

10-3-3 fot;uxj lkezkT; dk egku 'kkld & d".kno jk; **(Great Ruler of Vijaynagar Empire – Krishandev Roy)**

तुलुव वंश के शासक कृष्णदेव राय विजयनगर साम्राज्य के सबसे प्रसिद्ध शासक हुए। कृष्णदेव राय ने 1509 ई. से लेकर 1529 ई. तक राज किया। कृष्णदेव राय के समय में ही दिल्ली सल्तनत के

स्थान पर बाबर के मुगल वंश की स्थापना किया था। बाबर ने अपनी आत्मकथा 'तुजूके बाबरी' में कृष्णदेव राय को भारत का सर्वाधिक शाक्तिशाली शासक बताया है। कृष्णदेव राय के काल में आये पुर्तगाली यात्री होमिंगो पायस ने विजयनगर साम्राज्य की प्रशंसा करते हुए कृष्णदेव राय को एक महान शासक और न्यायप्रिय राजा कहा है। एक अन्य पुर्तगाली यात्री बारबोसा ने भी कृष्णदेव राय के काल में विजयनगर की यात्रा की थी। उसने कृष्णदेव राय को धर्मनिरपेक्ष शासक बताते हुए उसके श्रेष्ठ प्रशासन व साम्राज्य की समृद्धि का खुलकर वर्णन किया।

कृष्णदेव राय की बहुमुखी प्रतिभा ने राजनैतिक स्थायित्व, सैनिक सुदृढ़ता और प्रशासनिक सुव्यवस्था के आधार पर विजयनगर साम्राज्य को दक्षिण भारत का सबसे विस्त1त साम्राज्य में बदल दिया था। अपने इस विस्तृत साम्राज्य में कृष्णदेव राय ने अपनी धार्मिक सहिष्णुता की नीति, साहित्यिक उपलब्धियां, संगीत व स्थापत्य कला की राज्य में उन्नति के द्वारा स्थानीय सभ्यता और संस्कृति की समृद्ध मौलिकता को बनाए रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

1509 ई. में विजयनगर साम्राज्य का शासक बनते ही कृष्णदेव राय ने राज्य में व्याप्त अव्यवस्था और अशांति को अपने कठोर कानून व्यवस्था द्वारा नियंत्रित किया। एक कूटनीतिज्ञ साम्राज्यवादी कृष्णदेव राय ने सर्वप्रथम राज्य की सुरक्षा व उसके विस्तार में बाधक केंद्रीय सामंतों को अपनी कठोर शासन नीति के द्वारा कुचल दिया। इसके बाद उसने अपने विजय अभियान के क्रम में 1510 ई. में बीदर के शासक महमूद शाह को पराजित किया। 1512 ई. में रायचूर–दोआब और गुलबर्गा को विजित करके इन्हें अपने साम्राज्य में मिला लिया। 1513–18 ई. के दौरान उड़ीसा के गजपति शासक के विरुद्ध कई बार युद्ध अभियान चलाकर वहां के शासक प्रताप रुद्रदेव को संधि करने के लिए विवश कर दिया। प्रताप रुद्रदेव ने संधि करके कृष्णदेव राय से अपनी पुत्री का विवाह कराया। 1520 ई. में कृष्णदेव राय ने गोलकुंडा को हराकर वारंगल पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार अपने शासनकाल के मात्र दस वर्षों में ही उसने अपने सभी विरोधियों को परास्त करके दक्षिण भारत में स्वयं एवं विजयनगर की प्रभुसत्ता को साबित कर दि। कृष्णदेव राय ने पुर्तगालियों से मैत्रीपूर्ण व्यापारिक संबंधों के द्वारा अपनी सैनिक

सफलता को सुदृढ़ किया। इस प्रकार पुर्तगालियों के साथ संतुलित संबंध कृष्णदेव राय के साम्राज्य विस्तार व शासन को मजबूती प्रदान करने में सहायता मिली।

कृष्णदेव राय का शासनकाल सिर्फ सैनिक गतिविधि, कुशल प्रबंधन व साम्राज्यवादी नीति के लिए ही प्रसिद्ध नहीं रहा बल्कि उनका काल इतिहास में रचनात्मक एवं युगनिर्माणकारी काल के रूप में भी प्रसिद्ध रहा। उत्तम व्यवस्था के कारण उसके साथ प्रत्येक क्षेत्र में पर्याप्त समृद्धि दिखाई देती है। राज्य में उत्तम पुलिस व्यवस्था के द्वारा शांति व सुरक्षा की पर्याप्त व्यवस्था थी। कोई भी बिना डर–भय के कही भी आ–जा सकता था व्यापार कर सकता था। उसने महिला अंगरक्षकों की भी नियुक्ति की थी। यद्यपि कृष्णदेव राय की व्यक्तिगत आस्था वैष्णव धर्म में थी तथापि धार्मिक सहिष्णुता का परिचय देते हुए उसने अपने राज्य में सभी धर्मों को फलने–फूलने का अवसर प्रदान किया। दक्षिण भारत में चोलो के काल से चली आ रही स्थापत्य कला में उसने अपने चिंतन से नवीन विशेषताएं जोड़कर एक विशिष्ट सांस्कृतिक आदर्श प्रस्तुत किया। कृष्णदेव राय के काल में अलंकार, स्तंभो की विविधता, कल्याणमंडप आदि स्थापत्य कला में अपने तरीके से शामिल किये गये। विजयनगर साम्राज्य की राजधानी में उसने हजारास्वामी मंदिर, विट्ठलस्वामी मंदिर व कृष्णस्वामी मंदिर बनवाए। अपनी माता नागल देवी के नाम पर नागलापुर नामक नगर की स्थापना की।

कृष्णदेव स्वयं महान विद्वान व विद्याप्रेमी थे। उन्होंने अपने राज्य में अनेक विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया। तेलुगू साहित्य के आठ विद्वान कवि उसके दरबार में निवास करते थे। जो अष्टदिग्गज के नाम से जाने जाते थे। अष्टदिग्गज तेलुगू कवियों में पेड़डाना सर्वप्रमुख थे। कृष्णदेव राय ने स्वयं तेलुगू में 'आमुक्तमाल्यद' नामक पुस्तक की रचना की, जो चाणक्य के अर्थशास्त्र की तरह ही राजव्यवस्था पर आधारित थी। कृष्णदेव राय ने संस्कृत भाषा में एक नाटक जाम्बूवती कल्याणम् की रचना भी की। साहित्य के क्षेत्र में कृष्णदेव राय के काल को तेलुगू साहित्य का कलासिकल युग माना जाता है। उसकी सांस्कृतिक उपलब्धियों के कारण उसे 'आंध्रभोज' के नाम से जाना जाता है। उसकी अन्य उपाधियां – अभिनव भोज, आंध्र पितामह आदि भी थी। यद्यपि विजयनगर साम्राज्य में सामाजिक एवं सामुदायिक कर के रूप में विवाह कर लिया जाता था, तथापि कृष्णदेव राय ने अपने शासनकाल में

विवाह कर को समाप्त कर दिया था। स्त्रियों की स्थिति सम्माननीय थी। कृष्णदेव राय ने अपने शासनकाल में शिक्षा को पर्याप्त प्रोत्साहन दिया। इनके काल में संगीत पर लक्ष्मीनारायण के संगीत–सर्वोदय के अतिरिक्त संगीतसार जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे गये थे। इस प्रकार विजयनगर साम्राज्य के महान शासक कृष्णदेव राय के शासनकाल में राज्य की उन्नति, समृद्धि व विस्तार शिखर पर थी।

10-4 v/;k; dk vkx dk e[; Hkkx **(Further Main body of the Text)**

10-4-1 fot;uxj lkezkT;&foLrkj dk ekufp= **(Map of the Vijaynagar Empire)**

Source: Barnwal K. Mahesh, Sar Sangar NCERT, Cosmos Publication, P.- 28

10-4-2 fot;uxj lkezkT; dk Á'kklu **(Administration of Vijaynagar Empire)**

विजयनगर साम्राज्य में शासन का स्वरूप राजतंत्रात्मक था। शासन की समस्त शक्तियां राजा में निहित होती थी। राजा की उपाधि 'राय' होती थी। राजा के चयन में मंत्रियों व नायकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती थी। राजा के भव्य राज्याभिषेक की परंपराथी। राजकाज चलाने में परंपरा से चली आ रही सप्तांग विचारधारा का अनुसरण विजयनगर साम्राज्य में किया जाता था। युवराज के राज्याभिषेक को 'युवराज पट्टाभिषेकम्' कहा जाता था।

राजा के बाद 'युवराज' का पद होता था। युवराज के पद पर राजा का बड़ा पुत्र व राज्य परिवार का ही कोई योग्य पुरूष आसीन हो सकता था। इस प्रकार विजयनगर प्रशासन में राजा और उसके बाद युवराज राज्य व्यवस्था में सबसे महत्वपूर्ण होता था। राजा की सहायता के लिए मंत्रिपरिषद् की व्यवस्था थी। मंत्रियों की संख्या के बारे में स्पष्ट प्रमाण उपलब्ध नहीं है। मंत्रियों की नियुक्ति तथा पदच्युति का अधिकार अंतिम रूप से राजा का ही होता था। मंत्रिपरिषद में प्रधानमंत्री, मंत्री, उपमंत्री, विभागों के अध्यक्ष तथा राजा के कुछ निकट के संबंधी होते थे। मंत्रिपरिषद के अध्यक्ष को समानायक कहा जाता था। राजा सुविधानुसार मंत्रिपरिषद् की राय लेता था किंतु वह उसे मानने के लिए बाध्य नहीं था। मंत्रियों के अतिरिक्त राज्य–व्यवस्था के लिए अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी। इनमें कोषाध्यक्ष, रत्न–पदाधिकारी, व्यापार–निरीक्षक, पुलिस–अध्यक्ष, अश्व–अध्यक्ष आदि शामिल थे। प्रशासन का प्रमुख व सेनाओं का नायक के रूप में केंद्रीय स्तर पर 'दण्डनायक' नाम का उच्च अधिकारी होता था। केंद्र में राजकाज संचालन की सुविधा की दृष्टि से केंद्रीय सचिवालय की व्यवस्था की मौजूदगी का भी प्रमाण मिलता है जिसमें विभागों का वर्गीकरण किया जाता थ। सचिवालय में राजसम अथवा सचिव, कर्णिकम या एकाउन्टेट तथा अन्य अधिकारी होते थे।

विजयनगर साम्राज्य में राजा के निरकुंश होने के बावजूद वह उदार, धर्म सहिष्णु, विचारवान व धर्मानुसार चलने वाला होता था। राज्याभिषेक के समय राजा को प्रजापालन एवं निष्ठा की शपथ लेनी पड़ती थी। उसकी निरंकुशता पर नियंत्रण हेतु व्यापारिक निगम, ग्रामीण संस्थायें एवं धार्मिक संस्थाओं से जुड़ी जन समितियां एवं मंत्रिपरिषदें थी।

प्रशासनिक सुविधा के दृष्टिकोण से विजयनगर साम्राज्य को प्रांत या राज्य में विभाजित किया गया था। इस समय प्रांत/राज्य को मंडल कहते थे। कृष्णदेव राय के शासनकाल में प्रांतों की संख्या सर्वाधिक 6 थीं। प्रांतों में शासन व्यवस्था के लिए गवर्नर के रूप में राज–परिवार के सदस्य या अनुभवी दण्डनायकों की नियुक्ति की जाती थी। शासन के अधीन यह अत्यंत महत्वपूर्ण पद होता था। इन्हें कई मामलों में स्वतंत्रता प्राप्त होती थी। सिक्को को प्रसारित करने, नये कर लगाने, पुराने कर माफ करने एवं भूमिदान करने आदि की स्वतंत्रता इनको होती थी। प्रांत या राज्य को आगे जिलों में विभाजित

किया गया था जिन्हें कोट्टम या वकनाडु कहते थे। कोट्टम या वलनाडु का विभाजन नाडुओं में हुआ था जिसकी स्थिति आज के परगना एवं ताल्लुका जैसी थी। नाडुओं को मेलाग्राम में विभाजित किया गया था। मेलाग्राम लगभग 50 ग्रामों के समूह को कहते थे। उर या ग्राम प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी।

विजयनगर साम्राज्य के प्रशासनिक विभाजन को निम्न रेखाचित्र से आसानी से समझ सकते हैं –

साम्राज्य → राज्य (मंडलम्) → जिला (कोटम / वलनाडु) → परगना (नाडु) →मेलाग्राम (50 ग्रामों का समूह) → ग्राम / उर

केंद्रीय प्रशासन द्वारा सैन्य व्यवस्था को सुचारू रूप से चलानेके लिए विजयनगर साम्राज्य में क्षेत्रीय स्तर पर नायंकर व्यवस्था होती थी। इसका नायक अपने क्षेत्र में स्वतंत्र अधिकार रखता था। इन सैनिक अधिकारियों अर्थात् नायक को एक निश्चित भू–भाग प्रदान किया जाता था जिन्हें 'अमरम्' कहा जाता था। वे इस अमरम भूमि का उपयोग करते थे इसलिए उन्हें अमरनायक भी कहा जाता था। इस क्षेत्र का पूरा दायित्व इन्हीं का होता था। अमरम् भूमि का आय का एक हिस्सा केंद्रीय सरकार के कोष में इनको जमा करना होता था एवं इसी आय में से सेना का रख–रखाव भी करना होता था। क्षेत्र में शांति, सुरक्षा जैसी व्यवस्था के अतिरिक्त नायंकर व्यवस्था के अंतर्गत नायकों को जंगलों को साफ करवाना एवं कृषि योग्य भूमि का विस्तार भी करना होता था।

विजयगनर साम्राज्य में प्रशासनिक इकाई के अंतर्गत प्रत्येक ग्राम को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में संगठित किया गया था। ग्रामीण स्तर को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में संगठित किया गया था। ग्रामीण स्तर पर प्रशासन की देखरेख के लिए 12 सदस्यीय प्रशासनिक अधिकारियों के समूह की नियुक्ति की व्यवस्था थी जिन्हें 'आयंगर व्यवस्था' के नाम से जानते थे। आयंगर के अधिकारियों को वेतन के रूप में करमुक्त एवं लगानमुक्त भूमि प्रदान की जाती थी। आयंगर की यह व्यवस्था वंशानुगत होती थी और आयंगर की अनुमति के बिना भूमि की क्रय–विक्रय नहीं की जा सकती थी। जमीन के क्रय–विक्रय का रेखा–जोखा कर्णिक नामक आयंगर रखता था। शासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम होती थी जहां ग्राम की सभा में विचार–विमर्श के लिए सभी ग्रामवासी भाग लेते थे।

विजयनगर साम्राज्य में राज्य की आय का मुख्य स्रोत भू–राजस्व था। इस साम्राज्य की सभी क्षेत्र उवेर थे और इसका व्यापार भी उन्नत था। कर निर्धारण से पूर्व भूमि का सर्वेक्षण करके उसका देवदान, ब्रह्मदेय के रूप में वर्गीकरण किया जाता था। प्रायः राज्य उपज का 1/6 भाग कर के रूप में वसूल करता था। विजयनगर के महान शासक कृष्णदेव राय के काल में भूमि का व्यापक सर्वेक्षण करवाया गया और भूमि की उर्वरता के अनुसार उपज का 1/3 या 1/6 भाग कर के के रूप में निर्धारित किया गया। इस समय राज्य की ओर से सिंचाई की व्यवस्था की जाती थी और इसके बदले सिंचाई कर के रूप में दासावन्दा कर वसूला जाता था। ब्राह्मणों के अधिकार वाली भूमि से उपज का 20वां भाग तथा मंदिरों की भूमि से उपज का 30 वां भाग लगान के रूप में वसूला जाता था। सामाजिक एवं सामुदायिक कर के रूप में विवाह कर वसूला जाता था। विधवा से विवाह करने वालों से कर नहीं लिया जाता था। लेकिन कृष्णदेव राय ने अपने शासनकाल में विवाह कर को समाप्त कर दिया था। विजयनगर साम्राज्य की शासन व्यवस्था में मंदिरों की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। सिंचाई परियोजना के साथ–साथ बैंकिंग गतिविधियों के संचालन का कार्य मंदिरों के द्वारा किया जाता था। मंदिरों को जो भुमि अनुदान के रूप में दी जाती थी उसे देवदान भूमि कहा जाता था। राज्य के सीधे नियंत्रण वाले ग्राम को 'भंडारवाद' के नाम से जानते थे। यहाँ के किसान राज्य को कर देते थे।

विजयनगर काल में सुंदर प्रशासनिक व्यवस्था के कारण आंतरिक व बाह्य दोनों प्रकार के व्यापार उन्नत अवस्था में थे। पुर्तगाली यात्री नुनिज ने ऐसे हीरों के बंदरगाह की चर्चा की है जहाँ विश्व भर में सर्वाधिक हीरों की खानें पायी जाती थी। विजयनगर काल में मुद्रा व्यवस्था उन्नत अवस्था में थी। सर्वाधिक प्रसिद्ध सिक्का स्वर्ण का वराह था जिसका वनज 52 ग्रेन था। चाँदी के छोटे सिक्के का भी प्रचलन था जिसे 'तार' के नाम से जाना जाता था। विजयनगर साम्राज्य के शासक हिन्दू ब्राह्मण धर्म से संबंधित थे। इस कारण इनके सिक्कों पर गरूड़, वेंकटेश, शंख एवं चक्र अंकित मिलते है।

विजयनगर के सैन्य विभाग को 'कन्दाचार' के नाम से जाता था। सेना में पैदल, अश्वारोही, हाथी तथा ऊँट शामिल थे। सैन्य विभाग के उच्च अधिकारी को दण्डनायक या सेनापति होता था। न्याय–व्यवस्था के अंतर्गत राज्य का प्रधान न्यायाधीश राजा होता था। राजा का निर्णय ही अंतिम निर्णय होता था।

भंयकर अपराध की स्थिति में शरीर के अंग–विच्छेद के दंड का प्रावधान था। प्रांतो में न्याय की जिम्मेदारी प्रजापति को तथा गांवों में आयंगर की होती थी। हिंदू आचरण पर आधारित न्याय व्यवस्था थी। वेश्याओं पर लगाये गये कर प्राप्त आय से पुलिस विभाग के खर्च की व्यवस्था चलती थी।

10-4-3 fot;uxj lkekT; % lkekftd 0;oLFkk **(Vijaynagar Empire : Social System)**

विजयनगर साम्राज्य में परंपरागत वर्ण एवं जाति व्यवस्था का प्रचलन था। विजयनगर साम्राज्य के शासक वंशों का समाजशास्त्रीय परंपराओं में विश्वास प्रत्येक व्यवस्था में देखने को मिलता है। समाज में ब्राह्मण सर्वाधिक विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग था। शासन में उच्च पदों पर प्रायः ब्राह्मण ही नियुक्त कियो जाते थे। ब्राह्मणों को मृत्युदंड से मुक्त रखा गया था। ब्राह्मणों को अपराध के लिए या तो कोई सजा नहीं दी जाती थी या फिर मामूली सजा का प्रावधान था। विजयनगर कालीन समाज में क्षत्रियों के बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती। ऐतिहासिक विवरणों से पता चलता है कि व्यवसाय या व्यापार में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले चेट्टियों या शेट्टियों का ब्राह्मणों के बाद समाज में दूसरा स्थान था। व्यावारिक कार्यों के अतिरिक्त लिपिक एवं लेखाकार्यों का कार्य भी ये लोग बड़ी निपुणता के साथ करते थे। समाज में चेट्टियों की तरह व्यापार में कुशलता रखने वाले दस्तकार वर्ग को 'वीर पांचाल' के नाम से जाना जाता था। उत्तर भारत में आये प्रवासियों को इस काल में दक्षिण भारतीय समाज में बहुत सम्मान प्राप्त नहीं था और इन्हें 'बड़वा' कहकर पुकारा जाता था। समाज की छोटी–मोटी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए लोहार, बढई, स्वर्णकार, मूर्तिकार, जुलाहें व अन्य धातुकर्मी मौजूद थे। जुलाहें मंदिर क्षेत्र में रहते थे और मंदिर प्रशासन व स्थानीय घरों के आरोपण में उनका सहयोग होता था। विजयनगर काल में दास प्रथा का प्रचलन था। समाज में महिला व पुरुष दोनों वर्ग के लोग दास के रूप में कार्य करते थे। मनुष्यों के क्रय–विक्रय की भी प्रथा थी। मनुष्यों के क्रय–विक्रय को 'वेस–वाग' कहा जाता था। कर्ज न चुका पाने की स्थिति में एवं दिवालिया होने की स्थिति में कर्ज लेने वाले को दास बनना पड़ता था।

विजयनगरकालीन समाज में तुलनात्मक रूप से महिलाओं की स्थिति अच्छी थी। महिलायें राजकीय पदों समेत राज्य व समाज की तमाम व्यवस्थाओं में भाग लेकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। राजा के कार्यों

को लिखना, आय–व्यय की गणना, मल्लयुद्ध में भाग लेना, ज्योतिष न्यायाधीश, अंभरक्षक व पहरेदार, नृत्य व गायन सहित सभी क्षेत्रों में महिलाओं की नियुक्ति होती थी। राजा की अंगरधिकाओं के रूप में विशेष रूप से महिलाओं की नियुक्ति होती थी। समाज में पर्दा प्रथा का प्रचलन नहीं था। फिर भी बाल विवाह, देवदासी एवं सती प्रथा जैसी कुप्रथायें समाज में मौजूद थीं। सती प्रथा का उल्लेख विदेशी यात्रियों बारबोसा व नूनिज के विवरणों में भी मिलता है। समाज में सती प्रथा को पवित्र माना जाता था तथा सती होने वाले महिलाओं की स्मृति में 'प्रस्तर स्मारक' बनाये जाते थे। विधवा विवाह की मान्यता थी। विवाह पर कर लगता था। किंतु विधवा विवाह को कर से मुक्त रखा गया था।

मंदिरों में देवपूजा के लिये रहने वाली स्त्रियों को देवदासी कहते थे। इन्हें आजीविका के राज्य से अलग भूमि दे दी जाती थी अथवा नियमित वेतन दिया जाता था। इसके अलावा स्वतंत्र ढंग से जीवन–यापन करने वाली गणिकाओं की मौजूदगी भी समाज में थी। ये गणिकायें पर्याप्त शिक्षित और विशेषाधिकार संपन्न होती थी। राजा एवं सामंत लोग बिना किसी आपत्ति के इनसे संबंध बनाते थे। विजयनगरकालीन समाज में सती प्रथा का प्रचलन नायकों एवं राजपरिवार तक ही सीमित था। युद्ध में शौर्य का दर्शन करने वालों को सम्मान के रूप में पैर में 'गंडपेद्र' नाम कड़ा पहनाकर सम्मानित किया जाता था। कालांतर में यह सम्मान मंत्रियों, विद्वानों, सैनिकों व अन्य सम्माननीय व्यक्तियों को भी दिया जाने लगा। विजयनगर साम्राज्य के लोग विविध तरीके से अपना मनोरंजन भी करते थे। समाज में बोमलार (छाया–नाटक) काफी लोकप्रिय था। बोमलार छाया नाटक मंडपों में आयोजित किया जाता था। संगीतमय यक्षगान नृत्य का भी आयोजन किया जाता था। इसके अलावा शतरंज, जुआ व पासे के खेल के प्रचलन का वर्णन भी मिलता है।

रामनवमी, महानवमी तथा नवरात्र जैसे त्योहारों का आयोजन सार्वजनिक रूप से किया जाता था। महानवमी राज्य में सबसे बड़ा त्योहार था, जिसमें राजा की उपस्थिति अनिवार्य होती थी। इस त्योहार पर बड़ी संख्या में बलि दी जाती थी। विजयनगर साम्राज्य के शासकों ने विशेषकर कृष्णदेव राय ने शिक्षा, कला, भाषा व साहित्य के विकास को प्रोत्साहन दिया। विजयनगर साम्राज्य में दक्षिण भारतय भाषाओं – तेलुगू, कन्नड़ व तमिल के अतिरिक्त संस्कृत को भी काफी प्रोत्साहन मिला। वेदों के प्रसिद्ध

भाष्यकार सायण तथा माधव विद्यारण्य विजयनगर काल में बहुत प्रसिद्ध थे। राज्य द्वारा समाज में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये मढ़ों, अग्रहारों व मंदिरों को अनुदान उपलब्ध कराये जाते थे। अग्रहारों में मुख्यतः वेदों की शिक्षा दी जाती थी। यद्यपि तत्कालीन परिस्थितियों में मुस्लिम धर्म का प्रभुत्व बढ़ता जा रहा था फिर भी दक्षिण भारत में विजयनगर साम्राज्य एकमात्र हिन्दू राज्य था जिसने समाज में हिन्दू रीति–नीति को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

10-5 Áxfr leh{kk **(Check your Progress)**

भाग (क) खाली स्थान भरने पर आधारित प्रश्न (Fill in the blanks based Questions)

(i) विजयनगर साम्राज्य की स्थापना .... ने की।

(ii) विजयनगर के .... शासक ने वेदमार्ग प्रतिष्ठापक की उपाधि धारण की।

(iii) विजयनगर साम्राज्य का प्रथम वंश .... था।

(iv) विजयनगर साम्राज्य के .... शासक ने सर्वप्रथम महाराजाधिराज की उपाधि धारण की।

(v) विजयनगर साम्राज्य के .... शासक के काल में प्रसिद्ध इटली यात्री निकोलो ही कॉण्टी आया था।

(vi) गजबेटकर (हाथियों का शिकारी) विजयनगर साम्राज्य के .... शासक की उपाधि थी।

(vii) 'हरविलासम्' पुस्तक के लेखक श्रीनाथ .... के दरबार में रहते थे।

(viii) फारसी यात्री अब्दुर्रज्जाक............... के काल में विजयनगर की यात्रा की थी।

(ix) विजयनगर के प्रसिद्ध शासक कृष्णदेव राय .... वंश के शासक थे।

(x) विजयनगर साम्राज्य की राजधानी .... थी।

भाग (ख) सत्य–असत्य कथन पर आधारित प्रश्न :–

(True-False Statements bases questions)

(i) विजयनगर साम्राज्य का शासन राजतंत्रात्मक था तथा राजा को 'राय' की उपाधि से संबोधित करते थे। ( )

(ii) विजयनगर साम्राज्य में महानवमी सबसे बड़ा त्योहार था। ( )

(iii) विजयनगर साम्राज्य में प्रांत या राज्य को मेलाग्राम से संबोधित किया गया था। ( )

(iv) विजयनगर का सर्वाधिक प्रसिद्ध सिक्का स्वर्ण का दिनार था जिसका वजन 52 ग्रेन था।( )

(v) विजयनगर काल में प्रत्यक्ष राजकीय नियंत्रण की भूमि को भंडारवाद ग्राम कहते थे और इस भूमि से प्राप्त आय का प्रयोग दुर्गों के सुदृढ़ीकरण में किया जाता था।( )

(vi) दिल्ली सल्तनत के शासक मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 1336 ई. में हरिहर और बुक्का ने किया। ( )

(vii) तेलुगू साहित्य के आठ विद्वान अष्टदिग्गज केनाम से प्रसिद्ध थे जो देवराय द्वितीय के दरबार की शोभा बढ़ाते थे। ( )

(viii) विजयनगर काल में ग्रामीण प्रशासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए जो व्यवस्था प्रचलन में थी उसे आयंगर व्यवस्था के नाम से जाना जाता था। ( )

(ix) विजयनगर काल में उत्तर भारत से दक्षिण भारत में आकर बसे लोगों को शेट्टी कहा जाता था। ( )

(x) बाबर ने अपनी आत्मकथा 'तुजूके बाबरी' में कृष्णदेव राय को भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक बताया है। ( )

10-6 lkjka'k@ lf{kflrdk **(Summary)**

- विजयनगर का शाब्दिक अर्थ है – जीत का शहर।
- विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 1336 ई. में हरिहर और बुक्का नामक दोनों भाइयों ने की थी।
- विजयनगर साम्राज्य की स्थापना के समय दिल्ली सल्तनत का शासक मुहम्मद बिन–तुगलक था।
- हरिहर और बुक्का को विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की प्रेरणा ब्राह्मण विद्वान माधव विद्यारण्य तथा वेदों के प्रसिद्ध भाष्यकार सापण से प्रेरणा मिली थी।
- हरिहर व बुक्का ने अपने पिता संगम के नाम संगम वंश की स्थापना की।

- संगम वंश के अतिरिक्त अन्य तीन राजवंशों – सालुव वंश, तुलुव वंश व आरविडु वंश ने लगभग 300 वर्षों तक राज किया।
- संगम वंश का प्रथम शासक हरिहर प्रथम हुआ।
- हरिहर प्रथम ने ओनेगोडी से साम्राज्य की राजधानी हम्पी में स्थापित किया।
- संगम वंश के शासक बुक्का प्रथम ने 'वेदमार्ग प्रतिष्ठापक' की उपाधि धारण की।
- विजयनगर साम्राज्य में हरिहर व बुक्का ने मिलकर संयुक्त रूप से शासन किया।
- बुक्का प्रथम के मदुरै के राजा के विरूद्ध सफल अभियान में उसके पुत्र कंपन की विशेष भूमिका रही।
- कंपन की पत्नी गंगा देवी ने उसके इस पराक्रम पर संस्कृत में 'मदुरै विजयनम' नामक पुस्तक लिखी।
- महाराजाधिराज की उपाधि धारण करने वाला प्रथम शासक हरिहर द्वितीय हुआ।
- हरिहर द्वितीय के समय में ऋग्वेद के प्रसिद्ध टीकाकार सायण प्रधानमंत्री थे।
- तुर्की धनुर्धरों को विजयनगर की सेना में शामिल करने वाला प्रथम शासक देवराय प्रथम था।
- देवराय प्रथम ने ही सर्वप्रथम हरिद्रा (हरिहर नदी) और तुंगभद्रा नदी पर बांध बनाकर सिंचाई के लिए कई नहरें निकलवायें।
- देवराय प्रथम के शासनकाल में विजयनगर की यात्रा करनेवाला इटली यात्री निकोलो डी कॉण्टी ने देवराय प्रथम को शक्तिशाली राजा कहा।
- गजबेटकर (हाथियों का शिकारी) तथा इम्मादि देवराय की उपाधि धारण करने वाला देवराय द्वितीय को विजयनगर साम्राज्य का सबसे महानतम शासक माना है।
- 'हरविलासम' पुस्तक के रचनाकार तेलुगू विद्वान श्रीनाथ देवराय द्वितीय के दरबार की शोभा बढ़ाते थे।

- देवराय द्वितीय ने कवि श्रीनाथ को कवि सार्वभौम (कवियों का राजा) की उपाधि से सम्मानित किया था।
- देवराय प्रथम के बाद देवराज द्वितीय ने अपनी सेना में भारी संख्या में मुसलमानों को शामिल किया।
- फारसी यात्री अब्दुर्रज्जाक ने देवराय द्वितीय के काल में ही विजयनगर की यात्रा की थी।
- फारसी यात्री अब्दुर्रज्जाक विजयनगर को संसार के देर और सुने नगरों में सबसे भव्य बताया है।
- देवराय द्वितीय का उत्तराधिकारी मल्लिकार्जुन को 'प्रौढ़ देवराय' के नाम से जाना जाता है।
- संगम वंश का अंतिम शासक विरूपाक्ष द्वितीय था।
- विकपाक्ष द्वितीय का सेनापति सालुव नरसिंह ने उसकी हत्या करके विजयनगर में दूसरे राजवंश सालुव वंश की स्थापना की।
- विजयनगर साम्राज्य में सालुव नरसिंह द्वारा विरूपाक्ष द्वितीय की हत्या करके जबरदस्ती सत्ता हथियाने को 'प्रथम बलापहार' के नाम से जानते है।
- सालुव वंश के शासक इम्मादि नरसिंह का संरक्षक नरसा नायक था।
- नरसा नायक के पुत्र वीर नरसिंह ने सालुव शासक इम्मादि नरसिंह की हत्या करके सालुव वंश के स्थान पर तुलुव वंश की स्थापना की। इसे विजयनगर साम्राज्य के इतिहास में 'द्वितीय बलापहार' की संज्ञा दी गयी।
- 1505 ई. में तुलुव वंश की स्थापना वीर नरसिंह ने की थी।
- विजयनगर साम्राज्य का महानतम शासक तुलुव वंश के कृष्णदेव राय (1509–1529 ई.) हुआ।
- पुर्तगाली यात्री डोमिगो पायस ने कृष्णदेव राय को 'एक महान शासक और न्यायप्रिय राजा' कहा है।
- पुर्तगाली यात्री बारबोसा ने भी कृष्णदेव राय को धर्मनिरपेक्ष शासक बताते हुए उसके साम्राज्य की समृद्धि की खुलकर प्रशंसा की।

- तेलुगू साहित्य के आठ विद्वान जो 'अष्टदिग्गज' के नाम से प्रसिद्ध थे। कृष्णदेव राय के दरबार में ही रहते थे।
- अष्टदिग्गज तेलुगु कवियों में पेड्डाना सर्वप्रमुख थे।
- कृष्णदेव राय ने तेलुगू में 'आमुक्तमाटपद' नामक पुस्तक की रचना की थी जो चाणक्य के अर्थशास्त्र की तरह राजव्यवस्था पर आधारित थी।
- कृष्णदेव राय ने संस्कृत भाषा में 'जाम्बुपती कल्याणम्' के नाम से एक नाटक की रचना की थी।
- कृष्णदेव राय ने आन्ध्रभोज, अभिनव भोज, आन्ध्र पितामह आदि उपाधि धारण की थी।
- कृष्णदेव राय ने अष्टदिग्गज तेलुगू कवियों में प्रसिद्ध पेड्डाना को तेलुगू कविता के पितामह की उपाधि प्रदान की थी।
- विजयनगर साम्राज्य की राजधानी हम्पी में कृष्णदेव राय ने हजारास्वामी मंदिर, विट्ढलस्वामी मंदिर व कृष्णस्वामी मंदिर बनवाए।
- कृष्णदेव राय ने अपनी माता नागल देवी के नाम पर नागलपुर नामक नगर की स्थापना की।
- कृष्णदेव राय का काल तेलुगू साहित्य का क्लासिक युग माना जाता है।
- विजयनगर साम्राज्य के शासक हरिहर प्रथम के काल में 1347 ई. में बहमनी साम्राज्य की स्थापना हुई थी।
- 1565 ई. के राक्षसी–तंगडी अथवा तालिकोटा का युद्ध के द्वारा विजयनगर साम्राज्य का लगभग पतन हो गया।
- तालिकोटा के युद्ध को बन्नी हट्टी के युद्ध के नाम से भी जानते हैं।
- तालिकोटा के युद्ध के समय विजयनगर का शासक तुलुव वंश का सदाशिव राय था।
- सदाशिव राय के समय में सत्ता की वास्तविक शक्ति उसके मंत्री रामराय के हाथ में थी।
- तालिकोटा के युद्ध में विजयनगर विरोधी महासंघ में अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा और बीदर शामिल थे।

- तालिकोटा युद्ध के बाद सदा शिव ने पेनुकोडा को राजधानी बनाकर शासन प्रारंभ किया था।
- 1570 ई. में तिरूमल ने सदा शिव को अपदस्थ करके विजयनगर के चौथे और अंतिम वंश अराविडु वंश की स्थापना की।
- विजयनगर साम्राज्य में शासन की सबसे बड़ी इकाई प्रांत को मंडलम् के नाम से जानते थे।
- शासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम होती थी।
- ग्रामों में प्रशासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए आयंगर व्यवस्था होती थी।
- केंद्रीय प्रशासन द्वारा सैन्य संगठन को प्रांतीय तथा स्थानीय स्तर पर कार्यान्वित करने के लिए 'नायंकर व्यवस्था' का प्रावधान था।
- विजयनगर की सेना के सेनानाइको को नायक कहा जाता था तथा इन्हें वेतन के बदले विशेष भूखण्ड देते थे जिन्हें 'अमरम्' कहा जाता था।
- प्रत्यक्ष राजकीय नियंत्रण की भूमि को भंडारवाद ग्रज्ञम के नाम से जानते थे और इसकी आय का प्रयोग दुर्गों के सुदृढ़ीकरण में किया जाता था।

विशेष धार्मिक सेवाओं के लिए दी जाने वाली भूमि :

ब्रह्मदेव भूमि – ब्राह्मणों को दान में दी गयी भूमि।

देवरेज भूमि – मंदिरों को दान में दी गयी भूमि।

मठापुर भूमि – मठों को दान में दी गयी भूमि।

- धार्मिक सेवाओं के लिए प्रदत्त भूमि कर मुक्त होती थी।
- ग्रामों में विशेष सेवाओं के बदले दी जाने वाली लगान मुक्त भूमि को 'उबलि' कहते थे।
- युद्ध में शौर्य का प्रदर्शन करने वाले का अनुचित रूपसे युद्ध में मूल लोगों के परिवार को दी गई भूमि को रत्त या खत्त या कोडगे के नाम से जानते थे।
- 'कुदि' कृषक मजदूर को कहते थे।

- विजयनगर काल में मलाया, बर्मा, चीन, अरब, ईरान, अफ्रीका, अबीसीनिया एवं पुर्तगाल से व्यापार होता था।
- इस काल में निर्यात की मुख्य वस्तुएं थी – कपड़ा, चावल, गन्ना, इस्पात, मसाले, इत्र, शोरा, चीनी आदि।
- आयात की जाने वाली वस्तुएं थी – अच्छी नस्ल के घोड़े, हाथी दांत, मोती बहुमूल्य पत्थर, नारियल, पॉम, नमक आदि।
- विजयनगर की सेना में पैदल, अश्वारोड़ी, हाथी तथा ऊंट शामिल थे।
- 'कन्दाचार' सैन्य विभाग होताथा।
- पगोडा – सर्वाधिक प्रसिद्ध स्वर्ण के सिक्के वराह को विदेशी यात्रियों में पगोड़ा कहा है।

10-7 l d r& l pd **(Key-words):-**

- राय – श्रेष्ठ, महान विजयनगर के शासकों की उपाधि
- राजतंत्र – शासन की प्रणाली जिसमें केंद्र–बिंदु राजा होता था।
- प्रतिष्ठापक – प्रतिष्ठा या सम्मान बढ़ाने वाला।
- गजबेटकर – हाथियों का शिकारी।
- सीलोन – श्रीलंका का अन्य नाम।
- बलापहार – बलपूर्वक, जबरदस्ती।
- अष्टदिग्गज– आठ महान तेलुगू साहित्य के विद्वानों की मंडली।
- पस्तर – पत्थर।

10-8 Lo&eY;kdu d fy, ijh{kk **(Self Assessment Test SAT)**

भाग (क) (Part-A) बहुविकल्पी प्रश्न (Multiple Choice Questions MCQS)

(i) सर्वप्रथम विजयनगर के किस शासक ने विजयनगर की सेना में मुसलमानों की भर्ती आरंभ की?

(क) कृष्णदेव राय (ख) निरूपाक्ष (ग) देवराय द्वितीय (घ) अच्युतराय

(ii) इतालबी यात्री निकोलो कोटी एवं फारस के राजदूत अब्दुर्रज्जाक ने किस विजयनगर सम्राट के शासनकाल में विजयनगर की यात्रा की ?

(क) कृष्णदेव राय (ख) देवराय द्वितीय (ग) बुक्का द्वितीय (घ) देवराय प्रथम

(iii) विजयनगर की पहली राजधानी 'हम्पी' थी। इनकी दूसरी राजधानी कहां पर थी ?

(क) विजयनगर (ख) कांची (ग) बेल्लोट (घ) पेनुकोडा

(iv) राक्षसी–तंगड़ी, तालीकोटा एवं बन्नी हट्टी के नाम से प्रसिद्ध लड़ाई विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य के नेतृत्व में बने विरोधी महासंघ के बीच लड़ी गयी। इस लड़ाई का कारण क्या था ?

(क) एक दूसरे के राज्यों को हड़पना

(ख) कृष्णा एवं तुंगभद्रा नदियों के मध्य स्थित भूभाग पर अधिकार को लेकर जिसे रायचूर दोआब के नाम से जाना जाता था।

(ग) हिन्दू धर्म एवं इस्लाम धर्म का संघर्ष

(घ) उपर्युक्त सभी

(v) निम्न विदेशी यात्रियों में किसने विजयनगर साम्राज्य की यात्रा की ?

1. निकोलो कोटी 2. अब्दुर्रज्जाक 3. निकितिन 4. पापस 5. नूनिज 6 मार्को पोलो

(a) 1, 2, 3, 4 (b) 2, 3, 4, 5, 6 (c) 1, 3, 4, 5, 6 (d) 1, 2, 3, 5, 6

(vi) निम्न में से किसका निर्माण कृष्णदेव राय ने नहीं करवाया ?

(a) नागलपुर नगर (b) हजारा मंदिर (c) बिट्ठल स्वामी मंदिर (d) शिव मंदिर

(vii) सूची I को सूची II से मिलान कीजिए।

सूची I सूची II

(अ)	बेसवाग	(1)	विजयनगर काल में राजा को कहा जाता था।
(ब)	बड़वा	(2)	मनुष्यों के क्रय–विक्रय को कहा जाता था।
(स)	राय	(3)	पैर में पहना जाने वाला सम्मान सूचक कहा
(द)	गंडपेड	(4)	उत्तर भारत से बड़ी संख्या में दक्षिण भारत आकर बसे हुए लोगों को कहा गया।

	अ	ब	स	द
(a)	2	4	1	3
(b)	2	4	3	1
(c)	1	2	3	4
(d)	4	3	2	1

(viii) विजयनगर साम्राजय का सर्वाधिक योग्य एवं कुशल शासक कौन था ?

(a) देवराज प्रथम (b) कृष्णदेव राय (c) हरिहर प्रथम (d) विरूपास

(ix) विजयनगर किस नदी के तट पर स्थित था ?

(a) कृष्णा (b) कावेरी (c) तुंगभद्रा (d) नर्मदा

(x) तेलुगु भाषा की महत्वपूर्ण कृति 'अयुक्त माल्यद' की रचना विजयनगर के किस शासक ने की ?

(a) कृष्णदेव राय (b) देवराय प्रथम (c) हरिहर प्रथम (d) विरूपास

भाग (ख) (Part-B) लघु–उत्तरीय प्रश्न (Short-Answer Type Questions)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

(Write Short notes on the followings)

(i) तालिकोटा का युद्ध (Battle of Talikota)

(ii) हम्पी (Hampi)

(iii) अष्टदिग्गज (Ashtdiggaj)

(iv) कृष्णदेव राय (Krishandev Roy)

(v) आयंगर व्यवस्था (Ayangar Settlement)

(vi) नायंकर व्यवस्था (Nayankar Settlement)

(vii) हरिहर तथा बुक्का (Harihar and Bukka)

(viii) पगोडा (Pagoda)

(ix) अमरम् (Amram)

(x) भंडारवाद ग्राम (Bhandarwad gram)

भाग (ग) दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

1. विजयनगर साम्राज्य के उत्थान का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

   (Describe in brief of the Rise of Vijaynagar Empire.)

2. विजयनगर साम्राज्य के महान् शासक कृष्णदेव राय की उपलब्धियों का वर्णन करें।

   (Describe the achievements of Krishandev Roy the great Ruler of Vijaynagar Empire)

3. विजयनगरकालीन प्रशासन का वर्णन करें।

   (Describe the administration of Vijaynagar Empire)

4. विजयनगर साम्राज्य की सामाजिक–व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

   (Describe the Social System of Vijaynagar Empire).

10-9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answers to Check your progress)

10.5 भाग (क) के उत्तर :– (i) हरिहर व बुक्का (ii) बुक्का प्रथम (iii) देवराय द्वितीय (iv) हरिहर द्वितीय (v) देवराय प्रथम (vi) देवराय द्वितीय (vii) देवराय द्वितीय (viii) देवराय द्वितीय (ix) तुलुव (x) हम्पी

10.5 भाग (ख) का उत्तरः–(i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) असत्य (v) सत्य (vi) सत्य (vii) असत्य (viii) सत्य (ix) असत्य (x) सत्य

10.8 भाग (क) का उत्तरः– (i) c (ii) b (iii) d (iv) b (v) a (vi) d (vii) a (viii) b (ix) c (x) a

10-10 lgk;d lnHk xFk (References)

- प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन, भारत का इतिहास, प्रारंभ से 1526 ई. तक।
- अविनाश चन्द्र अरोड़ा, तृतीय संस्करण 1987, प्रदीप पब्लिकेशन्स, जालंधर।
- मध्यकालीन भारत भाग–1 (750–1540 ई. तक) हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, संपादक हरीशचंद्र वर्मा।
- मध्यकालीन भारत भाग–2 (1540–1761 ई. तक) संपादक हरीशचंद्र वर्मा, हिंदी माध्यम कार्यालय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय
- भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन, (द्वितीय संस्करण), दृष्टि पब्लिकेशन, दिल्ली।
- सामान्य अध्ययन–यूनिक प्रकाशन, नई दिल्ली, डॉ विनय कुमार सिंह।
- स्पेक्ट्रम पब्लिकेशन – सामान्य अध्ययन, राजीव अहीर, नई दिल्ली।

COURSE CODE: HIS 103 LESSON NO. 11	SUBJECT – HISTORY PART-1 SEMESTER - II AUTOR – MOHAN SINGH BALODA

fnYyh lYrur dk 'kgjh dsUnz

(URBAN CENTRES OF DELHI SULTANAT)

v/;k; lajpuk **(Lesson Structure)**

11.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objective)

11.2 परिचय (Introduction)

11.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

11.3.1 सल्तनतकालीन शहरीकरण या नगरीकरण (Urban Centres of Delhi Sultanat)

11.3.2 दास वंश या ममलूक वंश के काल में दिल्ली सल्तनत के शहरी केंद्र के मानचित्र (Map of the Urban centres during Slave or Mamluk dynasty in Delhi Sultanat)

11.3.3 सल्तनतकालीन नगरीय प्रशासन (Urban Administration in Delhi Sultanat)

11.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of Text)

11.4.1 दिल्ली सल्तनत में शहरी अर्थव्यवस्था (Urban Economy in Delhi Sultanat)

11.4.2 अलाउद्दीन खिलजी के काल में शहरी केन्द्र के मानचित्र (Map of Urban Centres During Alauddin Khilji)

11.4.3 दिल्ली सल्तनत के अंतर्गत शहरी/नगरीय जन–जीवन (Urban Life in Delhi Sultanat)

11.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

11.6 सारांश/सक्षिप्तिका (Summary)

11.7 संकेत–सूचक (Key-words)

11.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT)

11.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

11.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

11-1 vf/kxe mn~ns'; **(Learning Objectives)**

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी इस योग्य हो जाएंगे :–

- शिक्षार्थी दिल्ली सल्तनत के शहरी केन्द्र को भारतीय मानचित्र पर अंकित करते हुये इसका उल्लेख कर सकेंगे।
- सल्तनतकालीन शहरीकरण या नगरीकरण की विशेषताओं को बता सकेंगे।
- दास वंश या ममलूक वंश के काल में दिल्ली सल्तनत के शहरी केंद्रों को मानचित्र पर चिन्हित कर सकेंगे।
- विद्यार्थी सल्तनतकालीन नगरीय प्रशासन पर विस्तार से चर्चा कर सकेंगे।
- दिल्ली सल्तनत में शहरी अर्थव्यवस्था के स्वरूप पर प्रकाश डाल सकेंगे।
- सल्तनतकालीन नगरीय जीवन का उल्लेख कर सकेंगे।
- दिल्ली सल्तनत के प्रसिद्ध शासक अलाउद्दीन खिलजी के काल में शहरी केन्द्रों को भारत के मानचित्र पर अंकित कर सकेंगे।

11-2 ifjp; **(Introduction) :-**

जनसंख्या, आकार, संरचना व लोगों के जीवन–यापन हेतु विभिन्न कार्यिक क्षेत्रों में गत्यात्मक परिवर्तन की प्रक्रिया को नगरीकरण के नाम से जानते हैं। भारत के इतिहास में सिंधु–घाटी सभ्यता या हड़प्पा सभ्यता को प्रथम नगरीय सभ्यता के रूप में जाना जाता है। इस काल के ऐतिहासिक साक्ष्यों से पता चलता है कि इस काल में हड़प्पा, मोहनजोदड़ों, धौलावीरा, लोथल, राखीगढ़ी जैसे उत्कृष्ट नगर अपने सुव्यवस्थित नगर–नियोजन के लिए प्रसिद्ध थे। इसके बाद महाजनपद युग और उसके बाद लगभग

ईसा पूर्व छठी और सांतवी शताब्दी को क्रमशः द्वितीय नगरीकरण या शहरीकरण के रूप में देखा जाता है।

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में जब मुहम्मद गौरी के गुलाम के रूप में कुतुबुद्दीन ऐबक ने लाहौर में 1206 ई. में दिल्ली सल्तनत के नाम से स्थापना की और बाद में इल्तुतमिश ने सत्ता का केंद्र दिल्ली को बनाया तब एक बार फिर से भारत में नगरों का विकास प्रारम्भ हो गया। 1206 ई. से 1526 ई. तक दिल्ली सल्तनत पर गुलाम वंश, खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैयद वंश व लोदी वंश कुल पांच राजवंशों ने राज किया। इनमें एक–से–बढ़कर एक कई प्रसिद्ध शासक हुये जिन्होंने कई शहर बसाये। इन सबों ने नगरीकरण की प्रक्रिया को बड़ी तेजी से आगे बढ़ाया। यद्यपि तुर्को द्वारा मुस्लिम सत्ता की स्थापना से पूर्व भी भारत में नगरीकरण का विकास हो रहा था लेकिन फिर भी इनके आने से नगरों के विकास में तेजी आयी। 1206 ई. में भारत में मुस्लिम सत्ता की स्थापना करने वाले तुर्क शासकों को राज्य विस्तार के लिए मजबूत सैन्य शक्ति की आवश्यकता थी। मजबूत सैन्य शक्ति के लिए पर्याप्त धन की आवश्यकता ने अनेक प्रकार के उद्योग–धंधों व व्यापार को बढ़ाने की आवश्यकता को जन्म दिया। इनके फलस्वरूप नगरीकरण को बढ़ावा दिया। इसके अलावा सल्तनत काल में भारत से बाहर दूर देश तक व्यापार के लिए बंदरगाहों का विकास किया गया। जिससे बंदरगाह के आसपास व्यापारिक केंद्र के रूप में नगर का विकास हुआ। मुस्लिम काल में उनकी सुंदर व विशाल मस्जिदें उनके दरवाजे, गुम्बद, मेहराब और नगर के चारों और एक संशोधित रक्षा प्राचीरें जो कि अधिक कुशलतापूर्वक सैनिक उपकरणों से सुसज्जित थी ने नगर के सौंदर्यीकरण में बहुत अधिक योगदान दिया। दिल्ली सल्तनत के शासकों के काल में जगह–जगह से इस्लामी कारीगरों तथा व्यापारियों के भारत आगमन के फलस्वरूप कला, कुशलता व तकनीक आधारित परिवर्तनों ने अनेक प्रकार के उद्योगों को बढ़ावा दिया। इससे नगरीकरण का विकास बहुत तेजी से हुआ। 13 वीं तथा 14 वीं शताब्दी में भारत में अनेक शहरों तथा नगरों का विकास हुआ। जैसे–जैसे दिल्ली सल्तनत का विस्तार होता गया उसी अनुसार उत्तर, दक्षिण, पूर्व व पश्चिम पूरे भारत में शहर व नगर केंद्र विकसित होते गये। उदारहरणार्थ आधुनिक पाकिस्तान में लाहौर तथा मुल्तान, पश्चिमी भारत में भड़ौच, खंभात तथा अन्हिलवाड़, पूर्वी भारत में लखनौती, गौड़ तथा सौनारगांव, उत्तरी भारत में दिल्ली तथा जौनपुर तथा दक्षिण भारत में दक्कन क्षेत्र में दौलताबाद

आदि। मुहम्मद–बिन–तुगलक के काल में मोरक्को का यात्री इब्नबतूता के अनुसार पूर्वी इस्लाम दुनिया में दिल्ली सबसे बड़ा शहर था तथा दौलताबाद लगभग दिल्ली के बराबर था।

11-3 v/;k; d e[; fcUn **(Main body of Text)**

11-3-1 lYrurdkyhu 'kgjhdj.k ;k uxjhdj.k **(Urban Centres of Delhi Sultanat)**

1206 ई. से लेकर 1526 ई. तक कुल 320 वर्षों तक दिल्ली पर जिन मुस्लिम शासकों ने राज किया उसे दिल्ली सल्तनत के नाम से जाना जाता है। मुहम्मद गौरी का गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक प्रथम मुस्लिम सुल्तान था। दिल्ली सल्तनत के अंतर्गत पांच अलग–अलग वंशो –

गुलाम वंश – 1206 से 1290 ई. तक

खिलजी वंश – 1290 से 1320 ई. तक

तुगलक वंश – 1320 से 1414 ई. तक

सैयद वंश – 1414 से 1451 ई. तक

लोदी वंश – 1451 से 1526 ई. तक राज किया।

कुतुबुद्दीन ऐबक ने लूटमार की नीति को छोड़कर भारत में स्थायी राजनीतिक शासन की स्थापना की नीति को आगे बढ़ाया। उसने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया। इस प्रकार भारत में स्थायी रूप से मुस्लिम सत्ता आरंभ हुई। बाद में गुलाम वंश के ही शासक इल्तुतमिश ने सत्ता के केंद्र को लाहौर से दिल्ली लाकर स्थापित किया। दिल्ली सल्तनत के अंतर्गत खिलजी वंश का प्रसिद्ध शासक अलाउद्दीन खिलजी सर्वाधिक विस्तारवादी शासक हुआ। उसने दिल्ली सल्तनत का विस्तार उत्तर से लेकर दक्षिण भारत तक किया। अलाउद्दीन खिलजी के विस्तारवादी नीति के कारण ही मुहम्मद–बिन–तुगलक के सिंहासन पर बैठते समय दिल्ली सल्तनत कुल 23 प्रांतों में बंटा था। यद्यपि मुहम्मद–बिन–तुगलक के कुछ गलत नीतियों के कारण सल्तनत का विद्यटन भी इसके काल से आरंभ हो गया था। फिर भी कश्मीर एवं बालूचिस्तान को छोड़कर लगभग संपूर्ण भारत तक सल्तनत का विस्तार हो गया। सल्तनत के विस्तार के साथ–साथ तुर्की शासकों व उस समय के तुर्की सरदारों के शहरी मिजाज तथा उस

समय की परिस्थितियों ने कस्बों, शहरों व नगरों की स्थापना व विकास की आवश्यकता को जन्म दिया। इस कारण यद्यपि भारत में तुर्को के आगमन से पूर्व भी शहर व नगर बस रहे थे उनका विकास हो रहा था परंतु यह सत्य है कि सल्तनत काल में नगरीकरण की प्रक्रिया में बहुत तेजी आ गई। मुगलकालीन इतिहासकार अबुल फजल अपने विवरण में 3200 कस्बों व शहरों का उल्लेख करता है। स्पष्ट है कि मुगल काल में एकदम से इतने कस्बों या शहरों का विकास नहीं हो गया बल्कि इनका विकास दिल्ली सल्तनत काल में हुआ था।

जब मुहम्मद गौरी ने 1992 ई. में भारत पर आक्रमण किया था तो उसके साथ चिश्ती परंपरा के सूफी संत ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती भी भारत आये और वे अजमेर में बस गये। उसके बाद मुहम्मद गौरी भारत में अपने विजित क्षेत्र को कुतुबुद्दीन ऐबक को सौंपकर वापस लौट गया। ऐबक ने ही गुलाम वंश या ममलूक वंश के नाम से मुस्लिम सत्ता की नींव डाली।

अजमेर में ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती को मानने वालों का आगमन आरंभ हो गया। इनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धीरे–धीरे व्यापार, उद्योग, सड़क, भवन–निर्माण आदि कार्यों से संबंधित कारीगरों व कलाकारों का आवागमन आरंभ हो गया। इससे अजमेर का एक बड़े नगर के रूप में विकास आरंभ हो गया। फिर कुतुबुद्दीन ऐबक ने लाहौर को अपनी सत्ता का केंद्र बनाकर सल्तनत का राज आरंभ किया। इससे लाहौर का प्रशासनिक व राजधानी नगर के रूप में विकास आरंभ हो गया। इसके साथ–साथ उस समय आज के पाकिस्तान में मुल्तान का विकास एक बहुत बड़े नगर के रूप में हुआ। मुल्तान में दुनिया भर के व्यापारी आया करते थे। इस प्रकार धार्मिक, प्रशासनिक, उद्योग व अन्य कलाकृतियों की विशेषताओं के साथ नगरों के विकास बड़ी तेजी से होने लगे। ऐबक के बाद इल्तुतमिश ने दिल्ली सल्तनत की राजधानी को लाहौर से दिल्ली लाकर स्थापित किया। जिससे दिल्ली का एक धार्मिक, प्रशासनिक, उद्योग व अन्य कलाकृतियों वाले विशाल नगर के रूप में विकास आरंभ हो गया। तुगलक वंश के प्रसिद्ध शासक मुहम्मद–बिन–तुगलक के समय में अफ्रीकी देश मोरक्को का यात्री इब्नबतूता दिल्लीह को पूर्वी इस्लामी दुनिया में सबसे बड़ा शहर बताता है। इब्नबतूता मुहम्मद तुगलक के दरबार में आठ वर्ष तक रहा था। उसने अपने विवरण में दक्षिण भारत के दक्कन प्रदेश में दौलताबाद नगर को

लगभग दिल्ली के बराबर बताया है। दिल्ली सल्तनत के विस्तारवादी शासक अलाउद्दीन खिलजी ने एक बड़ी मजबूत सैनिक ताकत के साथ राज्य का विस्तार उत्तर से दक्षिण तक कर दिया। उसकी राज्य विस्तार की भूख ने उसे मजबूत आर्थिक व्यवस्था के लिए प्रेरित किया जिसके फलस्वरूप उसने नवीन बाजार नीति बनाये। किसानों को अधिक उत्पादन के लिए प्रोत्साहन मिला। किसानों के अधिशेष उत्पादन का शहरी विकास के व्यापक पोषण में प्रयोग आरंभ हो गया। इस प्रक्रिया ने नगरीकरण व शहरीकरण के विकास को बल मिला। इस प्रकार नवीन–आर्थिक सामाजिक केंद्र के रूप में कस्बों, शहरों व नगरों का विकास बड़ी तेजी से होने लगे। दिल्ली सल्तनत का व्यापार आंतरिक व बाह्य दोनों रूपों से दूर–दूर तक फैला हुआ था। व्यापार को सुचारू रूप से चलाने की आवश्यकता ने बंदरगाह नगर के विकास को जन्म दिया। बंदरगाहों से सामानों को दूर–दूर तक ले जाने के लिए सड़क मार्ग का विकास किया गया। दूर–दराज के गांवों, कस्बों से अधिशेष उत्पादन को लाने के लिए छोटे–बड़े व्यापारिक केंद्र के रूप में शहर, नगर बनने स्वाभाविक थे। सल्तनत काल में दिल्ली, बट्टा, देवल, सरसुती, अन्हिलवाड़, सतगाँव, सोनार गाँव, आगरा, वाराणसी, लाहौर आदि प्रसिद्ध व्यापारिक नगर केंद्र के रूप में विकसित थे। देवल नगर सल्तनत काल में अंतरराष्ट्रीय बंदरगाह के रूप में प्रसिद्ध था। देवल आधुनिक पाकिस्तान के सिंध प्रांत की राजधानी कराची के पास स्थित थी। अन्हिलवाड़ व्यापारियों के तीर्थस्थल के रूप में दुनिया भर में प्रसिद्ध था। अन्हिलवाड़ आज गुजरात में स्थित है। इसको गुजरात के पाटन के नाम से भी जाना जाता है।

'भारत के सीराज' के नाम से प्रसिद्ध जौनपुर नगर को फिरोजशाह तुगलक ने अपने भाई जौना खाँ की याद में बसाया था। इसके अलावा फिरोजशाह ने हिसार, फिरोजाबाद, फतेहाबाद, फिरोजपुर आदि नगरों की भी स्थापना की। ऐतिहासिक विवरणों से पता चलता है कि फिरोजशाह तुगलक ने लगभग 300 नये नगरों की स्थापना की। सल्तनत काल में आगरा नगर नील उत्पादन के लिए प्रसिद्ध था। आगरा की स्थापना सिकंदर लोदी के द्वारा की गयी थी। इस काल में भारत आर्थिक दृष्टि से विकसित था। विदेशों से वस्तुएँ मंगाई एवं भेजी जाती थी। व्यापार जल एवं थल दोनों मार्गों से होता था। अतः शहर व नगर के विकसित होने में गुलाम वंश से लेकर लोदी वंश तक के सभी शासकों ने नगरीकरण की प्रक्रिया को तेजी से आगे बढ़ाने का कार्य किया।

सल्तनत काल में शहरीकरण या नगरीकरण के पीछे कई कारण बताये जाते हैं। भू–राजस्व वसूली की केंद्रीकृत व्यवस्था को भी इसमें एक महत्त्वपूर्ण कारण माना जाता है। इस व्यवस्था के अंतर्गत भूराजस्व की वसूली इक्तादारों व जमींदारों के द्वारा की जाती थी। इस व्यवस्था के परिणामस्वरूप नए शासकों के हाथ में संपत्ति का विशाल खजाना आ गया जिससे एक बड़ी सेना, एक प्रभावशाली और अच्छा वेतन पाने वाले उमरा वर्ग और खर्चीले रहन–सहन का खर्च उठाना संभव हो सका। इन सबके लिए भवन–निर्माण, वस्त्रों, विलास की सामग्री, शास्त्रों की माँग व अन्य दैनिक जीवन के जरूरतों से संबंधित वस्तुओं की माँग में वृद्धि हुई। जिसके फलस्वरूप कुशल कामगारों की संख्या व शिल्पियों में वृद्धि हुई। इस प्रकार नवीन आर्थिक व सामाजिक संबंधों ने नगरीकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया।

ऐतिहासिक विवरणों से पता चलता है कि सल्नत काल में पूर्व से इस्लामी कारीगरों तथा व्यापारियों का भारत में काफी संख्या में आना हुआ, जो अपने साथ अपनी कला, कुशलता तथा तरीके भी साथ लाए। दूसरी ओर इस समय दासों के रूप में सस्ते मजदूर भी आसानी से मिल जाते थे। सल्तनत की भूराजस्व व्यवस्था भी ऐसी थी जिससे ग्रामीण संपदा को शहरों में आसानी से लाया जा सकता था। इस प्रक्रिया ने शहरी अर्थव्यवस्था के स्वरूप को प्रकट किया जिससे नगरीकरण की प्रक्रिया को बल मिला।

प्रसिद्ध इतिहासकार इरफान हबीब के अनुसार मुख्यतः शासक वर्ग द्वारा जो भूमिकर (खराज अथवा माल) अधिशेष के रूप में वसूले जाते थे उनसे शहरी विकास का व्यापक पोषण होता था। भूमिकर की यह अधिशेष राशि शासक व शासन से जुड़े समस्त वर्गों में बंटता था। अतः किसानों के इस शोषण के परिणामस्वरूप सल्तनत काल में ऐसे शहरी केंद्रों की स्थापना हुई।

इरफान हबीब के अनुसार भारतीय किसान इतनी अधिक मात्रा में अधिशेष का उत्पादन करते थे कि उससे व्यापक शहरी विकास का पोषण करना संभव था। समकालीन इतिहासकार सल्तनत काल में इस्लामी कलाकारों तथा व्यापारियों के भारत की तरफ आने की घटना का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत करते हैं। बड़ी संख्या में युद्ध बंदियों को प्रशिक्षण द्वारा कुशल कारीगर बनाया जाता था तथा बाद में वे स्वतंत्र रूप से जीवन–यापन करते थे। अतः जहां एक तरफ लोगों का यहां बसने के लिए आना शहरी केंद्रों को बढ़ावा देने के लिए उत्तरदायी था, वहीं दूसरी तरफ नए भू–राजस्व के द्वारा इन नए केंद्रों के

विकास को सहारा मिला। शासक वर्ग गांवों से आने वाले राजस्व का बड़ा हिस्सा शहरों में खर्च करता था। इन सबसे नगरीकरण प्रक्रिया को बल मिला।

सल्तनत काल में तकनीक आधारित परिवर्तनों का तेजी से फैलाव ने शहरीकरण या नगरीकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया। सूती वस्त्र उद्योग, रेशम उद्योग, कागज उद्योग, भवन निर्माण उद्योग, चमड़ा उद्योग, धातुकर्म उद्योग स्थापित किये गये। इन उद्योगों के साथ शहरों व नगरों का विकास होना बहुत स्वाभाविक था। सुल्तान द्वारा व्यापार में वृद्धि का प्रयास के अंतर्गत नई सड़कों के निर्माण तथा पुरानी की मरम्मत से सुचारू व्यापार तथा संचार संभव हो पाया। व्यापारियों को सुरक्षित व्यापार के लिए सुरक्षा तथा सड़कों पर जगह–जगह सराय की व्यवस्था आदि ने व्यापार को बढ़ावा दिया। इन सबसे शहर व नगर के विकास में तेजी आयी। इस प्रकार सल्तनत के शासकों द्वारा व्यापार तथा वाणिज्य के विकास का अनुकूल माध्यम ने इस काल में शहरीकरण की प्रक्रिया को तेजी से बढ़ायड्ढं

11.3.2 दास वंश या ममलूक वंश के काल में दिल्ली सल्तनत के शहरी केंद्र के मानचित्र (Map of the Urban centres during Slave or Mamluk dynasty in Delhi Sultanat)

Source: Avinaarh Chandra Arora: Hisrory of ancient & early medieval India (From early to 1526 AD),Pradeep Publications Jalandhar P.441

11-3-3 lYrurdkyhu uxjh; iz'kklu **(Urban Administration in Delhi Sultanat)**

सल्तनत काल में भारत में एक नवीन प्रशासनिक व्यवस्था की शुरूआत हुई जो मुख्यतः अरबी–फारसी पद्धति पर आधारित थी। प्रशासनिक व्यवस्था में इस्लाम धर्म के कानून की प्रधानता थी। शासन में खलीफा व उलेमा का महत्त्वपूर्ण स्थान होता था। फिर भी दिल्ली सल्तनत के तुर्क सुल्तानों ने खलीफा को नाममात्र का ही प्रधान माना। सल्तनत के सुल्तानों में अधिकांश ने अपने को खलीफा का नाइब कहा। अलाउद्दीन खिलजी ने अपने को खलीफा का नाइव नहीं माना। मुबारक खिलजी पहला ऐसा सुल्तान था जिसने खिलाफत की परंपरा को तोड़कर स्वयं को खलीफा घोषित किया। इस प्रकार स्पष्ट है कि सल्तनत काल में प्रशासन की समस्त शक्तियां सुल्तान में केंद्रित होती थी। सल्तनत काल में शासन में सभी प्रभावशाली पदों पर नियुक्त व्यक्तियों को अमीर कहते थे। सुल्तान को शासन चलाने के लिए अमीरों को अपने पक्ष में रखना आवश्यक होता था। फिर भी बलबन व अलाउद्दीन खिलजी ने अपने शासनकाल में अमीर पद को प्रभावहीन बना दिया। इसके बावजूद अमीरों का प्रशासन में महत्वपूर्ण योगदान होता था। सुल्तान व अमीर शानो–शौकत के साथ नगर में रहते थे। समस्त–प्रशासनिक खर्चों में सुल्तान की सहायता के लिए मंत्रिपरिषद की व्यवस्था थी। नगर प्रशासन के लिए मंत्रिपरिषद् में 4 मंत्री महत्वपूर्ण होते थे।

वजीर या प्रधानमंत्री राजस्व विभाग के प्रमुख के रूप में महत्वपूर्ण मंत्री होता था। इसके बाद सैन्य विभाग के प्रमुख के रूप में दीवान–ए–आरिज का स्थान होता था। शाही पत्र व्यवहार का कार्य संभालने वाला दीवान–ए–इंशा तीसरा विभाग था। जबकि विदेशी विभाग के रूप में दीवान–ए–रसालत चौथा विभाग था।

दिल्ली सल्तनत के आरंभिक वर्षों में सल्तनत का शासन क्षेत्र राजधानी नगर व आसपास के नगरों व कस्बों तक सीमित था। अतः शासन के अंतर्गत नगर प्रांत के अतिरिक्त कोई व्यवस्था नहीं थी बाद में शासन क्षेत्रों के विस्तार के साथ प्रांत शिकों में व उससे नीचे अन्य स्थानीय शासन की व्यवस्था बनाये गये।

प्रशासनिक दृष्टि से दिल्ली सल्तनत अनेक प्रांतों में बंटा था जिसे इक्ता कहा जाता था। सल्तनत को सैनिक क्षेत्रों के रूप में विभाजित किया गया था। प्रत्येक इक्ता एक मुक्ती अथवा शक्तिशाली सैन्य अधिकारी के अधीन होता था। इक्ता के शासक को मुक्ता के अलावा नायब वली के नाम से भी जानते थे। इस प्रकार सल्तनत के इक्ता का प्रशासन नायब वली व मुक्ता द्वारा संचालित किया जाता था। इसे इक्तादारी प्रथा कहा जाता था। भारत में सर्वप्रथम मुहम्मद गौरी ने कुतुबुद्दीन ऐबक को हाँसी का इक्तेदार बनाया परंतु इक्तेदारी व्यवस्था को सुव्यवस्थित रूप से चलाने का श्रेय इल्तुतमिश को ही दिया जाता है। सल्तनत के एक शक्तिशाली शासक के रूप में बलबन ने इसमें परिवर्तन कर दिया। बलबन ने वलि या मुक्ता के आचरण पर नियंत्रण रखने हेतु ख्वाजा नामक लेखाधिकारी की नियुक्ति की। सल्तनत का सबसे मजबूत व विस्तारवादी शासक अलाउद्दीन खिलजी ने सल्तनत का विस्तार उत्तर से दक्षिण तक कर दिया था। उसने केंद्र में एक स्थायी सेना का गठन करके नगर शासन को व्यवस्थित किया। सैन्य शक्ति को व्यवस्थित करने के लिए धन की आवश्यकता को देखते हुये अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली के समीप छोटी इक्ताओं को समाप्त कर उन्हें खालसा भूमि में शामिल कर लिया किंतु दिल्ली से दूर बड़ी इक्ताओं को जारी रखा।

इक्तेदारी व्यवस्था में सर्वाधिक परिवर्तन तुगलक काल में देखने को मिलता है। गयासुद्दीन तुगलक ने मुक्ता की आय और उसके द्वारा नियुक्त सैनिकों की आय में स्पष्ट विभाजन कर दिया।

मुहम्मद बिन तुगलक ने इक्तेदारों के अधिकारों पर अंकुश लगाते हुए उन्हें केवल भू–राजस्व वसूली के अधिकार तक सीमित कर दिया। फिरोजशाह तुगलक ने अलाउद्दीन खिलजी के नकद वेतन प्रणाली के स्थान पर फिर से सैनिकों को भू–अनुदान देना प्रारंभ कर दिया तथा इक्ता भूमि को वंशानुगत बना दिया। इस प्रकार सल्तनत काल में नगर प्रशासन के अंतर्गत इक्तेदारी प्रथा का स्वरूप शासकों की शक्ति के आधार पर बदलते रहे हैं।

दिल्ली सल्तनत के अंतर्गत नगर शासन व्यवस्था में एक मजबूत सैन्य प्रणाली का महत्त्वपूर्ण स्थान था। राजधानी व नगरीय क्षेत्र में जो सेना राज्य में प्रमुख भूमिका निभाती थी उसे हश्म–ए–कल्ब या कल्ब–ए सुल्तानी कहा जाता था। दिल्ली सल्तनत में सर्वप्रथम सैन्य विभाग की स्थापना का श्रेय बलबन को

जाता है। परंतु केंद्र में एक स्थायी सेना के गठन का कार्य अलाउद्दीन खिलजी ने किया था। अलाउद्दीलन खिलजी ने ही सर्वप्रथम सेना को नकद वेतन देना आरंभ किया था। सैनिकों की सीधी भर्ती की व्यवस्था भी अलाउद्दीन के द्वारा ही किया गया था। सेना में भ्रष्टाचार को रोकने के लिये और उनकी गतिशीलता बनाए रखने के लिए अलाउद्दीन खिलजी ने दाग व हुलिया प्रथा चलायी। गयासुद्दीन तुगलक ने अलाउद्दीन खिलजी द्वारा चलायी गयी प्रथा को लागू करने में कठोरता बरती। मुहम्मद बिन तुगलक के समय तक सेना पर केंद्रीय सरकार का नियंत्रण बना रहा। फिरोजशाह तुगलक के काल में सैन्य व्यवस्था में सामंती व्यवस्था फिर से स्थापित हो गया। जबकि लोदियों की सेना कबीलों के आधार पर संगठित थी।

सल्तनत काल में नगरीय प्रशासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए धन की व्यवस्था अर्थात् राजस्व की प्राप्ति के लिए पांच प्रकार के कर लगाए जाते थे – 1 उश्र 2. खराज 3. खम्स 4. जकात 5. जजिया। उश्र भूमि कर था जो राज्य द्वारा सिंचित भूमि पर लगाये जाते थे जिसकी दर 1/10 होती थी। खराज भी भूमि कर था जो गैर मुसलमानों की भूमि पर लगाया जाता था। लूट के धन से प्राप्त कर को खम्स कहते थे। जकात धार्मिक कर था, जो केवल मुसलमानों से प्राप्त किया जाता था। जजिया कर गैर मुसलमानों पर लगाया जाता था। सल्तनत काल में समस्त न्याय व्यवस्था का केंद्र सुल्तान होता था। वही न्याय विभाग का अध्यक्ष होता था। धार्मिक मुकदमों का निर्णय करते समय सुल्तान मुख्य सद्र तथा मुफ्ती की सहायता लेता था। यद्यपि बड़े नगरों में न्याय व्यवस्था के अंतर्गत अमीर–ए–दाद नामक पदाधिकारी होता था, जो आधुनिक मजिस्ट्रेट की भांति था। सल्तनत काल में दण्ड–विधान अत्यधिक कठोर था। अपराध की स्थिति में अंगछेदन से लेकर मृत्युदण्ड की व्यवस्था थ्ज्ञी। इस काल में नगरीय प्रशासन के अंतर्गत सुरक्षा के लिए कोतवाल की व्यवस्था थी।

11-4 v/;k; dk vkxs dk eq[; Hkkx **(Further Main Body of Text)**

11-4-1 fnYyh lYrur esa 'kgjh vFkZ0;oLFkk (Urban Economy in Delhi Sultanat)

सल्तनत काल में भारत अपेक्षाकृत आर्थिक दृष्टि से उन्नत स्थिति में था। राजस्व का मुख्य स्रोत भू–राजस्व ही था। राजस्व का एक बहुत बड़ा हिस्सा तथा कृषि के अधिशेष उत्पादन के आधार पर इस

काल में शहरीकरण की प्रक्रिया तीव्र गति से हो रही थी। इस कारण शहरी अर्थव्यवस्था मजबूत थी। दिल्ली सल्तनत के शासन व शासन तंत्र से जुड़े अमीर शहरी जीवन में रहने को अभ्यस्त थे। इस कारण राज्य द्वारा कृषि व व्यापार को खूब प्रोत्साहन मिलता था ताकि अधिक–से–अधिक राजस्व की प्राप्ति हो और वे नगर में पूर्ण सुविधा के साथ रह सके। उनकी इस नीति ने शहरी अर्थव्यवस्था को और मजबूत किया। विदेशों से वस्तु मंगाने एवं भेजने दोनों प्रकार की व्यवस्था सल्तनत काल में व्यापार के अंतर्गत थी। अतः व्यापार जल एवं थल दोनों मार्गों से होता था। इस कारण सल्तनत काल में अंतरराष्ट्रीय बंदरगाह उन्नत अवस्था में थे। बंदरगाहों से दूर–दराज स्थित नगरों तक सामानों का`ले जाने के लिए राजमार्गों का विकास किया गया। बंदरगाह नगर से लेकर दूर–दूर तक नगरों के विकास बड़ी तेजी से इस काल में हुए। इन नगरों की अर्थव्यवस्था अत्यंत सुदृढऋ थी। इन नगरों में अनेक प्रकार के उद्योग बड़े पैमाने पर चलाये जा रहे थे। इन उद्योगों में निर्मित वस्तुओं को विदेशों में भेजे जाते थे। इनमें लोहा, हथियार, अनाज, सूती वस्त्र, जड़ी–बूटी, मसाले, फल, शक्कर एवं नील आदि वस्तुएँ निर्यात की जाती थी। बाहर से आयात की जाने वाली महत्त्वपूर्ण वस्तुओं में अस्त्र–शस्त्र, मेवे, फल आदि शामिल थी। इसके अलावा इस काल में सल्तनत काल में अरब, तुर्किस्तान, रूस, ईरान देशों से उत्तम नस्ल के घोड़े मंगाये जाते थे। दूसरे देशों से यहां दास भी मंगाये जाते थे जिन्हें प्रशिक्षित करके विभिन्न कार्यों में लगाया जाता था। दिल्ली सल्तनत काल में दिल्ली, थट्टा, देवल, सरसुती, अन्हिलवाड़, सतगाँव, सोनार गाँव, आगरा, वाराणसी, लाहौर आदि महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र के रूप में विकसित नगर थे। देवल सल्तनत काल में अंतरराष्ट्रीय बंदरगाह के रूप में प्रसिद्ध था। अच्छे किस्म के चावल के लिए सरसुती नगर की अर्थव्यवस्था उन्नत स्थिति में थी। अन्हिलवाड़ व्यापारियों के तीर्थस्थल के रूप में बहुत प्रसिद्ध था। सतगांव रेशमी रजाइयों के लिए उस काल में प्रसिद्ध व्यापारिक नगर था। सोने, चाँदी एवं जरी के कारीगरी के लिए बनारस की प्रसिद्धि दुनिया भर में थी। आगरा नगर की प्रसिद्धि नील की खेती व उस पर आधारित उद्योग के लिए थी। दिल्ली सल्तनत में इब्नबतूता के बाद आए चीनी यात्रियों ने बंगाल के बारे में कहा था कि "देवताओं ने पृथ्वी का संपूर्ण सोना इस प्रांत में बिखेर दिया है।" इससे दिल्ली सल्तनत के उन्नत शहरी अर्थव्यवस्था का पता चलता है। इस काल में नवीन प्रौद्योगिकी के विकास के कारण भारत की उत्पादन सरंचना में परिवर्तन हुआ जिसे इतिहासकार

मोहमम्मद हबीब ने नगरीय क्रांति की संज्ञा दी है। लगभग सभी सुल्तानों ने नए नगर बसाए, जिससे नगरों का विस्तार हुआ, रोजगार में वृद्धि हुई और ग्रामीण जनता का आकर्षण शहरों की ओर बढ़ा। इस कारण शहरी अर्थव्यवस्था बड़ी तेजी से आगे बढ़ी। सूती वस्त्र उद्योग, रेशम वस्त्र उद्योग, कागज उद्योग में तेजी आई। बंगाल के सोनार गाँव का मलमल विश्व प्रसिद्ध था। सूती वस्त्रों की रंगाई के लिए दिल्ली प्रमुख केंद्र था। स्थल मार्ग द्वारा भारत का नगर व्यापारिक केंद्र अफगानिस्तान, मध्य एशिया, ईरान, इराक आदि देशों से जुड़ा था। व्यापारियों एवं साधारण यात्रियों की सुविधा के लिए सबसे लंबी सड़क पेशावर से लाहौर और दिल्ली से होती हुई सोनार गाँव तक जाती थी। मुहम्मद तुगलक ने दिल्ली से देवगिरी तक की नई सड़क का निर्माण करवाया था। दिल्ली को लाहौर के अतिरिक्त मुल्तान से भी सड़क द्वारा मिला दिया गया था। इस प्रकार दिल्ली सल्तनत के अधीन शहरी अर्थव्यवस्था मजबूत स्थिति में विकसित होती गयी।

11-4-3 fnYyh lYrur d vrxr 'kgjh@uxjh; tu&thou **(Urban Life in Delhi Sultanat)**

दिल्ली सल्तनत काल में उपलब्ध विवरणों के आधार पर उस काल के ग्रामीण व शहरीय जन–जीवन के बारे में पर्याप्त जानकारी प्राप्त नहीं होती है। प्रायः उस काल के लेखक अपने संरक्षक राजाओं के इतिहास लिखने में अधिक रूचि लेते थे और जन साधारण के जीवन के संबंध में लिखने की आवश्यकता नहीं समझते थे। फिर भी इब्नबतूता जैसे विदेशी यात्रियों के विवरणों से तथा अन्य स्रोतों से हमें सल्तनतकालीन जन–जीवन के संबंध में कुछ निश्चित जानकारी प्राप्त होती है।

तुर्क मुख्यतः नगर निवासी थे। अतः तुर्क सुल्तानों ने अपनी प्रशासनिक–आर्थिक व्यवस्था में नगरीकरण की प्रक्रिया को बहुत अधिक बढ़ावा दिया। शहरी जीवन में सुख–सुविधा आधारित विलासित पूर्ण जीवन के प्रति अधिक रूझान था। सुल्तान व शासक से जुड़े अमीर व उलेमा वर्ग विलासिता पूर्ण जीवन व सुख सुविधाओं के आदी थे। इसलिए इन्होंने व्यापार–वाणिज्य, भू–राजस्व से प्राप्त आय व ग्रामीण अधिशेष उत्पादन के अधिकांश भाग शहर में अपनी सुविधाओं की पूर्ति में प्रयोग कर रहे थे। इससे

ग्रामीण तो उपेक्षित थे ही लेकिन इसके साथ–साथ शहरों में भी अमीर–गरीब के बीच खाई और अधिक चौड़ी थी।

सल्तनत काल में किसान, जिसे बलाहार कहते थे उनसे भू–राजस्व के रूप में उपज का एक–तिहाई 1/3 तथा कई बार आधा हिस्सा 1/2 वसूला जाता था। इस वसूले गए राशि पर सुल्तान व शासन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े लोग शहर में विलासितापूर्ण जीवन जीते थे। सल्तनत काल में भारत में तुर्कों ने अरबी–फारसी पद्धति पर आधारित सर्वथा एक नवीन व्यवस्था की शुरूआत की थी जिसमें इस्लामिक धर्म व सिद्धांत की प्रधानता थी। सुल्तान केंद्रीय प्रशासन का मुखिया होता था। समस्त शासन व न्याय प्रणाली सुल्तान में निहित होता था। प्रशासन में मुस्लिम धर्म गुरू खलीफा व उलेमा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती थी। सल्तनत काल में सभी प्रभावशाली पदों पर शासन चलाने के लिए जिन तुर्की सरदारों की नियुक्ति की जाती थी, उन्हें अमीर शब्द से संबोधित करते थे। इन अमीरों का प्रभाव सुल्तान पर होता था। सुल्तान, खलीफा, उलेमा व अमीर सभी जन–सामान्य का शोषण करके समस्त सुख–सुविधाओं के साथ शहर में रहते थे। यद्यपि सामान्य व्यक्ति के अर्थ में हिन्दू व मुसलमान दोनो सल्तनत काल में शहरी जन–जीवन में भी उपेक्षित थे फिर भी इस्लामिक पद्धति आधारित शासन होने के कारण अपेक्षाकृत मुसलमानों की स्थिति अच्छी थी। मुसलमानों को समाज में आदर की दृष्टि से देखा जाता था। प्रशासन में उन्हें महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। नगरीय जन–जीवन में मुसलमानों की उच्च श्रेणी में सरदार, इक्तादार, उलेमा आदि आते थे। मध्यम श्रेणी में सैनिक तथा छोटे–छोटे पदों पर नियुक्त कर्मचारी वर्ग का स्थान था। मुसलमानों की सबसे निचली श्रेणी में शिल्पकार, निजी सेवक, दास–दासियां आदि शामिल थे। जुलाहे, लुहार, सुनार, बढ़ई, मोची आदि शिल्पकार के रूप में रोजी–रोटी कमाने वालों में मुसलमान व हिंदू दोनों शामिल थे। हिन्दू समाज के चार वर्ण – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र मौजूद थे परंतु इनका अब पूर्व काल की तरह कोई खास महत्व नहीं रह गया। सामाजिक असमानता सल्तनत काल में ग्रामीण जीवन की तरह कुछ कम मात्रा में मौजूद थी। हिन्दू समाज में अस्पृश्यता व ऊँच–नीच का भेदभाव मौजूद था।

शहरी जन–जीवन में भी स्त्रियों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। उन्हें पुरुष से नीचा समझा जाता था। इनकी शिक्षा की ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता था। हिन्दू–मुसलमान दोनों की स्त्रियों में पर्दा–प्रथा प्रचलति थी। उच्च श्रेणियों के लोगों में एक से अधिक स्त्रियों से विवाह करने का रिवाज भी प्रचलन में था।

सल्तनत काल में शहरी जन–जीवन में खान–पान, रहन–सहन, वस्त्र–आभूषण, आमोद–प्रमोद आदि को लेकर जन–सामान्य तथा उच्च वर्ग के बीच बहुत अंतर था। सुल्तान व शासन–प्रशासन से जुड़े लोग नैतिकता व अनैतिकता की भावना का बिना विचार किये ही जन–सामान्य का शोषण करने भोग–विलासपूर्ण जीवन जीते थे। इस कारण उस समय के समाज में सदाचार का अत्यधिक अभाव था।

तुर्क सुल्तानों ने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शहरों में नवीन प्रौद्योगिकी आधारित कई उद्योगों की स्थापना की थी। इससे शहरी जन–जीवन में मात्रात्मक व गुणात्मक दोनों ही प्रकार के परिवर्तन हमें सल्तनत काल में देखने को मिलते है। सल्तनतकालीन सुल्तानों की स्थापत्य कला में विशेष रूचि थी। इन्होंने भारत में मौजूद शैली का इस्लाम के साथ समन्वय करते हुये इंडो–इस्लामिक शैली आधारित स्थापत्य कला शैली का विकास किया। सल्तनकालीन स्थापत्य कला ने भी शहरी जन–जीवन को उन्नत किया और उस समय एक नया रूप प्रदान किया।

11-5 Áxfr leh{kk **(Check your Progress):**

भाग (क) खाली स्थानों की पूर्ति कीजिए। (Fill in the blanks)

(i) दिल्ली सल्तनत के .... सुल्तान ने आगरा नगर बसाया था।

(ii) दूसरी दिल्ली के नाम से प्रसिद्ध सीरी नगर दिल्ली सल्तनत के .... शासक द्वारा बसाया गया था।

(iii) तुगलकाबाद का निर्माण .... शासक के द्वारा किया गया था।

(iv) आगरा में स्थित सरखेज .... के लिए प्रसिद्ध था।

(v) भरतपुर (राजस्थान) का बयाना सल्तनत काल में .... के लिए प्रसिद्ध था।

(vi) सूती वस्त्रों की रंगाई के लिये सल्तनत काल में .... प्रमुख केंद्र था।

(vii) सल्तनत काल में हाथी दाँत व लाख .... से मंगाया जाता था।

(viii) .... नगर को व्यापारियों के लिए तीर्थ–स्थल कहा जाता था।

(ix) दिल्ली सल्तनत काल में .... अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का प्रमुख बंदरगाह था।

(x) दिल्ली सल्तनत काल में सोना, चांदी, केसर, अफीम, सिंदूर, घोड़े आदि .... से आयात किये जाते थे।

भाग (ख) सत्य–असत्य कथन पर आधारित प्रश्न

(True-False Statements bases questions)

(i) दिल्ली सल्तनत काल में अच्छे किस्म के चावल के लिये अन्हिलवाड़ प्रसिद्ध था। ( )

(ii) तुर्क मुख्यतः नगर निवासी थे। अतः उनकी प्रशासनिक आर्थिक व्यवस्था ने नगरों के चरित्र में मात्रात्मक व गुणात्मक परिवर्तन किया। ( )

(iii) 14 वीं – 15वीं सदी में भारत ने रेशम उत्पादन अरब से सीखा। ( )

(iv) दिल्ली सल्तनत काल में आगरा नील उत्पादन के लिए एवं बनारस सोने, चांदी एवं जरी के काम के लिए प्रसिद्ध था। ( )

(v) भारत में सर्वप्रथम मुहम्मद गौरी ने कुतुबुद्दीन ऐबक को हाँसी का इक्तेदार बनाया किंतु इक्तेदारी व्यवस्था को सुव्यवस्थित रूप देने का श्रेय इल्तुतमिश को दिया जाता है। ( )

(vi) दिल्ली सल्तनत के अंतर्गत इल्तुतमिश पहला तुर्क सुल्तान था जिसने शुद्ध अरबी सिक्के चलवाये। ( )

(vii) दिल्ली सल्तनत के शासक मुहम्मद–बिन–तुगलक ने सल्तनत की राजधानी को दिल्ली से देवगिरी या दौलताबाद ले गया था। ( )

(viii) जौनपुर नगर की नीव फिरोजशाह तुगलक ने अपने चचेरे भाई जौना खां (मुहम्मद बिन तुगलक) की याद में डाली थी। ( )

(ix) तुर्कों ने भारत में अपने साथ नवीन प्रोद्योगिकी भारत लाई, जिनके कारण भारत की उत्पादन संरचना में परिवर्तन हुआ, जिसे मोहम्मद हबीब नगरीय क्रांति की संज्ञा दी है। ( )

(x) 13 वीं शताब्दी में दिल्ली सल्तनत सैनिक क्षेत्रों में विभक्त था, जिसे 'इक्ता' कहते थे। ( )

11-6 lkjka'k@ lf{kflrdk (Summary):-

- 13 वीं शताब्दी में दिल्ली सल्तनत सैनिक क्षेत्रों में विभक्त था जिसे इक्ता कहते थे।
- भारत में सर्वप्रथम मुहम्मद गौरी ने कुतुबुद्दीन ऐबक को हाँसी का इक्तेदार बनाया था।
- भारत में सुव्यवस्थित रूप से इक्ता व्यवस्था का प्रचलन इल्तुतमिश ने किया था।
- मुहम्मद गौरी की मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक को सिंध और मुल्तान को छोड़कर मुहम्मद गौरी द्वारा विजित उत्तर भारत का संपूर्ण क्षेत्र – सियालकोट, लाहौर, अजमेर, झाँसी, दिल्ली, मेरठ, कोल (अलीगढ़), कन्नौज, बनारस, बिहार तथा लखनौती के क्षेत्र प्राप्त हुआ था।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने मुहम्मद गौरी के गुलाम के रूप में दिल्ली सल्तनत के नाम से भारत में मुस्लिम सत्ता की स्थापना की।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने सत्ता का केंद्र लाहौर को बनाकर राज किया था।
- इल्तुतमिश ने लाहौर के स्थान पर दिल्ली को राजधानी बनाया।
- इल्तुतमिश को दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- दिल्ली सल्तनत का उत्तर से दक्षिण तक विस्तार करने वाला सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी था।
- मुहम्मद–बिन–तुगलक के काल में दिल्ली सल्तनत कुल 23 प्रांतों में बंटा था।
- दिल्ली सल्तनत के तुर्क सुल्तान व अमीर नगर निवासी थे।
- सल्तनत के तुर्क सुल्तानों व अमीरों की नीति ने भारत में नगरीकरण की प्रक्रिया को तीव्रता प्रदान की।

- अबुत फजल अपने विवरण में भारत में छोटे–बड़े कुल 3200 शहरों व कस्बों की संख्या बताया है। स्वाभाविक है कि ये सभी नगर सल्तनत काल से ही रही होगी।
- दिल्ली सल्तनत के तुर्क सुल्तानों की प्रशासनिक आर्थिक व्यवस्था ने नगरों के चरित्र में मात्रात्मक व गुणात्मक दोनों रूप में परिवर्तन किया।
- तुर्क सुल्तानों ने अपने साथ नवीन प्रौद्योगिकी भी भारत लाये जिनके कारण उत्पादन संरचना में परिवर्तन हुआ। उत्पादन सरंचना में इस परिवर्तन को इतिहासकार मोहम्मद हबीब ने 'नगरीय क्रांति' की संज्ञा दी है।
- सल्तनत काल में सभी प्रमुख सुल्तानों ने नए नगर बसाये।
- सल्तनतकालीन भू–राजस्व वसूली की केंद्रीकृत व्यवस्था से शासक और शासन से जुड़े लोगों को अत्यधिक धन का प्रवाह बढ़ा और इससे नगरीकरण को प्रोत्साहन मिला।
- दिल्ली सल्तनत का सर्वाधिक प्रसिद्ध व विस्तारवादी शासक अलाउद्दीन खिलजी था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने 1296 ई. से 1316 ई. तक राज किया था।
- अलाउद्दीन ने सिंकदर–ए–सानी या सिंकदर द्वितीय सानी की उपाधि धारण की।
- अलाउद्दीन खिलजी ने ही सर्वप्रथम सल्तनत का विस्तार उत्तर से दक्षिण तक करने के लिए दक्षिण भारत की विजय का अभियान चलाया था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने अनेक निर्माण कार्य शुद्ध इस्लामी शैली के अंतर्गत करवाया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली के समीप सीरी नामक गांव के समीप एक नगर की स्थापना की जिसे सीरी फोर्ट के नाम से जाना जाता है।
- इतिहासकार बर्नी ने सीरी फोर्ट नगर को नौ या 'नया नगर' के नाम से संबोधित किया था।

- सीरी फोर्ट नगर के बाहर अलाउद्दीन खिलती ने एक तालाब एवं उसके किनारे कुछ भवनों का निर्माण करवाया जिसे 'हौज–ए–खास' या 'हौज–ए–रानी' के नाम से जाना जाता है।
- तुगलक वंशी शासकों ने खिलजीकालीन इमारतों की भव्यता एवं सुन्दरता के स्थान पर इमारतों की सादगी एवं विशालता पर अधिक बल दिया।
- गयासुद्दीन तुगलक ने दिल्ली के समीप स्थित पहाड़ियों पर तुगलकाबाद नाम का एक नया नगर स्थापित किया।
- तुगलकाबाद नगर का निर्माण रोमन शैली में किया गया था।
- तुगलकाबाद नगर में गयासुद्दीन तुगलक ने एक दुर्ग का भी निर्माण करवाया था जिसे छप्पन कोट के नाम से भी जानते हैं।
- तुगलकाबाद नगर के किले के अंदर निर्मित सुल्तान के राजमहल के संबंध में मोरक्को (अफ्रीका) यात्री इब्नबतूता ने कहा कि 'राजमहल सूर्य के प्रकाश में इतना चमकता था कि कोई भी व्यक्ति उसे टकटकी बांध कर नहीं देख पाता था।
- तुगलकाबाद नगर में प्रवेश के लिए लगभग 52 द्वार बनाये गये थे।
- मुहम्मद–बिन–तुगलक ने तुगलकाबाद के आदिलाबाद नामक किले का निर्माण करवाया था।
- मुहम्मद–बिन–तुगलक ने रायपिथौरा एवं सीटी के मध्य जहाँपनाह नगर की स्थापना करवाया था।
- दिल्ली सल्तनत के अंतर्गत फिरोजशाह तुगलक को लगभग 300 नये नगरों की स्थापना करने वाले सुल्तान के रूप में जाना जाता है।
- फिरोजशाह तुगलक द्वारा स्थापित किये गये नगरों में प्रमुख थे – हिसार, फिरोजाबाद (दिल्ली), फतेहाबाद, जौनपुर, फिरोजपुर।

- यमुना के किनारे स्थित फिरोजाबाद नगर सुल्तान फिरोजशाह तुगलक को सर्वाधिक प्रिय था।
- जौनपुर नगर की स्थापना फिरोजशाह तुगलक ने अपने चचेरे भाई फखरूद्दीन जौना खां अर्थात् मुहम्मद–बिन–तुगलक की स्मृति में की थी।
- सुल्तान फिरोजशाह तुगलक ने पाँचवी दिल्ली के नाम से कोटला फिरोजशाह की स्थापना की।
- सैयद काल तक आते–आते स्थापत्य कला का पतन आरम्भ हो चुका था।
- सैयद एवं लोदी काल में खिलजी कालीन शैली को पुनर्जीवित करने के प्रयास किये गये।
- सैयद काल में खिज्रखाँ द्वारा खिज्राबगाद नगर का निर्माण हुआ।
- सैयद वंश के शासक मुबारक शाह द्वारा मुबारकाबाद नगर की स्थापना की गयी।
- आगरा नगर की स्थापना 1504 ई. में लोदी वंश के प्रसिद्ध शासक सिंकदर लोदी के द्वारा करवाया गया था।
- दिल्ली सल्तनत के अंतर्गत इतिहासकार पर्सी ब्राउन ने इस युग को मकबरों के युग का नाम से संबोधित किया है।
- सल्तनत काल में व्यापार जल एवं थल दोनों मार्गों से होता था।
- देवल अंतरराष्ट्रीय व्यापार का प्रमुख बंदरगाह था।
- दक्षिणी सिंध में लहरीबंदर व गुजरात में कैंबे व सूरत इस समय के प्रसिद्ध बंदरगाह थे।
- अन्हिलवाड़ व्यापारियों के तीर्थस्थल के रूप में प्रसिद्ध था।
- सतगांव रेशमी रजाइयों के लिए प्रसिद्ध था।
- बयाना (भरतपुर, राजस्थान) व सरखेज (आगरा) नील उत्पादन के लिए प्रसिद्ध था।
- अच्छे किस्म के चावल के लिये सुरसति अत्यधिक प्रसिद्ध था।

- गुजरात का खंभात क्षेत्र रेशम उत्पादन में अग्रणी था।
- बंगाल में सोनार गाँव मलमल व कच्चे रेशम के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध था।
- सल्तनत काल में अरब व खाड़ी देशों से – सोना, चाँदी, केसर, अफीम, सिंदूर, घोड़े आदि मंगाये जाते थे।
- हाथी दांत व लाख का आयात अफ्रीका से किया जाता था।
- इस समय भारत से विदेशों में भेजी जाने वाली महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ लोहा, हथियार, अनाज, सूतीवस्त्र, जड़ी–बूटी, मसाले, फल, शक्कर एवं नील आदि थी।
- 14 वीं – 15 वीं सदी में सल्तनत काल में भारत ने रेशम उत्पादन चीन से सीखा।

11-7 lkdr&lpd **(Key-words):-**

- शहरीकरण/नगरीकरण – वह प्रक्रिया जिसमें भौतिक सुख–सुविधाओं की दृष्टि से बड़ी संख्या में लोगों का अपेक्षाकृत एक सीमित क्षेत्र स्थायी बसाव को नगरीकरण कहते हैं।
- अध्ययनोपरांत – अध्ययन के बाद।
- अधिशेष – अतिरिक्त (Surplus)
- खलीफा – मुस्लिम धर्म गुरू।
- उलेमा – इस्लाम में धार्मिक ज्ञान, सिद्धांत व कानूनों का संरक्षक।
- इक्ता – भूमि का टुकड़ा जो राज्य द्वारा अधिकारियों को उसके सेवा के बदले में दिया जाता था।
- अन्हिलवाड़ – गुजरात के पाटन क्षेत्र में स्थित प्रसिद्ध नगर जो सल्तनत काल में व्यापारियों के तीर्थस्थल के रूप में प्रसिद्ध था।

11-8 Lo&elY;kdu dk fy, ijh{kk **(Self Assessment Test SAT)**

भाग (क) (Part-A) बहुविकल्पी प्रश्न (Multiple Choice Questions MCQS)

(i) दिल्ली सल्तनत का पहला सुल्तान, जिसने दक्षिण भारत के अनेक राज्यों पर विजय प्राप्त की थी?

(क) शिहाबुद्दीन खिलजी (ख) मुबारक शाह खिलजी

(ग) अलाउद्दीन खिलजी (घ) शिहाबुद्दीन उमर खिलजी

(ii) अलाउद्दीन खिलजी ने किस नगर की विजय के बाद उसका नाम बदलकर खिज़्राबाद रख दिया?

(क) चित्तौड़ (ख) देवगिरी (ग) मालवा (घ) गुजरात

(iii) निम्नलिखित में से किस नगर/किन नगरों का निर्माण फिरोजशाह तुगलक ने करवाया था ?

1. फतेहाबाद 2. फिरोजाबाद 3. फैजाबाद 4. जौनपुर 5. हिसार–फिरोजा 6. फिरोजपुर

(क) केवल 2 (ख) 1, 3, 5 और 6

(ग) 1, 2, 4, 5 व 6 (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(iv) तुगलकाबाद की नींव किस शासन ने डाली ?

(क) मुहम्मद तुगलक (ख) गयासुद्दीन तुगलक

(ग) फिरोजशाह तुगलक (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(v) दिल्ली सल्तनत के किस शासन ने बंगाल को लखनौती, सोनारगांव एवं सतगांव में विभाजित किया?

(क) गयासुद्दीन तुगलक (ख) मुहम्मद तुगलक

(ग) फिरोज तुगलक (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(vi) सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए

सूची I	सूची II
(अ) देवल	(1) सल्तनतकालीन अन्तरराष्ट्रीय बंदरगाह
(ब) सरसुती	(2) अच्छे किस्म के चावल के लिए प्रसिद्ध
(स) अन्हिलवाड़	(3) व्यापारिक तीर्थस्थल
(द) सतगांव	(4) रेशमी रजाइयों के लिए
(ध) आगरा	(5) नील के उत्पादन के लिए

	अ	ब	स	द	ध
(क)	1	2	3	4	5
(ख)	2	3	5	4	1
(ग)	5	4	3	2	1
(घ)	1	2	3	5	4

(vii) आगरा शहर की स्थापना किसने की ?

(क) सिकंदर लोदी (ख) खिज्रखां

(ग) बहलोल लोदी (घ) फिरोज तुगलक

(viii) टोपरा व मेरठ से अशोक स्तंभ को लाकर किस सुल्तान ने दिल्ली में स्थापित करवाया ?

(क) अलाउद्दीन खिलजी (ख) फिरोज तुगलक

(ग) मुहम्मद तुगलक (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(ix) इल्तुतमिश द्वारा लागू की गयी इक्ता प्रणाली किसके शासनकाल में आनुवांशिक हो गयी ?

(क) अलाउद्दीन खिलजी (ख) मुहम्मद तुगलक

(ग) बलबन (घ) फिरोज तुगलक

(x) छप्पन कोट दुर्ग का निर्माण किस सुल्तान ने करवाया ?

(क) गयासुद्दीन तुगलक (ख) अलाउद्दीन खिलजी

(ग) मुहम्मद–बिन–तुगलक (घ) बलबन

भाग (ख) (Part-B) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त नोट लिखिए। (Write Short notes on the following):-

(i) इक्तेदारी व्यवस्था (Extadari System) (ii) देवल (Dewal) (iii) अन्हिलवाड़ (Anhilwara)

(iv) सल्तनत काल में नगरीकरण (Urbanisation in Delhi Sultanat)

(v) सल्तनत काल में वाणिज्य एवं व्यापार (Commerce and Trade in Sultanat Period)

(vi) दिल्ली सल्तनत में शहरी/नगरीय जनजीवन (Urban Life in Delhi Sultanat)

(vii) दिल्ली सल्तनत में प्रमुख उद्योग (Important Industries in Delhi Sultanat)

(viii) दिल्ली सल्तनत के बंदरगाह (Sea Ports of Delhi Sultanat)

(ix) सल्तनतकालीन नगरीय अर्थव्यवस्था (Urban Economy in Delhi Sultanat)

(x) अमीर–ए–दाद (Amir-E-Dad)

भाग (ग) (Part-C) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

(i) सल्तनतकालीन शहरी अर्थव्यवस्था का विवरण दीजिए।

(Give Report of Urban Economy in Delhi Sultanat)

(ii) दिल्ली सल्तनत काल में शहरी जन–जीवन का वर्णन करें।

(Describe Urban Life in Delhi Sultanat)

(iii) सल्तनतकालीन नगरीय प्रशासन का विस्तार से वर्णन करें।

(Describe in details of Urban administration on during Delhi Sultanat)

(iv) दिल्ली सल्तनत के शहरी केंद्र को भारत के मानचित्र पर चिन्हित करें तथा इसकी प्रमुख विशेषताएं भी बताएँ।

(Point out the Urban centres of Delhi Sultanat in India's Map.)

11-9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answers to Check your progress)

11.5 भाग (क) के उत्तर :– (i) सिकंदर लोदी (ii) अलाउद्दीन खिलजी (iii) गयासुद्दीन तुगलक (iv) नील के उत्पादन (v) नील के उत्पादन (vi) दिल्ली (vii) अफ्रीका (viii) अन्हिलवाड़ (ix) देवल (x) अरब व खाड़ी देशों से

11.5 भाग (ख) के उत्तरः–(i) असत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) सत्य (v) सत्य (vi) सत्य (vii) सत्य (viii) सत्य (ix) सत्य (x) सत्य

11.8 (क) के उत्तरः– (i) ग (ii) क (iii) ग (iv) ख (v) क

11-10 lgk;d lnHk xzFk (References)

- मध्यकालीन भारत : भाग–1 (750–1540 ई. तक)

  हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

  संपादक – हरिश्चंद्र वर्मा

- भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन

  (द्वितीय संस्करण)

  दृष्टि पब्लिकेशन, दिल्ली

- प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास

  प्रारंभ से 1526 ई. तक

  लेखक :– अविनाश चन्द्र अरोड़ा

तृतीय संस्करण 1987

प्रदीप पब्लिकेशन्स, जालंधर

- सामान्य अध्ययन – यूनीक प्रकाशन, नई दिल्ली

  डॉ. विनय कुमार सिंह

- स्पेक्ट्रम पब्लिकेशन – सामान्य अध्ययन

  राजीव अहीर (नई दिल्ली)